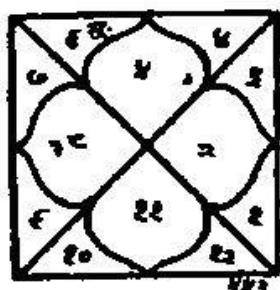


'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'हिंतोयनाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

सिंह लग्न : हिंतोयनाव : सूर्य

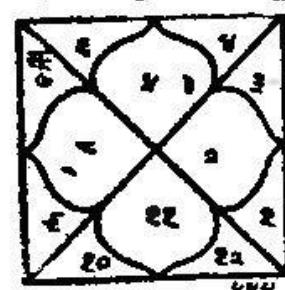


इसरे शाव में मिल बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के जन तथा कुटुम्ब के सुख में बूढ़ि होती है, परन्तु उसी के कारण कुछ परतांकता का अनुभव भी होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है तथा जातक समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति समझा जाता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'हिंतोयनाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

सिंह लग्न : हिंतोयनाव : सूर्य

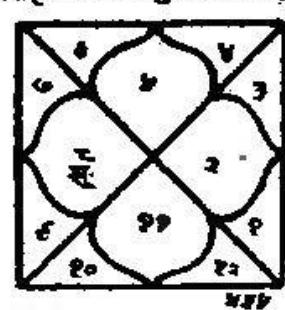


तीसरे शाव में शत्रु सुक की तुला राशि पर स्थित वीच से सूर्य के प्रभाव से जातकों का भाई-बहिनों से वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम में कुछ कमी आती है। फिर भी वह जातक बड़ा हिम्मती होता है।

सातवीं मिलदृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक के जात्य में बूढ़ि होती है तथा वह यर्म में भी आस्था रखता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्वेदाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

सिंह लग्न : चतुर्वेदाव : सूर्य

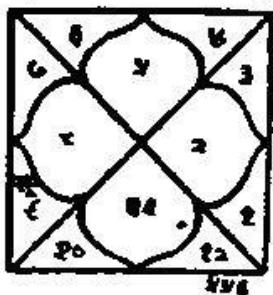


चौथे शाव में मिल अंगूष्ठ की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा जनन वादि का सुख प्राप्त होता है तथा शरीर सुखी रहता है।

सातवीं चतुर्वेदाव से दशमभाव को देखने के कारण जातक का पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में विशिष्ट प्रयत्न करते पर ही सफलता मिलती है।

'सिंह' लग्न को कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का कलावेश

सिंह लग्न : पंचमभाव : सूर्य

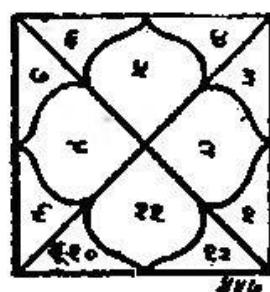


पाँचवे भाव में मिक्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है। यह आत्मज्ञानी तथा उपर्युक्त व्यक्ति का लक्षण होता है।

सातवीं मिक्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से बुद्धिचल द्वारा पर्याप्त बाधनी होती है। ऐसा व्यक्ति अहंकारी भी होता है।

'सिंह' लग्न को कुण्डली से 'षष्ठमभाव' स्थित 'हृदय' का कलावेश

सिंह लग्न : षष्ठमभाव : सूर्य

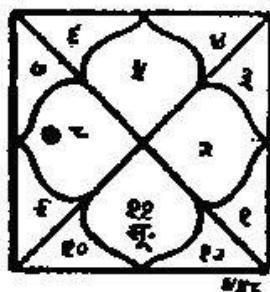


छठे भाव में शत्रु शति की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है तथा कठिनाइयों से बचता रहता है। शारीरिक सीन्द्रिय में कमी आती है तथा रोग एवं परतंकता के योग भी बनते हैं।

सातवीं मिक्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च व्यक्ति रहता है तथा बाहरी स्थान के सर्वाधिक से भी लाभ होता है।

'सिंह' लग्न को कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'हृदय' का कलावेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

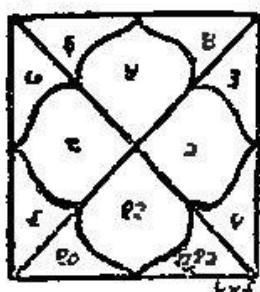


सातवें भाव में शत्रु शति की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का स्त्री-पक्ष से वैभवस्य रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है।

सातवीं दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति एवं स्वाधिमान में बुद्धि होती है और वह वपने यक्ष का विस्तार भी करता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

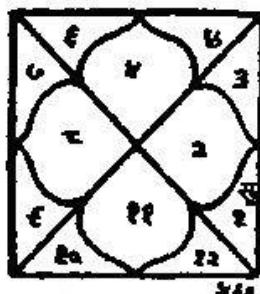


आठवें भाव में मिथुन की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ वायु एवं पुरातत्व का साभ होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है।

सातवीं दृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से कठिन परिव्रम होता है एवं कौटुम्बिक सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति क्रोधी स्वभाव का होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : नवमभाव : सूर्य

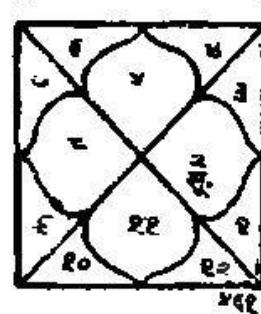


नवें भाव में मिथुन शंगल की राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक की आग्न्य-शक्ति प्रबल होती है तथा वर्ष में भी अभिशक्ति बनी रहती है।

सातवीं बीच दृष्टि से द्वातीयभाव की देखने से जातक को आई-बहिनों से असन्तोष रहता है तथा पराक्रम के बारे में ऐसा व्यक्ति लोपरवाह रहता है। स्थूल भारीर वाला भाग्यवान तथा ईश्वर-भक्त होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : दशमभाव : सूर्य

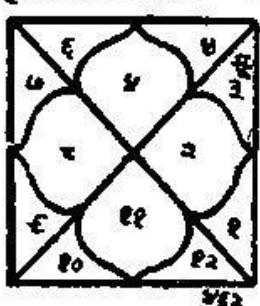


दसवें भाव में शत्रु कुक की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का पिता से वैमनस्य रहता है, परसु राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति एवं वैमन-प्रतिष्ठान का साभ होता है।

सातवीं मिथुन-दृष्टि से चतुर्थभाव की देखने के कारण भाता, शूष्मि तथा भवन का यथेष्ट सुख भी मिलता है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : सूर्य

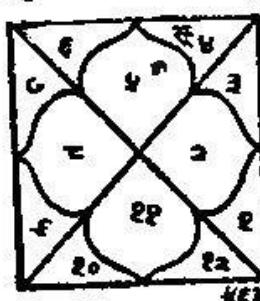


आरहवें भाव में मिल बुध की राशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आमदानी अच्छी रहती है तथा शारीरिक शक्ति में बुद्धि होती है ।

सातवीं मिल-दूषि से पंचमभाव की देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का सुख भी घटेट मिलता है । ऐसे व्यक्ति की बाणी में कुछ उपता रहती है और वह स्वार्थी भी होता है ।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित सूर्य का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : सूर्य



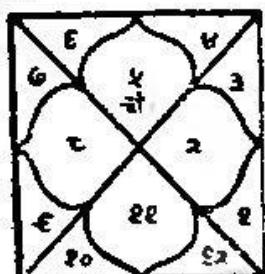
दारहवें भाव में मिल चन्द्रमा की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है । बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से साम होता है तथा जर्ब पर प्रभाव लगा रहता है । जातक भ्रमण का शीक्षण भी होता है ।

सातवीं छठ-दूषि से षष्ठभाव की देखने से साकुपक्ष पर प्रभाव लगा रहता है तथा अनेक कठिनाइयों के बावजूद कठुबों पर विजय पाता है ।

‘सिंह’ लग्न में ‘चन्द्रमा’

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

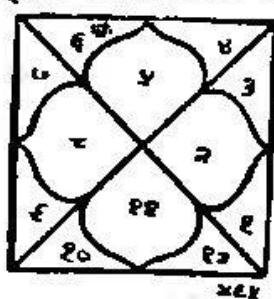


पहले भाव में मिल सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शरीर से दुर्बल, अभ्य-प्रिय तथा कुछ चिन्तित लगा रहने वाला होता है ।

सातवीं छठ-दूषि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय से क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों तथा हानि का सामना पड़ता है ।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'मृत्युयमाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयमाव : चन्द्र

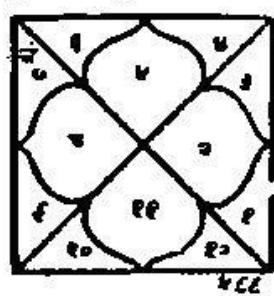


दूसरे भाव में मिल सुख की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की धन की अल्प हानि होती है। उसका रहन-सहन ठाठदार होता है। कुटुम्ब से भी कुछ असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ तथा सुख मिलता है।

सातवीं मिल-दूषित से व्यष्टमधाव की देखने से आमु-वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी कुछ कमी के साथ लाभ होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'मृत्युयमाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : तृतीयमाव : चन्द्र

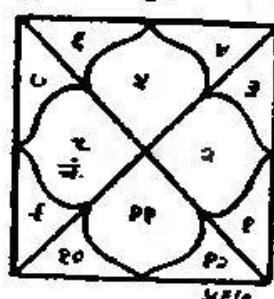


तीसरे भाव में साधान्य मिल सुक की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ होता है।

सातवीं मिल-दूषित से नवममधाव की देखने से आम एवं धर्म को उन्नति होती है तथा खर्च आराम से चलता रहता है। अन्य सौनों की दूषित में ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी समझा जाता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थमाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : चतुर्थमाव : चन्द्र

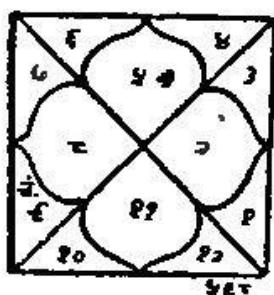


चौथे भाव में मिल यंगत की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा धन आदि का सुख कुछ कष्ट के साथ अल्प परिमाण में मिलता है तथा धरेखू खर्चों से परेशानी धनी रहती है।

सातवीं चतुर्थ दूषित से दशममधाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सुख तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

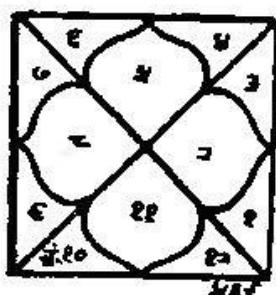


पांचवें भाव में मिल गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्युदि के क्षेत्र में बाधाएँ रहती हैं। खर्च को चिन्ता से ब्रह्मसिंक परेशान भी रहता है।

सातवीं मिङ्गदूषित से एकादशभाव को देखने से जातक दुर्दि-बल से आमदनों के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है, परन्तु उसे कुछ असन्तोष भी बना रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'वल्लभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : वल्लभाव : चन्द्र

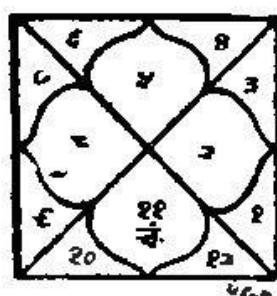


छठे भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष द्वारा उत्पन्न आगड़ों तथा रोग वादि में खर्च अधिक करना पड़ता है, जिससे यन दुखी बना रहता है।

सातवीं दूषित से स्वराशि में द्वादशभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा आय कम रहते हुए भी अधिक खर्च होता है। वह खर्च से द्वारा ही शत्रु-पक्ष में सफलता भी पाता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

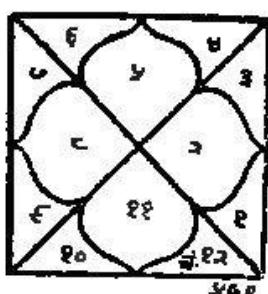


सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है तथा बरेलू खर्च बढ़ाने में कठिनाई आती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं मिङ्गदूषित से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर दुर्बल तथा रहता है।

‘सिंह’ लग्न की कूष्ठली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

सिंह लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

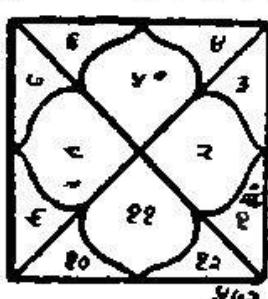


आठवें भाव में मिल गुरु को राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में हानि तथा चिन्ता के अवसर उपस्थित होती है। ऐट में दिकार रहता है तथा बाहरी स्थानों से साम होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन की भी कृष्ण हानि होती है तथा कौटुम्बिक सुख भी अल्प परिमाण में प्राप्त होता है।

‘सिंह’ लग्न की कूष्ठली से ‘मध्यमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

सिंह लग्न : मध्यमभाव : चन्द्र

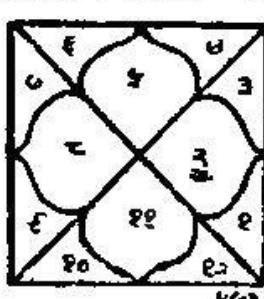


नवें भाव में मिल मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के आय की वृद्धि होती है, परन्तु धर्म-धारण में कमी रहती है।

सातवीं सम-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम तथा भाइ-बहिनों के सुख में को कृष्ण कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति मानसिक दुर्बलता का शिकार भी होता है।

‘सिंह’ लग्न की कूष्ठली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

सिंह लग्न : दशमभाव : चन्द्र

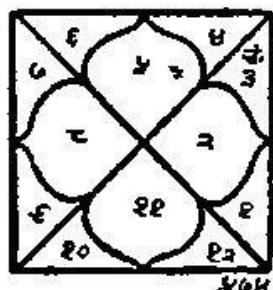


दसवें भाव में सामान्य मिल शुक्र को राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक पैदॄक सम्पति का विकास व्यय करता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुविधांश सफलताएँ प्राप्त करता है।

सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से बाता, भूमि तथा धर्म के बुध में कमी आती है तथा खर्च की अविकरता से मन अशान्त बना रहता है।

‘सिंह’ लग्न की कुम्हली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : चन्द्र

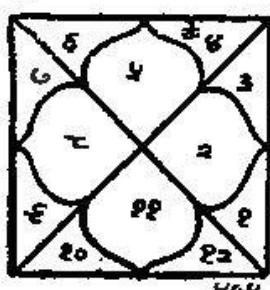


ग्यारहवें भाव में मित्र बूँद की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु खर्च भी अधिक बना रहता है।

सातवीं मिन्नदूष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में भी कुछ कमी रहती है। बाहरी तौर पर ऐसा जातक जिनी समझा जाता है।

‘सिंह’ लग्न की कुम्हली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र



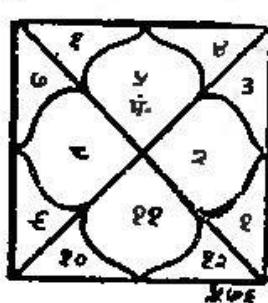
बारहवें भाव में स्वराशि में स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से यश, सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं शत्रुदूष्टि से षष्ठमाव की देखने के कारण जातक अपने मनोबल तथा खर्च के बल पर शत्रु-पक्ष पर विजय पाता तथा प्रभाव स्वाप्ति करता है, परन्तु अग्ने-मुकुटमे वादि में खर्च बहुत होता है।

‘सिंह’ लग्न में ‘मंगल’

‘सिंह’ लग्न की कुम्हली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

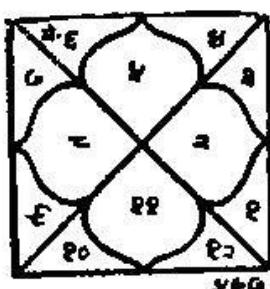
सिंह लग्न : प्रथमभाव : मंगल



पहले भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। वह धार्यवान्, सर्वात्मा तथा ईश्वर-प्रकृति भी होता है। चौथी दूष्टि से स्वराशि के चतुर्थभाव को देखने के कारण भासा, भूमि तथा अवन का सुख मिलता है। सातवीं शत्रुदूष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में प्रेरणानियती आती है। बाठवीं मिन्नदूष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व का साध ग्राप्त होता है।

'सिंह' लाल की कृष्णली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

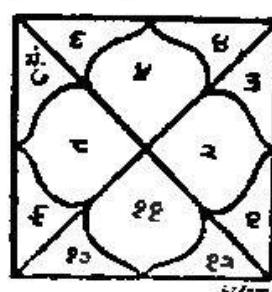
सिंह लग्नः द्वितीयभावः मंगल



दूसरे शाव में मिन्द वृद्ध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। परन्तु पाता, शूभि तथा अवन के बुध में कुछ कमी रहती है। चौथी मिन्द-दृष्टि से धनभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं मिन्द-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व को बढ़ि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव की देखने से आयु तथा क्षम्य की भी बढ़ि होती है।

'सिंह' लाल की कृष्णली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्नः तृतीयभावः मंगल

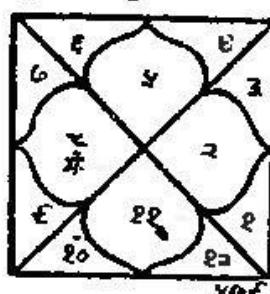


तीसरे शाव से शनु शुक्र को राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की शाई-वहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में बढ़ि होती है। चौथी उच्चदृष्टि से षष्ठमभाव को देखने से ज्ञानपक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव को देखने से अर्थ तथा आय को उन्नति होती है। आठवीं शनु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सहयोग, सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है।

'सिंह' लग्न की कृष्णली से 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

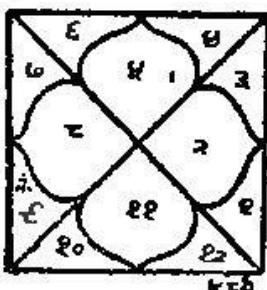
सिंह लग्नः चतुर्थभावः मंगल



चौथे शाव में स्वराशि स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शूभि, अवन एवं आता का सुख प्राप्त होता है। चौथी शनु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं शनु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता तथा लाभ के क्षेत्र में सहयोग एवं प्रतिष्ठा की शापिं होती है। आठवीं मिन्द-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी को खूब बढ़ि होती रहती है।

‘सिंह’ सामग्री की काउंटरी के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

सिंहलम्: पर्वमभावः मगल



बाहरी स्थानों के सम्बन्ध भी निर्बंल रहते हैं।

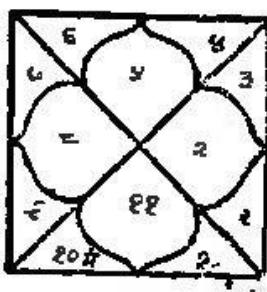
पांचवें भाव में मित्र ग्रुह को राशि पर स्थित

मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतरण का साधा होता है। वौथी मिद्र-दूषित से अष्टमभाव को देखने से आँख की बृद्धि होती है तथा पुरातत्व का साधा होता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से एकादशभाव से देखने से आमदनी खूब रहती है। आठवीं नीच-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है तथा दिनांक नहोते हैं।

‘सिंह’ सरम की कम्पनी के ‘पल्टमाल’ स्थित ‘भंगल’ का फसादेस

सिंह लखन : अष्टम भाग : पंगल

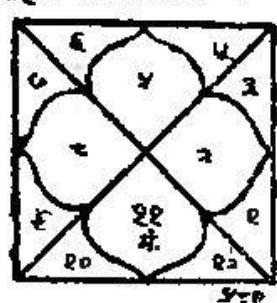


छठे भाव में शशु शनि को राशि पर स्थित उच्च वृंगल के प्रभाव से आतक को शशु-पक्ष में सफलता मिलती है। तथा भाग्य को शक्ति से सुख प्राप्त होता है। चौथो दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म को उन्नति होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खंच को परेशानी रहती है तथा बाहरी सम्बन्ध कम-और रहते हैं। आठवीं गिरन्दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से कारीरिक भ्रमाव, सौन्दर्य एवं सुख को वृद्धि होती है।

‘सिंह’ लाल की जापानी के ‘सूप्तसमस्ताव’ स्थित ‘मैत्रस्त’ का फलादेश

सिंह अवल - संस्कृत साहित्य - संग्रह



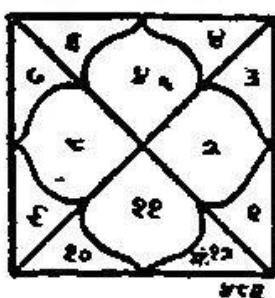
आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव की देखने से ज्ञन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

सातवें भाव में शत्रुघ्नि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की कुछ कौठनाईयों के साथ स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। चौथो शत्रुघ्नि-द्वितीय से दशमभाव को देखने से पिता से कुछ यत्नभेद रहता है परन्तु पिता, राज्य तथा व्यवसाय द्वारा साध एवं सफलता को प्राप्ति भी होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं सौभाग्य का लाभ होता है।

'सिंह' लग्न की कृष्णली के 'व्यष्टमध्याव' स्थित 'वंगल' का चक्रावेता

सिंह लग्न : व्यष्टमध्याव : मंगल



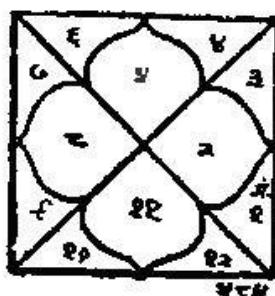
२४४

आठवें भाव में मित्र गुरु को राशि पर स्थित वंगल के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्व को शक्ति का लाभ होता है। परन्तु आग्ने तथा धर्म के पक्ष में कठी रहती है। चौथी मित्र-दृष्टि से एकादश-आव को देखने से आमदनी खूब होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कौटुम्बिक सुख तथा गत का लाभ भी होता है।

पराक्रम बढ़ता है तथा आई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। आठवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से जातक सुखी जीवन विसराता है।

'सिंह' लग्न की कृष्णली के 'व्यष्टमध्याव' स्थित 'वंगल' का चक्रावेता

सिंह लग्न : नवमध्याव : मंगल



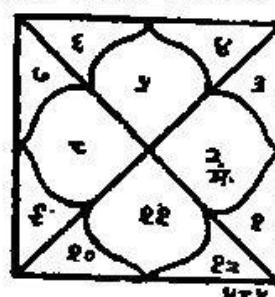
२४४

नवें भाव में स्वराशि-स्थित वंगल के प्रभाव से जातक से आग्ने तथा धर्म को उन्नति होती है। चौथी नीच दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च की व्यधिकता से कष्ट प्राप्त होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी परेशानी होती है।

सातवीं श्वृ-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से आई-बहिन का सुख असन्तोषजनक रहता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, शूभि तथा धर्म का वयेष्ट सुख प्राप्त होता है।

'सिंह' लग्न की कृष्णली के 'व्यष्टमध्याव' स्थित 'वंगल' का चक्रावेता

सिंह लग्न : दशमध्याव : मंगल



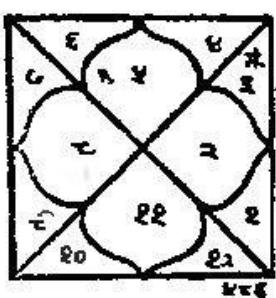
२४४

इसवें भाव में शत्रु शुक को राशि पर स्थित वंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति, सफलता एवं सम्मान के योग प्राप्त होते हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से प्रथमध्याव को देखने से शारीरिक प्रभाव तथा सौभाग्य में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, शूभि तथा धर्म का सुख मिलता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से पंचमध्याव को देखने से सन्तान एवं विद्या-वृद्धि के क्षेत्र में भी अफवता प्राप्त होती है।

‘सिंह’ लग्न की कुम्हसी के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

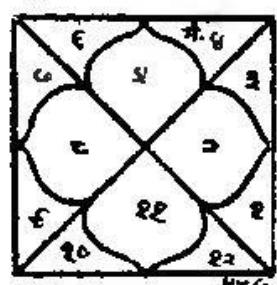
सिंह लग्नः एकादशभावः मंगल



प्रभावशाली, धनी तथा शकुञ्जयी होता है।

‘सिंह’ लग्न की कुम्हसी के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

सिंह लग्नः द्वादशभावः मंगल

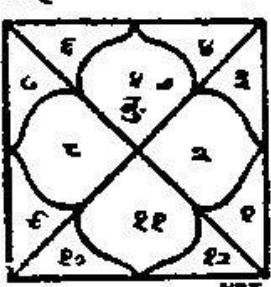


सप्तमभाव की देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है।

‘सिंह’ लग्न में ‘कुम्ह’

‘सिंह’ लग्न की कुम्हसी के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘कुम्ह’ का फलादेश

सिंह लग्नः प्रथमभावः कुम्ह

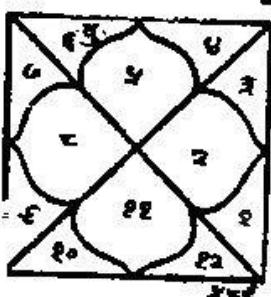


पहले भाव में मिल सूर्य की राशि पर स्थित कुम्ह के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्तिविवेकी, दानी, भोगी तथा धनी होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से व्यवसाय तथा स्त्री के पक्ष में सी उन्नति, सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है।

‘ईस्टर्न’ साम की कुप्रवासी के ‘द्वितीयमार्त’ स्थित ‘नृसिंह’ का फैलावेता

सिहू लखनः द्वितीयभाष्यः वृष्टि

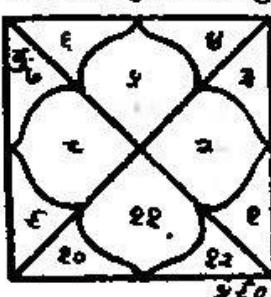


दूसरे भाव में स्वराशि स्थित सुख के वृष्टि के प्रभाव से जातक के धन सदा कौटुम्बिक सुख को वृद्धि होती है। भाई-बहिनों का यथेष्ट सुख भी मिलता है।

सतीवीं नीच-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु सथा पुरातत्व के बारे में अनेक संकटों तथा चिन्ताओं का शिकार बनना इडता है। येट को शीमारी रहती है सथा दैनिक जीवन भी असन्तोषजनक बना रहता है।

‘सहू’ सम की गुणवत्ती से ‘तृतीयवर्ग’ स्थित ‘बुजु’ का व्यवहरण

सिंह लग्नः तृतीयभावः खुध



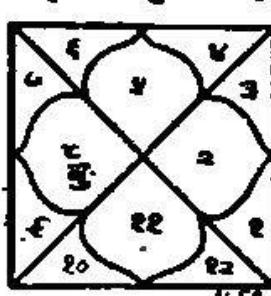
तीसरे भाव में भिन्न शुक्र को राशि पर स्थित सुध के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ता है तथा आई-हिनों का सख्त भी भिलता है।

सातवीं मिलन-दृष्टि से नवमधाव को देखने से भाग्य को उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता है।

ऐसा व्यक्ति सनी, धर्मत्वा, पराक्रमी, वस्त्रवी
तथा सभी होता है।

‘सिंह’ नाम की काष्ठली के ‘जलूर्यमार’ स्थित ‘दुष’ का फैलावेश

सिंह सर्वः स्वत्येभावः स्वत्य

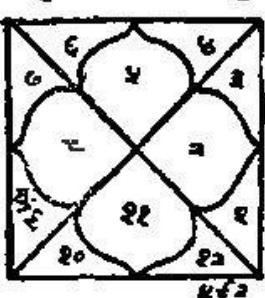


बौद्ध भाव में मित्र भाग्य की राजि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की याता, शूष्य तथा अवन का पर्याप्त सख्त धिलता है तथा धन का संचय होता है ।

साहबीं मित्र-दूजि से दशमभाव को देखने से राज्य, अवसाय तथा पिता के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा साध मिलता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णलो के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलावेष

सिंह लग्न : पंचमभाव : बुध

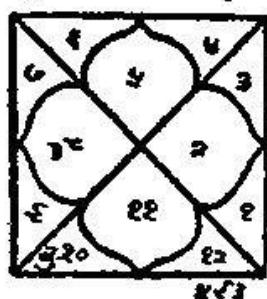


पांचवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। साथ ही, धन की उन्नति भी होती है।

सातवीं दूष्टि से स्वराशि के एकादशभाव की देखने से धामदानी बहुत बच्छी रहती है। ऐसा जातक धनी, सुखी, विद्वान्, सज्जन तथा स्वार्थी होता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णलो के ‘षष्ठमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलावेष

सिंह लग्न : षष्ठमभाव : बुध

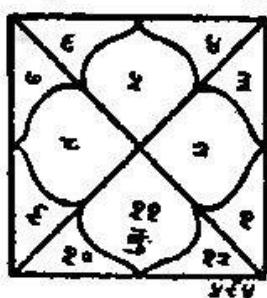


छठे भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शाक-पक्ष में नम्रता एवं धन की शक्ति से सफलता प्राप्त करता है।

सातवीं मित्र-दूष्टि से षावशमभाव में देखने से लंबे अधिक होता है तथा वाहूरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। कौदुम्बिक सुख की प्राप्ति कम ही होती है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णलो के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलावेष

सिंह लग्न : सप्तमभाव : बुध

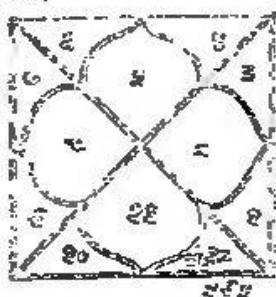


सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की सुन्दर स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी साध होता है। धन तथा कुदुम्ब का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्र-दूष्टि से प्रथमभाव की देखने से जातक के शारीरिक सौन्दर्य, आस्तिक बल, विवेक तथा यश की बुद्धि होती है।

‘सिंह’ लग्न के शुल्कली के ‘द्वादशमास’ स्थित ‘शुद्ध’ का फलान्तर

सिंह लग्न : अष्टमभाव : शुद्ध

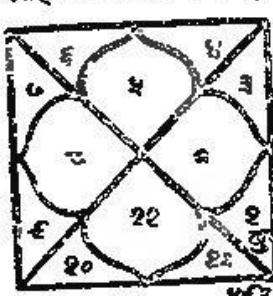


आठवें भाव में मिल शुद्ध की राशि पर स्थित नील के गुरु के शशावत से जातक की आद्यु-पक्ष में संकटों का सामना करना चाहता है तथा पुरातन्त्र की हानि भी होती है।

सातवीं उच्च दूषित से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन की कमी रहते हुए भी दैनिक खर्च-हर्ष-पूर्ति होती है तथा कौटुम्बिक सुख चिन्तनीय रहता है।

‘सिंह’ लग्न के शुल्कली के ‘द्वादशमास’ स्थित ‘शुद्ध’ का फलान्तर

सिंह लग्न : नवमभाव : शुद्ध

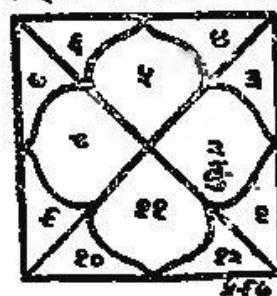


नवें भाव में मिल मंशत भी राशि पर स्थित शुद्ध के प्रभाव से जातक के शाश्वत तथा धर्म की उन्नति होती है। वह धनी, सूखी, इमानदार, उदार, सज्जन तथा ईश्वर-भक्त होता है।

सातवीं मिल-दूषित से तृतीयभाव की देखने से पराक्रम वे बढ़ती होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। ऐसा जातक बड़ा यशस्वी होता है तथा विरक्त उन्नति करता रहता है।

‘सिंह’ लग्न की शुल्कली के ‘द्वादशमास’ स्थित ‘शुद्ध’ का फलान्तर

सिंह लग्न : दशमभाव : शुद्ध

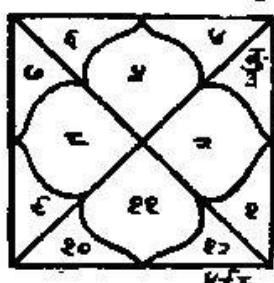


वसवें भाव में मिल शुक्र की राशि पर स्थित शुद्ध के प्रभाव से जातक की पिता, राजा व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलताएँ मिलती हैं कथा धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

सातवीं मिल-दूषित से चतुर्थभाव की देखने से माता, सूखि तथा भकान आदि का सुख भी मिलता है।

‘सिंह’ लगन की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

सिंह लगन : एकादशभाव : गुरु

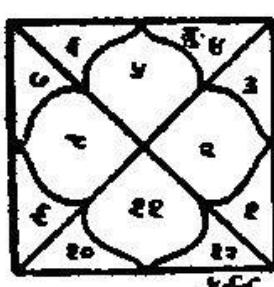


बाहरहवें भाव में स्वराशि-स्थित गुरु से प्रभाव से जातक को यथेष्ट साख होता है तथा धन, यश एवं सुख को बढ़ि होती रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी, विद्वान् तथा सन्ततिवान् होता है।

‘सिंह’ लगन की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

सिंह लगन : द्वादशभाव : गुरु



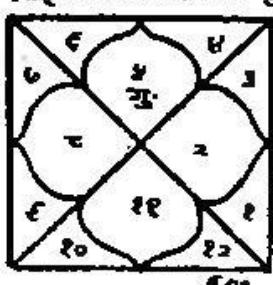
बाहरहवें भाव में शत्रु चन्द्रमा को राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से साख भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठमभाव की देखने से शत्रु-पक्ष में धन तथा विवेक द्वारा सफलता प्राप्त होती है, परन्तु शगड़े-टंटों के कारण उसे हानि भी उठानी पड़ती है।

‘सिंह’ लगन में ‘गुरु’

‘सिंह’ लगन की कुण्डली से ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

सिंह लगन : प्रथमभाव : गुरु

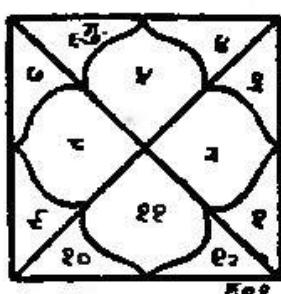


पहले भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित गुरु से प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, तथा दीर्घायु की प्राप्ति होती है। पांचवीं दृष्टि से स्वराशि क्षेत्र पंचमभाव की देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं ग्रह-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्तो तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है। नवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव की देखने से आग्ने तथा धर्म की बुद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी साख होता है।

‘सिंह’ संग्रह की कृष्णली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

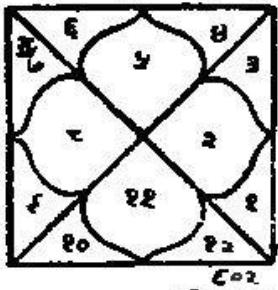
सिंह लग्न : द्वितीयभाव : गुरु



रहता है तथा व्यवसाय एवं राजकीय क्षेत्र में असन्तोष बना रहता है।

‘सिंह’ संग्रह की कृष्णली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

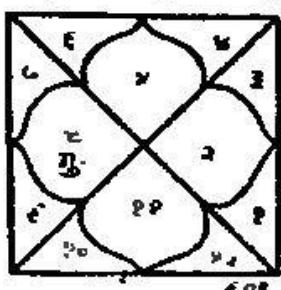
सिंह लग्न : तृतीयभाव : गुरु



एकादशभाव को देखने से साम खूब होता है। ऐसा जातक प्रत्येक क्षेत्र में साहसी होता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

सिंह लग्न : चतुर्थभाव : गुरु



नवीं उच्च दूष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ एवं सुख मिलता है।

दूसरे भाव में मित्र दुष्ट की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन तथा कौटुम्बिक सुख जी की प्राप्ति होती है, परन्तु सन्तान के पक्ष से कुछ कष्ट मिलता है। पौचवीं नीच-दूष्टि से व्यवसाय को देखने से शत्रु-पक्ष तथा ननसाल में हानि होती है।

सातवीं दूष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातस्व को बुद्धि होती है। नवीं शत्रु-दूष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से भवधेद रहता है तथा व्यवसाय एवं राजकीय क्षेत्र में असन्तोष बना रहता है।

‘सिंह’ संग्रह की कृष्णली के ‘सूतीयभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

सिंह लग्न : सूतीयभाव : गुरु

तीसरे भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित दुष्ट के प्रभाव से जातक का भाई-बहिनों से भवधेद रहता है, परन्तु पराक्रम की बुद्धि होती है। सन्तान का सुख कुछ कठिनाई से मिलता है तथा आयु का साम होता है।

पौचवीं शत्रु-दूष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाई आती है। सातवीं मित्र-दूष्टि से नवमभाव की देखने से बुद्धि बल से भाव्य तथा धर्म की उन्नति होती है। नवीं मित्र-दूष्टि से

एकादश खूब होता है। ऐसा जातक प्रत्येक क्षेत्र में साहसी होता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

सिंह लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

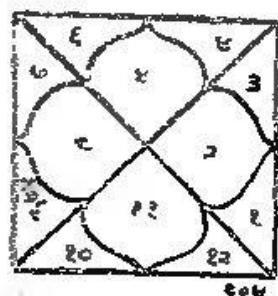
चौथे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की भाला, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है, परन्तु विद्या एवं सन्तान के पक्ष में लाभ होता है।

पौचवीं दूष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातस्व का साम होता है। सातवीं शत्रु-दूष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से बैवनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय से पूर्ण लाभ नहीं होता।

नवीं उच्च दूष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ एवं सुख मिलता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘दण्डमधाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

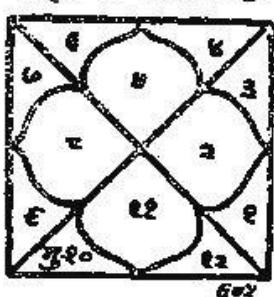
सिंह लग्न : संवत्सराव : गुरु



तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है, अरन्तु गुरु के अष्टमे शुक्र होने के कारण सुख-दुःख दोनों का अनुभव होता रहता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली से ‘दण्डमधाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

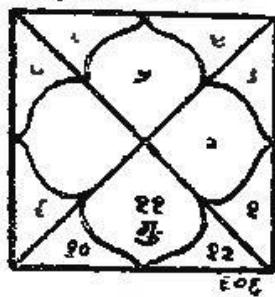
सिंहलग्न : षष्ठ्यमधाव : गुरु



सम्बन्धों से श्रेष्ठ साभ होता है तथा व्यय अधिक रहता है। नवीं मिशन्डूष्टि से हितोयमाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब को सामान्य बृद्धि होती है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘सप्तममधाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तममधाव : गुरु



तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का अनुभव होता है। विद्या तथा सन्तान के पक्ष में सामान्य सफलता मिलती है। आयु भी बृद्धि होती है तथा पुरातस्व का सामान्य साभ मिलता है।

पाँचवीं दूष्टि से एकादशमधाव को देखने से आर्थिक लाभ अच्छा रहता है। सातवीं मिशन्डूष्टि से ग्रथममधाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में बृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दूष्टि से तृतीयमधाव को देखने से पराक्रम की कृष्ण बृद्धि होती है, परन्तु आई-नहिनोंसे वैमनस्य रहता है।

पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित दूष्टि के प्रभाव से जातक की विद्या-बृद्धि एवं सन्तान के पक्ष में सफलता मिलती है। पाँचवीं मिशन्डूष्टि से नवममधाव को देखने से आम्य तथा धर्म की बृद्धि होती है। साथ ही पुरातस्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मिशन्डूष्टि से एकादशमधाव की देखने से आमदनी अच्छी रहती है। नवीं मिशन्डूष्टि से ग्रथम भाव को देखने में शारीरिक सुख, मनोवल, यश, सुख

तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है, अरन्तु गुरु के अष्टमे शुक्र होने के कारण सुख-दुःख दोनों

का अनुभव होता रहता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली से ‘दण्डमधाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

सिंहलग्न : षष्ठ्यमधाव : गुरु

छठे भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष से चिन्ता रहती है। विद्या तथा सन्तान का पक्ष भी दुर्बल रहता है। पुरातस्व की हानि होती है तथा दैनिक जीवन के सुख में भी कमी आती है।

पाँचवीं दूष्टि से दण्डमधाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है। सातवीं उच्च दूष्टि से छादशमधाव को देखने से बाहरी

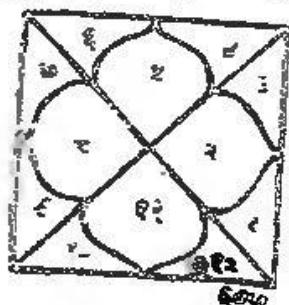
हितोयमाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब को सामान्य बृद्धि होती है।

पाँचवें भाव में शत्रु शनि को राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का स्त्री से वैमनस्य रहता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का अनुभव होता है। विद्या तथा सन्तान के पक्ष में सामान्य सफलता मिलती है। आयु भी बृद्धि होती है तथा पुरातस्व का सामान्य साभ मिलता है।

पाँचवीं दूष्टि से एकादशमधाव को देखने से आर्थिक लाभ अच्छा रहता है। सातवीं मिशन्डूष्टि से ग्रथममधाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में बृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दूष्टि से तृतीयमधाव को देखने से पराक्रम की कृष्ण बृद्धि होती है, परन्तु आई-नहिनोंसे वैमनस्य रहता है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

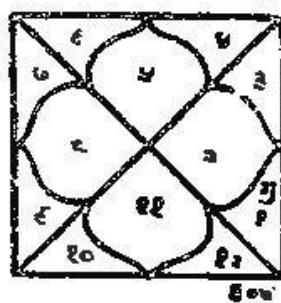
सिंह लग्न : अष्टमभाव : गुरु



सुख मिलता है। नवीं मिन्दूष्टि से चतुर्थभाव के सुख में कुछ कमियों के साथ सफलता मिलती है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

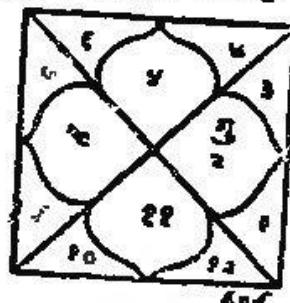
सिंह लग्न : नवमभाव : गुरु



से सन्तान, विद्या तथा बृद्धि का यथेष्ट साध होता है, परन्तु गुरु के अष्टमभाव होने के कारण हर क्षेत्र में कुछ कमी का अनुभव भी अवश्य होता है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

सिंह लग्न : दशमभाव : गुरु



है तथा शागड़े-कंकालों के कारण चिताएं चेरे रहती हैं।

आठवें भाव में स्वराशि-स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आँख तथा पुरातत्व में बृद्धि होती है, परन्तु सन्नान के पक्ष से कष्ट निवार है तथा विद्या, बृद्धि में भी कुछ कमी रहती है।

पौच्छवीं उच्च दूष्टि से द्वादशभाव को देखने से खचं अधिक रहता है तथा दृढ़री स्वास्थ्य के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। सातवीं मिन्दूष्टि द्वितीयभाव की देखने से जातक बन-बृद्धि के लिए प्रदत्तशील रहता है तथा कुटुम्ब का साधन

गुरु के प्रभाव से जातक की राशि वर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की बृद्धि होती है। पुरातत्व के क्षेत्र में सफलता मिलती है। पौच्छवीं मिन्दूष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक प्रभाव, सुख एवं सनोवल को प्राप्तिहोत्री है।

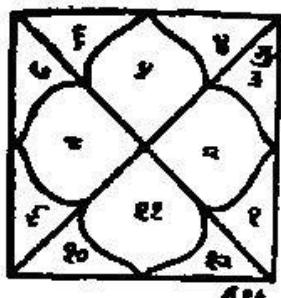
सातवीं शत्रु-दूष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से असन्तोष रहता है, परन्तु पराशक्त बढ़ता है। नवीं दूष्टि से स्वराशि के पंचमभाव देखने से सन्तान, विद्या तथा बृद्धि का यथेष्ट साध होता है, परन्तु गुरु के अष्टमभाव होने के कारण हर क्षेत्र में कुछ कमी का अनुभव भी अवश्य होता है।

हसवें भाव में शत्रु शुक को राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता-पक्ष में हानि तथा राज्य के पक्ष में सम्मान मिलता है। विद्या, बृद्धि, सन्नान तथा पुरातत्व की शक्ति का साध होता है।

पौच्छवीं मिन्दूष्टि से द्वितीयभाव को देखने से बन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। सातवीं मिन्दूष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख मिलता है। धनी नीष-दूष्टि से षष्ठमभाव से देखने से शत्रु-पक्ष से परेशानी होती

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘गुरु’ का कलावेश

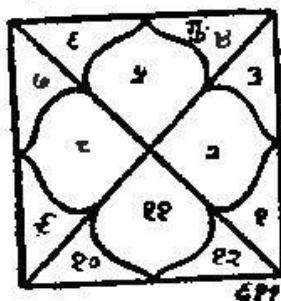
सिंह लग्न : एकादशभाव : गुरु



है। नवीं शत्रु-दूष्टि से सप्तमभाव की देखने से सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का लाभ मिलता है। परेशानियाँ आती रहती हैं।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘गुरु’ का कलावेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : गुरु

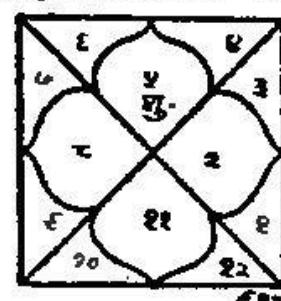


स्वराशि में व्यष्टमभाव की देखने से आमु की विकेष शक्ति मिलती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

‘सिंह’ लग्न में ‘शुक्र’

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली से ‘नवमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का कलावेश

सिंह लग्न : नवमभाव : शुक्र



पहले भाव में शत्रु पूर्ण की राशि पर स्थित शुक्र के भ्रमाव से जातक की शारीरिक सौन्दर्य, शृंगार, यश तथा अभाव की प्राप्ति होती है। आई-बहिन एवं पिता से भ्रमेद रहते हुए भी सुख मिलता है।

सातवीं मित्रदूष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के पक्ष में सफलता मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में लाभ होता है।

ग्यारहवें भाव में मित्र शुद्ध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की वासदनी बढ़ती है। आमु तथा पुरातत्त्व की भी बुद्धि होती है। नवीं शत्रु-दूष्टि से तृतीयभाव की देखने से पराक्रम की बुद्धि होती है, परन्तु आई-बहिनों से भ्रमेद रहता है।

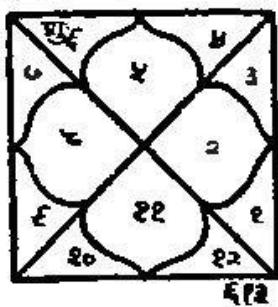
सातवीं दूष्टि से स्वराशि में पचमभाव की देखने से सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का लाभ मिलता है स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में

वारहवें भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाभ मिलता है। विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में शूटिपूर्ण सफलता मिलती है।

नवीं शत्रु-दूष्टि से चतुर्वेदभाव की देखने से माता, धूमि, भवन आदि का सुख प्राप्त होता है। सातवीं नीच-दूष्टि से पाष्ठभाव की देखने से शत्रु-पक्ष से परेशानी धनी रहती है। नवीं दूष्टि से शत्रु-पक्ष से आमु की विकेष शक्ति मिलती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली से ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलावेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

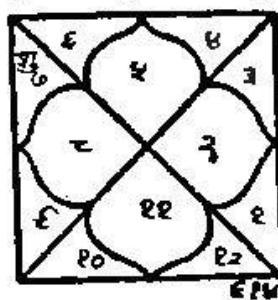


इसरे भाव में शिव बुध को राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को धन तथा कोटुस्त्रिक सुखअल्प मात्रा में प्राप्त होता है। पिता, व्यवसाय, राज्य तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी कमी धनी रहती है।

सातवीं उच्च दूषिण से व्यष्टमभाव को देखने से जातक को वायु में बूढ़ि होती है तथा पुरातत्व का लाभ होता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति ऐश्वर्य-क्षालियों जैसा जीवन अतीत करता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलावेश

सिंह लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

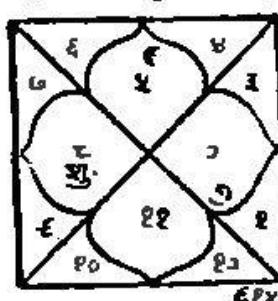


तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में बूढ़ि होती है तथा भाई-बहिनों का शुक्र मिलता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय द्वारा भी लाभ प्राप्त होता है।

सातवीं चतुर्दूषिण से नवमभाव को देखने से जातक अपने वृद्धार्थे द्वारा भाग्य तथा क्षमे की बूढ़ि करता है। वह बड़ा चतुर, योग्य तथा पर्द-अभी भी होता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलावेश

सिंह लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

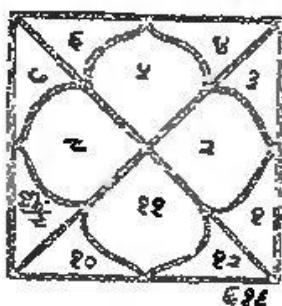


चौथे भाव में चतु राशिल को राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का माता के साथ सामान्य मतभेद रहता है, परन्तु भूमि एवं भवन का लाभ प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, सफलता तथा यश की प्राप्ति होती है। भाई-बहिन का सुख भी व्येष्ट मिलता है तथा रहन-सहन भी रहसों-जैसा होता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णती के ‘संचमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

सिंह लग्न : संचमभाव : शुक्र



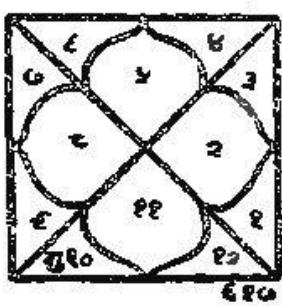
व्यक्ति राजनीति, सुखी, धनी, यशस्वी तथा चतुर होता है।

पाँचवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या, लुट्रि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। भाई-बहिन एवं पिता का सुख भी प्राप्त होता है। वह अपनी योग्यता एवं चातुर्य के बल पर सर्वेन्द्र सम्मानित भी होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से एक शद्धजभूत को देखने से परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ होता है तथा राज्य-पक्ष में भी सम्मान, सुख एवं लाभ मिलता है। ऐसा

‘सिंह’ लग्न की कृष्णती के ‘संचमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

सिंह लग्न : संचमभाव : शुक्र

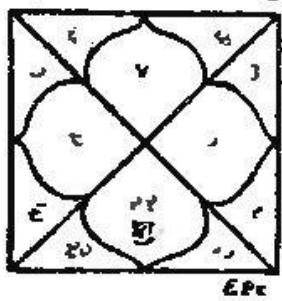


छठे भाव में मिथि जनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक बड़ा चतुर, प्रभावशाली तथा शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता है। पिता के साथ सामान्य भत्तेव रहता है, परन्तु राज्य-पक्ष में उन्नति एवं सफलता मिलती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से सुख और लाभ को प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों के बल पर सफलताएँ प्राप्त करता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णती के ‘संचमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

सिंह लग्न : संचमभाव : शुक्र

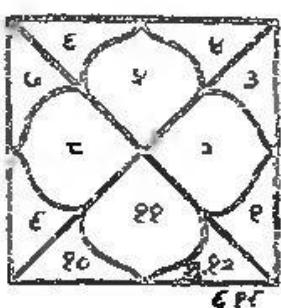


सातवें भाव में मिथि जनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्वीं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है तथा भाई-बहिन एवं पिता का सुख भी मिलता है। वह कृशलतापूर्वक गृहस्थी का संचालन करता है तथा यश प्राप्त करता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक को शारीरिक शक्ति, प्रभाव, मनोवल तथा हिम्मत बूढ़ि होती है। ऐसा व्यक्ति बहादुर तथा हुक्मत करने वाला होता है।

‘सह’ लगन की कुण्डली के ‘अष्टव्यवस्था’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

सिंह लगन : अष्टव्यवस्था : शुक्र

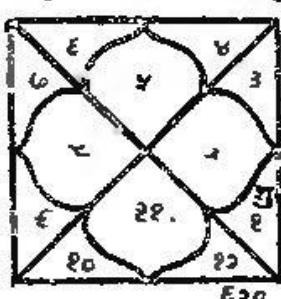


आठवें भाव में शत्रु शुरु की राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है तथा भाई-बहिन एवं पिता से सुख में कुछ लृटिपूर्ण सफलता मिलती है। दैनिक जीवन में वह दड़ प्रभावशाली रहता है। राज्य-पक्ष में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने के कारण धन के संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी दर्नी रहती है।

‘सह’ लगन की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

मिह लगन : नवमभाव : शुक्र



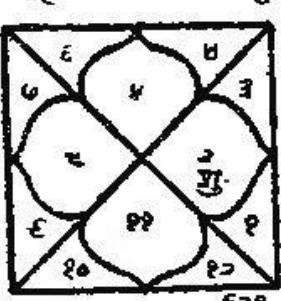
नवें भाव में शत्रु भगवान की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, परिश्रमी, यशस्वी, चतुर तथा हिम्मत वाला होता है।

‘सह’ लगन की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

सिंह लगन : दशमभाव : शुक्र

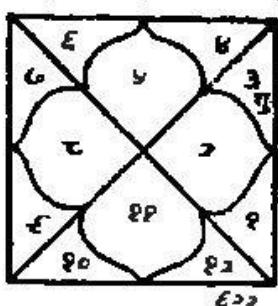


दसवें भाव में स्वराशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलताएँ मिलती हैं तथा धन, सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है। भाई-बहिनों का सुख भी पर्याप्त रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, मकान तथा भूमि का अच्छा सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति चतुर, प्रभावशाली, परिश्रमी तथा भाग्यदात् होता है।

'सिंह' लग्न को कूण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : शुक्र



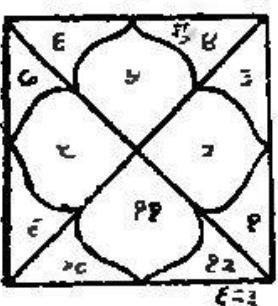
बारहवें भाव में मित्र कुप्र की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की अमदनी में खूब वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन एवं पिता का श्वेष सुख भी मिलता है ।

सातवीं शकुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का भी विशेष लाभ होता है ।

ऐसा व्यक्ति अपनी बाणी द्वारा सबको प्रभावित करने वाला, सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है ।

'सिंह' लग्न की कूण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : शुक्र



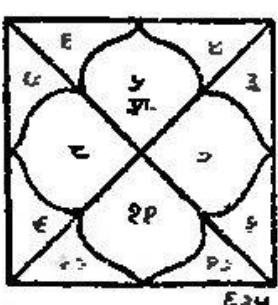
बारहवें भाव में शत्रु चतुर्मा की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खंड अधिक रहता है तथा बाहरी स्थान के सम्बन्ध से लाभ होता है । पिता तथा भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है ।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठमभाव की देखने के कारण जातक शत्रु-पक्ष में जातुर्म द्वारा प्रभावशाली बना रहता है तथा अपनी हिम्मत से सभी क्षणों में विजय प्राप्त करता है ।

'सिंह' लग्न में 'शनि'

'सिंह' लग्न को कूण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : शनि



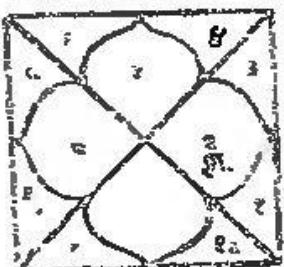
पहले भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की शारीरिक कष्ट, रोगादि होते हैं, परन्तु शत्रु-पक्ष पर कुछ प्रभाव बना रहता है । तीसरी उच्चदृष्टि से तुतीयभाव की देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है ।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के सप्तमभाव की देखने से कुछ कठिनहीयों के साथ स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है । देसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव

को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के लाभ, यश तथा सुख प्राप्त होता है ।

'सिंह' स्तम्भ की कुण्डली के 'अंदरस्त्राव' स्थित 'शनि' का फलावेश

सिंह लग्नः पञ्चमभावः शनि

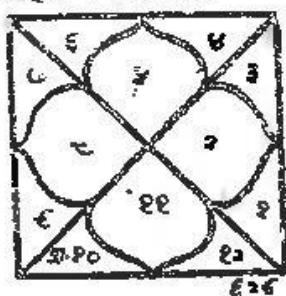


सातवीं शाव में अनु शुद्ध की राशि पर स्थित शनि के अभाव से जातक को विदा, बुद्धि एवं सत्त्वन के एक में कुछ परेशानी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्थिरांशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय से नुच भिलता है। इनी बुद्धिमती होती है।

सातवीं मिश्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से व्याय में बृद्धि होती है। दसवीं मिश्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन की बृद्धि होती है तथा सामान्य कौटुम्बिक चुद्ध भी भिलता है। ऐसा जातक दडा विषयी होता है।

'सिंह' स्तम्भ की कुण्डली के 'अष्टमस्त्राव' स्थित 'शनि' का फलावेश

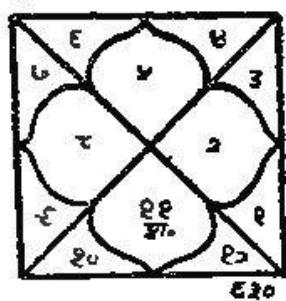
सिंह लग्न षष्ठ्यभावः शनि



दसवीं उच्चदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की बृद्धि होती है तथा भाई-बहिनीं का चुद्ध भिलता है। ऐसा व्यक्ति हिम्मत से कठिनाइयों पर विजय पाता है।

'सिंह' स्तम्भ की कुण्डली के 'सप्तमस्त्राव' स्थित 'शनि' का फलावेश

सिंह लग्नः सप्तमस्त्रावः शनि



से माता, भूमि तथा भवन के सुख में भी कमी आ आती है।

छठे भाव में स्वराशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक शत्रु-प्रभ एवं अभावी रहता है तथा नज़साल से श्री शक्ति प्राप्त करता है। दैनिक खर्च के मचावन्न में तथा स्त्री-पक्ष से कुछ असन्तोष रहता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से अष्टमस्त्राव को देखने के कारण पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है, परन्तु आय के विषय में कुछ अशान्ति रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से हादशभाव को देखने से खर्च अधिक होता है, जिससे परेशानी रहती है।

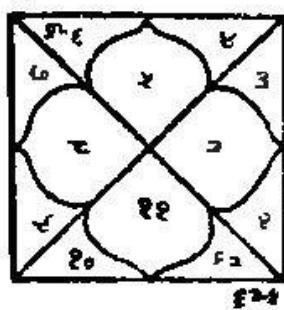
दसवीं उच्चदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की बृद्धि होती है तथा भाई-बहिनीं का चुद्ध भिलता है। ऐसा व्यक्ति हिम्मत से कठिनाइयों पर विजय पाता है।

सातवें भाव में स्वराशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष तथा दैनिक व्यवसाय में कठिनाइयों कमी रहती है। शत्रु-प्रभ पर प्रभाव रहता है। तीसरी नीचदृष्टि से नवमस्त्राव को देखने से धन तथा धन की कुछ हानि होती है तथा यश में कमी आती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं मरणसिक शक्ति का हास्य होता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव की देखने

‘सिंह’ लग्न को कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलावेश

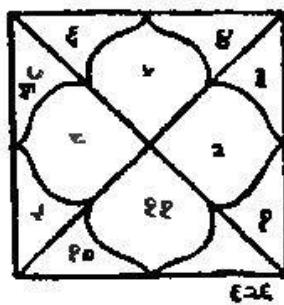
सिंह लग्न : द्वितीयभाव : शनि



आमदनी में बृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सुख-दुःखपूर्ण बना रहता है।

‘सिंह’ लग्न को कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलावेश

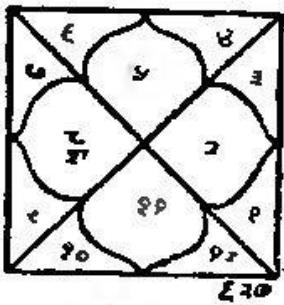
सिंहलग्न : तृतीयभाव : शनि



से आन्द्र तथा अर्थ के क्षेत्र में कमी आती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से ह्रादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण देरेशनी भी रहती है।

‘सिंह’ लग्न को कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलावेश

सिंहलग्न : चतुर्थभाव : शनि



राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। दसवीं दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शरीर में रोग रहता है तथा सौन्दर्य में कुछ कमी आती है।

दूसरे भाव में मित्र दूस की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में हानि-ज्ञान दोनों की प्राप्ति होती है। इसी तथा व्यवसाय के क्षेत्र में वास्तविक आती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पूरातन्त्र के विषय में असन्तोष रहता है। दसवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पूरातन्त्र के विषय में असन्तोष रहता है।

तीसरे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के प्रभाव तथा पराक्रम में बहुत बृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलनी है तथा स्त्री-पक्ष पर विशेष प्रभाव बना रहता है। दैनिक आमदनी भी अच्छी रहती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से सन्तान, विद्या तथा बृद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ रहती हैं।

सातवीं नीचदृष्टि से नवम भाव की देखने

से आन्द्र तथा अर्थ के क्षेत्र में कमी आती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से ह्रादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण देरेशनी भी रहती है।

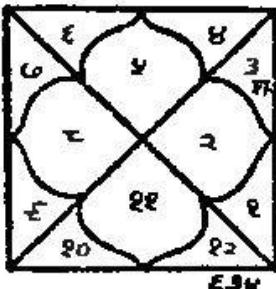
चौथे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में लृप्तिपूर्ण सफलता मिलती है। इसी तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी असन्तोष रहता है।

तीसरी दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव की देखने से शत्रु पक्ष पर प्रभाव रहता है, परन्तु कुछ कठिनाइयों के साथ शत्रुओं पर विजय मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। दसवीं दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शरीर में रोग रहता है तथा सौन्दर्य में कुछ कमी आती है।

‘सिंह’ लग्न की कूण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

सिंहलग्न : एकादशभाव : शनि



राहुहरवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित

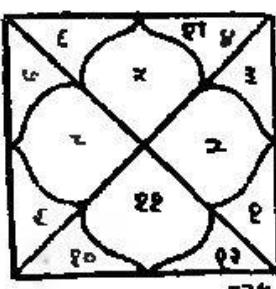
शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है। शत्रु-पक्ष से भी विशेष लाभ होता है। कुछ परेशानियों के साथ स्त्री का सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी अच्छी सफलता मिलती है।

तीसरी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा रोग का शिकार बनना पड़ता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव की देखने से सत्तान एवं विद्या-शुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है।

दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत्त्व में कमी आती है तथा आमु के विषय में भी चिन्ताएं बढ़ आती है।

‘सिंह’ लग्न की कूण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

सिंहलग्न : द्वादशभाव : शनि



बारहवें भाव में शत्रु धन्दमा की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी संबंधों से कुछ लाभ होता है। शत्रुपक्ष से परेशानी भी मिलती है।

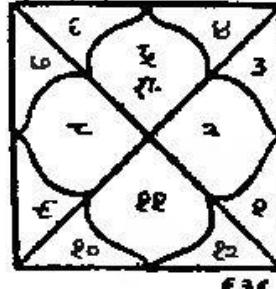
तीसरी मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन-जन को बुद्धि के लिए विशेष परिष्रम करना पड़ता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में बष्ठभाव की देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। दसवीं नीच-दृष्टि से नवमभाव की देखने से आम्बोन्लिम में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म की भी हानि होती है। ऐसा व्यक्ति स्त्री-पक्ष तथा व्यवसाय से कष्ट पूँजे बाला, अपयशी तथा रोगी होता है।

‘सिंह’ लग्न में ‘राहु’

‘सिंह’ लग्न की कूण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

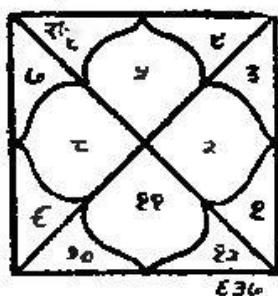
सिंहलग्न : प्रथमभाव : राहु



पहले भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव के जातक के शारीरिक सौन्दर्य सथा सुख में कमी आती है तथा कभी-कभी द्वोर कष्टों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों सथा साहस के सहारे लागे बहता है तथा भीतरी चिन्मायों से चिन्मित भी बना रहता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णसी के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

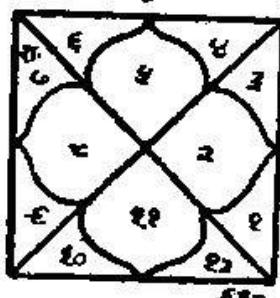
सिंहलग्न : तृतीयभाव : राहु



इसरे भाव में मिन्द बुद्धि को राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता निलंती है। कभी-कभी उसे घोर आर्थिक कष्ट भी उठाना पड़ता है तथा शृण-श्रस्त भी होना पड़ता है तो कभी आकस्मिक धन का लाप भी होता रहता है। ऐसा व्यक्ति चतुर तथा चालाक होता है तथा धन-वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णसी के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

सिंहलग्न : तृतीयभाव : राहु

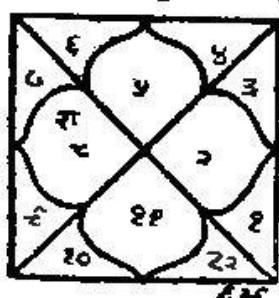


तीसरे भाव में मिन्द शुक की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है तथा आई-बहिन की ओर से कुछ कष्ट प्राप्त होता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, दैर्यवान् तथा परिश्रमी होता है। वह शुप्त युक्तियों द्वारा गंभीरतापूर्वक अपनी स्वार्थ-सिद्धि करता है तथा दृढ़ निश्चयी होता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णसी के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

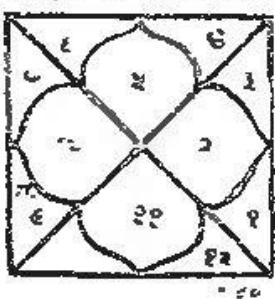
सिंहलग्न : चतुर्थभाव : राहु



चौथे भाव में शशु भंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की मातृ पक्ष से कष्ट मिलता है तथा शूमि, अवन आदि के सुख में बाधा उत्पन्न होती है। उसे घरदेश में जाकर रहना पड़ता है। परन्तु वह हिम्मत, शुप्त युक्ति एवं ध्वीरज के साथ सुख के भावनों की खुटाता तथा संकटों का सामना करता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णसी के ‘व्यवसाय’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

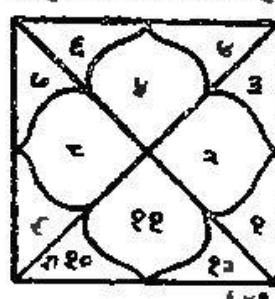
सिंह लग्न : पञ्चमभाव : राहु



पाँचवें भाव में शत्रु शुद्ध को राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को सम्भान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या की कमी रहती है। वह वृद्धि-वल से अपनी अयोग्यता को छिपाने का प्रयत्न करता है। परन्तु उसकी वाणी में विनाशता, शिष्टता एवं सत्य का अभाव रहता है। वह गुप्त युक्तियों से स्वार्थ-सिद्धि करता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णसी के ‘व्यवसाय’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

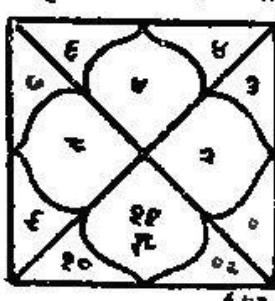
सिंह लग्न : षष्ठभाव : राहु



छठे भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शुक्ति-बल से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे शत्रुओं द्वारा अधिक परेशान भी किया जाता है। वह बड़ा हिम्मती, बहादुर, धैर्यवान् तथा साहसी होता है। अगड़े के समय वह अपनी बहादुरी का प्रदर्शन करता है। उसे अपनी ननसाल के पक्ष से हानि भी उठानी पड़ती है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णसी के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

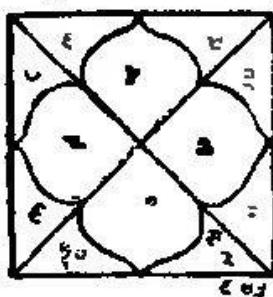
सिंह लग्न : सप्तमभाव : राहु



सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी और परेशानियाँ आती रहती हैं। परन्तु वह बड़ी हिम्मत तथा धैर्य के साथ उनका मुकाबला करता है। कभी-कभी संकटों से बहुत घिर जाता है, किन्तु गुप्त युक्तियों द्वारा उन्हें पार कर जाता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

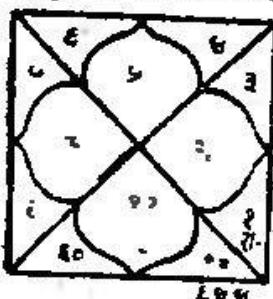
सिंह लग्न : अष्टमभाव : राहु



आठवें भाव में ज्यून शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की अपने जीवन में अनेक बार शृत्यु-तुल्य कट्टों का सामना करना पड़ता है। उसके पेट के निम्न भाग में विकार रहता है तथा उसे चिन्ताएं एवं परेशानियाँ घेरे रहती हैं। उसे पूरातत्व की हानि भी उठानी पड़ती है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

सिंह लग्न : नवमभाव : राहु

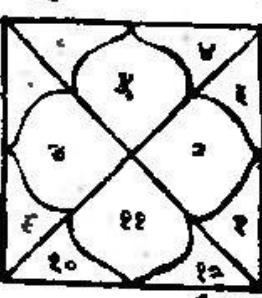


नवें भाव में ज्यून मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आन्ध्रोन्तलि में अनेक बार स्फायरटें आती हैं तथा परेशानियाँ उठ जड़ी होती हैं। उसे धर्म-पालन में अलजि रहती है।

ऐसा व्यक्ति अपने भाष्य को बृद्धि के लिए अनेक प्रकार की युक्तियों का सहारा लेता है तथा दैर्यवान्, हिमती एवं साहसी होने के कारण परेशानियों की हटाने में कुछ सफल भी हो जाता है।

‘सिंह’ लग्न की कृष्णली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

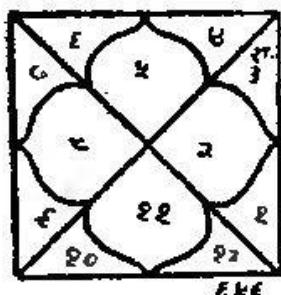
सिंह लग्न : दशमभाव : राहु



दसवें भाव में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की पिता के सुख में कमी रहती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परन्तु युग्म युक्तियों के बल पर वह अनेक कठिनाइयों की पार कर जाता है तथा कुछ उम्मति भी प्राप्त कर लेता है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

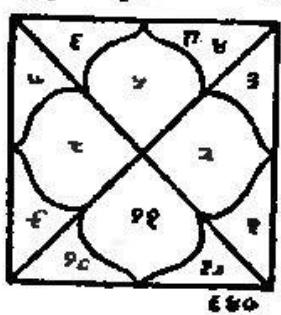
सिंहलग्न : एकादशभाव : राहु



ग्यारहवें भाव में मिल बुध की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव के जातक की आमदनी में बहुत बुद्धि होती है तथा कभी-कभी आकस्मिक अन-साम भी होता है। वह अपने संयं, साहस, परिश्रम तथा युक्त युक्तियों के बल पर लाय की बढ़ाता रहता है, परन्तु कभी-कभी उसे हानि भी उठानी पड़ती है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

सिंहलग्न : द्वादशभाव : राहु



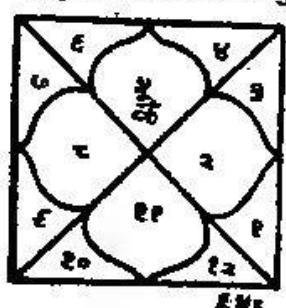
बारहवें भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपना सर्वे चलाने के लिए हर समय चिन्तित रहना पड़ता है तथा कभी-कभी घोर कष्टों का सामना भी करना पड़ता है।

उसे बाहरी सम्बन्धों से भी हानि पहुँचती है। परन्तु युक्त युक्तियों, परिश्रम तथा साहस के बल पर वह बोडी-बहुत सफलता भी प्राप्त कर सकता है।

‘सिंह’ लग्न में ‘केतु’ का फलादेश

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘अथमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

सिंहलग्न : अथमभाव : केतु

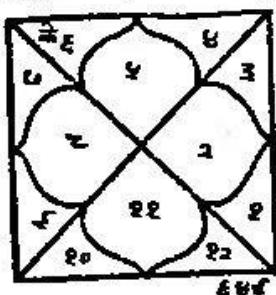


पहले भाव में शत्रु सर्वे की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कभी बाती है तथा कभी बाहरी चोट भी लगती है, जिसका शरीर पर स्थायी चिह्न धन जाता है।

ऐसा व्यक्ति भीतर के काफी चिन्तित रहता है तथा सुख पाने के लिए कठिन परिश्रम करता है।

‘सिंह’ लग्न की कूण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

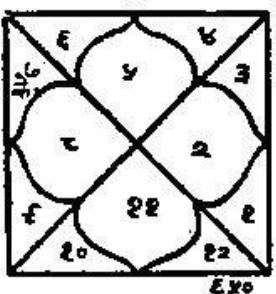
सिंह लग्न: द्वितीयभाव: केतु



द्वासरे भाव में मिन्द बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की धन-संचय में कमी रहती है, जिसके कारण उसे व्यनेक कठिनाइयों तथा विनाशों का सामना करना पड़ता है। वह धन-बृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों के व्यावय से प्रतिष्ठा की बढ़ाने का प्रयत्न भी करता है। उसे पूर्ण कौटुम्बिक सुख भी प्राप्त महीं होता है।

‘सिंह’ लग्न की कूण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

सिंह लग्न: तृतीयभाव: केतु

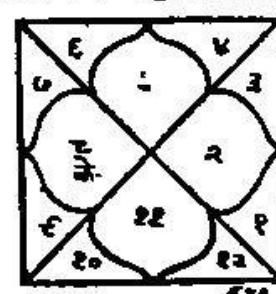


तीसरे भाव में मिन्द शुक की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की आई-विहिनों से कष्ट प्राप्त होता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति निःठ, साहसी, पराक्रमी, परिश्रमी, चतुर तथा अकिञ्चाली होता है, साथ ही हठी तथा लापरवाही भी रहता है। वह प्रत्येक कार्य की अपने बाहुदल से ही पूरा करता है।

‘सिंह’ लग्न की कूण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

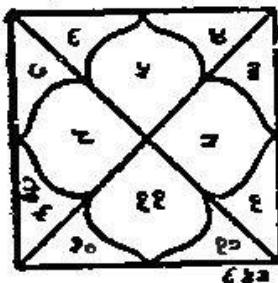
सिंह लग्न: चतुर्थभाव: केतु



चौथे भाव में शाशु शंख की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की माता-पा के सुख में कमी आती है। घरेलू सुख में अशान्ति रहती है तथा भूमि-भवन का सुख भी महीं मिलता। उसे परदेश में जाकर रहना पड़ता है।

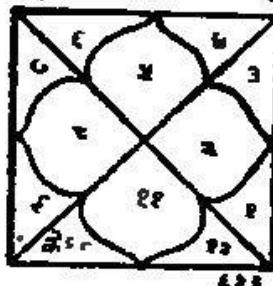
ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रमी तथा गुप्त युक्तियों का प्रयोग करने वाला होता है, किर भी प्रायः परेजान ही बना रहता है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘केतु’ का कलावेश
सिंह लग्न : पंचमभाव : केतु



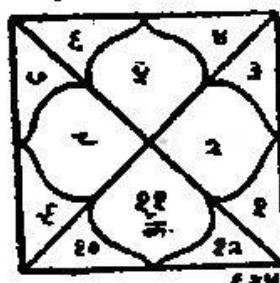
पांचवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक की सत्तानन्दना से शक्ति मिलती है, परन्तु कभी-कभी कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। विद्या-मुद्दि के क्षेत्र में परिश्रम करने पर भी अधिक सफलता नहीं मिलती। ऐसा अविकृत स्वर्यं की बुद्धिमान् भी समझता है, परन्तु उसकी बाधी में प्रभाव नहीं होता।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘केतु’ का कलावेश
सिंह लग्न : पंचमभाव : केतु



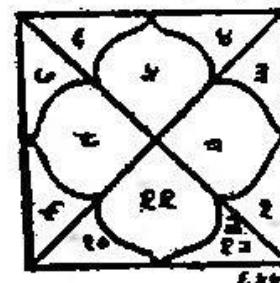
छठे भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम द्वारा शत्रु पर विजय प्राप्त करता है। वह बड़ा हिम्मती तथा धैर्यवान् होता है। गुप्त युक्तियों तथा आन्तरिक साहस के बल पर वह निरन्तर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है तथा युसीबतों आगे पर भी बढ़ता नहीं है। उसे अपने नन्दाताल पक्ष से हानि भी उठानी पड़ती है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘केतु’ का कलावेश
सिंह लग्न : सप्तमभाव : केतु



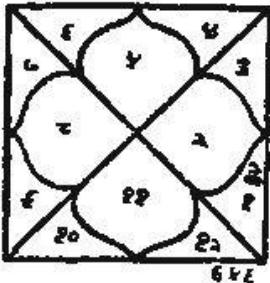
सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की स्त्री-सुख तथा अवसाय-पद्धति में कमी का सामना करना होता है। वह अपने साहस, दैर्य तथा गुप्त युक्तियों के बल पर गृहस्थी की चलाता है। कभी-कभी बड़ी युसीबतों में भी फैसला है, परन्तु दैर्य तथा साहस की नहीं छोड़ता। और अन्त में सफलता पाकर ही रहता है। उसकी युक्तिन्द्रिय में विकार होने की संभावना भी रहती है।

‘सिंह’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘केतु’ का कलावेश
सिंह लग्न : अष्टमभाव : केतु

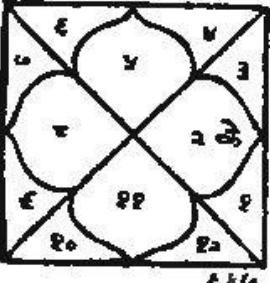


आठवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को जीवन में बेतेक बार भूस्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा पूरातत्त्व की हानि भी उठानी पड़ती है। वह सदैव चिन्तित रहता है, फिर भी दैर्य और साहस की नहीं छोड़ता। और परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर वह कठिनाइयों पर विजय पाता है। उसके पेट के निम्न भाव में कुछ विकार भी रहता है।

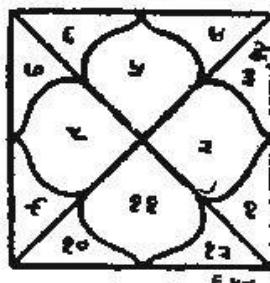
'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश
सिंह लग्न: नवमभाव: केतु



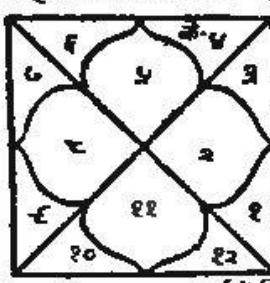
'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश
सिंह लग्न: दशमभाव: केतु



'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश
सिंह लग्न: द्वादशमभाव: केतु



'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश
सिंह लग्न: द्वादशमभाव: केतु



नवे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बाधाएँ आती हैं तथा धर्म के पक्ष में श्री कमजोरी रहती है।

वह कठिन परिश्रम करने पर श्री वशस्त्री नहीं बन पाता तथा कभी-कभी और संकटों में पड़ जाता है। भाग्यहीन होने पर श्री वह अपने परिश्रम, धैर्य, साहस तथा गुप्त मुक्तियों के बल पर कुछ सफलता एवं शक्ति प्राप्त कर लेता है।

इसवें भाव में मित्र शुक की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की पिता से कुछ कष्ट बिलसा है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए और परिश्रम करना पड़ता है।

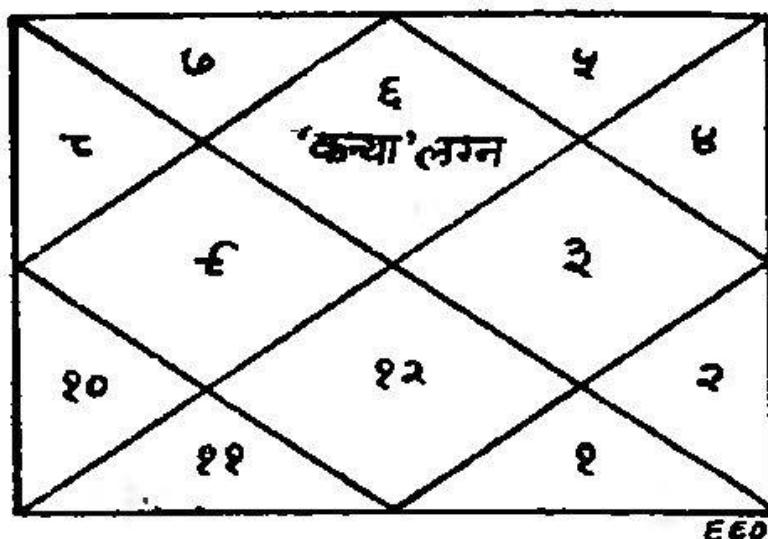
वह अपने धैर्य, साहस, चातुर्य, बुद्धि-बल तथा परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ता है और त्रुक्ती भी करता है।

ग्याहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की धन की कमी का दुःख दिखेव रूप से बनुभव होता है तथा वह अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए और परिश्रम तथा संघर्ष करता है। वह लाभ उठाने के लिए उचित-अनुचित का विचार श्री नहीं करता तथा गुप्त मुक्तियों एवं धैर्य के बल पर कठिनाइयों की पार कर लेता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

बारहवें भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपने धर्म की बड़ी कठिनाई से चला पाता है। उसे मानसिक विनाश-तथा परेशानियाँ द्वारा रहती हैं। वह अनेक बार संकटों तथा हानियों का सामना करता है, परन्तु अपने गुप्त धैर्य, मुक्तिबल, परिश्रम तथा साहस के बल पर उस कठिनाइयों पर विजय पाता हुआ अपने काम को औसतसे चलाता रहता है।

‘कन्या’ लग्न



[‘कन्या’ लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न घरों में स्थित विभिन्न घरों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

‘कन्या लग्न’ का फलादेश

‘कन्या’ लग्न में ज्येष्ठ लेने वाले जातक का भरीर सामान्य अवका स्थूल और सुन्दर होता है। इसकी जीवं बड़ी-बड़ी होती हैं। यह कफ एवं पित्त प्रकृतिवाला, सत्यभावी, प्रियवादी, गंभीर, नाशुक-मिजाज, अपने मन की बात की छिपाने वाला, सदैव प्रसन्न रहने वाला, चतुर, काम-क्रिड़ा-कुशल, गोवावी, भोयी, विद्यारकील, डरपोक, यात्रा-प्रेमी, गणितज्ञ, धर्म में रुचि रखने वाला तथा अनेक प्रकार के शुणों तथा कसा-कौसलों से गुप्त होता है।

इसे सुन्दर स्त्री प्राप्त होती है तथा कन्या-सन्तानि अधिक होती है। यह आत्म-द्रोही तथा स्त्री द्वारा पराजित भी होता है।

इस सम्बन्ध वाला जातक वात्यावस्था में सुखी, यथ्यमावस्था में सामान्य तथा अन्तिमावस्था में कुछ भी गंभीर वाला होता है। इसका आयोदय २४ से ३६ वर्ष की आयु के बीच होता है। इसी अवधि में यह अपने धर्म तथा ऐसव्यं की वृद्धि करता है, परन्तु यह अन्त तक नहीं टिक पाता।

‘कन्या’ लगन वालों की वपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न शावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६१ से ७६८ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।



‘कन्या’ लगन में ‘सूर्य’ का फलादेश

१—‘कन्या’ लगन वालों की वपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न शावों में स्थित ‘सूर्य’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६१ से ६७२ के बीच देखना चाहिए।

२—‘कन्या’ लगन वालों को वपनी गोचर-कुण्डली के विभिन्न शावों में स्थित ‘सूर्य’ का अस्थायी फलादेश निम्नसिद्धित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में ‘सूर्य’—

- (क) ‘अष्ट’ राशि पर हो तो संख्या ६६१
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ६६२
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ६६३
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ६६४
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ६६५
- (ज) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ६६६
- (झ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ६६७
- (झ) ‘वृत्सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ६६८
- (झ) ‘घनु’ राशि पर हो तो संख्या ६६९
- (झ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या ६७०
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ६७१
- (ठ) ‘ओन’ राशि पर हो तो संख्या ६७२

‘कन्या’ लगन में ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

१—‘कन्या’ लगन वालों की वपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न शावों में स्थित ‘चन्द्रमा’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७३ से ६८४ के बीच देखना चाहिए।

२—‘कन्या’ सरन वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘चन्द्रमा’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन ‘चन्द्रमा’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ६७३
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ६७४
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ६७५
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ६७६
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ६७७
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ६७८
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ६७९
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या ६८०
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या ६८१
- (झ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या ६८२
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ६८३
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर हो तो संख्या ६८४

‘कन्या’ सरन में ‘मंगल’ का फलादेश

१—‘कन्या’ सरन वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘मंगल’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८५ से ६९६ के बीच देखना चाहिए।

२—‘कन्या’ सरन वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘मंगल’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में ‘मंगल’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ६८५
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ६८६
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ६८७
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ६८८
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ६८९
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ६९०
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ६९१
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या ६९२
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या ६९३
- (झ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या ६९४
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ६९५
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर हो तो संख्या ६९६

‘कन्या’ लग्न में ‘बुध’ का फलादेश

१—‘कन्या’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘बुध’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६७ से ७०८ के बीच देखना चाहिए।

२—‘कन्या’ लग्न वालों को धोषर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘बुध’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में ‘बुध’—

- (क) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ६६७
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ६६८
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ६६९
- (घ) ‘कक्ष’ राशि पर हो तो संख्या ७००
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ७०१
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ७०२
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ७०३
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या ७०४
- (झ) ‘घनु’ राशि पर हो तो संख्या ७०५
- (झ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या ७०६
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ७०७
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर हो तो संख्या ७०८

‘कन्या’ लग्न में ‘गुरु’ का फलादेश

१—‘कन्या’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘गुरु’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७०९ से ७२० के बीच देखना चाहिए।

२—‘कन्या’ लग्न वालों की धोषर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘गुरु’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दर्श में ‘गुरु’—

- (क) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ७०९
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ७१०
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ७११

- (ध) 'कह' राशि पर हो तो संख्या ७१२
- (इ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७१३
- (ब) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७१४
- (च) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७१५
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७१६
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७१७
- (झ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७१८
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७१९
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७२०

'कन्या' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७२१ से ७३२ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

- (क) 'वैष' राशि पर हो तो संख्या ७२१
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७२२
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७२३
- (ध) 'कह' राशि पर हो तो संख्या ७२४
- (इ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७२५
- (ब) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७२६
- (च) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७२७
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७२८
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७२९
- (झ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७३०
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७३१
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७३२

'कन्या' लग्न में 'शनि' का फलादेश

३—'कन्या' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७३३ से ७४४ के बीच देखना चाहिए।

२—‘कन्या’ सान बालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘शनि’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में ‘शनि’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ७३३
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ७३४
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ७३५
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ७३६
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ७३७
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ७३८
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ७३९
- (ঃ) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या ७४०
- (ঁ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या ७४১
- (ং) ‘भूकर’ राशि पर हो तो संख्या ७४২
- (ঃ) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ७४৩
- (ঁ) ‘মীন’ राशि पर हो तो संख्या ७४৪

‘कन्या’ लग्न में ‘राहु’ का फलादेश

१—‘कन्या’ सान बालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में ‘राहु’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७४५ से ७५६ के बीच देखना चाहिए।

२—‘कन्या’ सान बालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘राहु’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में ‘राहु’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ७४५
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ७४६
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ७४७
- (ঃ) ‘কর্ক’ রাশি পর হো তো সংখ্যা ৭৪৮
- (ঃ) ‘সিংহ’ রাশি পর হো তো সংখ্যা ৭৪৯
- (চ) ‘কন্যা’ রাশি পর হো তো সংখ্যা ৭৫০
- (ছ) ‘তুলা’ রাশি পর হো তো সংখ্যা ৭৫১
- (ঃ) ‘বৃশ্চিক’ রাশি পর হো তো সংখ্যা ৭৫২
- (ঁ) ‘ধনু’ রাশি পর হো তো সংখ্যা ৭৫৩
- (ং) ‘ভূকর’ রাশি পর হো তো সংখ্যা ৭৫৪
- (ঃ) ‘কুম্ভ’ রাশি পর হো তো সংখ্যা ৭৫৫
- (ঁ) ‘মীন’ রাশি পর হো তো সংখ্যা ৭৫৬

'कन्या' लगन में 'केतु' का फलादेश

१—'कन्या' लगन वालों तो अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७५७ से ७६८ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लगन वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

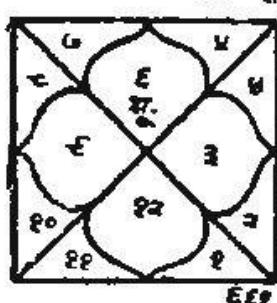
जिस वर्ष में 'केतु'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७५७
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७५८
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७५९
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७६०
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७६१
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७६२
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७६३
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७६४
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७६५
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७६६
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७६७
- (ठ) 'भीन' राशि पर हो तो संख्या ७६८

'कन्या' लगन में 'सूर्य'

'कन्या' लगन की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लगन : प्रथमभाव : सूर्य

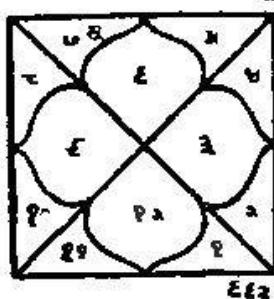


पहले भाव में जिस दुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रथम द्वाव से जातक दुर्बल शरीर वाला, खूब खर्च करने वाला तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त करने वाला होता है। परन्तु कभी-कभी खर्च के कारण उसे परेशानी उठानी पड़ती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ हानि का सामना भी करना पड़ता है। सधा असन्तोष भी बना रहता है।

‘कन्या’ लग्न की कूष्मण्डी के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

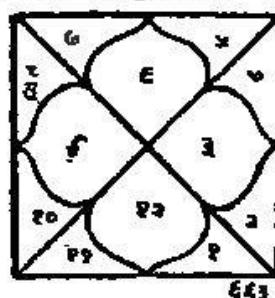


दूसरे भाव में शनि ‘गुरु’ की राशि पर स्थित चौथे के सूर्य के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब की हानि होती है। बाहरी स्थानों से आर्थिक लाभ कम होता है, तथा खर्च के कारण परेशानी भी होती है।

सातवीं द्वृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की पुरातत्त्व तथा जायु का लाभ प्राप्त होता है।

‘कन्या’ लग्न की कूष्मण्डी में ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

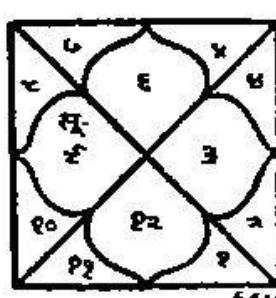


तीसरे भाव में जिस ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु शाई-बहिन के सुख में कुछ न्यूनता आती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ द्वारा जीवन में सफलताएँ प्राप्त करता है तथा अत्यन्त हिम्मती और प्रभावशाली होता है।

सातवीं शत्रुद्वृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सामान्य ढंग से अतीत होता है।

‘कन्या’ लग्न की कूष्मण्डी में ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

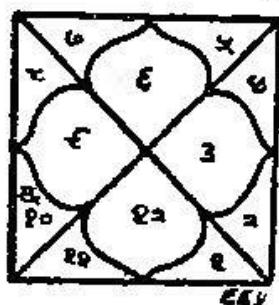


चौथे भाव में मिथि ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा अवन के सुख में कमी रहती है। उसे बाहरी स्थानों से सुख तथा खर्च के लिए धन प्राप्त होता है।

सातवीं मिथिद्वृष्टि से दसम भाव को देखने के कारण मिता, राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से भी कुछ असन्तोष रहता है।

‘कल्या’ लग्न की काल्पनिक में ‘दंतमधार’ स्थित ‘सुर्य’ का फलादेश

कन्या सर्व : पंचमसावृ : सर्वे

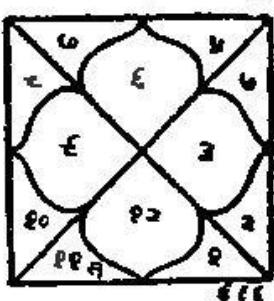


पौचवें भाव में यतु लनि की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की विद्या, बृद्धि तथा सन्तान में कभी रहती है तथा खर्च चलाने के लिए दिवाग में परेशानी रहती है ।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव का देखने के कारण सामान्य लाभ होता रहता है। ऐसा व्यक्ति चक्रवर्ती बातें करने वाला तथा अंचल होता है।

‘काम्पा’ लाल की काम्पसी में ‘बल्टभाव’ स्थित ‘सुर्य’ का फ्लावेश

कन्या लिखनः षष्ठ्यमावः सर्वे

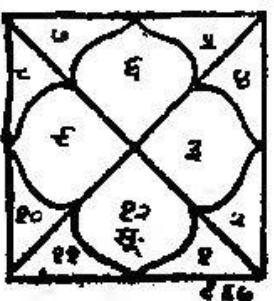


छठे भाव में शत्रु 'जनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शत्रुओं से परेकान रहता है तथा अधिक खर्च करके ही उन पर ब्राह्मण स्थापित कर पाता है। वह परिश्रम द्वारा अपना खर्च चलाता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सामान्य लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादशभाव की देखने के कारण खारे अधिक बना रहता है ।

‘कन्या’ स्त्री की काम्पसी में ‘सप्तममात्र’ स्थित ‘सुर्य’ का फलावेश

कन्यासर्गः सप्तमशावः सर्थै

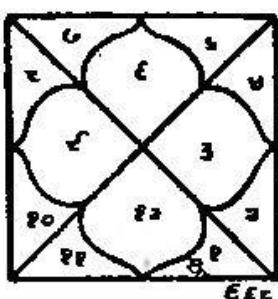


यथा सातवें भाव में भिन्न 'गुरु' की राजि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से आतक की स्वीं सथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है। बाहरी स्थानों से लाभ के अतिरिक्त हानि भी होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमधाव की देखने के जातक का शरीर दुर्बल होता है तथा वह स्वधाव से चंचल, जोधी एवं धन की ओर से चिन्तित बना रहने वाला होता है।

‘कन्या’ सम्म की कृष्णसी में ‘वस्त्रमाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलावेश

कन्या लग्नः वस्त्रमावः सूर्य

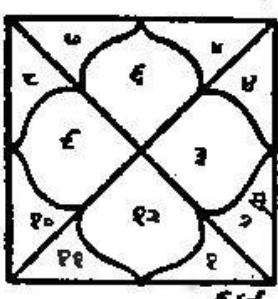


बाठें भाव में भित्र ‘मंगल’ की राशि पर स्थित उच्च ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्व में कुछ कठिनाइयों के साथ दृढ़ि होती है। खर्च की अधिकता एवं बाहरी सम्बन्धों से लाप होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से जन की हानि होती है एवं कौटुम्बिक सुख में कमी आती है। ऐसी गृह-स्थिति का जातक जन के विषय में बहुत चिन्तित बना रहता है।

‘कन्या’ सम्म की कृष्णसी में ‘वस्त्रमाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलावेश

कन्या लग्नः वस्त्रमावः सूर्य

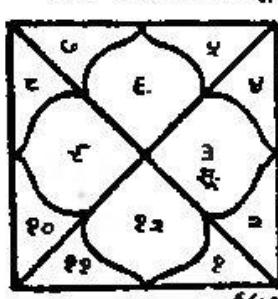


बर्वें भाव में काल ‘सूर्य’ की राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक के आम्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी रहती है। ऐसे लोग प्रायः नास्तिक होते हैं। उन्हें बाहरी सम्बन्धों से लाप होता है।

सातवीं भित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से आई-बहिन के सुख में कमी रहती है तथा पराक्रम की भी अधिक दृढ़ि नहीं होती।

‘कन्या’ सम्म की कृष्णसी में ‘दस्तमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलावेश

कन्या लग्नः दस्तमभावः सूर्य

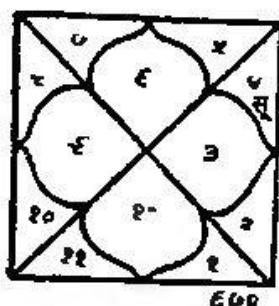


दसवें भाव में भित्र ‘कुम्भ’ की राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक की राज्य, पिता तथा अवसाध के क्षेत्र में कठिनाइयों आती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाप होता है।

सातवीं भित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि तथा जन के सुख में भी कुछ कमी बनी रहती है।

‘कथा’ सम की कहानी में ‘एकादशमव’ स्थित ‘सुर्य’ का चलावेश

कन्या लग्नः एकादशभावः सुर्य

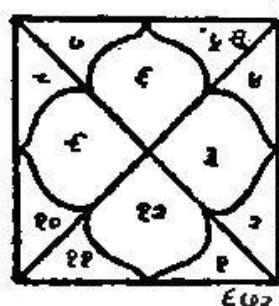


गयारहवें भाव में भिल 'चम्पमा' की राजि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की पर्याप्त आमदनी होते हुए भी खर्च चलाने की चिन्ता बनी रहती है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से साझ, सुख तथा सम्मान प्रियता है।

सातवीं भाग वृष्टि से पंचमभाग की देखने से सन्तान दाथा विद्या-वृद्धि का लेख भी कमज़ोर रहता है।

‘कृष्ण’ सन्मान की कथाओं में ‘हावदारामात्र’ स्थित ‘सुर्य’ का फलावेश

कन्यालर्तः ह्रदिसभाषः सर्वं



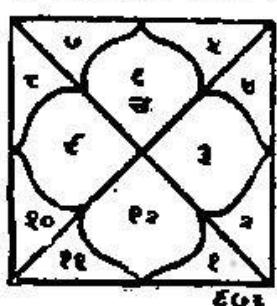
वाहके भाव में स्वराजि-स्थित सूर्य के प्रभाव जातक का अर्थ अधिक रहता है, परन्तु वाहरी स्थानों से लाभ एवं सम्मान भी मिलता है।

सातवीं शताब्दिय से वृषभाव को देखने के कारण शताब्दिए एवं दोग आदि से काफी परेशानी होती है तथा इन्हीं विधिक होता है। फिर जी आतक अपना साहस बनाये रख कर शत्रु-पक्ष पर व्राभाव स्थापित कर लेता है।

‘कन्या’ लाज में ‘चलसा’

‘कल्प्या’ समूह की कार्यक्रमी में ‘प्रधानमंत्री’ स्थित ‘कल्प्या’ का फलावेश

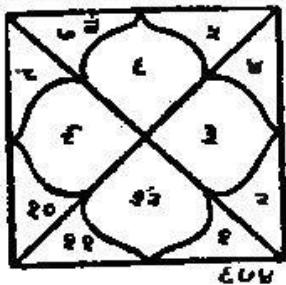
कम्यालग्नः प्रथमप्रावः धन्तः



पहुँचे आव में भित्ति बुध की राखि पर स्थित
चन्द्रमा के प्रभाव से जासक छी शारीरिक सौन्दर्य,
प्रसन्नता एवं मनोवल का लाभ होता है। वह परिषम
द्वारा धन तथा यश कमाता है और प्रभावशाली
बनता है।

सातवीं भित्रदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से
सुन्दरी स्त्री मिलती है तथा स्त्री-पक्ष एवं व्यवसाय से
थेष्ट जाभ छोड़ा है ।

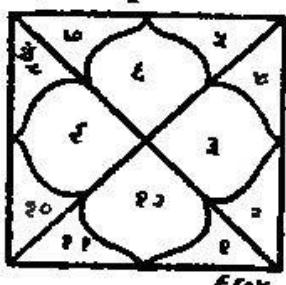
इन्या' समझ की कृष्णली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश
न्या लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र



दूसरे भाव में जन्म 'मुकु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के धन-कुटुम्ब में बूढ़ि होती है तथा धन का संचय भी होता है।

सातवीं मित्र-दूषि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत एवं जायु में बूढ़ि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, सम्पन्न तथा यशस्वी जीवन विताता है।

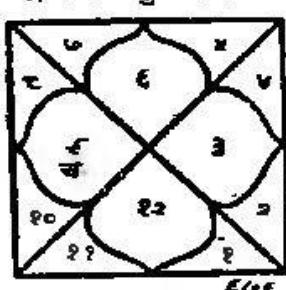
इन्या' समझ की कृष्णली में 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश
न्या लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र



तीसरे भाव में मित्र 'मंसल' की राशि पर नीच के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, धनोपार्जन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

सातवीं उच्च दूषि से नवमभाव को देखने से परिव्रम द्वारा आम्योन्ति होती है तथा धर्म-पालन में भी दृष्टि बनी रहती है।

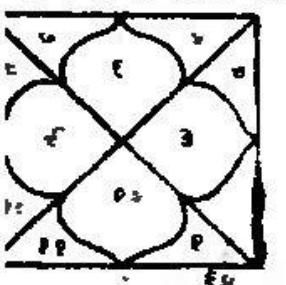
इन्या' समझ को कृष्णली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश
न्या लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र



चौथे भाव में मित्र 'भुर' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं धन वादि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है और सर्वेव प्रसन्न बना रहता है।

सातवीं मित्रदूषि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा अवसाय के लेन में भी यश, सम्मान, सफलता, उन्नति एवं प्रभाव की बूढ़ि होती है।

इन्या' समझ की कृष्णली में 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश
न्या लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

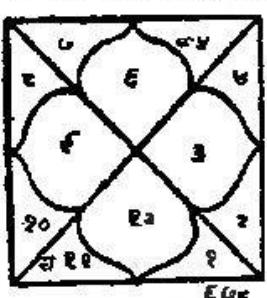


पाँचवें भाव में जन्म 'सनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विद्वा-बूढ़ि पंक्ष की बूढ़ि होती है तथा उसी के द्वारा धन-साम भी होता है।

सातवीं दूषि से स्वराशि के एकादश-ताव को देखने से आमदनी में भी बूढ़ि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी जीवन विताता है।

‘कन्या’ सागर की काष्ठली के ‘बछमाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : चार्दू

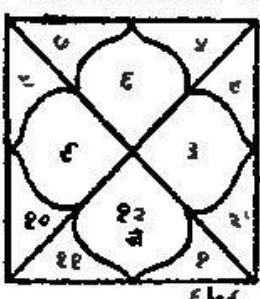


छठे भाव में शत्रु 'शानि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष द्वारा मानसिक अशान्ति बनी रहती है, परन्तु वह अपनी विनम्रता द्वारा शत्रु-पक्ष पर सफलता पाता है और उससे लाभ भी उठाता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से साथ भी मिलता रहता है।

‘कन्या’ समूह की काम्पायली के ‘सप्तममात्र’ स्थित ‘बन्द्रना’ का फसादेश

कल्यालानि: सप्तमस्तावः षष्ठी

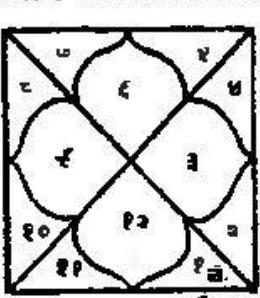


सातवें भाव में मित्र 'गुरु' को राज्य पर स्थित 'चन्द्रपाता' के प्रभाव से जातक को सुन्दर पल्ली मिलती है, भोगादि के क्षेष्ठ साधन प्राप्त होते हैं तथा व्यवसाय में भी सफलता मिलती है।

सातवीं भिन्नदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, शक्ति एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। ऐसा जासक सुन्दर, स्वस्थ, सुखी होता सम्भव होता है।

‘कल्या’ साम की कपड़ों में ‘अष्टमशाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का कलावेश

कांगड़ा वार्ता - अख्यायकाव्य - च४४

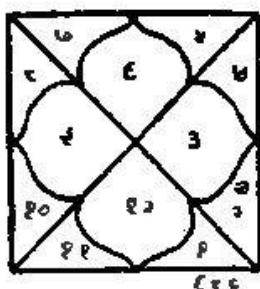


बाठवें भाव में गिर्व 'मंगल' की राजि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की दीर्घियु एवं पुरातत्त्व का साथ होता है। भाव के सातवीं में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से अन तथा कठमर्ज का सब भी मिलता है।

‘कन्या’ स्थगन की कुण्डली में ‘नवमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

कन्या लग्नः नवमभावः चन्द्र

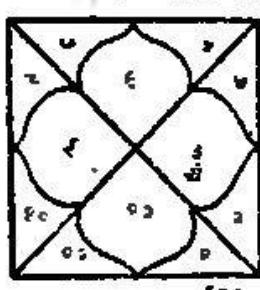


नवमें भाव में सामान्य मित्र ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को धन का ब्येष्ट लाभ होता है तथा आकर्षित दैवी सहायताएँ भी मिलती रहती हैं।

सातवीं नीच-दूषित से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी आती है तथा पराक्रम की भी अधिक वृद्धि नहीं हो पाती।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘दशमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

कन्या लग्नः दशमभावः चन्द्र

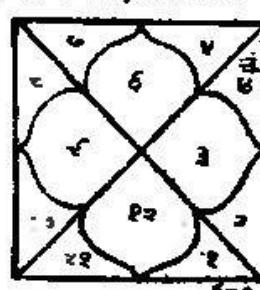


दसवें भाव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ से प्रभाव से जातक को राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष से पूर्ण लाभ तथा सम्मान मिलता है। ऐसा व्यक्ति बनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

सातवीं मित्रदूषित से चतुर्थभाव को देखने से भूमि, अवन तथा माता का सुख भी पर्याप्त मिलता है।

‘कन्या’ स्थगन की कुण्डली में ‘एकादशभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

कन्या लग्नः एकादशभावः चन्द्र

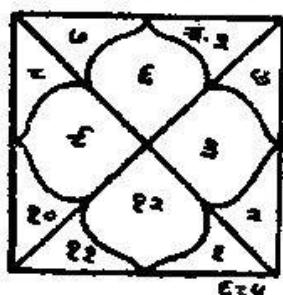


म्यारहवें भाव में स्वराशिपस्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आमदानी अच्छी रहती है और वह अपने मनोबल द्वारा पर्याप्त धन कमाता है।

सातवीं शत्रु-दूषित से पंचमभाव की देखने से विद्या में कमी रहती है तथा संज्ञानों से वैमनस्य रहता है, परन्तु वह अपनी चतुराहं द्वारा अन्य क्षेत्रों में उन्नति करता रहता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र



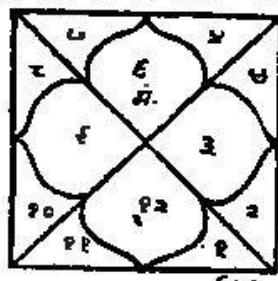
बारहवें भाव में मित्र ‘सूर्य’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से पर्याप्त लाभ भी होता है। खर्च के कारण कभी-कभी यन में चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

सातवीं शत्रु-दूषि से बछंभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में धन के खर्च एवं विनम्रता से सफलता मिलती है। बीमारी तथा अन्य झगड़ों में भी खर्च होता है।

‘कन्या’ लग्न में भगल

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘भगल’ का फलादेश

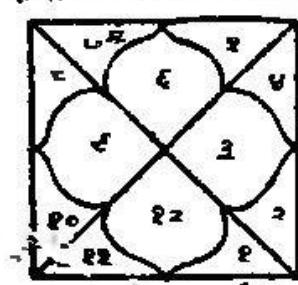
कन्या लग्न : प्रथमभाव : भगल



बाष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि तथा पुरातत्व का साभ होता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन संघर्षपूर्ण रहता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘भगल’ का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : भगल



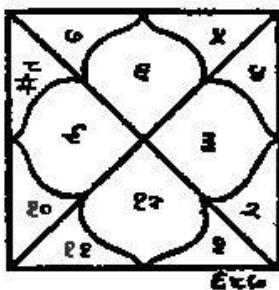
दूसरे भाव में शत्रु शुक की राशि पर स्थित ‘भगल’ के प्रभाव से जातक के भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है। परन्तु धन का लाभ होता है। चौथो उच्च दूषि से पंचमभाव को देखने से विद्या, वृद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में अपेक्ष करने से लाभ होता है।

सातवीं दूषि से स्वराशि में बाष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व का साभ होता है। नवीं शत्रु-दूषि से देखने से व्याप्ति-दातन तथा आम्योन्ति में कुछ कमियाँ बनी रहती हैं।

‘कन्या’ सगन की कण्ठस्त्री में ‘तृतीयसाध’ स्थित ‘बंगल’ का फलादेश

कन्धा लगतः दृतीय भावः मंगल

सीमरे भाव में न्वनशि-स्थित व्यवेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक के पदाक्रम में तो 'बुद्धि होती है, परन्तु भाई-बहित के सुख में कमी आती है। आयु तंषा पुरातत्व का थेप्ल लाभ होता है।

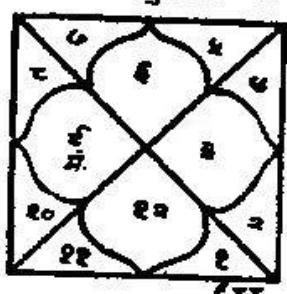


परिश्रम करने पर भी थोड़ी सफलता मिलती है तथा पिता का सुख भी कम ही रहता है।

‘कन्या’ लाल की कम्पली में ‘चतुर्यमाथ’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

कन्या लर्णः चतुर्थं भावः मंगल

चीये भाव में मित्र 'गुह' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'भूगल' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा धाई-वहिनों के सुख में कमी आती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ होता है।



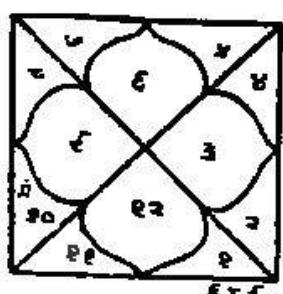
बौधो मित्र-मूर्ख से सप्तमधाव को देखने से स्वीं तथा व्यक्तिय के लेल में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

आठवीं नीच-दूरित से एकादशभाव की देखने से साभ के भार्ग वें रुकावटे आती है।

‘कन्द्या’ लग्न की कष्टली में ‘पंखभाव’ हित ‘यंगल’ का फूलादेश

कन्यालग्नः पञ्चमभावः मंगल

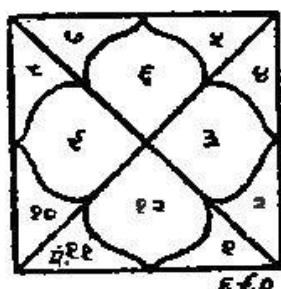
पौच्छें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान-पक्ष की शक्ति तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। नौथी द्विंटि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से जायु तथा पुरातात्व की शक्ति बढ़ती है।



रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से साभ होता है तथा प्रभाव बढ़ता है।

'कन्या' संगत की कुण्डली में 'वल्लभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

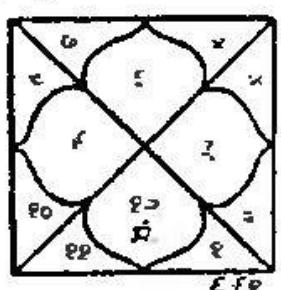
कन्या संगत : अष्टमभाव : मंगल



ठठे भाव में शत्रु 'शौनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त है। वह परिश्रमी तथा पुरुषार्थी होता है, परन्तु भाई-बहिनों में कुछ विरोध रहता है। आयु तथा पुरातत्व का अच्छा लाभ होता है।

'कन्या' संगत की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

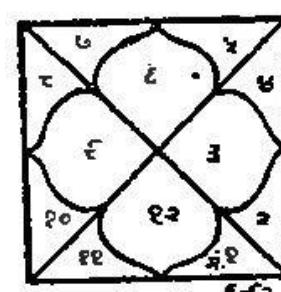
कन्या संगत : सप्तमभाव : मंगल



भाव को देखने से शरीर में कुछ परेशानियाँ रहती हैं। आठवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय-भाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी बनी रहती है।

'कन्या' संगत की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या संगत : अष्टमभाव : मंगल



चूंकि होती है तथा गुप्त हिम्मत वधुती है।

ठठे भाव में शत्रु 'शौनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त है। वह परिश्रमी तथा पुरुषार्थी होता है, परन्तु भाई-बहिनों में कुछ विरोध रहता है। आयु तथा पुरातत्व का अच्छा लाभ होता है।

चौथी शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कमज़ोरी रहती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक

रहता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक स्वास्थ्य में कमी तथा रक्त-विकार आदि रोग रहते हैं।

'कन्या' संगत की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सातवें भाव में मित्र 'शुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्वीं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कष्ट मिलता है। तथा आयु एवं पुरातत्व को बढ़ि होती है। पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिनों के सुख में न्यूनाधिकता बनी रहती है।

चौथी मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम-भाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी बनी रहती है।

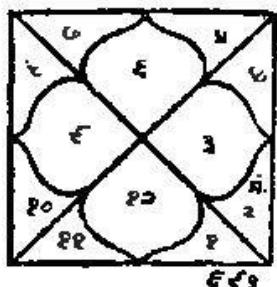
'कन्या' संगत की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

आठवें भाव में स्वराशि द्वारा स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्व का साम होता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। चौथी नीच दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनों के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय-भाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ असंतोष रहता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के तृतीय-भाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में बढ़ि होती है तथा गुप्त हिम्मत वधुती है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘नवमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

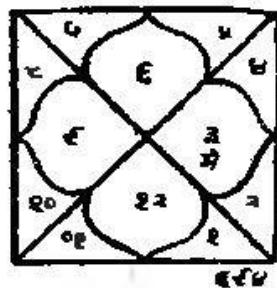
कन्या लग्न : नवमभाव : मंगल



कठिनाइयों के साथ आई-बहिनों का सुख मिलता है। आठवीं मित्र दूष्ट से भ्रम भाव को देखने से कुछ कमी आती है तथा आपु एवं पुरातत्व की बुद्धि होती है। चौथी मित्रदूष्ट से हादरभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘बाशमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

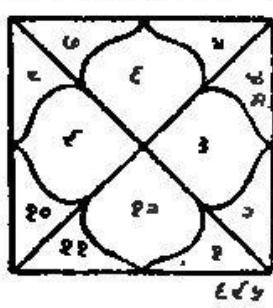
कन्या लग्न : दशमभाव : मंगल



से भ्राता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। आठवीं सत्तान-पक्ष में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। विद्या-बुद्धि की पर्याप्त बुद्धि होती है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘एकादशभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : मंगल



आठवीं शत्रुदूष्ट से पष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा जातक बड़ा हिमती, बहुत बोलने वाला तथा कहानुर होता है।

नवें भाव में शत्रु ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित दृष्टमेश ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक के आग्ने तथा धर्म के पक्ष में कुछ कमी आती है तथा आपु एवं पुरातत्व की बुद्धि होती है। चौथी मित्रदूष्ट से हादरभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

सातवीं दूष्ट से स्वराशि वाले दृतीय भाव को देखने से पराक्रम की बुद्धि होती है तथा कुछ

भाव को देखने से कुछ कमी के साथ आता, भूमि एवं अवन का सुख भी प्राप्त होत है। सामान्यतः जीवन शानदार बना रहता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘बाशमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

दसवें भाव में शत्रु ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक को कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आपु तथा पुरातत्व का लाभ भी होत है, परन्तु आई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है।

चौथी शत्रुदूष्ट से प्रभमभाव को देखने से शरीर विकार-ग्रस्त रहता है, जब कि हिमत बढ़ी रहती है। सातवीं मित्रदूष्ट से धनुर्धनभाव को देखने से भ्राता, भूमि एवं भवन की पर्याप्त बुद्धि होती है। आठवीं उच्चदूष्ट

से भ्राता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। आठवीं उच्चदूष्ट से धनुर्धनता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि की पर्याप्त बुद्धि होती है।

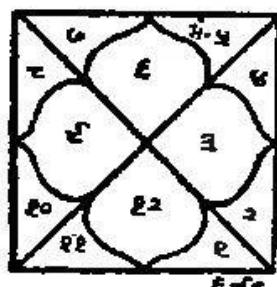
‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘एकादशभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

पर स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक को साथके क्षेत्र में कुछ कठिनाई आती है, परन्तु आपु एवं पुरातत्व का लाभ होता है। चौथी शत्रुदूष्ट से हितीयभाव को देखने से शन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कमी आती है। सातवीं उच्च दूष्ट से पंचमभाव को देखने से विद्या एवं बुद्धि की उन्नति होती है तथा सत्तान के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

आठवीं शत्रुदूष्ट से पष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा जातक बड़ा हिमती, बहुत बोलने वाला तथा कहानुर होता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

कन्या लग्नः द्वादशभावः मंगल



द्वादश

बारहवें भाव में मिल ‘सूर्य’ की राजि पर स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से कुछ शक्ति भी मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं। चौथी दृष्टि से स्वराशि वाले द्वितीयभाव को देखने से पराक्रम एवं भारी बहिन के सुख में सामान्य बृद्धि होती है।

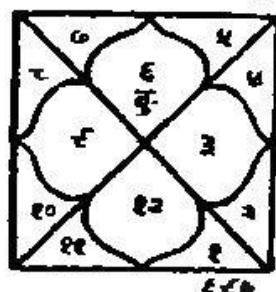
सातवीं शत्रुदृष्टि से वर्षभाव को देखने से

शत्रुपक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद प्रभाव स्थापित ही पाता है। आठवीं मिलदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री पक्ष में कुछ कठिनाई रहती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम तथा कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है।

‘कन्या’ लग्न में ‘बुध’

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

कन्या लग्नः प्रथमभावः बुध

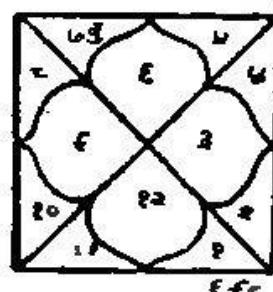


पहले भाव में स्वराशि-स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक के शरीरिक सौन्दर्य में बृद्धि होती है। राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक आय के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक स्वाभिमानी होता है, हस कारण व्यवसाय में अधिक उन्नति नहीं कर पाता।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

कन्या लग्नः द्वितीयभावः बुध



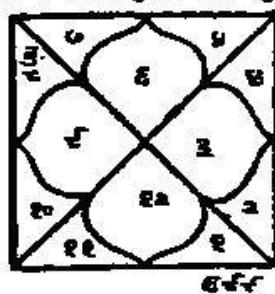
दूसरे भाव में मिल ‘बुध’ की राजि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक के जन तथा कौटुम्बिक सुख में बृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएं मिलती हैं।

सातवीं मिलदृष्टि से छठमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है।

ऐसे व्यक्ति का रहन-महन ऐश्वर्यशाली होता है। वह बनी तथा सूखी भी रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'मुख' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : बुध



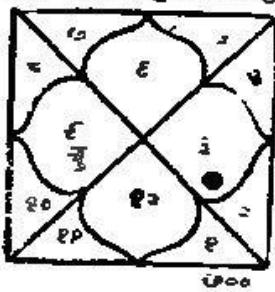
तौसरे भाव में मिल 'बुधल' को राजि पर स्थित 'मुख' के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाईचाहिनों के सुख में वृद्धि होती है। राज्य, व्यवसाय तथा पिता के पक्ष में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मिश्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से वर्ष तथा भाग्य की उन्नति होती है।

ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, धर्मात्मा, यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'मुख' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : बुध

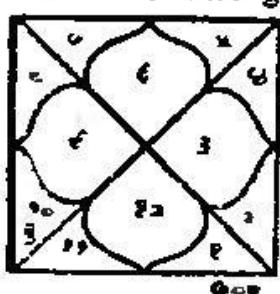


चौथे भाव में मिल 'मुख' की राजि पर स्थित 'मुख' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि एवं अवन का व्येष्ठ सुख मिलता है। शारीरिक सौन्दर्य तथा सुख में भी वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराजि के एकादशभाव की देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी बड़े प्रकार की सफलताएँ प्राप्त होती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मुख' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : बुध



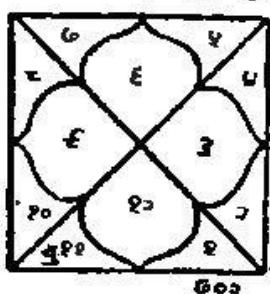
पाँचवें भाव में मिल 'शनि' की राजि पर स्थित 'मुख' के प्रभाव से जातक की विदा, कुद्दि एवं मन्त्राल का पर्याप्त सुख मिलता है और उच्च पद की प्राप्ति होती है।

सातवीं मिश्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदानी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

ऐसा व्यक्ति सुन्दर, सुखी, धनी तथा स्वाभिमानी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठमधाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठमधाव : बुध

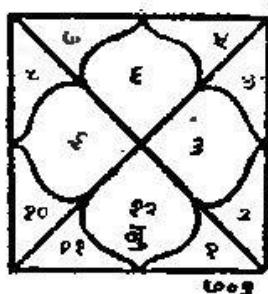


छठे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में विवेक एवं युक्तियों के हारा सफलताएँ मिलती हैं। ननसाल-पक्ष से भी लाभ होता है। परन्तु शारीरिक सौन्दर्यं तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से हादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से अच्छा लाभ एवं सुख प्राप्त होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : बुध

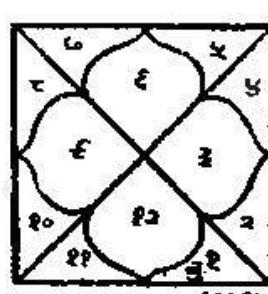


सातवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक अपनी पत्नी के अवक्षितत्व के समक्ष स्वयं की कुछ हीन-सा अनुभव करता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिन परिश्रम करना पड़ता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलताएँ प्राप्त होती हैं।

सातवीं उच्चदृष्टि से स्वराशि आले प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्यं, प्रभाव एवं मानसिक सुख-शान्ति में भी कुछ कमी रहती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : बुध

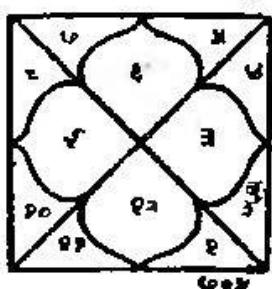


आठवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्यं में कमी आती है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। बाहरी सम्बन्धों से वाजीविका चलती रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव की देखने के कारण गुप्त युक्तियों के बाश्रय से धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब से प्रेम रहता है।

‘कल्या’ लग्न की कुण्डली में ‘दशमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

कन्या लग्नः दशमभावः बुध

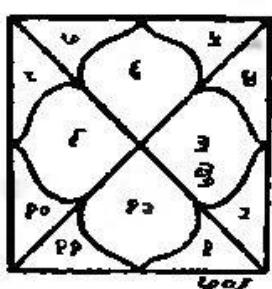


नवे भाव में मित्र ‘शुक्र’ की राजि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है तथा राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में श्री सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से चूतीयभाव को देखने से शाई-वहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सज्जन, सुखी, यशस्वी तथा धनी होता है।

‘कल्या’ लग्न की कुण्डली में ‘दशमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

कन्या लग्नः दशमभावः बुध

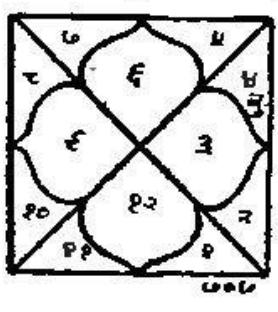


दसवें भाव में स्वक्षेत्री ‘बुध’ के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर, यशस्वी, स्वाभिमानी तथा सुखी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि, भवन आदि का सुख भी पर्याप्त उपलब्ध होता है। घरेलू जीवन सुख, शान्ति तथा ऐप्रवर्य से पूर्ण रहता है।

‘कल्या’ लग्न की कुण्डली में ‘दुकादशभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

कन्या लग्नः दुकादशभावः बुध

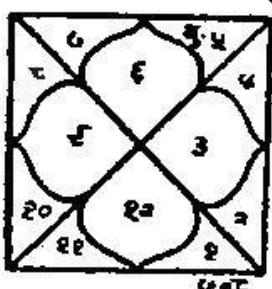


म्यारहवें भाव में शत्रु ‘चन्द्रमा’ की राजि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक की वासदनी अच्छी रहती है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में श्री सफलताएँ प्राप्त होती हैं। शारीरिक सौन्दर्य, मनोवल एवं सुख में भी वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठमभाव की देखने से जातक को विद्या, वृद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में श्री विशेष उन्नति प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, विद्वान् तथा ऐप्रवर्यशाली होता है।

'कन्या' स्थान की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न: द्वादशभाव: बुध



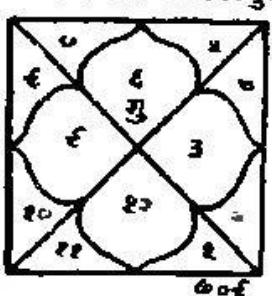
बारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। परन्तु पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तोष रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से घटभाव की देखने से शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति दूरदर्शी, विवेकी तथा बुद्धिमान् होता है।

'कन्या' स्थान में 'गुरु'

'कन्या' स्थान की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

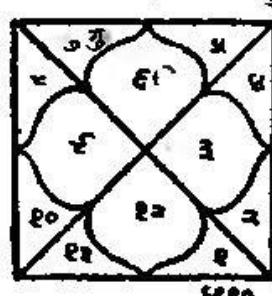
कन्या लग्न: प्रथमभाव: बुध



पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। आता, शून्य तथा अवत का सुख भी मिलता है। पाँचवीं नीचदृष्टि से चौथमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कठिनाइयां आती रहती हैं। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख मिलता है। नवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से आग्नीन्ति एवं धर्म के क्षेत्र में बाधाएं आती रहती हैं। परन्तु ऐसा व्यक्ति सज्जन तथा धनी होता है।

'कन्या' स्थान की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या स्थान: द्वितीयभाव: बुध

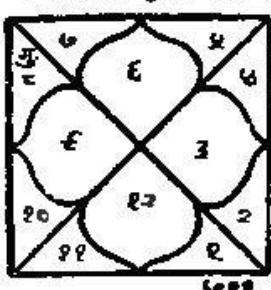


दूसरे भाव में सामान्य शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की धन, कुदुम्ब का सुख मिलता है, परन्तु माता एवं स्त्री के सुख में कुछ बाधाएं आती हैं जबकि व्यवसाय-पक्ष की उन्नति होती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्वापित होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में साभ, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

‘कन्या’ सम्बन्ध की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

कन्या/लग्न: तृतीयभाव: गुरु

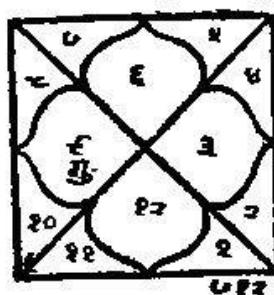


तीसरे भाव में मित्र ‘भंगल’ की राशि पर स्थित ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा आई-चहिन के सुख में वृद्धि होती है और माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है। पाँचवीं दूषित से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी सफलताएँ मिलती हैं। स्त्री सुन्दर मिलती है।

सातवीं शत्रु-दूषित से नवमभाव की देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ शकावटों के ताथ उन्नति होती है। नवीं उच्चदूषित से एकादशभाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है। ऐसा जातक धनी तथा सुखी रहता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली से ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

कन्या/लग्न: चतुर्थभाव: दुष्ट



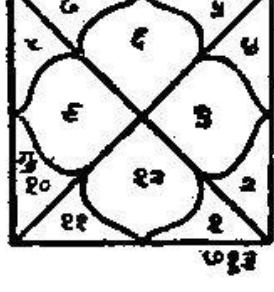
चौथे भाव में स्वक्षेत्री ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

पाँचवीं मित्र-दूषित से अष्टमभाव को देखने से आगु तथा धुरातत्व का साभ होता है। सातवीं मित्र-दूषित से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती रहती हैं।

नवीं मित्र-दूषित से छादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में लाभ मिलता है।

‘कन्या’ सम्बन्ध की कुण्डली के ‘योगमभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

कन्या/लग्न: संचमभाव: गुरु

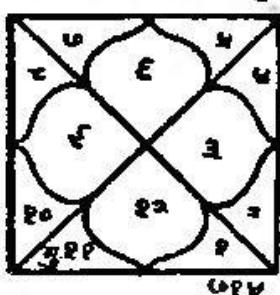


पाँचवें भाव में शत्रु ‘शनि’ की राशि पर भीषण के गुरु के प्रभाव से जातक की सत्तान पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विवाह एवं बुद्धि में कमी रहती है। भग्न-पक्ष भी कमज़ोर रहता है। पाँचवीं शत्रु-दूषित से नवमभाव की देखने से भाग्य एवं धर्म की सामान्य वृद्धि होती है। सातवीं उच्च-दूषित से एकादशभाव की देखने से आमदनी में वृद्धि होती है तथा नवीं मित्र-दूषित से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक, शक्ति, सम्मान, प्रभाव एवं कार्य-कुशलता में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी

तथा सामान्य धनी होता है।

'कन्या' लग्न की कृष्णली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलावेश

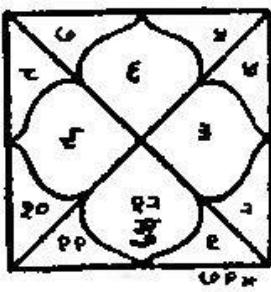
कन्या लग्न : अष्टमभाव : गुरु



होता है। नवीं शत्रु-दृष्टि से हितीयभाव को देखने से कुछ मिलता है तथा धन-संचय के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

'कन्या' लग्न की कृष्णली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलावेश

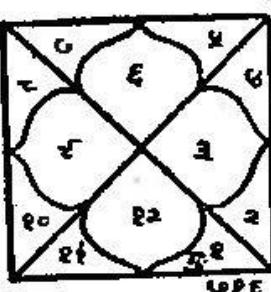
कन्या लग्न : सप्तमभाव : गुरु



सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

'कन्या' लग्न की कृष्णली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलावेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : गुरु



स्वराशि में चतुर्वेदभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ प्रेरणानियों के साथ मिलता है।

छठे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में नश्ता से काम निकालता है। माता, भूमि एवं भवन के सुख में भी कमी रहती है। पांचवीं मित्र-दृष्टि से देशभाव को देखने से विता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ सफलताओं, सुख तथा यश की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता है। नवीं शत्रु-दृष्टि से हितीयभाव को देखने से कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से स्वराशि 'गुरु' के प्रभाव से जातक को स्त्री एवं व्यवसाय-पक्ष में पर्याप्त लाभ मिलता है। माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। पांचवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव की देखने से आमदनी में बहुत बृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक-सुख, मान एवं सौन्दर्य की प्राप्ति होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से आई-बहिनों के सुख एवं पराक्रम में बृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

'कन्या' लग्न की कृष्णली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलावेश

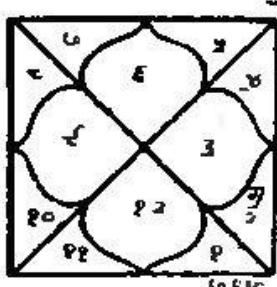
बाठवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। परन्तु स्त्री तंथा व्यवसाय के सुख में कुछ कमी आती है।

पांचवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से हितीयभाव को देखने से धन-दृष्टि के लिए विनेष परिश्रम करना पड़ता है तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी आती है। नवीं दृष्टि से

स्वराशि में चतुर्वेदभाव की देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ प्रेरणानियों के साथ मिलता है।

‘कन्या’ लगन की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

कन्या लगन : नवमभाव : गुरु



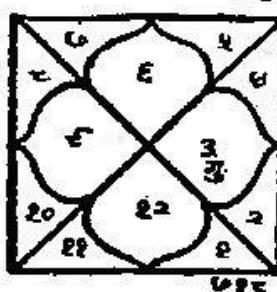
नवें भाव में शत्रु ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक की आम्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कमी रहती है, परन्तु माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। पांचवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से सुख-सम्मान की वृद्धि होती है तथा ओगेष्ठा प्रबल रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से

आई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। नवीं नीच-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कमज़ोरी आती है।

‘कन्या’ लगन की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

कन्या लगन : दशमभाव : गुरु



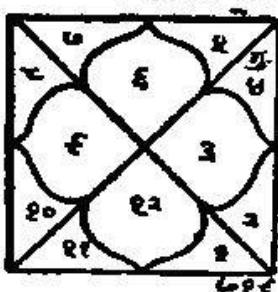
दसवें भाव में मित्र ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय से लाभ होता है। स्त्री सुन्दर तथा प्रभावशाली भिलती है। पांचवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से छन, कुटुम्ब का सामान्य लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि अपनी राशि में चतुर्थभाव को देखने ने माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है।

नवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष में शान्ति-नीति से विजय भिलती है तथा उससे लाभ भी होता है।

‘कन्या’ लगन की कुण्डली में ‘एकादशभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

कन्या लगन : एकादशभाव : गुरु

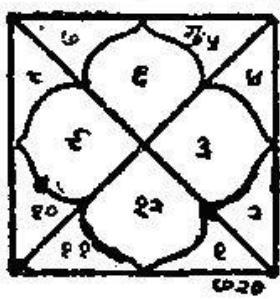


यारहवें भाव में मित्र ‘धन्द्रमा’ की राशि पर स्थित ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक की आमदनी बढ़ती है तथा माता, भूमि एवं सकान का यथेष्ट सुख भी भिलता है। पांचवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम एवं आई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से परेशानी रहती है तथा विद्या-नुद्वि में कमी आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में अप्तम भाव की देखने से सुन्दर तथा योग्य पत्नी भिलती है। ओगादि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में भी उन्नति होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'शुरु' का फलावेश

कन्या लग्न: द्वादशभाव: शुरु

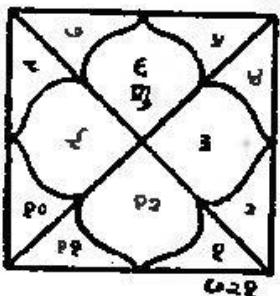


पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा जातक सामान्यतः सुखी जीवन विताता है।

'कन्या' लग्न में 'शुक्र'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

कन्या लग्न: प्रथमभाव: शुक्र

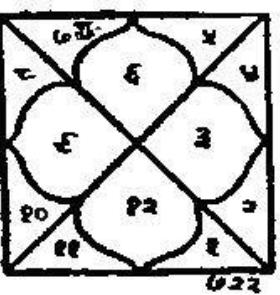


पहले भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित मीथ के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी रहती है और वह अधर्म-पूर्वक भी धन कमाने का प्रयत्न करता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तम भाव की देखने से स्त्री सुन्दर तथा भास्यदान् मिलती है तथा व्यवसाय एवं शोगादि में भी पर्याप्त सफलता प्राप्त होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

कन्या लग्न: द्वितीयभाव: शुक्र

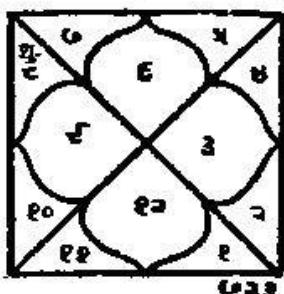


दूसरे भाव में स्वराशि स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। वह शायदान्, यशस्वी तथा घरतिमा भी होता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टम भाव की देखने से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति चतुर, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'कन्या' राशि की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

कन्या राशि : तृतीयभाव : शुक्र

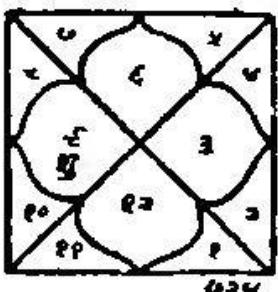


तीसरे भाव में शशु 'शंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की शाई-वहिन का अच्छा सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। कौटुम्बिक सुख की भी वह बढ़ाता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले नवमभाव की देखने से भाग्य तथा धर्म में बहुत वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बहुत सुखी, धनी, समर्तिमान तथा आग्यशाली होता है।

'कन्या' राशि की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

कन्या राशि : चतुर्थभाव : शुक्र

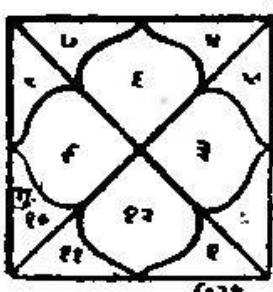


चौथे भाव में शशु 'शुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की माता, शूमि तथा भवन का योग्य साम होता है तथा धन एवं कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

सातवीं मिन्द्रदृष्टि से दशमभाव की देखने से राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धर्म का पालन भी करता है।

'कन्या' राशि की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

कन्या राशि : पंचमभाव : शुक्र

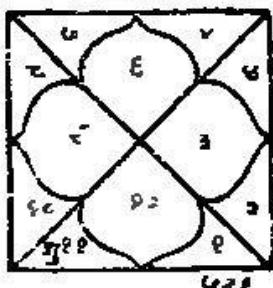


पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से बेप्त लाभ होता है तथा विद्या-वृद्धि की वृद्धि से साय धन, धर्म तथा आग्य की वृद्धि भी होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से जातक अपनी वृद्धि एवं आत्मरक्ष के बल पर आमदनी की देखता है तथा निरन्तर उन्नति करता रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'वृषभभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्नः वृषभभावः शुक्र

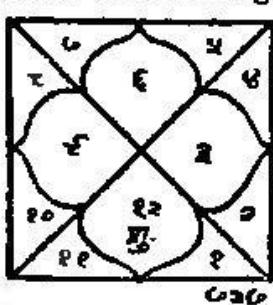


उठे भाव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के भाग्य, धन तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी आती है तथा धर्म में भी अलंच रहती है। फिर भी उन्हें अपनी चतुराई द्वारा भाग्य तथा धन की वृद्धि करता है तथा परिश्रम द्वारा शक्ति-पक्ष में सफलताएं पाता है। उसे जगड़े-मुकद्दमों से भी लाभ होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खचे अधिक रहता है तथा वाहरी संबंधों से सुख एवं साभ की शाप्ति होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्नः सप्तमभावः शुक्र

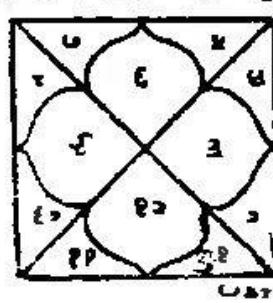


सातवें भाव में सामान्य शक्ति 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की सुन्दर व्यक्ति मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएं मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति भोगी, धर्मात्मा, सुखी तथा भाग्यवान् होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है। ऐसा व्यक्ति धन-वृद्धि के लिए शारीरिक सुखों की चिन्ता नहीं करता।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्नः अष्टमभावः शुक्र

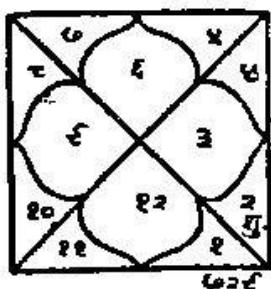


आठवें भाव में शक्ति 'भगव' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का भाग्य कमज़ोर रहता है तथा धन-संचय में भी कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म का समुचित पालन भी नहीं हो पाता। पर आमु तथा पुरातत्व का लाभ होता है।

सातवीं शूष्क दृष्टि से स्वराशि वाले द्वितीय भाव की देखने से जातक गुप्त चातुर्थ एवं कठोर परिश्रम द्वारा धन-संचय करता है।

‘कन्या’ लग्न की कृष्णली में ‘वशमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : शुक्र

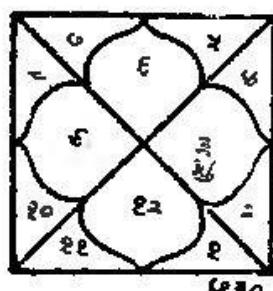


नवे भाव में स्वराशिन्स्थित ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक वहा भाग्यशाली तथा अर्पात्मा होता है। उसके धन, सम्मान तथा यश में भी वृद्धि होनी है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से आई-वृहनों की शक्ति तथा पुरुषार्थ में वृद्धि होती है। साथ ही धन एवं कुटुम्ब का पूर्ण सुख भी मिलता है।

‘कन्या’ लग्न की कृष्णली में ‘वशमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव

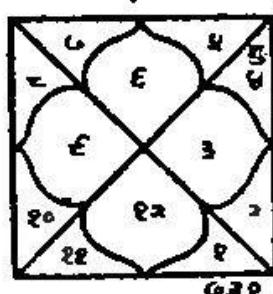


दसवें भाव में मित्र ‘कुध’ की राशि पर स्थित ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा ‘व्यवसाय’ के क्षेत्र में विशेष सुख, सम्मान तथा सफलताएँ प्राप्त होती हैं। वह अपने अच्छे कर्मों से धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है।

सातवीं सामान्य शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

‘कन्या’ लग्न की कृष्णली में ‘एकादशभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : शुक्र



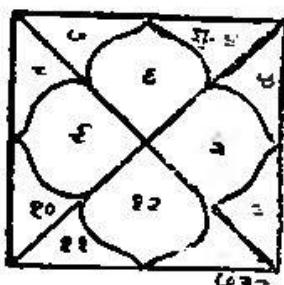
यारहवें भाव में शत्रु ‘वन्द्यमा’ की राशि पर स्थित ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक की आमदानी अच्छी रहती है। वह घनी, कुटुम्बवाली, अर्पात्मा, भाग्यशाली तथा न्यायी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या-वृद्धि की उन्नति होती है तथा सन्तान-यक्ष में सुख मिलता है।

ऐसा व्यक्ति प्रभावयुक्त वर्षीय वर्षों में चतुर, तितुण, सुखी तथा यशस्वी है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में द्वादशभाव स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : शुक्र



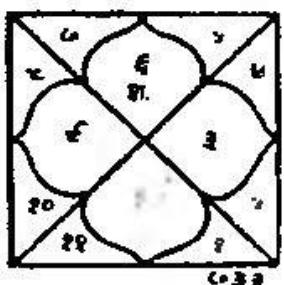
बारहवें भाव में शत्रु ‘सूर्य’ की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, वाहरी शम्बन्धों से हानि होती है, धन-सचिव नहीं हो पाता तथा भाग्योन्नति में व्यवधान पड़ता है। कौटुम्बिक सुख में भी कभी रहनी दें।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पाठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष एवं अग्ने-मुकुदमों में अफलवा ग्रह लाभ की प्राप्ति होती है।

‘कन्या’ लग्न में ‘शनि’

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘अष्टमभाव स्थित ‘शनि’ का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : शनि

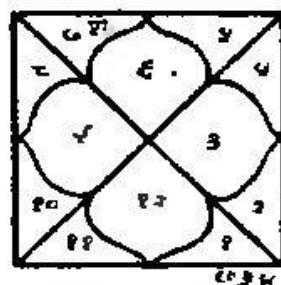


पहले भाव में मिल ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक का शरीर रोगी रहता है। विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का सुख प्राप्त होता है, परन्तु सन्तान से बेमनस्य रहता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से शाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव का देखने से स्त्री से कुछ बेमनस्य रहता है तथा व्यवसाय के कान्त में अधिक भेदनक करनी पड़ती है।

इसीं मिलदृष्टि में द्वादशभाव को देखने से पिता की ओर गे ‘सामान्य परेशानी रहनी है तथा राज्य एवं व्यापार के क्षेत्र में अफलत। मिलती है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वितीयभाव स्थित ‘शनि’ का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : शनि



दूसरे भाव में मिल ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक विद्या-बुद्धि का सुख प्राप्त होता है तथा सन्तान से बेमनस्य रहता है।

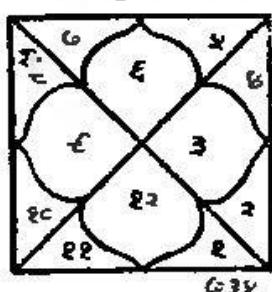
तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से मता भूमि तथा भवन के सुख में कभी आती है। सातवीं तीव्र दृष्टि से अष्टमभाव को कुछ हानि होती है।

दसवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ अफलता

मिलती है। ऐसा व्यक्ति अपेक्षा क्षेत्र में संघर्षक्षील रहता है तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘शूतोषभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

कन्यालग्न : शूतोषभाव : शनि



0-35

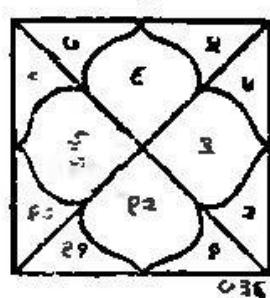
तीसरे भाव में शत्रु ‘मगल’ की राशि पर स्थित ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों से परेशानी रहती है, पर शत्रपक्ष पर विजय मिलती है और पराक्रम की वृद्धि होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि के पंचमभाव को देखने से विद्या-वृद्धि का लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने

से परिव्रक्षम द्वारा भारयोन्नति होती है। इसीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च में कठिनाई का अनुभव होता है तथा वाहरी स्थानों के सम्बन्ध से असन्नोष रहता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘शूतोषभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : शनि



0-36

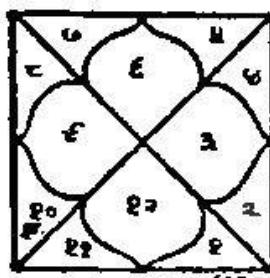
चौथे भाव में शत्रु ‘शुरु’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक को भावा, भूमि तथा अवन के सुख में कमी रहती है तथा सन्तान के पक्ष से भी परेशानी रहती है, परन्तु विद्या-वृद्धि का लाभ होता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में उपभोग की देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा अग्निं से सुख-दुःख दोनों ही मिलते हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से

शूत्रिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है। इसीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव की देखने से परिश्रम एवं प्रभाव की वृद्धि होती है, परन्तु शरीर कुछ अस्वस्थ बना रहता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘पंचमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : शनि



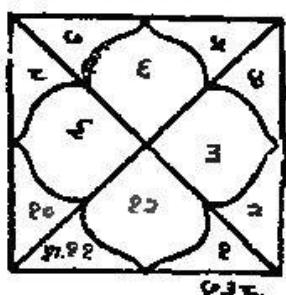
पांचवें भाव में स्वराशि-स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-वृद्धि एवं सन्तान का लाभ होता है, परन्तु सन्तान से कुछ परेशानी भी होती है। शत्रु-पक्ष में उसे युक्त युक्तियों से विजय मिलती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से

परिश्रम द्वारा लाभ होता है। इसीं उच्च दृष्टि से द्वितीय भाव की देखने से धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति संघर्षपूर्ण सुखी-सम्पन्न जीवन विताता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘वृषभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

कन्या लग्न : वृषभाव : शनि



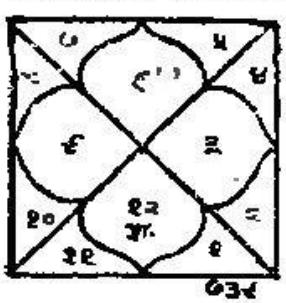
जातक शत्रु-पक्ष पर अपने बुद्धि-बल से सफलता पाता है, परन्तु विद्या एवं सन्तान के पक्ष में सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं। तीसरी नीच दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु पर अनेक बार संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व की हानि होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से

खर्च की परेशानी रहती है, तथा बाहरी सम्बन्ध भी सुखद मिलता है, परन्तु पराक्रम में दृद्धि होती है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

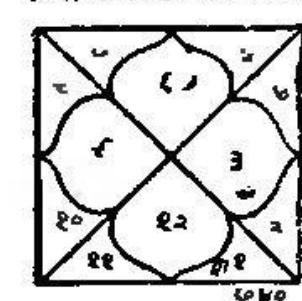
कन्यालग्न : सप्तमभाव : शनि



जातक शत्रु-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं अवन के सुख में कमी आती है। ऐसा जातक अपने जन्म-स्थान में परेशानी का अनुभव करता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : शनि



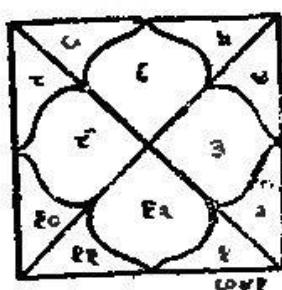
जातक शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से

आठवें भाव में शत्रु ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक को आयु पर अनेक बार संकट आते हैं जो पुरातत्त्व की हानि होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि के दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य-पक्ष में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, किन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में बुद्धि-बल से सामान्य सफलता मिलती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से हितीयभाव को देखने से धन-सचय के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है। दसवीं दृष्टि से षष्ठमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है। विद्या कम रहती है परन्तु चारुर्य अधिक होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : शनि



नवे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक बुद्धि-बल से आग्योन्नति करता तथा स्वधर्म का सामान्य परिपालन करता है।

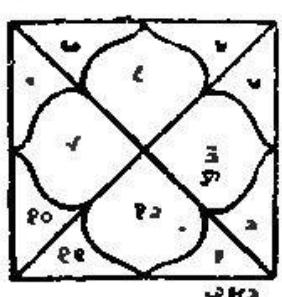
सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है। तीसरी शतु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है।

सातवीं शतु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की बृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से कुछ वैभवन्य रहता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि के षष्ठ-भाव को देखने से शतु-रक्ष में विजय मिलती है तथा अग्नों से साध होता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा चतुर, नीतिज्ञ, प्रभावशाली तथा हिम्मती होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : शनि

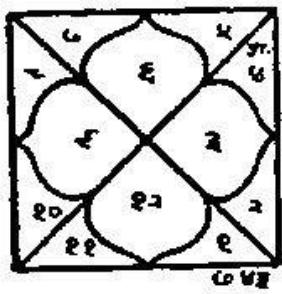


दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की पिता-पक्ष से परेशानी रहती है, परन्तु राज्य-पक्ष से सम्बान एवं व्यवसाय-पक्ष से साध होता है। विद्या तथा सन्तान का भी सुख मिलता है। तीसरी शतु-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च के मामले में असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी सुखदायी नहीं रहता।

सातवीं शतु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी रहती है। दसवीं शतु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कमी आती है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कठिन परिश्रम से ही सफलता मिलती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : शनि

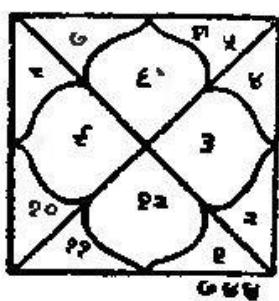


व्याख्याते भाव में शतु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी में खूब बृद्धि होती है तथा शतु-पक्ष से भी साध होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में दीर्घ रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि की शक्ति प्राप्त होती है। दसवीं नीच-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत्त्व की हानि होती है तथा आमु पर भी अनेक संकट आते हैं।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वादशभाव’ में स्थित ‘शनि’ का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : शनि



मारहुवे आव में शनु ‘मूर्य’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से परेशानी रहती है। तीसरी उच्च-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से द्वान तथा कुटुम्ब की बुद्धि विशेष प्रयत्न करने से होती है।

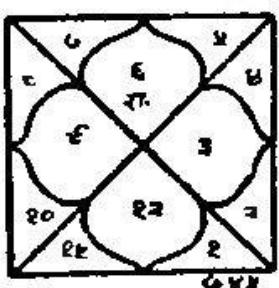
सातवीं दृष्टि से द्वादशिंश में अष्टभाव की देखने से शनु-नक्ष पर प्रभाव रहता है, परन्तु रोगादि से कुछ कष्ट होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से बुद्धियोग द्वारा भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म में रुचि भी रहती है। ऐसा व्यक्ति शान-शोकत में खूब खर्च करता है।

सातवीं दृष्टि से द्वादशिंश में अष्टभाव की देखने से शनु-नक्ष पर प्रभाव रहता है, परन्तु रोगादि से कुछ कष्ट होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से बुद्धियोग द्वारा भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म में रुचि भी रहती है। ऐसा व्यक्ति शान-शोकत में खूब खर्च करता है।

‘कन्या’ लग्न में ‘राहु’

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

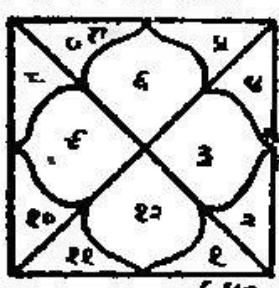
कन्या लग्न : प्रथमभाव : राहु



यहाँ आव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक शारीरिक दृष्टि से शक्ति-साली, दृढ़ श्वोबल वाला सथा स्वाभिमानी होता है, परन्तु कभी-कभी उसे शारीरिक कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। वह गहरी सूक्ष्म-बूक वाला सथा कठोर परिश्रमी होता है। मानसिक रूप से चिन्तित रहते हुए औ बड़े दीर्घ से काम लेकर उन्नति करता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

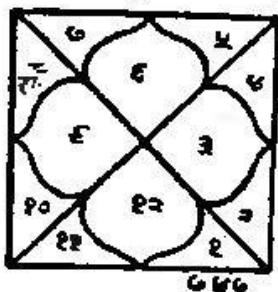
कन्या लग्न : द्वितीयभाव : राहु



दूसरे आव में मित्र ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक धन-कुटुम्ब की ओर से परेशान रहता है। वह गुप्त प्रयत्न तथा कठिन परिश्रम द्वारा कुछ धन-संचय भी करता है तथा सकट रूप में धनवान् भी समझा जाता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक लाभ तथा हानि—दोनों ही होते हैं।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : राहु

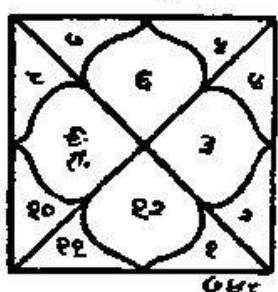


तीसरे भाव में शत्रु ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है। परन्तु भाई-बहिनों से परेशानी मिलती है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों एवं हिम्मत के बल पर सफलता प्राप्त करता है तथा स्वार्थ-सिद्धि के लिए अलै-बुरे का विचार नहीं करता।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

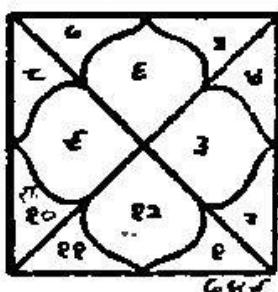
कन्या लग्न : चतुर्थभाव : राहु



चौथे भाव में शत्रु ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक को माता का अच्छा सुख मिलता है, परन्तु भूमि, भवन एवं घरेलू सुख में कमी रहती है। घरेलू कारणों से कभी-कभी धोर संकटों का यामना भी करना पड़ता है। परदेश में रहने का योग भी उपस्थित होता है। जल-भूमि में उसे कुख मिलता है, परन्तु बाहरी स्थावर में सुख प्राप्त होता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘पंचमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : राहु

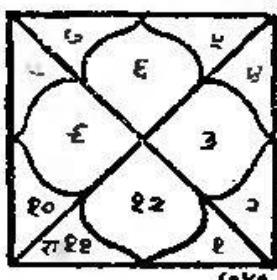


पांचवें भाव में मिथि ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक की सत्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं।

ऐसा व्यक्ति विद्यान् न होने पर भी बातें करने में बड़ा चतुर होता है तथा अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए सत्यासत्य का विचार भी नहीं करता। कभी-कभी उसे चिन्ताएँ भी परेशान करती रहती हैं।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘व्यष्टमधाव’ स्थित ‘राहु’ का फलावेश

कन्या लग्नः व्यष्टमधावः राहु

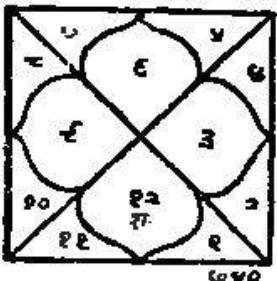


छठे भाव में मित्र ‘शनि’ की राशि पर लिखत ‘राहु’ के प्रभाव से जातक शनु-पक्ष पर प्रभावशाली रहता है तथा अग्नों एवं संकर्टों के समय हिम्मत तथा धैर्य से काम लेकर, अपनी कमज़ोरी को प्रकट नहीं होने देता।

वह कठिन सकर्टों के समय भी विचलित नहीं होता और उन पर अपनी गुप्त गुक्तियों द्वारा नियन्त्रण पा सेता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘सप्तममधाव’ स्थित ‘राहु’ का फलावेश

कन्या लग्नः सप्तममधावः राहु

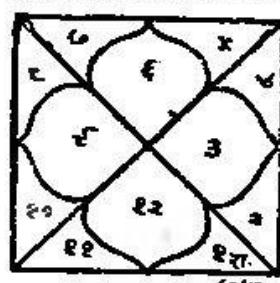


सातवें भाव में शनु ‘भूर्ष’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। उसको मूलेन्द्रिय में विकार भी ही हो सकता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त गुक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर ही अपना काम चलाता रहता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘व्यष्टमधाव’ स्थित ‘राहु’ का फलावेश

कन्या लग्नः व्यष्टमधावः राहु

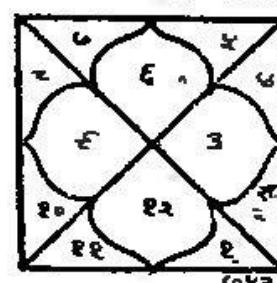


आठवें भाव में शनु ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक को जीवन में अनेक द्वार अतरों का सामना करना पड़ता है तथा मृत्यु-तुल्य कष्ट भी भोगने पड़ते हैं। उसके पेट में भी विकार रहता है।

गुप्त गुक्तियों, धैर्य तथा साहस के बल पर वह आगे बढ़ता है। उसे चिन्ताएँ तथा परेशानियाँ हमेशा घेरे रहती हैं।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘नवममधाव’ स्थित ‘राहु’ का फलावेश

कन्या लग्नः नवममधावः राहु

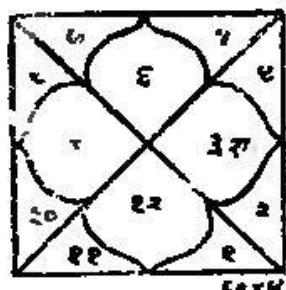


नवे भाव में मित्र ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक अपनी आग्योन्ति के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा धर्म का उचित मालन नहीं कर पाता।

कभी-कभी उसे आग्य के विषय में घोर सकर्टों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त गुक्तियों, धैर्य तथा साहस के बल पर ही योहे बहुत उन्नति कर पाता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

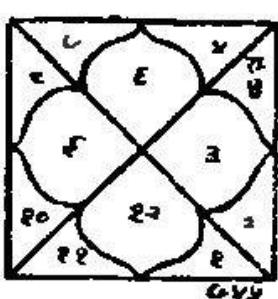
कन्या लग्न : द्वादशभाव : राहु



दसवें भाव में मित्र ‘दुध’ की राशि पर स्थित उच्च ‘राहु’ के प्रभाव से जातक अपने पिता के साथ संघर्ष करता हुआ उन्नति करता है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे गुप्त युक्ति एवं चारुर्य के बल पर ही सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। कमी-कमी सकट भी जाते हैं, परन्तु फिर स्थिति ठीक ही जाती है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘एकादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

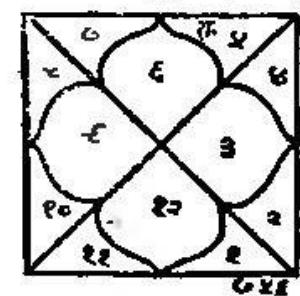
कन्या लग्न : एकादशभाव : राहु



बारहवें भाव में शत्रू ‘चन्द्रमा’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है, परन्तु कठिनाइयों का सामना भी बहुत करना पड़ता है। उसे कमी बहुत लाभ तो कमी बहुत घाटा होता है। वह अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य, साहस तथा परिक्रम के सहारे लाभ उठाता है, परन्तु कमी-कमी धीक्षा भी जा जाता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : राहु



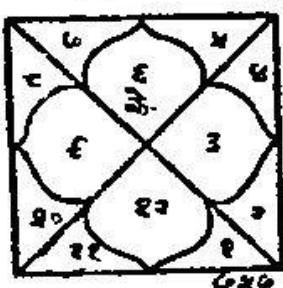
बारहवें भाव में शत्रू ‘सूर्य’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक को खर्च-सम्बन्धी कठिनाइयाँ बहुत रहती हैं तथा बाहरी सम्बन्धों से भी कष्ट होता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों, धैर्य, साहस तथा परिक्रम के सहारे अपना खर्च बलासा है। कमी-कमी उसे आकस्मिक अनुलाभ भी हो जाता है।

'कन्या' लग्न में 'केतु'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

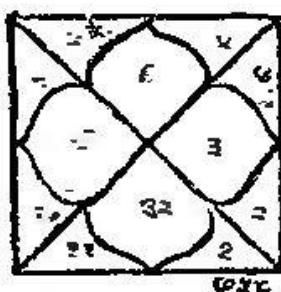
कन्या लग्न : प्रथमभाव : केतु



पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के 'प्रभाव' से जातक को शारीरिक कष्ट एवं चिन्ताओं का सामना करना पड़ता है। भरीर पर कोई गहरी बोट लगने अथवा रोग होने का योग भी बनता है। शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों वाला, हिमसी, धैर्यवान् तथा अक्षय स्वभाव का होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : केतु

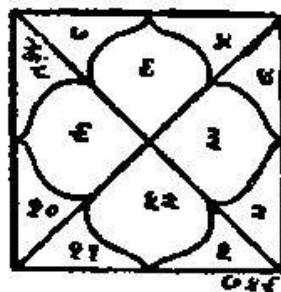


दूसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के धन तथा कीटोन्मिक सुख में कमी जाती है। कमी-कभी आकस्मिक उन्हानि भी होती है तो कमी-कमी आकस्मिक रूप से धन-लाभ भी हो जाता है।

ऐसा व्यक्ति धन की वृद्धि के लिए अथवा परिक्रम करता है, तथा हर समय परेशान बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : केतु

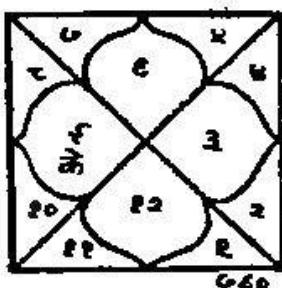


तीसरे भाव में शत्रु 'मग्न' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाइ-बहिनों से परेशानी मिलती है।

ऐसा व्यक्ति सकट के समय भी हिम्मत नहीं हारता तथा अपने ही बाहु-बल का भरोसा रखता है। वह कठिन परिस्थिती भी होता है।

‘कन्या’ लग्न की कुष्ठसी वें ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : केतु

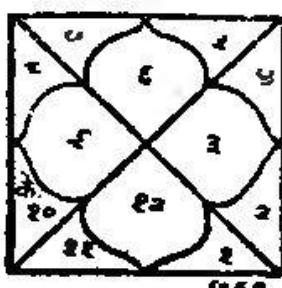


चौथे भाव में शत्रु ‘गुरु’ को राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। घरेलू जीवन ठाठदार होता है। इसके लिए उसे विशेष परिश्रम भी करना पड़ता है।

कभी-कभी घरेलू सुख में संकट भी आता है और कभी सुख में बूढ़ि भी हो जाती है।

‘कन्या’ लग्न की कुष्ठसी वें ‘पञ्चमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

कन्या लग्न : पञ्चमभाव : केतु

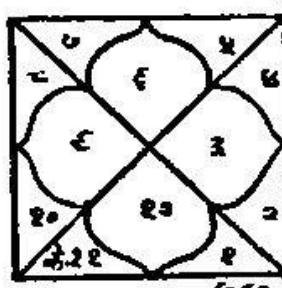


पाँचवें भाव में मिल ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से चिन्ता रहती है तथा विद्या-श्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है।

ऐसा अक्षिक अपनी विद्या-बूढ़ि में कभी जी स्वयं अनुभव करता है, परन्तु फिर भी स्वयं की बड़ा समझदार तथा योग्य प्रदर्शित करता है। वह वातचीत में बड़ा तेज होता है।

‘कन्या’ लग्न की कुष्ठसी वें ‘षष्ठभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : केतु

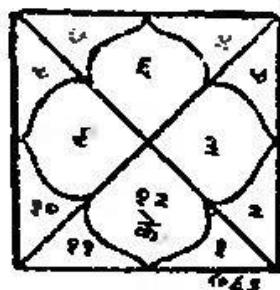


छठे भाव में मिल ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है। उसे ननसाल-पक्ष से परेशानी उठानी पड़ती है।

ऐसा अक्षिक बड़ा धैर्यवान्, बुज्ज भुक्तियों वाला, बहादुर, निर्भय तथा अक्षुड़ स्वभाव का होता है और इन्हीं विशेषताओं के कारण अपना काम बना लेने में सफलता भी प्राप्त करता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

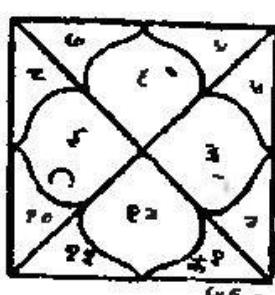
कन्यालग्न : सप्तमभाव : केतु



सातवें भाव में शत्रु ‘गृह’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की स्वीकृति से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयाँ जाती हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त युक्ति, धैर्य-तथा साहस के दब्ल पर उनके निराकरण का प्रयत्न करता है। उसका गृहस्थ-जीवन बड़ी कठिनाइयों से सफल बनता है। उसकी मूलेभिद्य में विकार होने की संभावना भी रहती है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

कन्यालग्न : अष्टमभाव : केतु

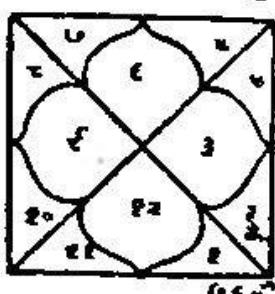


आठवें भाव में शत्रु ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक के जीवन में अनेक बार प्राणान्तक कष्ट उपस्थित होता है तथा पुरातत्व की हानि भी होती है। उसके पेट में भी विकार रहता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी, ज्ञोषी, धैर्यवान्, हिम्मत तथा तेजी से काम करने वाला होता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘नवमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

कन्यालग्न : नवमभाव : केतु

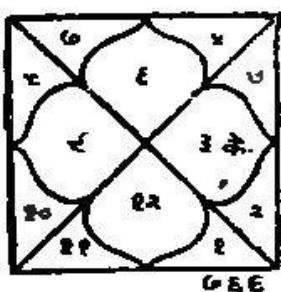


नवें भाव में मिल ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की धर्म-जीवन में कमी रहती है तथा आग्नेयता में भी बड़े संकट आते हैं।

ऐसा व्यक्ति अपने चातुर्मय, गुप्त युक्तियों, कुद्दि तथा साहस के बल पर संकटों से अपनी रक्षा करता है तथा कभी-कभी विशेष चिन्तनीय स्थितियों में होकर भी गुजरता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘दशमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

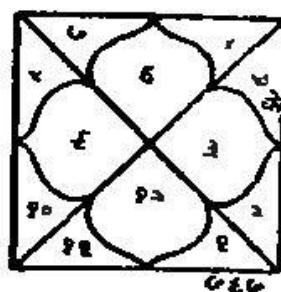
कन्या लग्न : दशमभाव : केतु



दसवें भाव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक को पितर के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में व्यक्तिक व्यापार स्थापित नहीं होता। उसे भाव-हानि, घन-हानि आदि का शिकार बनना पड़ता है। वह इगड़े-झट तथा परेशानियों में अक्सर फँसता रहता है।

‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘एकादशभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

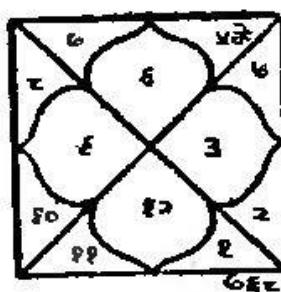
कन्या लग्न : एकादशभाव : केतु



यारहवें भाव में शत्रु ‘चन्द्रमा’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की आमदनी के साथानों में वृद्धि होती है, परन्तु उसे मानसिक-परेशानियाँ भी बहुत रहती हैं। कभी-कभी उसे संकट एवं हानि का सामना करना पड़ता है तो कभी-कभी व्याकुम्पिक लाभ भी होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा बंयदान् तथा परिशमी होता है।

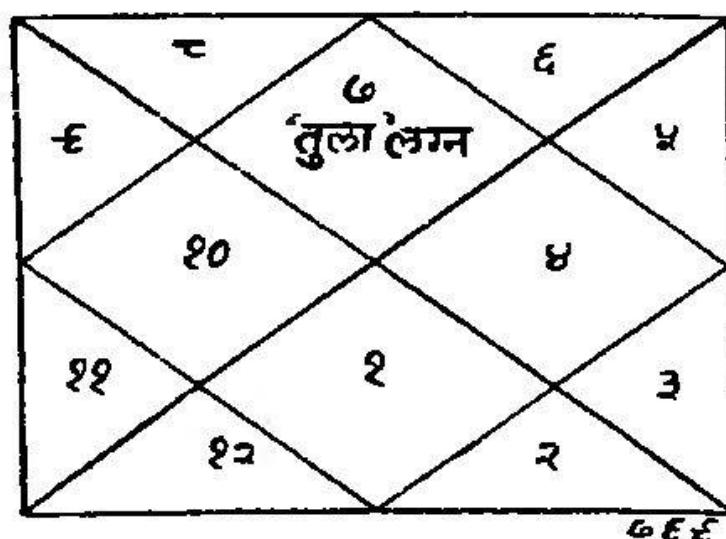
‘कन्या’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : केतु



बारहवें भाव में शत्रु ‘सूर्य’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक को खर्च के कारण अनेक चिन्ताओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध भी कष्टकारक सिद्ध होते हैं। वह कभी-कभी संकटों का शिकार भी बनता है, परन्तु अपने दैर्ये एवं गुप्त भूक्तियों के बल पर जैसे-तैसे छुटकारा भी पा लेता है।

‘तुला’ लग्न



[‘तुला’ लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न शावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

‘तुला’ लग्न का फलादेश

‘तुला’ लग्न में जन्म लेने वाला जातक गौर वर्ण, लिंगिल शरीर तथा शोटी जाक वाला होता है। वह कफ प्रकृति वाला एवं वौयंविकारयुक्त भी होता है।

ऐसा व्यक्ति गुणी, धनी, यशस्वी, परीक्षकारी, प्रियवादी, सत्यवादी, सतोगुणी, शीर्ष-प्रेमी, निर्लोभ, व्यवसाय-कुशल, ज्योतिषी, भ्रमणशील तथा अपने कुल का भूषण होता है। वह राज्य द्वारा सम्मानित, देव-भूजन में चित्त लगानेवाला तथा भर-त्स्वियों से भ्रम रखने वाला भी होता है।

‘तुला’ लग्न में जन्म लेने वाले जातक को व्यापक व्यारम्भिक अवस्था में हुख खोना पड़ता है, अध्यमावस्था में वह सुख प्राप्त करता है तथा अन्तिमावस्था सामान्य स्थिति में बीहती है।

‘तुला’ लग्न के जातक का शाश्वोदय ३१ वर्षवा ३२ वर्ष की आयु में होता है।

‘तुला’ लग्न वालों की अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न शावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दो गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७० से ८७० के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली से ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार रहमत लेना चाहिए।

‘तुला’ लग्न में ‘सूर्य’ का फलादेश

१—‘तुला’ लग्न वालों को अपनी अन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘सूर्य’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७० से ७८१ के बीच देखना चाहिए।

२—‘तुला’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न वालों में स्थित ‘सूर्य’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

चित्त यहीने में ‘सूर्य’—

- (क) ‘भेष’ राशि पर हो तो संख्या ७७०
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ७७१
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ७७२
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ७७३
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ७७४
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ७७५
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ७७६
- (ज) ‘बृशिंचक’ राशि पर हो तो संख्या ७७७
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या ७७८
- (झ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या ७७९
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ७८०
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर हो तो संख्या ७८१

‘तुला’ लग्न में ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

१—‘तुला’ लग्न वालों की अपनी अन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘चन्द्रमा’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७८२ के ७९३ के बीच देखना चाहिए।

२—‘तुला’ लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘चन्द्रमा’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

चित्त दिन ‘चन्द्रमा’—

- (क) ‘भेष’ राशि पर हो तो संख्या ७८२
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ७८३
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ७८४
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ७८५
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ७८६
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ७८७

- (४) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७८८
- (५) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७८९
- (६) 'घनु' राशि पर हो तो संख्या ७९०
- (७) 'भकर' राशि पर हो तो संख्या ७९१
- (८) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७९२
- (९) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७९३

‘तुला’ लग्न में ‘मंगल’ का फलादेश

१—“तुला” लग्न वालों को अपनी अन्यकृष्णली के विभिन्न भावों में स्थित ‘मंगल’ का स्थायी फलादेश संख्या उदाहरण-कृष्णली ७६४ से ८०५ के बीच देखना चाहिए।

२—“तुला” लग्न वालों को गोचर-कृष्णली के विभिन्न भावों में स्थित ‘मंगल’ का स्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कृष्णलियों में देखना चाहिए—

जिस भावीने में ‘मंगल’—

- (१) ‘मिथ’ राशि पर हो तो संख्या ७६४
- (२) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ७८५
- (३) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ७९६
- (४) ‘कक्ष’ राशि पर हो तो संख्या ७९७
- (५) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ७९८
- (६) ‘कल्या’ राशि पर हो तो संख्या ७९९
- (७) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ८००
- (८) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या ८०१
- (९) ‘घनु’ राशि पर हो तो संख्या ८०२
- (१०) ‘भकर’ राशि पर हो तो संख्या ८०३
- (११) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ८०४
- (१२) ‘मीन’ राशि पर हो तो संख्या ८०५

‘तुला’ लग्न में ‘कुष’ का फलादेश

१—“तुला” लग्न वालों को अपनी अन्यकृष्णली के विभिन्न भावों में स्थित ‘कुष’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कृष्णली संख्या ८०६ से ८१७ के बीच देखना चाहिए।

२—“तुला” लग्न वालों को गोचर-कृष्णली से विभिन्न भावों में स्थित ‘कुष’

का अस्यायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'कृष्ण'—

- (क) 'मिथ' राशि पर हो तो संख्या ८०६
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८०७
- (ग) 'मिषुन' राशि पर हो तो संख्या ८०८
- (घ) 'कक' राशि पर हो तो संख्या ८०९
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८१०
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८११
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८१२
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८१३
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८१४
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८१५
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८१६
- (ठ) 'बौद्ध' राशि पर हो तो संख्या ८१७

'तुला' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'तुला' लग्न वालों की अपनी अस्यकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'कृष्ण' का स्यायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८१८ से ८२६ के बीच देखना चाहिए।

२—'तुला' लग्न वालों की शीघ्रर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्यायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'कृष्ण'—

- (क) 'मिथ' राशि पर हो तो संख्या ८१८
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८१९
- (ग) 'मिषुन' राशि पर हो तो संख्या ८२०
- (घ) 'कक' राशि पर हो तो संख्या ८२१
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८२२
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८२३
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८२४
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८२५
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८२६
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८२७
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८२८
- (ठ) 'बौद्ध' राशि पर हो तो संख्या ८२९

थल

‘तुला’ लग्न में ‘शुक्र’ का फलादेश

१—‘तुला’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘शुक्र’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८३० से ८४१ के बीच देखना चाहिए।

२—‘तुला’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘शुक्र’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

चित्र महीने में ‘शुक्र’—

- (क) ‘अेष’ राशि पर हो तो संख्या ८३०
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ८३१
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ८३२
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ८३३
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ८३४
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ८३५
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ८३६
- (झ) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या ८३७
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या ८३८
- (झ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या ८३९
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ८४०
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर हो तो संख्या ८४१

‘तुला’ लग्न में ‘शनि’ का फलादेश

१. ‘तुला’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘शनि’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८४२ से ८५३ के बीच देखना चाहिए।

२. ‘तुला’ लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘शनि’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए।

जिस वर्ष में ‘शनि’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ८४२
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ८४३
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ८४४
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ८४५
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ८४६
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ८४७

- (८) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८४८
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८४९
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८५०
- (झ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८५१
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८५२
- (ठ) 'शीत' राशि पर हो तो संख्या ८५३

'तुला' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१. 'तुला' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न वालों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८४४ से ८६५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'राहु' का धृस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

- (क) 'भेष' राशि पर हो तो संख्या ८५४
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८५५
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८५६
- (घ) 'कक' राशि पर हो तो संख्या ८५७
- (ङ) 'तिह' राशि पर हो तो संख्या ८५८
- (ब) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८५९
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८६०
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८६१
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८६२
- (झ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८६३
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८६४
- (ठ) 'शीत' राशि पर हो तो संख्या ८६५

'वृष' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'तुला' लग्न वालों की अपनी जन्म-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८६६ से ८७७ के बीच देखना चाहिए।

२. 'तुला' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'केतु'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'जेतु'—

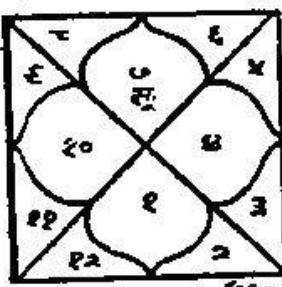
- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८६६
- (ख) 'पूर्व' राशि पर हो तो संख्या ८३७
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८६८
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८६९
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८७०
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८७१
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८७२
- (झ) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८७३
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८७४
- (झ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८७५
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८७६
- (ठ) 'शीत' राशि पर हो तो संख्या ८७७



'तुला' सान में 'सूर्य'

'तुला' सान को कुण्डली के 'प्रथमधाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

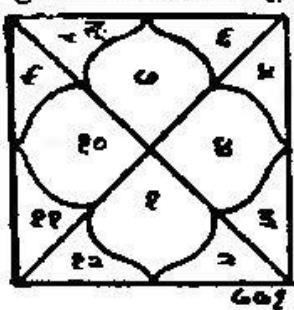
तुलालग्न : प्रथमधाव : सूर्य



शरीर-स्थान में व्यपने शब्द शुक्र की राशि पर स्थित बोध के शनि के प्रभाव से जातक की शरीर में सदा दुर्बलता तथा सौन्दर्य की कमी का अनुभव होता है। वह किसी की युलामी करने में हानि समझता है। पराक्रम की भी कमी रहती है। सातवीं उच्च दृष्टि से मित्र भूंगल की राशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री पक्ष से लाभ होता है। सुन्दर स्त्री गिरजाही है। भोग-शक्ति तथा व्यवसाय पक्ष को उन्नति होती है।

'तुला' सान को कुण्डली में 'द्वितीयधाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुलालग्न : द्वितीयधाव : सूर्य

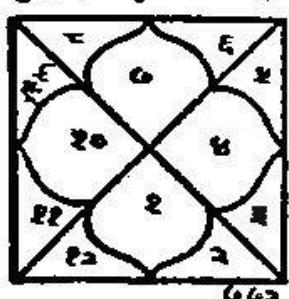


दूसरे भाव में मित्र 'भूंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की दून सधा कुटुम्ब की पर्याप्त सुख मिलता है और वह धनी सधा प्रभावशाली भी होता है।

सातवीं शब्ददृष्टि से अष्टमधाव को देखने से पुरातत्व तथा आयु के पक्ष में कुछ कमी वर्ती रहती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का कलावेश

तुला लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

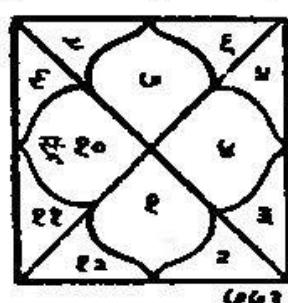


तीसरे भाव में मित्र ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक की भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में बढ़ि होती है। ऐसा अवित लप्ते बाहु-बल का अरोसा अधिक रखता है।

सातवीं मित्रदूषि से नवमभाव को देखने से भाव्य तथा धर्म में बढ़ि होती है तथा आमदनी जच्छी बनी रहती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का कलावेश

तुला लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

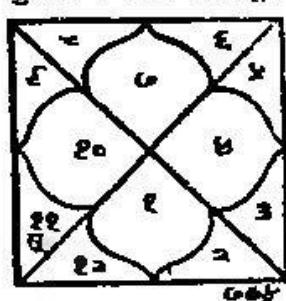


चौथे भाव में शत्रु ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘सूर्य’ से प्रभाव से जातक की भूमि, भवन तथा भाता का अपूर्ण सुख रहता है तथा आय से पक्ष में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं मित्रदूषि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं अवसाय के क्षेत्र में सुख, सफलता, यश तथा सम्मान की आप्ति होती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘पंचमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का कलावेश

तुला लग्न : पंचमभाव : सूर्य

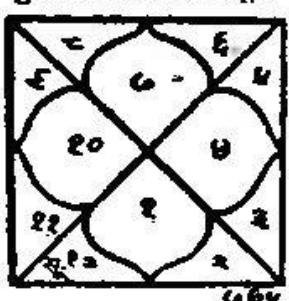


पांचवें भाव में शत्रु ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक की सत्तान-पक्ष से असंतोषपूर्ण साम होता है तथा विद्याध्याम में श्री बड़ी कठिनाइयों से सफलता मिलती है।

सातवीं दूषि से स्वराशि के एकादश भाव को देखने से बृद्ध-योग का तथा कठिन परिश्रम द्वारा श्रेष्ठ आमदनी का साम मिलता है, परन्तु दिमाग में कुछ परेशानियाँ भी रहती हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'वल्लभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : वल्लभाव : सूर्य

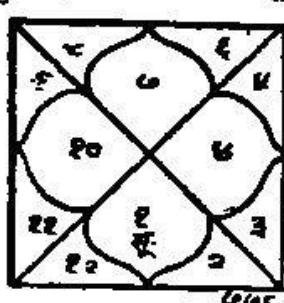


छठे भाव में मित्र 'जुह' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा शत्रुओं से लाभ भी होता है। वामदण्डी भी वज्जी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से ज्वर अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। ऐसा अविल बड़ा बहादुर तथा हिम्मती होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'स्वप्नमधाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : स्वप्नमधाव : सूर्य

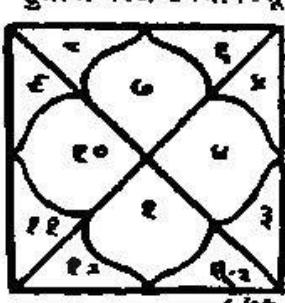


सातवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को सुन्दर पत्नी मिलती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से लाभ भी जूँब होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से प्रथममधाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा चित्र भी चिन्ताप्रस्त बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'वल्लभमधाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

तुला लग्न : वल्लभमधाव : सूर्य

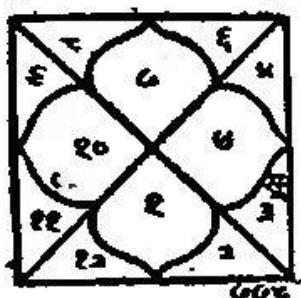


बाढ़वें भाव में शत्रु 'शुक्र' को राशि पर स्थित एकादशी 'सूर्य' के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम से बनोपायन करता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। वायु की बृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व-लाभ में कमी आती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से जातक धन-बृद्धि से लिए प्रवल्लभील बना रहता है तथा कुटुम्ब का सूख भी प्राप्त करता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘नवमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

सुला लग्न : नवमभाव : सूर्य

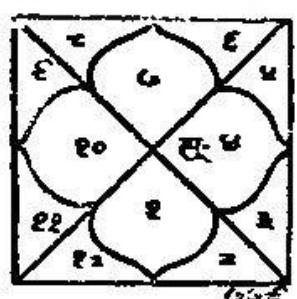


नवें भाव में मित्र ‘वृथ’ की राशि पर स्थित ‘सूर्य’ से प्रभाव से जातक के दर्म तथा भाव्य की वृद्धि होती रहती है। उसे धन तथा सुख पर्याप्त मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में शी वृद्धि होती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘दशमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

सुला लग्न : दशमभाव : सूर्य

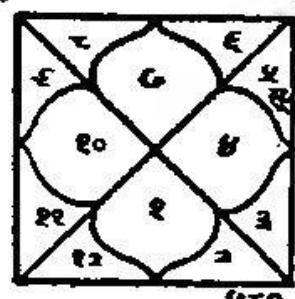


दसवें भाव में मित्र ‘धन्दमा’ की राशि पर स्थित ‘सूर्य’ से प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय से क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। आमदनी में खूब वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से माता, भूमि एवं भवन से सुख में कुछ कमी बनी रहती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘एकादशभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

सुला लग्न : एकादशभाव : सूर्य

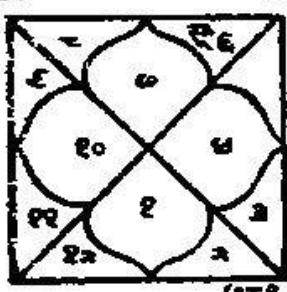


ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक की आमदनी में बहुत वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव की देखने से सन्तान के पक्ष से कुछ असन्तोष रहता है तथा विद्याध्ययन में शी कमी रहती है। ऐसे व्यक्ति की बाणी में तेजी पाई जाती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वादशशाखा’ स्थित ‘कूर्य’ का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशशाखा : सूर्य



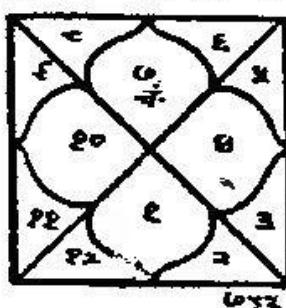
बारहवें भाव में मित्र ‘कूर्य’ की राशि पर स्थित ‘कूर्य’ से प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख, सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्रदूष्टि से अष्टमशाखा को देखने से शनु-नक्षत्र से मित्रता स्थापित होती है, ज्ञानों से लाभ होता है तथा प्रभाव की वृद्धि होती है।

‘तुला’ लग्न में ‘चन्द्रमा’

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘प्रथमशाखा’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

तुला लग्न : प्रथमशाखा : चन्द्र

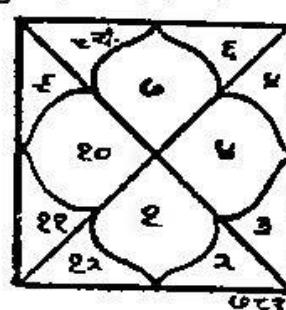


पहले भाव में सामान्य मित्र ‘सुक’ की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व की प्राप्ति होती है। उसे राजनीति के क्षेत्र में सम्मान मिलता है।

सातवीं मित्रदूष्टि से सप्तम भाव को देखने से सुन्दर स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय से क्षेत्र में भी लाभ होता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वितीयशाखा’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

तुला लग्न : द्वितीयशाखा : चन्द्र

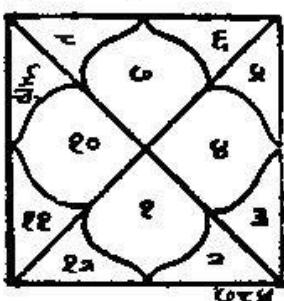


दूसरे भाव में मित्र ‘मंगल’ की राशि पर स्थित नीच के ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी का सामना करना पड़ता है। धन-संचय के लिए गुप्त युक्तियों का सहारा भी सेना पड़ता है।

सातवीं उच्चदूष्टि से अष्टम भाव की देखने से आमु एवं पुरातत्व का लाभ होता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का कलादेश

तुला लग्नः तृतीयभावः चन्द्र

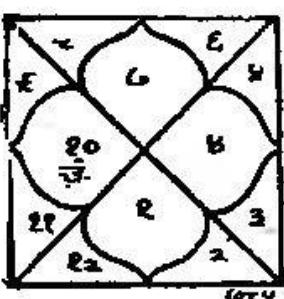


तीसरे भाव में मित्र ‘गृह’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में बृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं अवसाय से क्षेत्र में भी सफलता मिलती है तथा पुरातत्व का भी लाभ होता है।

सातवीं मित्रदूषि से नक्षमभाव को देखने से जातक के धर्म तथा धार्य की बृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी होता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का कलादेश

तुला लग्नः चतुर्थभावः चन्द्र

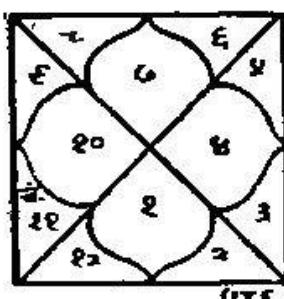


चौथे भाव में शत्रु ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक की दाता, भूमि तथा व्यवसाय का क्षुटिभूर्ज लाभ होता है।

सातवीं मित्रदूषि से दशम भाव की देखने से पिता, राज्य तथा अवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘पंचमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का कलादेश

तुला लग्नः पंचमभावः चन्द्र

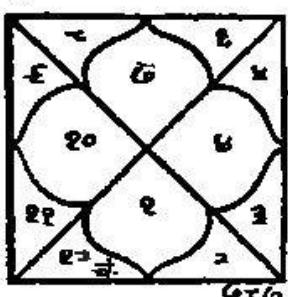


पाँचवें भाव में शत्रु ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या तथा बृद्धि के लोक में सफलता मिलती है। राज्य तथा अवसाय से क्षेत्र में भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ी तीक्ष्ण बृद्धि वाला होता है।

सातवीं मित्रदूषि से एकादश भाव की देखने से वासदली में पर्याप्त बृद्धि होती है तथा जातक अनी होता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘षष्ठमधाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठमधाव : चन्द्र

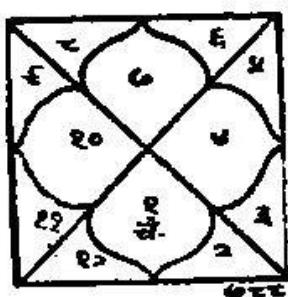


छठे शाव में मित्र ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ से प्रभाव से जातक को अपनी चतुराई, ग्नोबल तथा शान्त स्वभाव के कारण शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ रुकावटें आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश शाव को देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ भी मिलता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

तुला लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

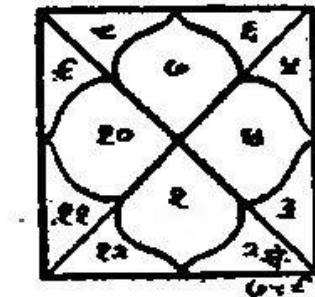


सातवें शाव से मित्र ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को व्यवसाय-पक्ष में अत्यधिक सफलता मिलती है तथा स्त्री द्वारा उल्लिखित प्रभाव की वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष से भी दशा तथा साध मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम शाव भी देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, प्रभाव तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

तुला लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

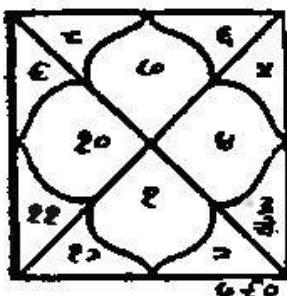


आठवें शाव में सामान्य मित्र ‘कुकुर’ की राशि पर स्थित उच्च के ‘चन्द्रमा’ से प्रभाव से जातक की वायु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का साध होता है। दैनिक जीवन आनन्दमय रहता है, परन्तु पिता-पक्ष से हानि, राज्य-पक्ष से सामान्य सम्मान तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ साध भी प्राप्ति होती है।

सातवीं नीत्रदृष्टि से द्वितीय शाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख भी कमज़ोर रहता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘नवमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलावेश

तुला लग्न : नवमभाव : चन्द्र

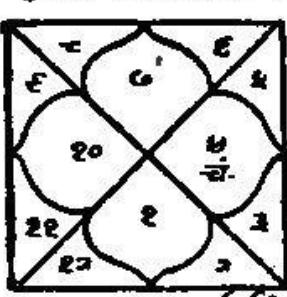


नके आव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से भी यश, सहयोग तथा सम्मान का लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से आई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘दशमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलावेश

तुला लग्न : दशमभाव : चन्द्र

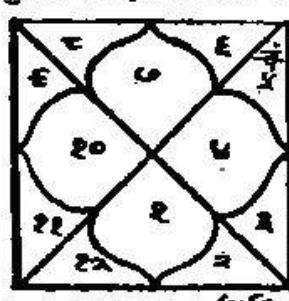


इसबें आव में स्वराशि-स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को विद्या, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में ज्ञान, सहयोग, सम्मान, यश तथा धन का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति स्वाभिमानी तथा समाज में प्रतिष्ठित होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से याता, भूमि तथा अवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘एकादशभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलावेश

तुला लग्न : एकादशभाव : चन्द्र

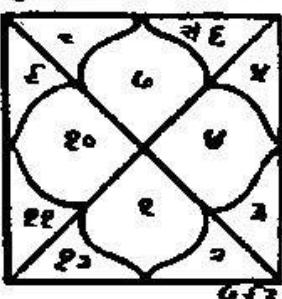


व्यारहवें आव में मित्र ‘सूर्य’ की राशि में स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को लाभ के अवसर निरन्तर मिलते रहते हैं। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में भी सफलता, सम्मान तथा यश आदि की यथेष्ट प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंथम भाव को देखने से सम्मान से पक्ष से सामाज्य असंतोष रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति होशियार, चालाक तथा स्वार्थी होता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

तुलालग्नः द्वादशभावः चन्द्र



बारहवें भाव में मित्र ‘बृह’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ से प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परम्परा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं उन्नति भी होती है। पिता, व्यवसाय तथा राज्य-पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है। प्रतिष्ठानान्वयन में भी कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में शक्ति एवं चातुर्ये द्वारा सफलता प्राप्त होती है।

‘तुला’ लग्न में मंगल

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

तुलालग्नः प्रथमभावः मंगल

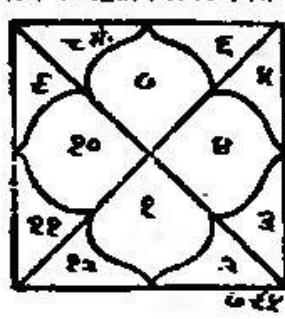


पहले भाव में सामान्य मित्र ‘कुक’ की राशि पर स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक की शारीरिक सुख तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। इन तथा कृदूम्ब का सुख भी मिलता है।

चौथी उच्च दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, सूमि तथा अवन का विशेष सुख मिलता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव की देखने से स्वीका का सुख मिलता है तथा व्यवसाय में उन्नति होती है। आठवीं सामान्य मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातस्व की वृद्धि होती है, परन्तु उदर-विकार रहता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘द्वितीयभाव’ स्थित मंगल का फलादेश

तुलालग्नः द्वितीयभावः मंगल

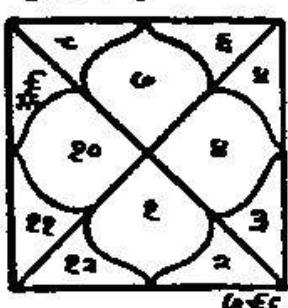


दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक को इन तथा कृदूम्ब का सुख प्राप्त होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सप्तम तथा विद्यु-बुद्धि का लाभ कुछ कठिनाइयों के साथ होता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातस्व की वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि के नवम भाव को देखने से आय तथा खर्च की वृद्धि होती है।

'तुला' राशि की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

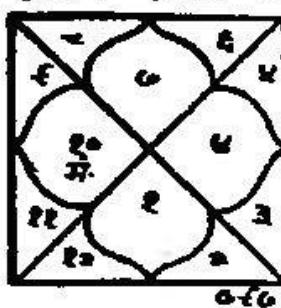
तुलालग्नः तृतीयभावः मंगल



फेत में कुछ रुकावटें आती हैं ।

'तुला' राशि की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

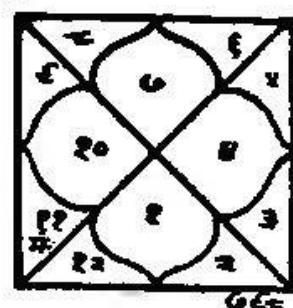
तुलालग्नः चतुर्थभावः मंगल



खूब अच्छी बातों रहती है । ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी होता है ।

'तुला' राशि की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

तुलालग्नः पंचमभावः मंगल



से आमदनी खूब होती है । आठवीं विक्रम-दृष्टि से छादकभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है ।

तीसरे भाव में विक्रम 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से शार्दूल-दृष्टि का सुख मिलता है तथा पराक्रम की कुछ होती है । धन-लाभ भी खूब होता है तथा स्त्री-पक्ष में भी सफलता मिलती है । चौथी विक्रम-दृष्टि से षष्ठमभाव को देखने से शाश्वत-पक्ष पर विजय मिलती रहती है ।

सातवीं विक्रम-दृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म तथा आर्थिक को उन्नति होती है । आठवीं नीचवृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता-राज्य एवं व्यवसाय के

फेत

में कुछ रुकावटें आती हैं ।

बौध भाव में शत्रु 'कनि' की राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक की माता, शूमि तथा भवन का विक्रम सुख मिलता है । चौथी दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय से भी सुख मिलता है ।

सातवीं नीचवृष्टि से विक्रमराशि में दशमभाव की देखने से पिता से सुख में कमी आती है तथा राज्य एवं व्यवसाय से जेत की उन्नति में रुकावटें आती हैं । सातवीं विक्रम-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब अच्छी बातों रहती है । ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी होता है ।

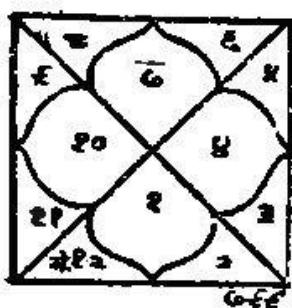
'तुला' राशि की कुण्डली में 'षष्ठमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

पांचवें भाव में शत्रु 'कनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विद्याबुद्धि के जेत में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है । कुटुम्ब तथा स्त्री से कुछ वैमनस्य रहता है । बुद्धिज्ञ से व्यवसाय में सफलता मिलती है । चौथी शत्रु-दृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से आयु के जेत में कुछ कठिनाइयों आती हैं तथा कुछ कठिनाइयों से साथ पुरातत्त्व का लाभ होता है ।

सातवीं विक्रम-दृष्टि से एकादश भाव की देखने से आमदनी खूब होती है । आठवीं विक्रम-दृष्टि से छादकभाव की देखने से खर्च अधिक

'तुला' लग्न की कुष्ठस्त्री में 'अष्टमाव' स्थित 'अंगल' का फलादेश

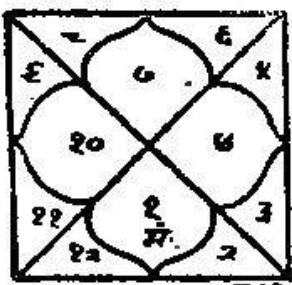
तुला लग्न : षष्ठ्यमध्याव : मंगल



देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है। ऐसे व्यक्ति को अग्ने-मुकुटमे वादि से लाभ होता रहता है।

'तुला' लग्न की कुष्ठस्त्री में 'सप्तममध्याव' स्थित 'अंगल' का फलादेश

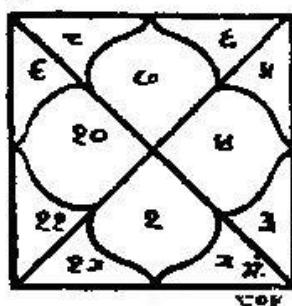
तुला लग्न : सप्तममध्याव : मंगल



दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव की देखने से धन तथा कुटुम्ब का अच्छा सुख प्राप्त होता है।

'तुला' लग्न की कुष्ठस्त्री में 'अष्टममध्याव' स्थित 'अंगल' का फलादेश

तुला लग्न : अष्टममध्याव : मंगल



से आई-कहिनों का सामान्य सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

छठे भाव में मित्र 'युरु' को राशि पर स्थित 'अंगल' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर बड़ा प्रभाव रखता है। धन-संचय में कमी रहती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के लाभ सफलता मिलती है। चौथी मित्र-दृष्टि से नवम भाव की देखने से धार्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवें मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा वाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को

देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है। ऐसे व्यक्ति को अग्ने-मुकुटमे वादि से लाभ होता रहता है।

सातवें भाव में स्वराशि-स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ बघन-सा रहता है, परन्तु शोग की यथेष्ट प्राप्ति होती है। दैनिक व्यवसाय भी अच्छा रहता है। चौथी नीच-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

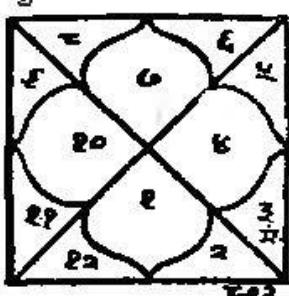
सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में गर्भी अथवा रक्त-विकार रहता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव की देखने से धन तथा कुटुम्ब का अच्छा सुख प्राप्त होता है।

आठवें भाव में शत्रु 'कुक्क' की राशि पर स्थित 'अंगल' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष तथा दैनिक व्यवसाय के कुछ कष्ट होता है। वाहरी स्थानों के व्यवसाय से तथा पूरातत्व से लाभ होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से व्यामदनों का सुख होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव की देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख परिश्रम द्वारा प्राप्त होता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से दूतीय भाव की देखने से आई-कहिनों का सामान्य सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'व्यवसाय' स्थित 'बंगल' का फलादेश

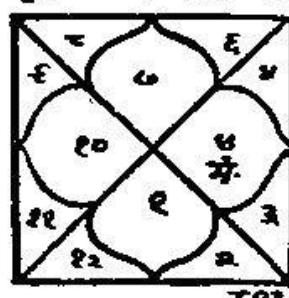
तुला लग्न: नवमधाव: मंगल



बृद्धि होती है। बाठकी उच्च-दृष्टि से चतुर्थधाव को देखने से भवन का पर्याप्त सुख मिलता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'व्यवसाय' स्थित 'बंगल' का फलादेश

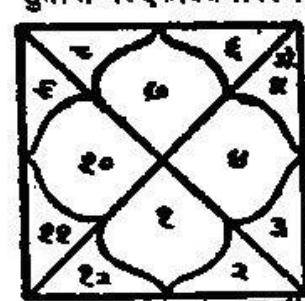
तुला लग्न: दशमधाव: मंगल



बैमनस्य रहता है तथा विद्या-बृद्धि में कुछ कमी बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'पक्षादशधाव' स्थित 'बंगल' का फलादेश

तुला लग्न: एकादशधाव: मंगल



से स्त्री-पक्ष में की कुछ कमी रहती है तथा वाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में लाभ होता है।

नवे भाव में मित्र 'बृद्धि' की राशि पर स्थित 'बंगल' के प्रभाव से जातक को भास्योन्नति खूब होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। स्त्री भास्यशालिनी मिलती है, फलतः विवाहोपरान्त विशेष लाभ होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से हावशधाव को देखने से खबरें अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयधाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी

भावहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी

दसवें भाव में मित्र 'चन्द्रम' को राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के लैक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं तथा स्त्री एवं कुटुम्ब के सुख में भी कमी रहती है।

चौथी मित्र-दृष्टि से प्रथमधाव को देखने से भारी दुखल रहता है, परन्तु सम्मान को प्राप्ति होती है। सातवीं उच्च बृद्धि से चतुर्थधाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। बाठकी शत्रु-दृष्टि से पंचमधाव को देखने से सन्तान-पक्ष से

बैमनस्य रहता है तथा विद्या-बृद्धि में कुछ कमी बनी रहती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठादशधाव' स्थित 'बंगल' का फलादेश

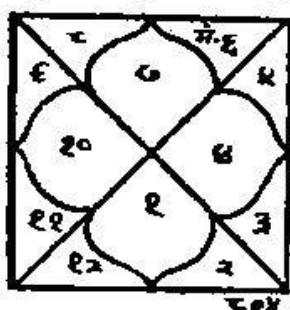
भ्यारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से घन का पर्याप्त लाभ होता है। स्त्री-पक्ष से भी सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयधाव की देखने से घन तथा कुटुम्ब का सुख भी पर्याप्त मिलता है।

सातवीं लक्ष्मी-दृष्टि से पंचमधाव को देखने से सन्तान से असन्तोष तथा विद्या-बृद्धि में कमी रहती है।

बाठकी मित्र-दृष्टि से स्वराशि में सप्तमधाव को देखने से स्त्री-पक्ष में की कुछ कमी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में लाभ होता है।

‘तुला’ लग्न को कुण्डली में ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

तुलालग्नःद्वादशभावःमंगल

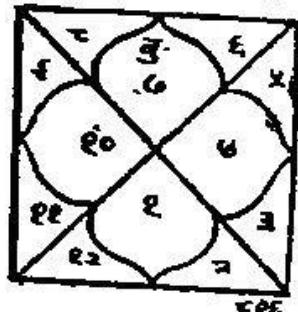


देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में लाभ होता है तथा स्वीकृति में कुछ कमी रहती है।

‘तुला’ लग्न में ‘बुध’

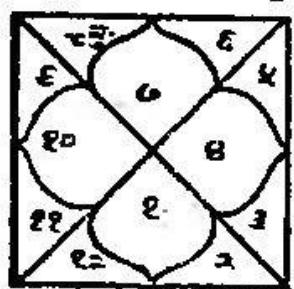
‘तुला’ लग्न को कुण्डली में ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

तुलालग्नःप्रथमभावःबुध



‘तुला’ लग्न को कुण्डली में ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

तुलालग्नःद्वितीयभावःबुध



बारहवें भाव में मिल ‘बुध’ को राशि पर स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। धन, कुटुम्ब, स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में हानि एवं असल्लोच के अवसर उपस्थित होते हैं। चौथी मिल-दूषित से तृतीयभाव को देखने से आई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में बृद्धि होती है। सातवीं मिल-दूषित से चूल्हा भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त होती है।

आठवीं दूषित से स्वराशि में सप्तमभाव को

देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में लाभ होता है तथा स्वीकृति में कुछ कमी रहती है।

‘तुला’ लग्न में ‘बुध’

‘तुला’ लग्न को कुण्डली में ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

पहले भाव में मिल ‘बुध’ को राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का अरीर दुर्बल होता है तथा वह बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता और खूब खर्च करता है। भाग्य में कमी होते हुए भी शोग्यवान् समझा जाता है तथा धर्म का पालन भी करता है।

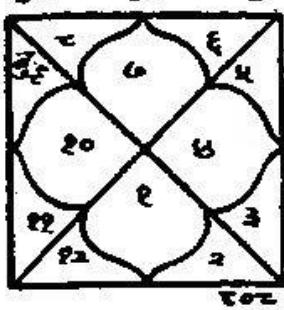
सातवीं मिल-दूषित से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा देविक व्यवसाय के अंत में सफलता प्राप्त होती है।

दूसरे भाव में मिल ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कमी रहती है। धन खूब खर्च करता है तथा स्वार्थ के लिए ही धर्म का पालन भी करता है।

सातवीं मिल-दूषित से अष्टमभाव को देखने से आशु एवं पुरातत्व का योग्य लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति सामान्यतः कर्मी माना जाता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘बुध’ का कलावेश

तुला लग्न : तृतीयभाव : बुध

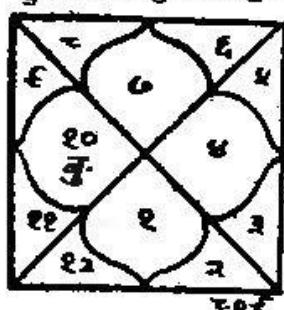


तीसरे भाव में मिल ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। बाहरी स्थानों के संवंध में लाभ होता है तथा भाग्योन्नति में सामान्य रुकावटें आती हैं।

सातवीं बृहिष्ठि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी और लिपा सदा यशस्वी होता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘बुध’ का कलावेश

तुला लग्न : चतुर्थभाव : बुध

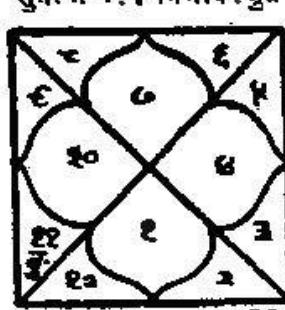


चौथे भाव में मिल ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। बाहरी संवंधों से योग्य लाभ होता है। वह खर्च भी खूब करता है।

सातवीं मिन्द्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग, प्रतिष्ठा, धन, मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली में ‘पंचमभाव’ स्थित ‘बुध’ का कलावेश

तुला लग्न : पंचमभाव : बुध

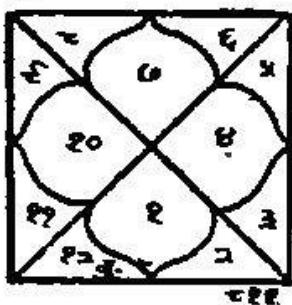


पांचवें भाव में मिल ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से शक्ति मिलती है तथा विद्या-बुद्धि का लाभ कुछ धनी के साथ होता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भाग्य की वृद्धि होती है। खर्च भी खूब रहता है।

सातवीं मिन्द्रदृष्टि से एकादशमभाव को देखने से धायदानी योग्य रहती है। ऐसा व्यक्ति धर्म का पालन करने वाला, प्रतिष्ठित तथा भाग्यशाली होता है।

'तुला' लाल शी कुण्डली में 'वल्लभाव' स्थित 'कुष्ठ' का फलावेश

तुला लग्नः वल्लभावः कुष्ठ

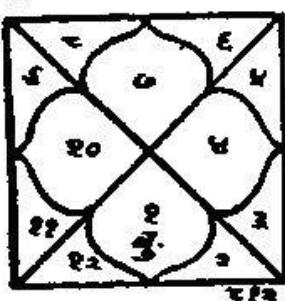


छठे भाव में मित्र 'कुष्ठ' की राशि पर रित्यत नीच के 'कुष्ठ' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं तथा उन्हें भी कठिनाइ से चलता है। धर्म एवं भाग्य के क्षेत्र में भी कमज़ोरी रहती है परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखने से उन्हें की अविकल्प बनी रहती है।

'तुला' लाल की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'कुष्ठ' का फलावेश

तुला लग्नः सप्तमभावः कुष्ठ

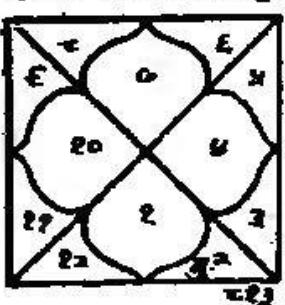


मात्रवें भाव में मित्र 'अग्नि' की राशि पर रित्यत व्ययेश 'कुष्ठ' के प्रभाव से जातक को स्वीं तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। गृहस्थी का उन्हें अच्छी तरह चलता है तथा धर्म का पालन भी होता है। बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से कारोरिक सुख तथा मान-प्रतिष्ठा को प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति आग्यवान् समझा जाता है।

'तुला' लाल की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'कुष्ठ' का फलावेश

तुला लग्नः अष्टमभावः कुष्ठ

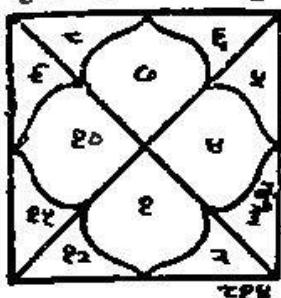


आठवें भाव में मित्र 'कुकु' को राशि पर रित्यत 'कुष्ठ' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्व की शक्ति प्राप्त होती है परन्तु भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमज़ोरी रहती है। बाहरी संबंधों से कठिनाइयों के साथ लाभ होता है तथा उन्हें चलाने में भी परेशानियाँ आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कठिनाइयों के साथ धन की बुद्धि होती है, परन्तु यह कम ही मिलता है।

‘तुला’ सन्न की कुछसी में ‘नदमभाव’ स्थित ‘बृंध’ का फलादेश

तुला नवमः नवमभावः दुध

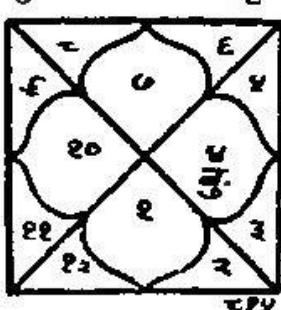


नवे भाव में स्वराजि-स्थित 'बुध' के प्रभाव-से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा वाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं मिक्रोस्कोप से लृतीयभाव की देखने से भाई-बहिनों का तुल मिलता है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ पराक्रम में भी बुद्धि होती है।

‘तत्त्वा’ लगम की कम्पडसी में ‘वस्तुभवाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

तुला लग्नः देशामभावः द्रुधः

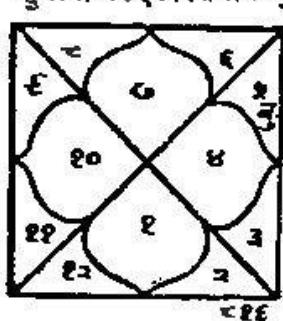


दसवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुद्ध' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति करने के लिए कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म का पालन भी कम ही होता है। भाग्योन्नति भी कम होती है।

सातवीं मिशनदूसिंह से चतुर्थभाव को देखने से आता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है जिसके कारण वह अनी समझा जाता है।

‘त्रिता’ लग्न की कथासी में ‘एकावशभाव’ स्थित ‘बृंद’ का कलादेश

तला लग्नः एकादशाभावः वृद्धि

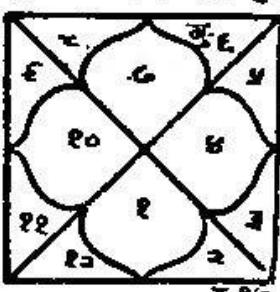


ध्यारहवें आव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'नुध' के प्रभाव से जातक को आमदनी यथेष्ट रहती है। ऐसा पर्यावरण ज्ञान आनन्द दोनों है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के अंत में सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति अपनी बुद्धि तथा वाणी के बल पर विशेष उन्नति करता है। परन्तु बुद्धि के व्यवेष होने के कारण हर क्षेत्र में कल्प कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशभाव : बुध



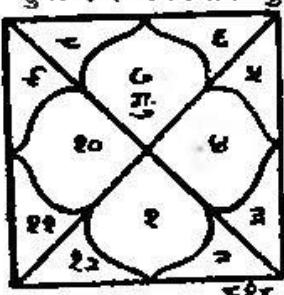
द्वारहवें भाव में स्वराशि-स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से मुछ कठिनाइयों के साथ भाव तथा सुख की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से बल भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में कुछ परेशानियाँ आती हैं तथा मुछ अनुचित उपायों के सहारे शत्रु-पक्ष में काम निकालना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी होता है।

'तुला' लग्न में 'गुरु'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

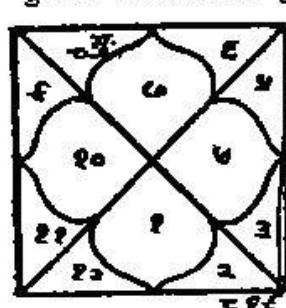
तुला लग्न : प्रथमभाव : गुरु



पहले भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव, पुरुषार्थ तथा प्रतिष्ठा को बढ़ि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी आती है। शत्रु-पक्ष में हिम्मत के बल पर प्रभाव स्थापित होता है। पौचवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से बंधनस्य रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि का लाभ होता है। सातवीं मिथ्य-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है। नवीं मिथ्य-दृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाष्य की बढ़ि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुला लग्न : द्वितीयभाव : गुरु



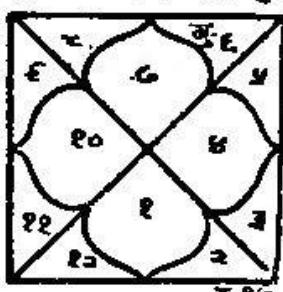
दूसरे भाव में मिथ्य 'अंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ द्वारा धन की बढ़ि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कमी रहती है। पौचवीं दृष्टि से स्वराशि में यज्ञभाव को देखने से जातक अपने धन के बल से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठमभाव को देखने से आशु की बढ़ि होती है तथा पुरातत्व का सामान्य लाभ होता है।

नवीं उच्च तथा मिथ्य-दृष्टि में दशमभाव को देखने से राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में यश, गुरु सम्मान तथा लग्न लाभ प्राप्त होते हैं।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशभाव : बुध



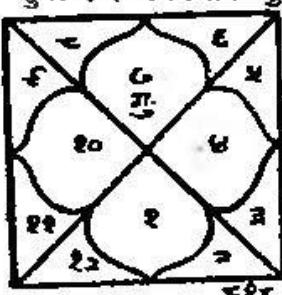
द्वारहवें भाव में स्वराशि-स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से मुछ कठिनाइयों के साथ भाव तथा सुख की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से बल भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में कुछ परेशानियाँ आती हैं तथा मुछ अनुचित उपायों के सहारे शत्रु-पक्ष में काम निकालना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी होता है।

'तुला' लग्न में 'गुरु'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

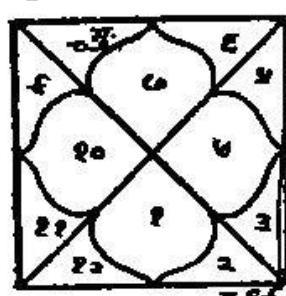
तुला लग्न : प्रथमभाव : गुरु



पहले भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव, पुरुषार्थ तथा प्रतिष्ठा को बढ़ि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी आती है। शत्रु-पक्ष में हिम्मत के बल पर प्रभाव स्थापित होता है। पौचवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से बंधनस्य रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि का लाभ होता है। सातवीं मिथ्य-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है। नवीं मिथ्य-दृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाष्य की बढ़ि होती है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुला लग्न : द्वितीयभाव : गुरु



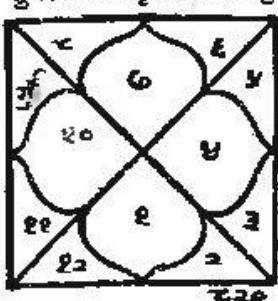
दूसरे भाव में मिथ्य 'अंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ द्वारा धन की बढ़ि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कमी रहती है। पौचवीं दृष्टि से स्वराशि में यज्ञभाव को देखने से जातक अपने धन के बल से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठमभाव को देखने से आशु की बढ़ि होती है तथा पुरातत्व का सामान्य लाभ होता है।

नवीं उच्च तथा मिथ्य-दृष्टि में दशमभाव को देखने से राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में यश, गुरु सम्मान तथा लग्न लाभ प्राप्त होते हैं।

'तुला' सन्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

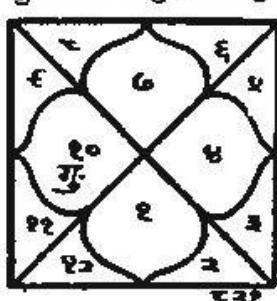
तुलालग्नः तृतीयभावः गुरु



सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, सनी, धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है।

'तुला' सन्न की कुण्डली से 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

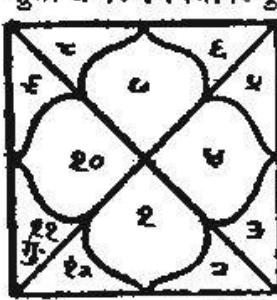
तुलालग्नः चतुर्थभावः गुरु



सम्बन्ध से लाभ होता है।

'तुला' सन्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तुला सन्नः पंचमभावः गुरु



भाव को देखने से ज्ञानीरिक स्तर, प्रभाव तथा बल भी प्राप्ति होती है, परन्तु स्वास्थ्य में कुछ कमी बनी रहती है।

तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में बृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में सामान्य कमी आती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। पाँचवीं निव-दूषित से सप्तमभाव को देखने से द्वितीय व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं निव-दूषित से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य को बृद्धि होती है। नवीं निव-दूषित से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में खूब सफलता मिलती है।

चौथे भाव में शत्रु शति की राशि पर स्थित नीचे के 'गुरु' के प्रभाव से जातक को भाता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है तथा शत्रु-पक्ष में भी परेशानी ठाठानी पड़ती है। पाँचवीं शत्रु-दूषित से अष्टमभाव को देखने से आमु तथा पुरातत्व का कुछ साध होता है।

सातवीं निव-दूषित से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। नवीं निव-दूषित से द्वादशभाव को देखने से सर्व व्यधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के

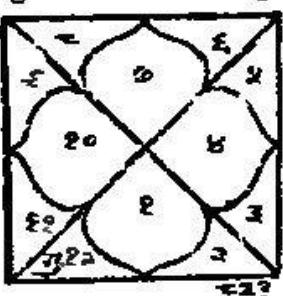
'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

पाँचवेंभाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को विद्या-बृद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में कुछ कलिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा शत्रु-पक्ष में प्रभाव बढ़ता है। भाई-बहिनों से कुछ मनभेद भी रहता है। पाँचवीं निव-दूषित से नवम भाव को देखने से पुरुषार्थी द्वारा भाग्य एवं धर्म की बृद्धि होती है।

सातवीं निव-दूषित से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब होती है। नवीं शत्रु-दूषित से प्रथम

'तुला' लग्न की कुष्ठली के 'व्यवसाय' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न: व्यष्टभाव: शुरु



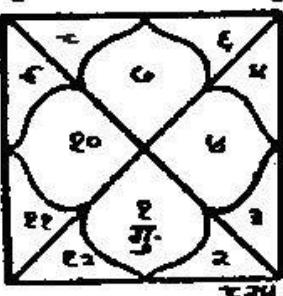
धन की वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब से कुछ मनभेद बना रहता है।

छठेभाव में स्वराशिस्थ 'गुरु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित करता है। भाई-बहिनों से कुछ वेमनस्थ रहता है तथा पुरुषार्थ में भी कुछ कमी रहती है। पौच्छीं उच्च-दृष्टि से दृष्टमभाव को देखने से पिता, व्यवसाय एवं राज्य के क्षेत्र में यथेष्ट सम्मान तथा सफलता की प्रति होती है।

सातवीं भिन्न-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहुरी स्थानों से लाभ होता है। नवीं भिन्न-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से

'तुला' लग्न की कुष्ठली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मुरु' का फलादेश

तुला लग्न: सप्तमभाव: शुरु



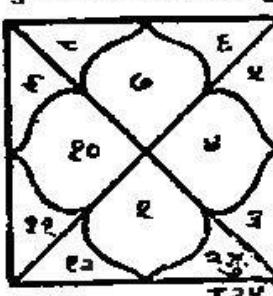
वृद्धि होती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि के तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवें भाव में भिन्न 'मंगल' की राशि पर स्थित 'मुरु' के प्रभाव से जातक पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय को उल्लित करता है तथा स्त्री को शक्ति भी पाता है, परन्तु स्त्री से कुछ मनभेद रहता है। पौच्छीं भिन्न-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से पुरुषार्थ द्वारा यथेष्ट बनोपाजेन होता है।

सातवीं भिन्न-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जारीर में कुछ परेशानियाँ रहती हैं, परन्तु प्रभाव की वृद्धि होती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि के तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न की कुष्ठली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

तुला लग्न: अष्टमभाव: शुरु



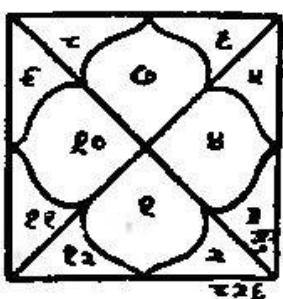
से चतुर्थभाव को देखने से भाता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है।

आठवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के पुरातत्त्व एवं आयु की वृद्धि होती है। परन्तु भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। शत्रु-पक्ष में भी परेशानी रहती है। पौच्छीं भिन्न-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहुरी स्थानों से लाभ हीता है।

सातवीं भिन्न-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है। नवीं नीच-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से भाता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली के ‘वशमधाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

तुला लग्न : नवमधाव : गुरु



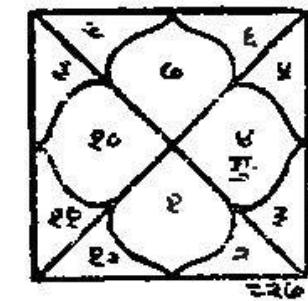
नवीं भाव में मित्र ‘बुध’ को राशि पर स्थित ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक के आय एवं धर्म को बृद्धि होती है तथा वह यशस्वी भी होता है। शत्रुपक्ष व्यवसाय अन्य झगड़ों के कारण आयोन्नति में कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से प्रवर्मधाव को देखने से शरीर में कुछ कमज़ोरी रहती है, परन्तु प्रभाव में बृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से आई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में बृद्धि होती है।

नवीं शत्रुदृष्टि से पंचमधाव को देखने से सन्तान से कुछ वैयक्तिक स्वतंत्रता है, परन्तु विद्या एवं बृद्धि के क्षेत्र में लक्षणता प्राप्त होती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली के ‘वशमधाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

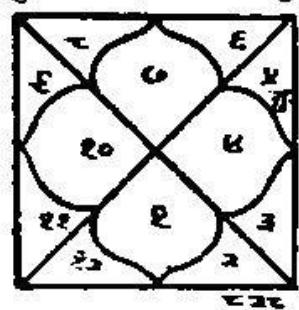
तुला लग्न : दशमधाव : गुरु



नवीं दृष्टि से स्वराशि में व्यष्टधाव को देखने से होता है।

‘तुला’ लग्न भी कुण्डली के ‘एकादशमधाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

तुलालग्न : एकादशमधाव : गुरु



नवीं दृष्टि में मित्रदृष्टि में सप्तमधाव को देखने से स्वीं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

नवीं भाव में मित्र ‘बुध’ को राशि पर स्थित ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक के आय एवं धर्म को बृद्धि होती है तथा वह यशस्वी भी होता है। शत्रुपक्ष व्यवसाय अन्य झगड़ों के कारण आयोन्नति में कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से प्रवर्मधाव को देखने से शरीर में कुछ कमज़ोरी रहती है, परन्तु प्रभाव में बृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से आई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में बृद्धि होती है।

नवीं शत्रुदृष्टि से पंचमधाव को देखने से सन्तान से कुछ वैयक्तिक स्वतंत्रता है, परन्तु बृद्धि के क्षेत्र में लक्षणता प्राप्त होती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली के ‘वशमधाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

दसवीं भाव में मित्र ‘चन्द्रमा’ की राशि पर स्थित ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। आई-बहिन का सुख भी मिलता है, परन्तु कुछ मनमेद भी रहना है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयधाव को-देखने से तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है।

सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थमधाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी आती है।

नवीं दृष्टि से स्वराशि में व्यष्टधाव को देखने से शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है।

‘तुला’ लग्न भी कुण्डली के ‘एकादशमधाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

दसवीं भाव में मित्र ‘सूर्य’ की राशि पर

स्थित ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा अपनी आय तथा ऐश्वर्य को बढ़ाता है। उसे शत्रु-पक्ष में भी सुख होता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीयधाव को स्वराशि में देखने से आई-बहिन का सुख मिलता है, तथा पराक्रम में बृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमधाव को देखने से शिदा

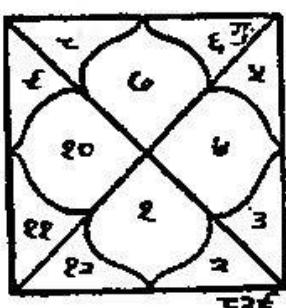
नथा संतान के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। परन्तु बृद्धि

व्यधिक होती है।

नवीं मित्रदृष्टि में सप्तमधाव को देखने से स्वीं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

'सुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुरु' का फलादेश

तुलालग्न : द्वादशभाव : शुरु



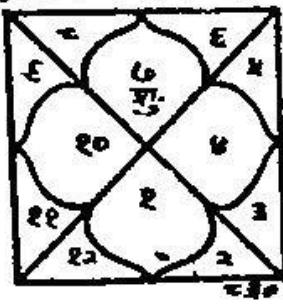
वारहवें भाव में मिल 'शुरु' की राशि पर स्थित 'शुरु' के प्रभाव से जातक का ज्यैं अधिक होता है। तथा बाहरी सम्बन्धों से साथ होता है। आई-विवाह के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। पौंछवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव की देखने से भाता, भूमि तथा भवन के सुख में भी कुछ कमी आती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव की देखने से गुप्त युक्तियों द्वारा तथा कुछ दवकर शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। नवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव की देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पुरातत्व एवं आशु का लाभ होता है।

'सुला' लग्न में 'शुक्र'

'सुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्न : प्रथमभाव : शुक्र

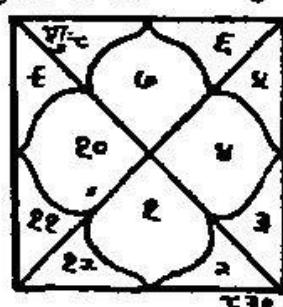


पहले भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के शारीरिक तथा आत्मिक बल एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। उसे आशु तथा पुरातत्व का लाभ भी मिलता है, परन्तु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण कमी-कमी शरीर में परेशानी का अनुभव भी होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय की उन्नति के लिए भी कठिन परिश्रम करने की व्यावश्यकता होती है।

'सुला' लग्न शी कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुलालग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

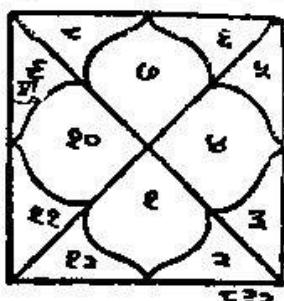


दूसरे भाव में शत्रु 'मर्गज' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को छन-संचय के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है, परन्तु उसे कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। कमी-कमी उसे कठिनाइयाँ भी आती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव की देखने से आशु तथा पुरातत्व की सक्ति का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन विताता है।

‘तुला’ लग्न को कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

तुलालग्न : तृतीयभाव : शुक्र

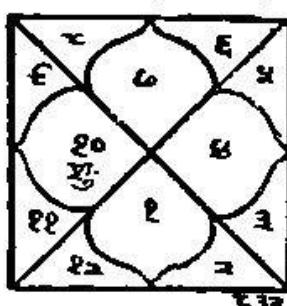


तीसरे भाव में सामान्य शब्द ‘शुक्र’ को राशि पर स्थित ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक का शाई-बहिमों से कुछ बेमनस्य रहता है परन्तु पराक्रम में बृद्धि होती है। आयु तथा पुरातत्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मिवदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा आग की उन्नति होती है। ऐसा अविस्तर प्रभाव जानी जीवन विताता है।

‘तुला’ लग्न को कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

तुलालग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

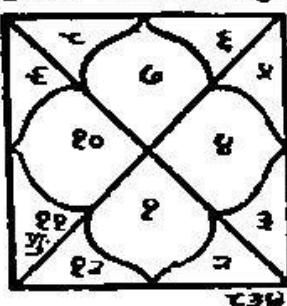


चौथे भाव में मिल ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक को कुछ कमी के साथ आता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। आयु तथा पुरातत्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मिवदृष्टि से दशमभाव को देखने से मिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान, लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है।

‘तुला’ लग्न को कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

तुला लग्न : पंचमभाव : शुक्र

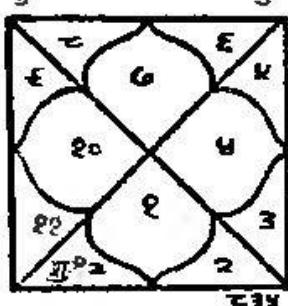


पाँचवें भाव में मिल ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में यफलता मिलती है, परन्तु सन्नान के पश्च में कुछ कमज़ोरी रहती है। आयु तथा पुरातत्व का बेळ लाभ होता है।

सातवीं शनु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ भी अच्छा रहता है। ऐसा जातक अपने बुद्धि-बल से उन्नति करता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली के ‘षष्ठभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

तुला लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

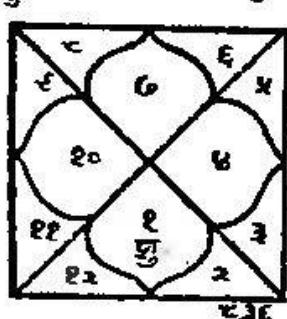


छठे भाव में शत्रु ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित उच्च के ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक शत्रु-रक्ष पर विशेष प्रभाव रखता है तथा बड़ी-बड़ी कठिनाइयों पर भी विजय पा सकता है। उसे आयु तथा पुरातत्व का सामान्य साभ भी होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से ज्यैं तथा बाहरी सम्बन्धों के कारण कुछ परेशानी रहती है। ऐसा अविकृत ठाठ-बाट का जीवन विताता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

तुलालग्न : सप्तमभाव : शुक्र

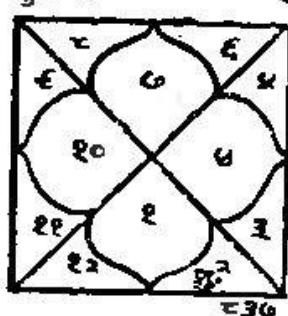


सातवें भाव में शत्रु ‘मेंगल’ की राशि पर स्थित ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक की स्त्री के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के रहते हुए भी उनमें शक्ति प्राप्त होती है तथा शारीरिक परिश्रम द्वारा दैनिक व्यवसाय में भी सफलता मिलती है और आयु तथा पुरातत्व का साभ भी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशिस्थ प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, आत्म-बल एवं प्रभाव को प्राप्ति भी होती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

तुला लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

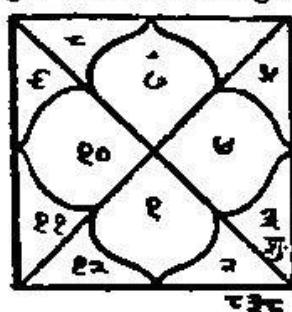


आठवें भाव में स्वराशि-स्थित ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्व का साभ होता है, परन्तु शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य, में कुछ कमी आनी है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से जातक को धन-मंचय के लिए चतुराई का सहारा लेना पड़ता है तथा कुटुम्बियों से उसका कुछ मतभेद बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'वशमधाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुला लग्न: नवमधाव: शुक्र

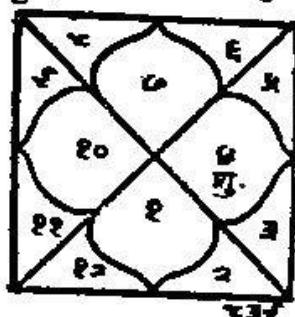


नवे भाव में मिल 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के भावय एवं धर्म को उन्नति कुछ कमी के साथ होतो हैं। उसे आयुतशा पुरातत्त्व की शक्ति भी प्राप्त होती है। शारीरिक सौन्दर्य एवं शील भी निःसत्ता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से तृतीयधाव को देखने से पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से व्यापार्य मतभेद बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'वशमधाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुला लग्न: दशमधाव: शुक्र

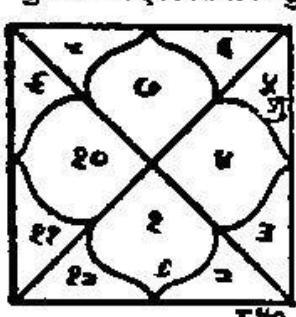


दसवें भाव में शत्रु 'कन्दमा' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ यफलता मिलती है। सफलता का भूल कारण आत्मर्थ एवं शारीरिक शम होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से चतुर्थधाव को देखने से याता, यूमि एवं भवन का सुख यथेष्ट प्राप्त होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'यूक्तारशमधाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

तुला लग्न: एकादशमधाव: शुक्र

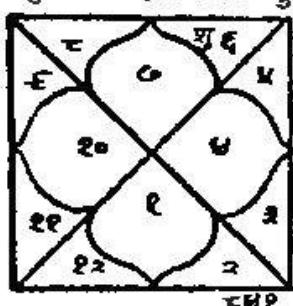


यारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक शारीरिक शम तथा आत्मर्थ के द्वारा पर्याप्त साख कमाता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति भी मिलती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से पंचमधाव को देखने से सत्तान्यश में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है, परन्तु विद्या-वृद्धि तथा वाणी की शक्ति में पर्याप्त वृद्धि होती है।

‘तुला’ संग्रह की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

तुलालग्नः द्वादशभावः शुक्र



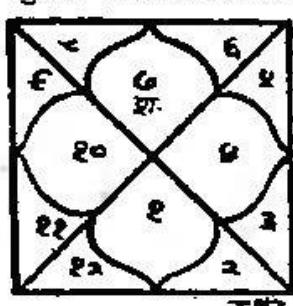
वारहवें भाव में मित्र ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित नीच के ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक को धर्व के द्वारे में कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं तथा बाहरी सम्बन्धों से भी कष्ट होता है। आगु, पुरातत्व तथा शारीरिक ध्रुव में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से धष्टभाव को देखने से शब्द पक्ष पर विशेष अभाव रहता है तथा अग्ने-क्षेत्रों से हिम्मत तथा चतुराई से सफलता मिलती है।

‘तुला’ संग्रह में ‘शनि’

‘तुला’ संग्रह की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

तुलालग्नः प्रथमभावः शनि



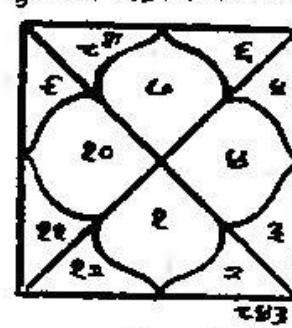
पहले भाव में मित्र ‘शुक्र’ को राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक स्थूल शरीर का तथा प्रभाव शाली होता है। उसे माता, शून्य, ध्वन, सन्तान तथा विद्या का सुख भी उत्तम रहता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से तीसरे भाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम भी कठिनाई से ही बढ़ पाता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से लप्तभाव को देखने से

स्त्री से कुछ मतभेद रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। दसवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता के सुख में कमी रहनी है, परन्तु व्यवसाय तथा राज्य के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

‘तुला’ संग्रह की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

तुलालग्नः द्वितीयभावः शनि



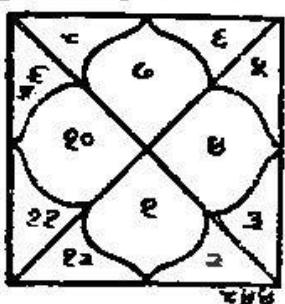
दूसरे भाव में ‘शत्रु’ ‘मंगल’ को राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक को धन-संचय में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुटुम्बियों से कुछ मतभेद रहता है। सन्तान के पक्ष में कमी तथा विद्या-शूद्रि के पक्ष में लाभ होता है।

तीसरी दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, शून्य तथा ध्वन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आगु एवं पुरातत्व का लाभ होता है।

दसवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी अच्छी रहती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

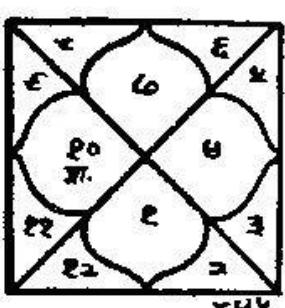
तुलालग्न : तृतीयभाव : शनि



द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा स्थानों से लाभ मिलता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली से ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

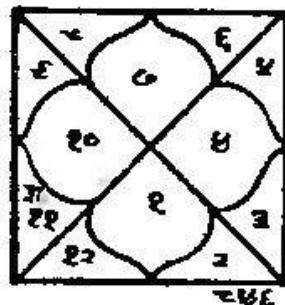
तुलालग्न : चतुर्थभाव : शनि



शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कृदि होती है। ऐना व्यक्ति सुखी, यशस्वी, भानी तथा प्रभावशाली होता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

तुलालग्न : पंचमभाव : शनि



से धन-संचय में भी कठिनाइयाँ वाली हैं तथा कुटुम्ब से मतभेद बना रहता है।

तीसरे भाव में शनि ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है, परन्तु आँड़वहिनों से कुछ मतभेद रहता है। माता द्वारा भी शक्ति मिलती है।

तीसरी दृष्टि से इवराशि में पंचमभाव को देखने से विद्या तथा सन्तान की अवैष्टि यक्षित आए होती है, परन्तु सन्तान से कुछ मतभेद भी रहता है।

सातवीं मिक्कदृष्टि से नवमभाव को देखने से उसमें तथा भाग्य की वृद्धि होती है। दसवीं मिक्कदृष्टि से उसमें तथा भाग्य की वृद्धि होती है। दसवीं मिक्कदृष्टि से उसमें तथा भाग्य की वृद्धि होती है।

चौथे भाव में स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को माता, शून्य एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। तीसरी शनि-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से शनि-पूर्व पर विशेष प्रभाव रहता है। मातावीं शनिदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से मतभेद रहते हुए भी सुख मिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

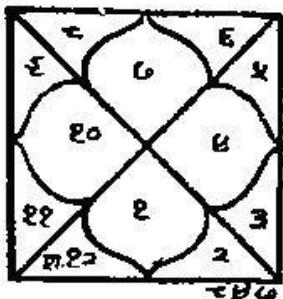
दसवीं उच्च-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कृदि होती है। ऐना व्यक्ति सुखी, यशस्वी, भानी तथा प्रभावशाली होता है।

पांचवें भाव में स्वराजि-स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या तथा वृद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। माता, शून्य तथा भवन का सुख भी मिलता है। तीसरी नीचदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्रीसे मतभेद रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में कठिनाइयाँ वाली हैं।

सातवीं शनि-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। दसवीं शनिदृष्टि से हितीय भाव को देखने से धन-संचय में भी कठिनाइयाँ वाली हैं तथा कुटुम्ब से मतभेद बना रहता है।

‘तुला’ राशि को कुण्डली के ‘वाल्लभाल’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

तुलालग्न : परमभाव : शनि

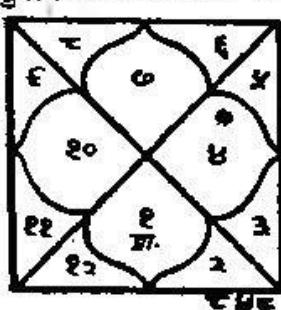


उसे भाव में शनि ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक को कुण्डिन्ल द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। माता, शून्य तथा भवन के सुख एवं विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता भी कुछ कठिनाइयों के बाद प्राप्त होती है। तीसरी मिन्द-दूषि॑ से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरावस्व की शक्ति में वृद्धि होती है।

सातवीं मिन्द-दूषि॑ से द्वादश भाव को देखने से जब अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। दसवीं शत्रुदूषि॑ से सूर्योदयभाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है, परन्तु पुरुषार्थ की वृद्धि होती है।

‘तुला’ राशि को कुण्डली के ‘सन्तानभाल’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

तुलालग्न : सप्तमभाव : शनि

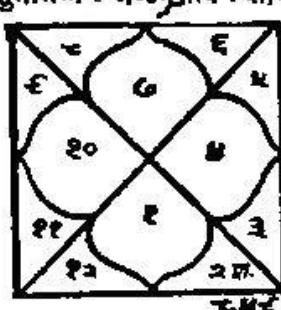


सातवें भाव में शनि ‘मंगल’ की राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को स्वी, गृहस्थी तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाई और असान्नि का सामना करना पड़ता है। विद्या तथा सन्तान का पक्ष भी कमज़ोर रहता है। तीसरी मिन्द-दूषि॑ से नवमभाव की देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं उच्च दूषि॑ से प्रथम भाव की देखने से जातक के शरीर का काद लम्बा होता है तुच्छ उसे शारीरिक सुख भी मिलता है। दसवीं दूषि॑ से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से भाता, शून्य तथा भवन का सुख कठिन परिवर्तन द्वारा प्राप्त होता है।

‘तुला’ राशि की कुण्डली के ‘अष्टमभाल’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

तुलालग्न : अष्टमभाव : शनि



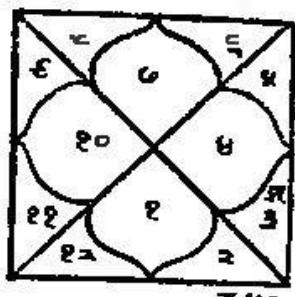
आठवें भाव में मिन्द ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरावस्व का बढ़ा लाभ होता है। माता, शून्य, भवन, सन्तान तथा विद्या के पक्ष में कमी आती है।

तीसरी शत्रुदूषि॑ से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

सातवीं शत्रु-दूषि॑ से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी रहती है तथा कौटुम्बिक सुख एवं सन्तान का सामान्य साध्य होता है। दसवीं दूषि॑ से स्वराशि में पंचमभाव की देखने विचारों

‘तुला’ लग्न को कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

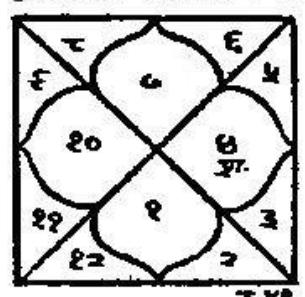
तुला लग्न : नवमभाव : शनि



तुला लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश
तुला लग्न : नवमभाव : शनि

‘तुला’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

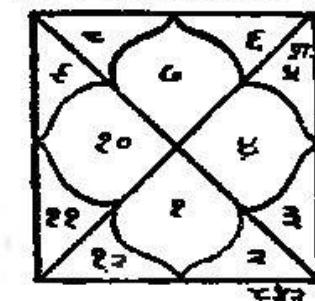
तुला लग्न : दशमभाव : शनि



तुला लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश
तुला लग्न : दशमभाव : शनि

‘तुला’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

तुला लग्न : एकादशमभाव : शनि



तुला लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश
तुला लग्न : एकादशमभाव : शनि

नवें भाव में मिश्र ‘वुध’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक कुण्डली का भायोन्नति करता है तथा वर्ष का पालन भी करता है। विद्या, सन्तान, शूभि, भवन एवं माता का सुख भी अच्छा मिलता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी से मार्ग में रुकावटें आती हैं।

तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से मतभेद रहता है, परन्तु पराक्रम को बढ़ाती है। दसवीं जन्मदृष्टि से षष्ठ्यभाव को देखने से कुण्डली का शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। दसवीं जन्मदृष्टि से षष्ठ्यभाव को देखने से बुद्धिकूल द्वारा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से मतभेद रहता है, परन्तु पराक्रम को बढ़ाती है। दसवीं जन्मदृष्टि से षष्ठ्यभाव को देखने से बुद्धिकूल द्वारा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से मतभेद रहता है, परन्तु पराक्रम को बढ़ाती है। दसवीं जन्मदृष्टि से षष्ठ्यभाव को देखने से बुद्धिकूल द्वारा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खचे अविक रहता है तथा वाहरी सम्बन्धों से साम होता है।

तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव में देखने से माता, शूभि एवं भवन का सुख भी मिलता है। दसवीं जन्मदृष्टि से नवमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

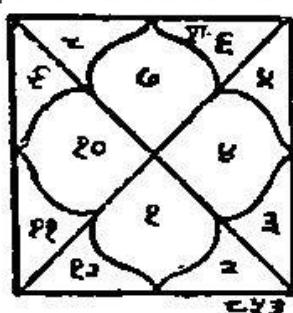
तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से मतभेद रहता है, परन्तु पराक्रम को बढ़ाती है। दसवीं जन्मदृष्टि से नवमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव में देखने से भाई-बहिनों से मतभेद रहता है, परन्तु पराक्रम को बढ़ाती है। दसवीं जन्मदृष्टि से नवमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। तीसरी उच्च तथा मिश्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति एवं प्रभाव में बढ़ाती है।

तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव में देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। दसवीं जन्मदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व की शक्ति बढ़ती है। ऐसा व्यक्ति मनसीजी, लापरवाहू तथा स्वार्थी स्वभाव का होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशभाव : शनि



धने तथा आम को वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति को वृद्धि तथा वाणी कृष्ण भ्रम-युक्त भी बनी रहती है।

वारहवें भाव में नित 'दुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा उसे बाहरी संवर्धों से साम होता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है।

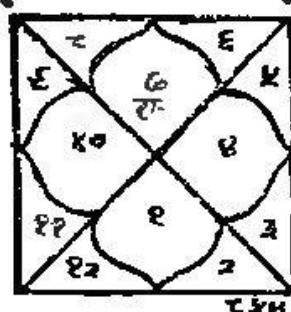
तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन के संचय में कमी आती है तथा कृदम्य से मनभेद रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से वाढ़भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर सामान्य प्रभाव बना रहता है।

दसवीं मिद्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से

'तुला' लग्न में 'राहु'

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

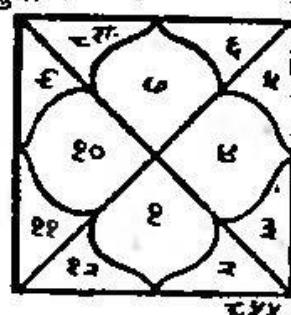
तुला लग्न : प्रथमभाव : राहु



पहले भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक का शरीर दुबल होता है। वह परेशान भी रहता है। वह अपनी उम्मति के लिए गुप्त चातुर्य का वाश्रय लेता है तथा कठिन परिश्रम करता है। कमी-कभी उस बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु अपनी सुझ-दृष्टि से उन पर विजय भी या लेता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

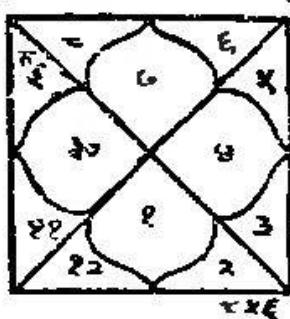
तुला लग्न : द्वितीयभाव : राहु



दूसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को धन के संग्रह करने में बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं। कमी आकस्मिक रूप से धन-प्राप्ति होती है तो कमी खोर आर्थिक संकट भी आते हैं। वह गुप्त युक्तियों का वाश्रय लेकर किसी प्रकार अपना काम चलाता है। उसे कुटुम्बियों द्वारा भी कष्ट प्राप्त होता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

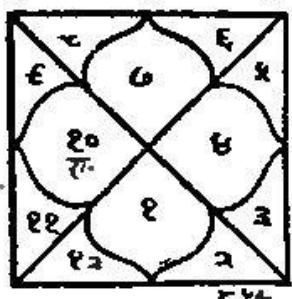
तुला लग्न : तृतीयभाव : राहु



तीसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कमी आती है, परन्तु वह युक्तियों का अध्ययन लेकर उसमें वृद्धि करता है तथा अनुचित ज्ञान भी अपनाता है। उसे भाई-बहिनों से कष्ट मिलता है तथा जीवन में कमी-कभी अन्य प्रकार के द्वारा संकटों का सामना भी करना पड़ता है। चातुर्थ, दुक्ति और पुरुषार्थ के बल पर ही वह कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर पाता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

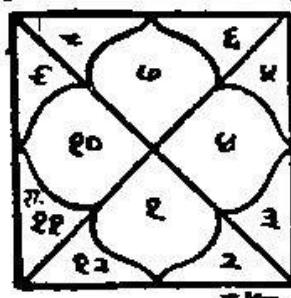
तुला लग्न : चतुर्थभाव : राहु



चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को आता, शून्य तथा भवन के सुख में कमी आती है, परन्तु गुप्त युक्तियों, साहस तथा दृढ़ता के बल पर वह संकटों का ज्ञानना करके भवन पर विजय पा सेता है। उसका जीवन बड़ा संघर्षपूर्ण बना रहता है।

'तुला' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

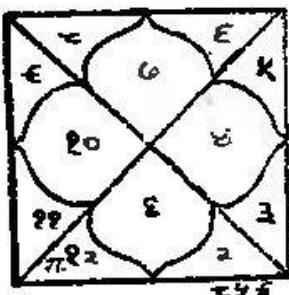
तुला लग्न : पंचमभाव : राहु



पांचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को सन्तान-यक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्याध्ययन में भी कठिनाइयाँ आती हैं। वह सदैव चिन्तित तथा परेशान बना रहता है। स्वार्थ-सिद्धि के लिए वह उचित-अनुचित का विचार नहीं करता। तथा गुप्त युक्तियों से क्रम लेकर ऊपर से बड़ी दृढ़ता प्रदर्शित करता है।

‘तुला’ लग्न को कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

तुला लग्न : अष्टमभाव : राहु

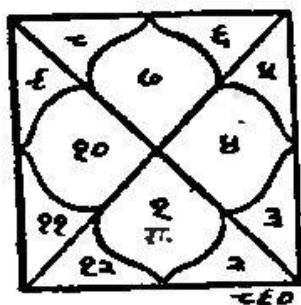


छठे भाव में शत्रु ‘गुरु’ को राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक शत्रू-पक्ष में कठिनाइयों उठाकर भी विजय प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा बहादुर, हिम्मती तथा गुप्त गुक्तियों का ज्ञाता होता है। अपना प्रभाव इवापित करने में उसे सफलता मिल जाती है।

‘तुला’ लग्न को कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

तुला लग्न : सप्तमभाव : राहु

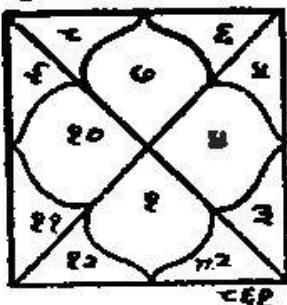


मात्रवें भाव में शत्रु ‘मंगल’ को राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से संकटों का सामना करना पड़ता है तथा दैनिक व्यवमाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ जाती हैं।

व्यवमाय में भी कभी-कभी बड़े संकट आते हैं, परन्तु वह अपनी गुप्त गुक्ति, सैर्व और साहस के बल पर उन सभी बाधाओं पर विजय प्राप्त कर सकता है।

‘तुला’ लग्न को कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

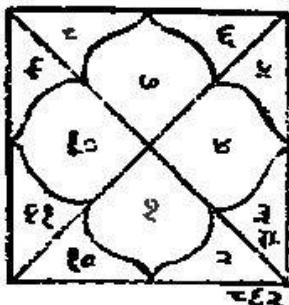
तुला लग्न : अष्टमभाव : राहु



आठवें भाव में मिन्न ‘शुक्र’ को राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक को वायु पर उसें बड़े संकट आते हैं, परन्तु मृत्यु नहीं होती। पुरातत्व की हानि भी होती है। दैनिक जीवन में भी अग्रेक संघर्ष, विनाश, परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली के ‘वशमभाव’ स्थित ‘राहु’ का कलावेश

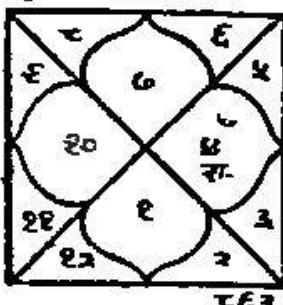
दुलालग्न : दशमभाव : राहु



नवे भाव में मित्र बुध की गणि पर निधत्त ‘राहु’ के प्रभाव में जातक गुप्त युक्तियों के बल पर अपने भाष्य की विशेष उन्नति करता है तथा धर्म का पालन भी करता है। उसकी भाष्योन्नति में कभी-कभी बाधाएँ आती हैं, परन्तु वह अपने आनुयं धैर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर उन सब पर विजय पा लेता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली के ‘वशमभाव’ स्थित ‘राहु’ का कलावेश

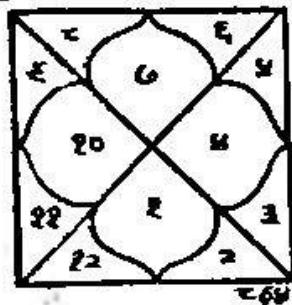
दुलालग्न : दशमभाव : राहु



दसवें धाव में शत्रु ‘चन्द्रमा’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव में जातक को पिता के सुख से कर्मी रहती है। राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी संकट आते हैं। उन्नति के बारे में आने वाली सभी बाधाओं को पार करने के बाद ही उसे नफलता मिलती है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का कलावेश

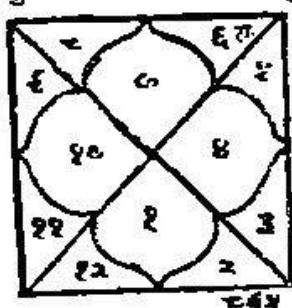
तुलालग्न : एकादशभाव : राहु



व्यारहके भाव में शत्रु ‘मर्य’ की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी के बारे में कठिनाइयाँ आती हैं जिन पर वह गुप्त युक्तियों, शतुराई, धैर्य एवं हिम्मत के बल पर विजय पाता है तथा उन्नति करता है। कभी-कभी उसे विशेष संकटों का सामना भी करना पड़ता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

तुलालग्न : द्वादशभाव : राहु

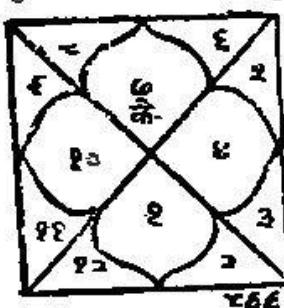


बारहवें भाव में मिल ‘बूँद’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा कभी-कभी वह संकटों का शिकार भी बनता पड़ता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में कुछ लगभग भी मिल जाता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा दिवेही, कृष्णनीतिज्ञ, परिश्रमी, धैर्यवान् तथा हिम्मती होता है।

‘तुला’ लग्न में ‘केतु’

‘तुला’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

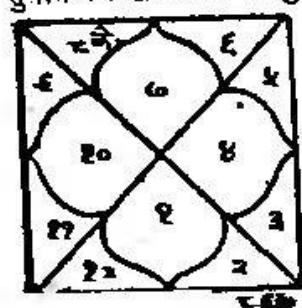
तुलालग्न : प्रथमभाव : केतु



पहले भाव में मिल ‘कुकुर’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक को कभी-कभी विशेष जानीरिक संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह अपने गृह्ण आतुर्य तथा साहस के बल पर उन पर विजय पाता है और अंतिर से गृह्ण कमज़ोरी रहते हुए भी ऊपर से बड़ा हिम्मती दिखाई देता है।

‘तुला’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

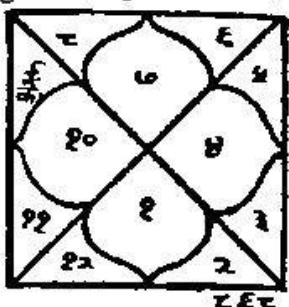
तुलालग्न : द्वितीयभाव : केतु



दूसरे भाव में शत्रु ‘भगव’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक को धन-प्राप्ति एवं धन-संचय के नार्ग में बड़े संकट आते हैं। वह गृह्ण शुक्लियों के बल पर ही द्वन्द्वायां जन करता है, परन्तु हमेज़ा चिनित तथा परेशान ही बना रहता है। उसे अपने कुटुम्बियों द्वारा भी कष्ट मिलता है। फिर भी वह बड़ा हिम्मती रुक्षा हैर्यं काला होता है।

‘तुला’ सन्म की कृष्णती के ‘हृतीयमाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

तलालग्नः त्रितीयधावः केतु

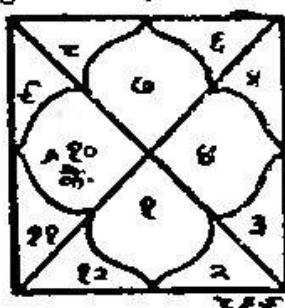


तोसरे भाव में शब्द 'गुरु' की राशि पर व्यित उच्च के 'किन्तु' के प्रभाव से जातक के पदाक्षय में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सूच भी खूब मिलता है । कभी-कभी भाई-बहिनों के कारण उसे उच्च के चाहाए पाया जाता है ।

ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, परिश्रमी तथा धूर्ध-
वान् होता है।

‘सुला’ सगर की कृष्णती के ‘ब्रह्मदेवता’ स्थित ‘केतु’ का फलदेश

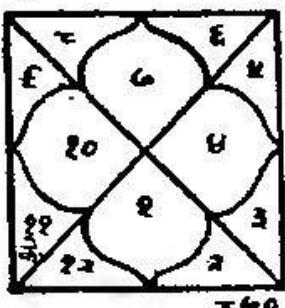
तुलालग्नः चतुर्थभावः केतु



बीये भाव में मिन्न 'शनि' की राशि पर रियत 'केनु' के प्रभाव से जातक की मात्रा, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। घरेलू जगहें भी बहुत रहते हैं, फिर भी यह अपने दैयें, साहस तथा गृह्ण युक्तियों के बल से कठिनाइयों पर विजय पाने का प्रयत्न करता है और क्रूर सफलता भी पा सता है।

‘तुला’ लाल की कृष्णसी के ‘एंकमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

तुलसीग्रन्थः पंचमभावः केतु

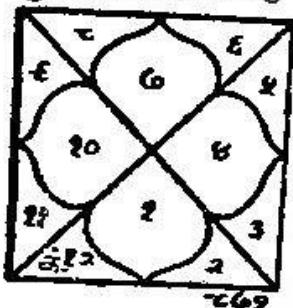


दीनवें भाव में मिहर 'क्षणि' की राति पर रिष्टत केतु' के प्रभाव से जातक की संतान-पत्न से कष्ट मिलता है तथा विद्यु-वृद्धि के क्षेत्र में भी कठिनाइयां आती हैं।

ऐसा व्यक्ति अनेक कठिनाइयों के बाद विश्वा, मृद्गि तथा सत्त्वान के लेद में थोड़ी-बहुत सफलता पाया है, फिर भी उसके संकट बते ही रहते हैं।

‘तुला’ लग्न की कुष्ठसी के ‘षष्ठभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

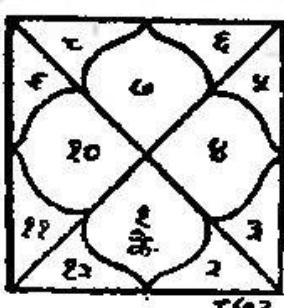
तुला, लग्न : षष्ठभाव : केतु



छठे भाव में शत्रु ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक शागड़ी-ब्याहट, गोग तथा श्वलपक्ष में बड़ी हिम्मत, बहादुरी तथा धैर्य से काम सेकर सफलता प्राप्त करता है और कभी छरता या घवराता नहीं है। उसे अपने उद्देश्य में सफलता भी मिलती है। ऐसे व्यक्ति का नवसाल-पक्ष प्रायः कमज़ोर रहता है।

‘तुला’ लग्न की कुष्ठसी के ‘षष्ठभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

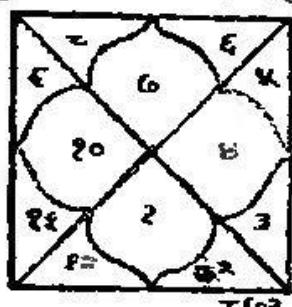
तुला, लग्न : सप्तमभाव : केतु



सातवें भाव में शत्रु ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से विशेष कष्ट मिलता है तथा दैनिक आमदनी में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं। वह स्त्री तथा व्यक्तिसाय-पक्ष में सफलता पाने के लिए धैर्य, हिम्मत, पराक्रम इथा गुप्त युक्तियों का सहारा लेता है और थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त करता है।

‘तुला’ लग्न की कुष्ठसी के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

तुला, लग्न : अष्टमभाव : केतु

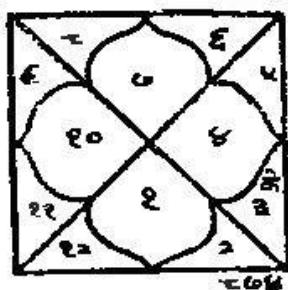


आठवें भाव में मिन्न ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की आम घर अनेक बार संकट आते हैं तथा उसे पुरातस्व की भी हानि उठानी पड़ती है। पेट में कुछ दिक्कार भी रहता है।

ऐसा व्यक्ति सदैव चिन्तातुर रहता है तथा अपने साहस, धैर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर कुछ सफलता भी प्राप्त कर लेता है।

‘तुला’ सम की कुण्डली के ‘मवनभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

तुला लग्न : नवमभाव : केतु

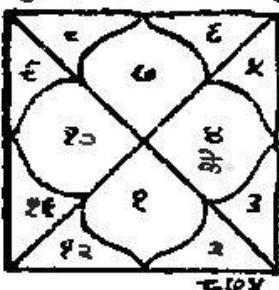


नवे भाव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में अनेक वाधाएं आती हैं तथा कभी-कभी दोर संकटों का नामना भी करना पड़ता है।

ईश्वर तथा धर्म के विषय में भी उनकी थदा कम होती है। वह धर्म के विषय चलने में भी नहीं चूकता तथा स्वार्थ-सिद्धि के लिए अनुचित साधनों का प्रयोग कर अपयज्जी पाता है।

‘तुला’ सम की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

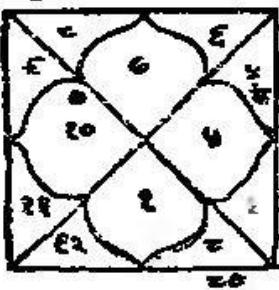
तुला लग्न : दशमभाव : केतु



दसवें भाव में इनु ‘चन्द्रमा’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक को अपने पिता द्वारा कष्ट त्राप्त होता है तथा राज्य-पक्ष से भी परेशानी होती है। अवधाय में उसे विद्यन्वाधारों का नामना करना पड़ता है। उसे अपने जीवन में प्राप्त अनेक दानाग-चन्द्राव देखने पड़ते हैं।

‘तुला’ सम की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

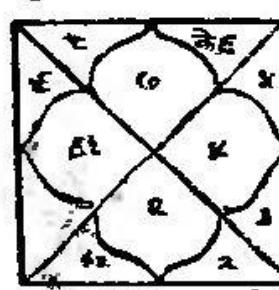
तुला लग्न : एकादशभाव : केतु



यारहवें भाव में शव ‘सूर्य’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है परन्तु वह अपने क्षेत्र, परिवर्त तथा गुप्त मुक्तियों के बल पर उन्हें दूर करके सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे साध के वजाय बहुत शादा भी उठाना पड़ता है। अनेक संकटों हो पार करने के बाद ही उसे सफलता मिलती है।

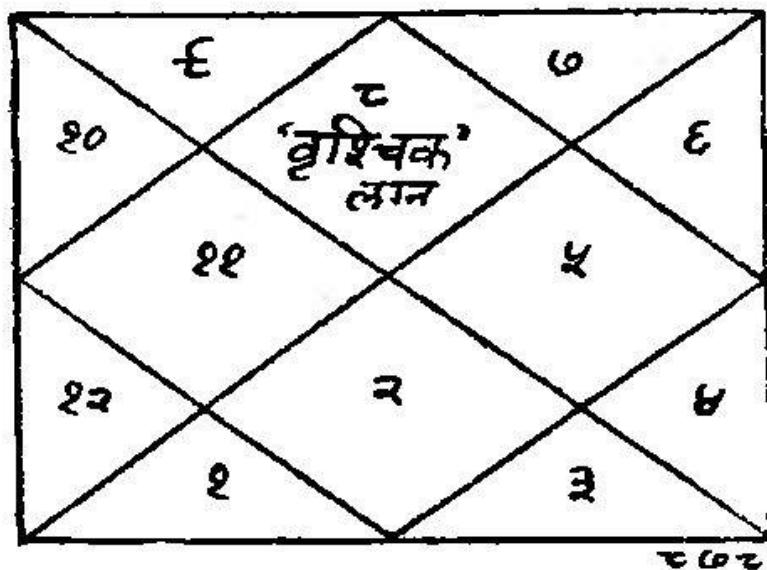
‘तुला’ सम की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

तुला लग्न : द्वादशभाव : केतु



वारहवें भाव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक का खंड अधिक रहता है तथा जाह्नवी स्थानों के संवर्ध से उसे लाभ भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपना खंड चलाने के लिए विवेक-बुद्धि से काम नेता तथा कठिन परिवर्त करता है, फिर भी उसे कभी-कभी बड़ी कठिनाइयों का किकार बनना पड़ता है तथा अंत में सफलता भी प्राप्त हो जाती है।

‘वृश्चिक लग्न’



[‘वृश्चिक’ लग्न को कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पूर्यक-पूर्यक वर्णन]

‘वृश्चिक’ लग्न का फलादेश

‘वृश्चिक’ लग्न में जन्म लेने वाला जातक छिगने तथा स्थूल शरीर का होता है। उसकी भ्रात्यें शोष तथा छाती चौड़ी होती है। ऐसा व्यक्ति कोघी, पाखण्डी, मिथ्यरादी, तमोगुणी, कृपटी, कड़वे स्वभाव का, पर-निन्दक, दयाहीन, भिजा-बृत्ति करने वाला, भाइयों से द्वेष रखने वाला, शत्रु-नाशक तथा श्रेवा-कर्म करने वाला होता है। परन्तु इसके माय ही यह शास्त्रज्ञ, विद्या के आद्विक्ष से गुम्त, गुणी, शूरवीर, अत्यन्त विचारशील तथा ज्योतिषी भी होता है। दूसरों के भन की बात जान लेने में वह बड़ा निपुण होता है।

‘वृश्चिक’ ऋग्न में जन्म लेने वाला जातक अपनी प्रारंभिक अवस्था में दृश्यी रहता है तथा अध्यमावस्था में सुख भोगता है। २० से २४ वर्ष की आयु के बीच उसका भाग्योदय होता है।

वृश्चिक ऋग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न शहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७६ के ६८६ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के शहों का फलादेश किस उदाहरण-कुण्डलियों में देखें—इसे आमे लिखे अनुमार ममझ लेना चाहिए।



‘वृश्चिक’ लग्न में ‘सूर्य’ का फलादेश

१. ‘वृश्चिक’ ऋग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘सूर्य’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७६ से ८९० के बीच देखना चाहिए।

२. ‘वृश्चिक’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘सूर्य’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में ‘सूर्य’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ८७६
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ८८०
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या ८८१
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ८८२
- (ङ) ‘तिह’ राशि पर हो तो संख्या ८८३
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ८८४
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ८८५
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या ८८६
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या ८८७
- (ञ) ‘शक्त’ राशि पर हो तो संख्या ८८८
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ८८९
- (ठ) ‘बोन’ राशि पर हो तो संख्या ८९०

‘वृश्चिक’ लग्न में ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

१. ‘वृश्चिक’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘चन्द्रमा’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८४१ से ६०३ के बीच देखना चाहिए।

२. ‘वृश्चिक’ लग्न वालों को गोचरकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘चन्द्रमा’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन ‘चन्द्रमा’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या ८४१
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ८४२
- (ग) ‘गिर्वान’ राशि पर हो तो संख्या ८४३
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ८४४
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ८४५
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ८४६
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ८४७
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या ८४८
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या ८४९
- (झ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या ६००
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या ६०१
- (ठ) ‘षट्रुघ्नि’ राशि पर हो तो संख्या ६०२

‘वृश्चिक’ लग्न में ‘मंगल’ का फलादेश

१. ‘वृश्चिक’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६०३ से ६१४ के बीच देखना चाहिए।

२. ‘वृश्चिक’ लग्न वालों को गोचरकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में ‘मंगल’—

- (क) ‘मिथ’ राशि पर हो तो संख्या ६०३
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या ६०४
- (ग) ‘गिर्वान’ राशि पर हो तो संख्या ६०५
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या ६०६
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या ६०७
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या ६०८
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या ६०९

- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६१०
- (क) 'घनु' राशि पर हो तो संख्या ६११
- (ग) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६१२
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६१३
- (ठ) 'धीन' राशि पर हो तो संख्या ६१४

'वृश्चिक' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' भग्न शालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न शालों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६१५ से ६२६ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न शालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न शालों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६१५
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६१६
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६१७
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६१८
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६१९
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६२०
- (ट) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६२१
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६२२
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६२३
- (झ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६२४
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६२५
- (ठ) 'धीन' राशि पर हो तो संख्या ६२६

'वृश्चिक' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न शालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न शालों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२७ से ६३८ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' भग्न शालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न शालों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६२७
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६२८

- (ग) 'गियुन' राशि पर होतो संख्या ६२६
- (घ) 'कर्क' राशि पर होतो संख्या ६३०
- (ङ) 'सिंह' राशि पर होतो संख्या ६३१
- (च) 'कन्या' राशि पर होतो संख्या ६३२
- (छ) 'तुला' राशि पर होतो संख्या ६३३
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर होतो संख्या ६३४
- (झ) 'धनु' राशि पर होतो संख्या ६३५
- (झ) 'मकर' राशि पर होतो संख्या ६३६
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर होतो संख्या ६३७
- (ठ) 'भीन' राशि पर होतो संख्या ६३८

‘वृश्चिक’ सम्बन्ध में ‘शुक्र’ का फलादेश

१. ‘वृश्चिक’ सम्बन्ध वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘शुक्र’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३६ से ६५० के बीच देखना चाहिए।

२. ‘वृश्चिक’ सम्बन्ध वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘शुक्र’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में ‘शुक्र’—

- (क) 'मेष' राशि पर होतो संख्या ६३६
- (ख) 'वृष' राशि पर होतो संख्या ६४०
- (ग) 'भिष्णु' राशि पर होतो संख्या ६४१
- (घ) 'कर्क' राशि पर होतो संख्या ६४२
- (ङ) 'सिंह' राशि पर होतो संख्या ६४३
- (च) 'कन्या' राशि पर होतो संख्या ६४४
- (छ) 'तुला' राशि पर होतो संख्या ६४५
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर होतो संख्या ६४६
- (झ) 'धनु' राशि पर होतो संख्या ६४७
- (झ) 'मकर' राशि पर होतो संख्या ६४८
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर होतो संख्या ६४९
- (ठ) 'भीन' राशि पर होतो संख्या ६५०

‘वृश्चिक’ सम्बन्ध में ‘शनि’ का फलादेश

१. ‘वृश्चिक’ सम्बन्ध वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘शनि’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६५६ से ६६२ के बीच देखना चाहिए।

२. 'बृश्चक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावोंमें स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

- (क) 'भेष' राशि पर हो तो संख्या ६५१
- (ख) 'धूष' राशि पर हो तो संख्या ६५२
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६५३
- (घ) 'कक्ष' राशि पर हो तो संख्या ६५४
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६५५
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६५६
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६५७
- (ज) 'बृश्चक' राशि पर हो तो संख्या ६५८
- (झ) 'घनु' राशि पर हो तो संख्या ६५९
- (अ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६६०
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६६१
- (ठ) 'शीन' राशि पर हो तो संख्या ६६२

'बृश्चक' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१. 'बृश्चक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावोंमें स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६३ से ६७४ के बीच देखना चाहिए।

२. 'बृश्चक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावोंमें स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

- (क) 'भेष' राशि पर हो तो संख्या ६६३
- (ख) 'धूष' राशि पर हो तो संख्या ६६४
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६६५
- (घ) 'कक्ष' राशि पर हो तो संख्या ६६६
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६६७
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६६८
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६६९
- (अ) 'बृश्चक' राशि पर हो तो संख्या ६७०
- (झ) 'घनु' राशि पर हो तो संख्या ६७१
- (अ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६७२
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६७३
- (ठ) 'शीन' राशि पर हो तो संख्या ६७४

'वृश्चिक' लग्न में 'केतु' का फलादेश

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी रूपादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७५ से ६८६ के बीच देखना चाहिए।

३. 'वृश्चिक' लग्न वालों की जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

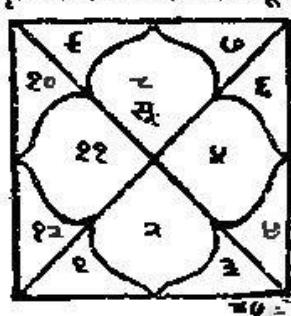
जिन चर्चे ने 'केतु'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६७५
- (च) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६७६
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६७७
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६७८
- (इ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६७९
- (ज) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६८०
- (उ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६८१
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६८२
- (झ) 'घनु' राशि पर हो तो संख्या ६८३
- (झ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६८४
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६८५
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६८६

'वृश्चिक' लग्न में 'सूर्य'

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

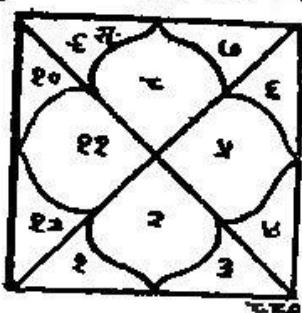
वृश्चिक लग्न: प्रथमभाव: सूर्य



शरीर-स्थान में अपने मित्र मंगल को वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक सौन्दर्य से बुक्त, हृष्ट-मुष्ट, आत्माभिमानी, जोखी, प्रभावशाली और दबंग होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष से जातक को मुख, सहयोग और सम्मान प्राप्त होता है। वह सुन्दर वस्तों तथा वानूषणों का शौकीन और यज्ञस्त्री होता है। सातवीं शत्रुघ्नि से सुक की राशि में मध्यमभाव को देखने से स्त्री से वैमनस्य रहता है। तथा दैनिक व्यवसाय में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं।

'वृश्चिक' लाल की कुम्हसी के 'मृतोयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

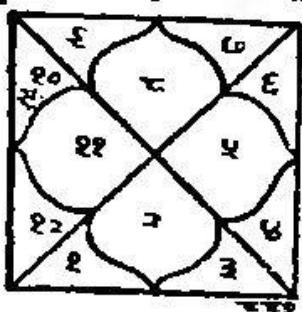


दूसरे भाव में मित्र 'गुरु' को राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को फिरपक्ष से धन की प्राप्ति होती है तथा कौटुम्बिक सुख भी मिलता है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता है, परन्तु पिता के सुख में कुछ कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आगु तथा पुरातत्व की शक्ति भी प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति कार्यान्वयन सुखी तथा प्रभाव-पूर्ण बना रहता है।

'वृश्चिक' लाल की कुम्हसी के 'मृतोयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : सृतीयभाव : सूर्य

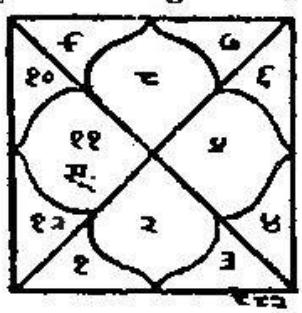


तीसरे भाव में भवु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएं प्राप्त होती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से व्याधि तथा भाय्य की कृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति हेतु तथा पुरुषार्थी होता है।

'वृश्चिक' लाल की कुम्हसी के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

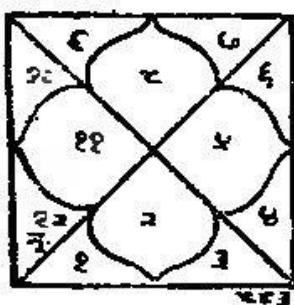


चौथे भाव में भवु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक का अपनी मात्रा के साथ भन्देश रहता है तथा भूमि-भवन के सुख में कुछ कमी आती है। भरेलू सुख में भी कुछ कुटियां बनी रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वरोशि में दशम भाव को देखने से राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग सम्मान, लाभ तथा सफलता को प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति स्वयं उन्नति करता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली से 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : पंचमभाव : सूर्य

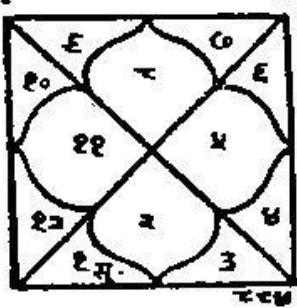


पांचवें भाव में मिल 'जुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को विचार, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सम्मान, सहयोग एवं लाभ मिलता है। राजनीतिक क्षेत्र में उन्नति मिलती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से लाभ के शेष लाभ प्राप्त होते हैं। ऐसा व्यक्ति उच्च कोटि का जीवन विताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'पांचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : षष्ठमभाव : सूर्य

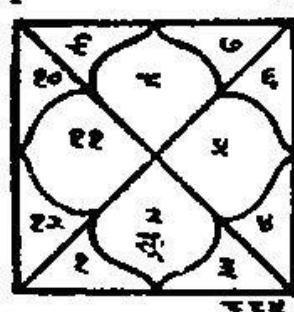


छठे भाव में मिल 'भगव' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक भन्नु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है, परन्तु माता एवं पिता से कुछ यत्थेद बना रहता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खंच के यामसे में कठिनाइयाँ बनी रहती हैं तथा वाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी परेशानी देता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : सप्तमभाव : सूर्य

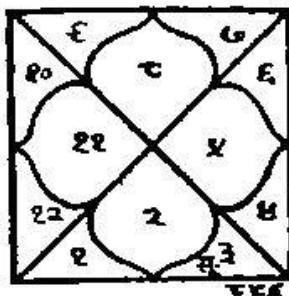


सातवें भाव में मिल 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से अंतोष एवं शक्ति को प्राप्ति होती है। तथा दैनिक व्यवसाय में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से जातक का शरीर सुन्दर तथा व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। ऐसा व्यक्ति प्रभावशाली, स्थानी तथा उन्नति-जील होता है।

‘बूँदेवक’ लाभ की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

बूँदिकलग्न : अष्टमभाव : सूर्य

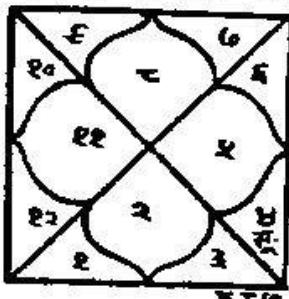


आठवें भाव में मिल ‘बूँद’ जी राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्व में बढ़ि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, यथा एवं लाभ को प्राप्ति होती है।

सातवीं भिन्न-द्वृष्टि से तृतीय भाव की देखने से परिवर्म द्वारा धन की पर्याप्ति बढ़ि होती है तथा कौटुम्बिक सुख भी प्राप्ति होता है। काहने स्थानों से भी सम्बन्ध जुड़ता है।

‘बूँदिक’ लाभ की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

बूँदिकलग्न : दशमभाव : सूर्य



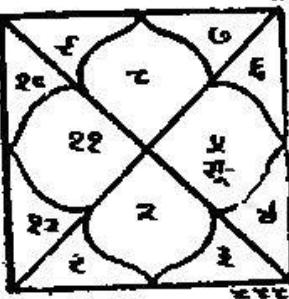
नवें भाव में मिल ‘बन्धमा’ की राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक के क्षमे तथा आय की उन्नति होती है एवं पिता, राज्य और व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलसी हैं।

सातवीं भाव-द्वृष्टि से तृतीय भाव की देखने से भाई-बहिनों मतभेद रहता है तथा पराक्रम में सामान्य बढ़ि होती है।

संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति सुखी जीवन विताता है।

‘बूँदिक’ लाभ की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

बूँदिकलग्न : दशमभाव : सूर्य

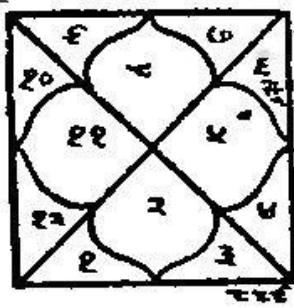


दसवें भाव में स्वराशि-स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सहयोग, लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। वह अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए उश कर्म भी करता है।

सातवीं भाव-द्वृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से जातक अपनी माता के साथ वैमनस्य रहता है तथा भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है।

‘बृहिंशक’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

बृहिंशक लग्न : एकादशभाव : सूर्य

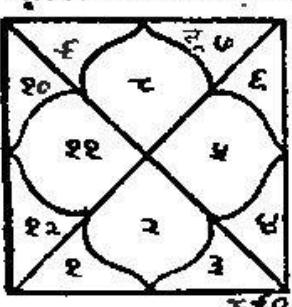


ग्यारहवें भाव में मित्र ‘बृद्ध’ की राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक को अपने पिता द्वारा श्वेष लाभ होता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सम्मान, धन, लाभ एवं सहयोग भी प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पचम भाव को देखने से मित्र, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष से भी श्रेष्ठ लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति स्वाभिमानी, तेज स्वभाव वा, प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होता है।

‘बृहिंशक’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

बृहिंशक लग्न : द्वादशभाव : सूर्य



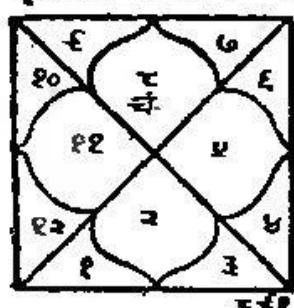
बारहवें भाव में शत्रु ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित नीच के ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक बड़ी कठिनाई से लंबे चलाता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कष्ट होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाईयाँ आती हैं।

सातवीं उच्च मित्र-दृष्टि से शष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा अग्ने-भूकम्भे आदि से भी लाभ मिलता है।

‘बृहिंशक’ लग्न में ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

‘बृहिंशक’ लग्न को कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘चन्द्र’ का फलादेश

बृहिंशक लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

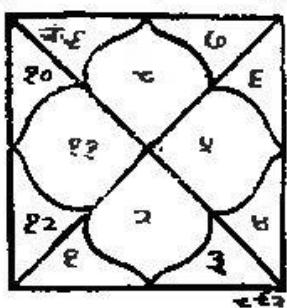


पहले भाव में मित्र ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक का शरीर कुछ दुर्बल रहना है तथा यश भी कठिनाई से मिलता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से मुन्द्र तथा मनोनुकूल स्त्री प्राप्त होती है एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती रहती हैं।

‘बृशिक’ सम्बन्धी के कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘चन्द्र’ का फलादेश

बृशिक सम्बन्धी द्वितीयभाव : चंद्र

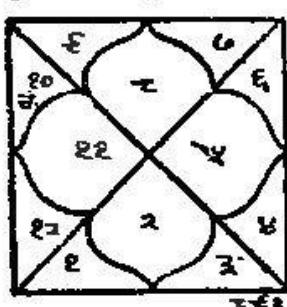


दूसरे भाव में मित्र ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को धन-संचय में सफलता मिलती है तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। परन्तु वह धर्म का यशाविधि पालन नहीं करता।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से पुरातत्व का लाभ होता है तथा आयु की बृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा भाग्यशाली होता है।

‘बृशिक’ सम्बन्धी के कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘चन्द्र’ का फलादेश

बृशिक सम्बन्धी : द्वितीयभाव : चंद्र

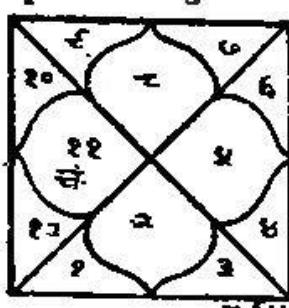


तीसरे भाव में शनु ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक के पराक्रम में बृद्धि होती है। परन्तु धाई-दहिन के सुख में कुछ कमी आती है। मानसिक शक्ति बहुत प्रबल होती है।

सातवीं दृष्टि में स्वराशि में द्वातु भाव को देखने से धर्म तथा आय की उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ द्वारा यशस्वी एवं भाग्यशाली बनता है।

‘बृशिक’ सम्बन्धी के कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘चन्द्र’ का फलादेश

बृशिक सम्बन्धी : चतुर्थभाव : चंद्र

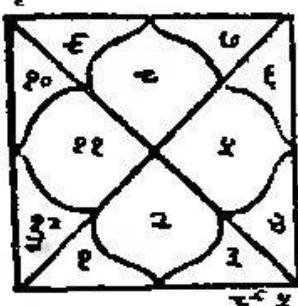


चौथे भाव में शनु ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को कुछ असन्तोष के साथ याता, भूमि एवं भवन का शेष सुख प्राप्त होता है। वह धर्म का पालन करता है तथा मनोयोग के द्वारा आय की उन्नति करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि में दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सुख, नम्मान, लाभ एवं सफलता को प्राप्ति होती है।

‘बृहित्क’ लग्न की कुण्डली के ‘वंचमभाव’ स्थित ‘चन्द्र’ का फलादेश

बृहित्क लग्न वंचमभाव : चंद्र

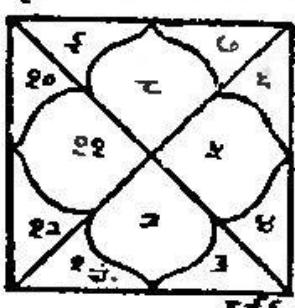


पांचवे भाव में मित्र ‘शुरु’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को मित्र, बृद्धि एवं मन्त्रान के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है। यह सज्जन, विनश्च, मधुरभाषी, व्यर्थिता तथा अपने बृहित्क वाल से भाग्य की उन्नति करने वाला भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से भाग्य की बृद्धि होती है तथा लाभ भी ज्यूव होता रहता है।

‘बृहित्क’ लग्न की कुण्डली के ‘वल्लभाव’ स्थित ‘चन्द्र’ का फलादेश

बृहित्क लग्न वल्लभाव : चंद्र

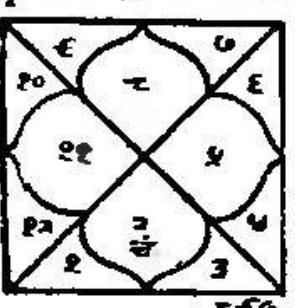


छठे भाव में मित्र ‘शगल’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में अपनी ज्ञानित-नीति से सफलता मिलती है। यों, शब्दों के कारण उन में अक्षांश भी बनी रहती हैं।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से भाग्य-बल पर खर्च चलता रहता है तथा वाहनी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं भक्तियों की प्राप्ति भी होती है।

‘बृहित्क’ लग्न की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘चन्द्र’ का फलादेश

बृहित्क लग्न सप्तमभाव : चंद्र

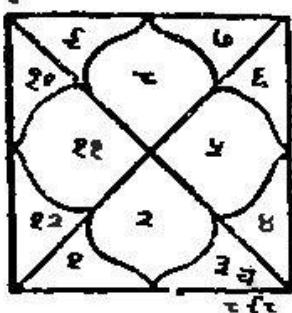


मातवे भाव में भाग्य मित्र ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित उच्च के ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को मृद्दन नवा भाग्यज्ञानिती स्त्री मिलती है। उसका गृहस्थ जीवन मुख्यमय रहना है। दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। मनोबल बढ़ा रहने के कारण भाग्य तथा यश में भी बृद्धि होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि ने प्रथम भाव को देखने से जगें औं कुछ कमज़ोरी रहनी है तथा भाग्य एवं क्षमे ले पान में भी कुछ न्यूनता बनी रहती है।

‘बूशिक’ सम्म को कृष्णली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘चन्द्र’ का फलादेश

बूशिक लग्नः अष्टमभावः चन्द्र



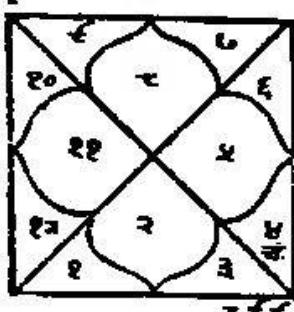
आठवें भाव में मिह बुध की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को आयु से बृद्धि होती है तथा पुरातत्व का लाभ भी होता है।

सातवीं भित्तदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से उन्हें तथा कुटूंब के सुख का लाभ भी पर्याप्त निरुता है।

ऐसा व्यक्ति जान्त स्वभाव वाला, बनी, नुर्जी नथा यशस्वी होता है।

‘बूशिक’ सम्म को कृष्णली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘चन्द्र’ का फलादेश

बूशिक लग्नः नवमभावः चन्द्र



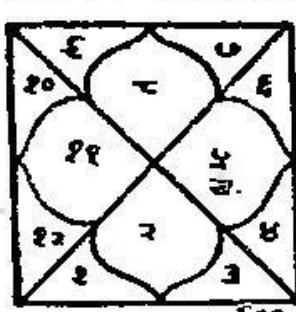
नवें भाव में स्वराशिस्थ ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक के उन्हें तथा भाग्य की अज्ञी उन्नति होती है। वह यशस्वी तथा बनी होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव की देखने से भाई-बहिनों का सुख दृष्टिपूर्ण रहता है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक बृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति मूख तथा समृद्धि से युक्त जीवन विताता है।

‘बूशिक’ सम्म को कृष्णली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘चन्द्र’ का फलादेश

बूशिक लग्नः दशमभावः चन्द्र



दसवें भाव में मिह ‘सूर्य’ की राशि पर मिहत ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलताएँ विनती हैं। वह प्रभातिना तथा भाग्यशाली होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। परन्तु जातक मूर्खी, यशस्वी, सम्मुप्त तथा धनी ओवन विताता है।

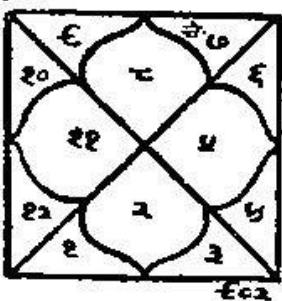
‘बुश्विक’ लम्ब की कुण्डली के ‘एकादशमास’ स्थित ‘जन्म’ का फलदेश

न्द्र यारहवे भाव में मिल 'बृष्ट' को राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से आतक को थोड़ा लाभ होता रहता है। वह सर्वपरायण, भाग्यशाली, सुखी तथा चक्षस्वी होता है।

सातवीं मिल्क-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि एवं सत्त्वान का श्रेष्ठ लाभ होता है, वाणी में शक्ति रहती है नवा मनोबल बड़ा-बड़ा रहता है।

‘वृद्धिकर’ समन की बुप्पली के ‘त्रावसाभाव’ स्थित ‘बन्द’ का फसावेश

शिवकलरनः द्वादशभावः चन्द्र



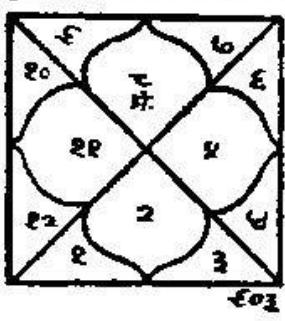
बारहवें शाव में सामान्य मिल 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु उसकी पूर्ति के लिए किसी कठिनाई का अनुभव नहीं होता। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अत्यधिक लाभ होता है। स्वदेश में आय कमज़ोर रहता है, परन्तु विदेश में तरक्की होती है।

सातवीं मित्र-दूष्टि से षष्ठ आव को देखने से शत्रु-पक्ष में शक्ति से काम निकालता है तथा आग्नेय-बल से कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करता है ।

‘वहिचक’ संग्रह में ‘मंगल’

‘वृश्चिक’ संग्रह की वृक्षादासी के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘भैंगल’ का फलादेश

वृत्तिक लग्नः प्रथम भावः मंगलः

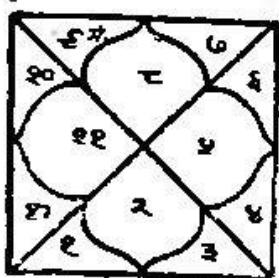


पहले भाव में स्वराशि में स्थित 'मगल' के प्रभाव से जातक को शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है तथा शात्र-पक्ष में सफलता मिलती है।

चौथी शक्तिदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। सातवीं शक्तिदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आप एवं पूरातत्त्व को शक्ति में कुछ होती है।

‘वृश्चिक’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

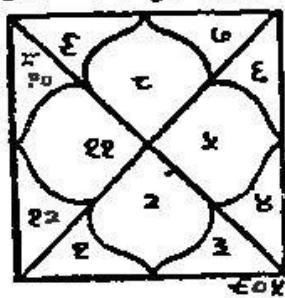
वृश्चिक लग्न : द्वितीयभाव : मंगल



सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातन्त्र की वृद्धि होती है। आठवीं नीच-दृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है और यश की भी कमी रहती है।

‘वृश्चिक’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

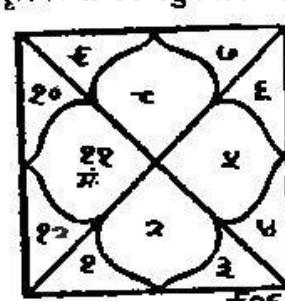
वृश्चिक लग्न : तृतीयभाव : मंगल



राज्य एवं व्यवसाय के ग्रह में सुख, सहयोग, लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

‘वृश्चिक’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

वृश्चिक लग्न : चतुर्थभाव : मंगल



से एकादश भाव को देखने से आपदनी बहुत अच्छी रहती है।

दूसरे भाव में मित्र ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक थम द्वारा अनोष्टक्षण करता है तथा कुछ परेशानियों के सम्बन्ध कीटृप्तिके सुख भी प्राप्त करना है। शारीरिक सुख भव स्वास्थ्य में कमी रहती है किन्तु शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। चौथी मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

तीसरे भाव में शत्रु ‘शनि’ की राशि पर स्थित दुच्च के भंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों से सामान्य वैमतम्य रहता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

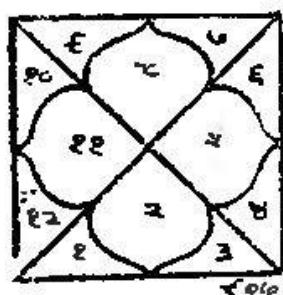
सातवीं नीच-दृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म का यथाविधि पालन नहीं होता तथा भाग्य की व्यपेक्षा पुरुषार्थ का अधिक अरोपण रखा जाता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता,

चौथे भाव में शत्रु ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है। चौथी सामान्य शत्रु-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्रीपक्ष से सामान्य भत्तेद-युक्त सुख प्राप्त होता है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सफलता, लाभ एवं यश की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि

‘वृश्चिक’ सम्बन्धी की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

चूर्णिकल्पन : पंचमभाव : मंगल



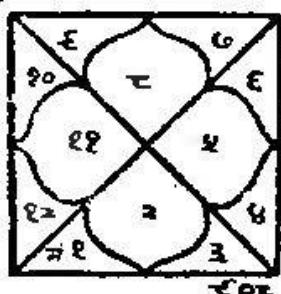
पौरवे भाव में नित्र ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-दृष्टि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। नीच-पक्ष पर विजय पाने के लिए गहरी चाले चलने पड़ती हैं। चौथीमित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आशु एवं पूर्णन्तर की दृष्टि होती है। सातवीं विद्य-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब होती है।

आठवीं आशु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने

के कारण ऊंचे अधिक गहने में परेशानी का अनुभव होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है।

‘वृश्चिक’ सम्बन्धी की कुण्डली के ‘षष्ठमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

वृश्चिकल्पन : पंथभाव : मंगल

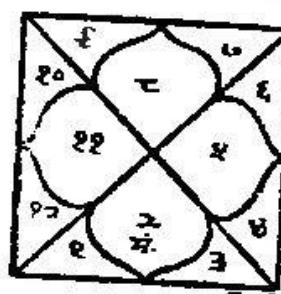


छठे भाव में स्वराशि में स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। चौथी नीच-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भ्रात्य तथा भ्रम में कठी रहती है। सम्मान में भी कठी आती है।

सातवीं आशु-दृष्टि से द्वादश भाव से देखने से ऊंचे अधिक रहता है, तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाभ होता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि

में प्रथमभाव की देखने में परीर के प्रभाव तथा आत्म-बल में सामान्य दृष्टि होती है। ‘वृश्चिक’ सम्बन्धी की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

वृश्चिकल्पन : सप्तमभाव : मंगल

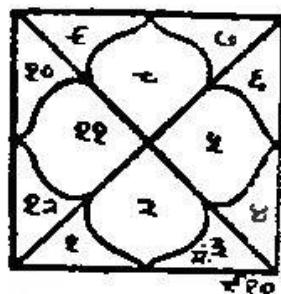


सातवे भाव में शकु ‘कुकु’ की राशि पर स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है, जबनेदिय में विकार होता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष में सुख-सन्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के प्रथमभाव को देखने वे ज्ञानीय व्यक्ति एवं व्यक्तित्व का विकास होता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से द्विनीलभाव की देखने में धन-कुटूम्ब का सुख आप्त होता है। ऐसा व्यक्ति मानवान्देश सुना रहता है।

‘बृशिक’ सम्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का कलादेश

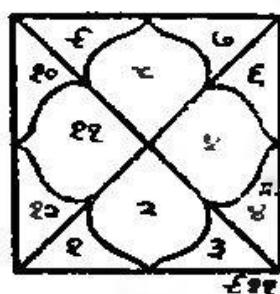
बृशिकलग्न : अष्टमभाव : मंगल



से होती है। आठवीं उच्च दृष्टि से धम तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि विशेष प्रयत्न साधन होती है तथा पराक्रम में कृदि होती है।

‘बृशिक’ सम्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का कलादेश

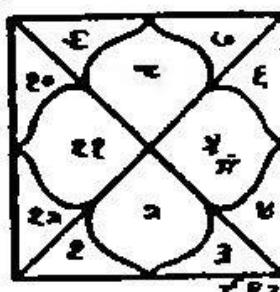
बृशिकलग्न : नवमभाव : मंगल



है। आठवीं उच्च दृष्टि से धम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है।

‘बृशिक’ सम्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का कलादेश

बृशिकलग्न : दशमभाव : मंगल



है। आठवीं उच्च दृष्टि से धम तथा भवन के सुख में वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि में एकादशभाव की देखने से विद्या, वृद्धि एवं स्वर्गलग्न के द्वेष ने स्वर्गलग्न मिलती है।

आठवीं भाव में मित्र ‘बृद्ध’ की राशि पर स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक के जारीरिक धोन्दर्य तथा सुख में कमी होती है। अग्नि तथा पुरातत्व के लाभ में भी कमी रहती है। देट में विकार रहता है तथा शत्रु-पक्ष से परेशानी होती है। चौथी मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धम तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि विशेष प्रयत्न

साधन होती है तथा भाई-बहिन की शक्ति

बृशिकलग्न : नवमभाव : मंगल

है। आठवीं उच्च दृष्टि से धम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष के अंसट से भी भाग्योन्नति में बाधा पड़ती है। वैसे जातक यानी होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से सख्त अविकर रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है।

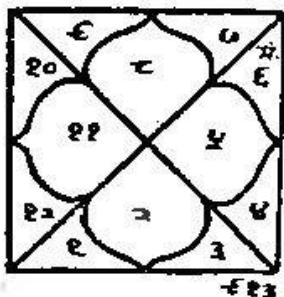
बृशिकलग्न : दशमभाव : मंगल

है। आठवीं उच्च दृष्टि से धम तथा भवन के सुख में वृद्धि होती है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। चौथी दृष्टि से स्वराजि में प्रथम भाव को देखने से जारीरिक शक्ति भवन रहती है। ऐसा व्यक्ति सशब्द तथा स्वर्गभिमानी होता है।

‘दृश्यक’ सम्न की कहली के ‘एकादशमाव’ स्थित ‘भंगल’ का फलादेह

वृश्चिकलघ्न : एकोदयकावः : मुग्धल

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि वर्ष स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शारीरिक परिवर्तन द्वारा पर्याप्त लाभ कमाता रहता है। परन्तु शक्ति-पक्ष से कुछ कष्ट होता है तथा शारीर रोगी भी हो जाया करता है। चौथी मित्र-द्वितीय से द्वितीय भाव को देखने से उन एवं कुटुम्ब के सुख में बढ़ि होती है।

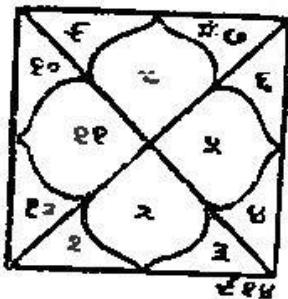


सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में वर्षम भाव की देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है तथा ननसाल वक्ष से ज्ञान होता है।

‘दृश्यक’ सग्न की कुण्डली के ‘द्वादशमास’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

वृष्टिकलम : द्वादशभाव मण्डल

बारहवें भाव में शब्द 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खचं अधिक रहता है तथा बाहुरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख-शान्ति मिलती है । चौथी उच्च-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है । सातवीं दृष्टि से स्वराशि में घट-भाव को देखने से शक्ति-पक्ष पर विजय मिलती रहती है ।



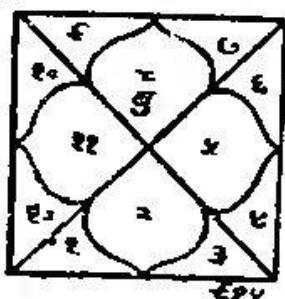
साठवीं शतान्त्रिय से सप्तमशाव की देखने से स्त्रों से कुछ वैमनस्य रहते हुए भी सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में कुछ परेशानियों के साथ लाभ होता है ।

‘वृश्चिक’ लग्न में ‘बृष्टि’

‘दृश्यक’ लग्न की कर्णली के ‘प्रत्यक्षपात्र’ लिये ‘वह’ का कलाकार

संस्कृतकालान् । प्रथमभाग । अंगल

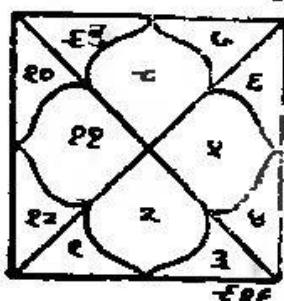
पहले भाव में मित्र 'भंगल' की राशि पर स्थित 'बृष्ट' के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव में बृद्धि होती है। उसे वायु एवं शक्ति का साभ भी होता है।



सातवीं मित्र-इंस्टि से अप्समधाव की देखने से स्त्री-पक्ष में कुछ कठिनाई के लाभ सहयोग मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी परिव्रम के बाद हो सफलता मिलती है ।

‘दृश्यक’ लग्न की कृष्णली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

बृशिचक्षलग्न : द्वितीयभाव : बुध



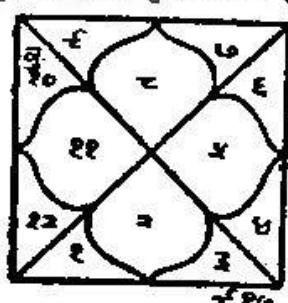
दूसरे भाव में मित्र ‘शुरु’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आशु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

ऐसी श्रहस्थिति वाला व्यनित शान-शाँकत का जावन विताता है।

‘बृशिचक्ष’ लग्न की कृष्णली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

बृशिचक्षलग्न : तृतीयभाव : बुध



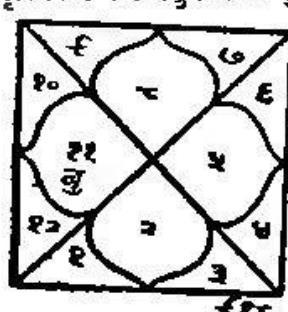
तीसरे भाव में मित्र ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक के परामर्श में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त होता है। साय ही आशु एवं पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं शक्ति-दृष्टि से नवम भाव को देखने से जातक स्वविवेक-शक्ति द्वारा भाग्य एवं धर्म की उन्नति करता है।

ऐसां व्यनित सुखी, धनी, धर्मात्मा तथा परामर्शी होता है।

‘बृशिचक्ष’ लग्न की कृष्णली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

बृशिचक्षलग्न : चतुर्थभाव : बुध

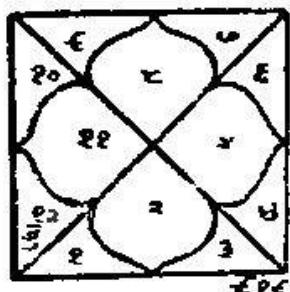


चौथे भाव में, मित्र-‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक की भाता, भूमि एवं अवन का सुख प्राप्त होता है तथा आशु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि भी होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के लाभ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सुख, सफलता, लाभ तथा यश की प्राप्ति होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली से **'पंचमभाव'** स्थित 'बुध' का कलादेश

वृश्चिक लग्न : पंचमभाव : बुध

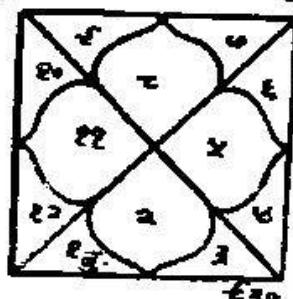


पाँचवें भाव में मिद 'शुरु' की राशि पर स्थित नौच के 'बुध' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष में कष्ट का सामना करना पड़ता है, परन्तु स्वविवेक-शक्ति से लाभ भी होता है। वायु के क्षेत्र में कुछ परेशानी आती है। पुरातत्त्व का स्वल्प लाभ होता है।

सातवीं उच्च-दूषित से स्वराशि में एकादश भाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है तथा जीवन सुख से बीतता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली से **'षष्ठमभाव'** स्थित 'बुध' का कलादेश

वृश्चिक लग्न : षष्ठमभाव : बुध

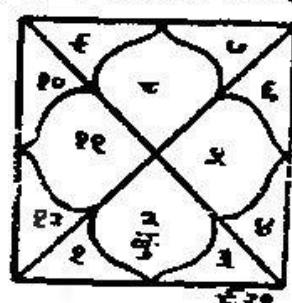


छठे भाव में मिद 'धंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक शकुपक्ष पर विजय पाता है। कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी बहुती है। वायु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी हीता है।

सातवीं मिद-दूषित से ह्रादयभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संवाद से लाभ भी मिलता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली से **'सप्तमभाव'** स्थित 'बुध' का कलादेश

वृश्चिक लग्न : सप्तमभाव : बुध

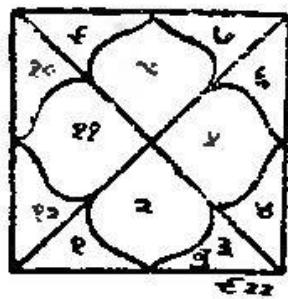


सातवें भाव में मिद 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा वायु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

सातवीं मिद-दूषित से प्रथमभाव को देखने से भारीरिक बल एवं प्रभाव की शाप्ति होती है तथा दैनिक जीवन लाभ-सौकर्य से अतीत होता है।

‘बृद्धिक’ समन की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

बृद्धिक समन : अष्टमभाव : बुध

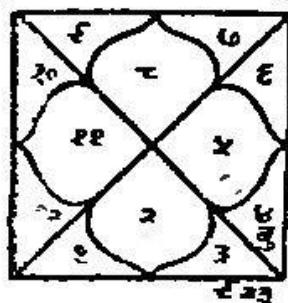


आठवें भाव के स्वराजि हितन ‘बुध’ के प्रभाव से जानक की अयु में बृद्धि होती है तथा पुरातत्व का लाभ होता है।

सातवीं मिवदृष्टि से तृतीयभाव की देवतने से जातक स्वविवेक द्वारा धन का संचय करता है। उसे कौटुम्बिक सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अमोरी द्वा का जीवन विताता है।

‘बृद्धिक’ समन की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

बृद्धिक समन : नवमभाव : बुध

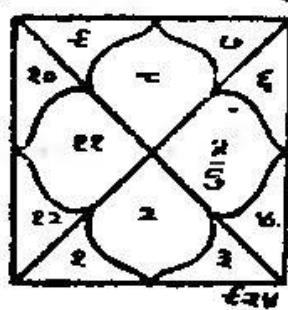


नवें भाव में मित्र ‘चतुर्दश’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जानक के भाग्य एवं धर्म की बृद्धि होती है। साथ ही आद्य तथा पुरातत्व का साधन भी होता है।

सातवीं मिवदृष्टि से तृतीयभाव की देवतने से कुछ कमियों के साथ ही भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की बृद्धि भी होती है। ऐसा व्यक्ति प्रायः सुखी तथा भाग्यशाली जीवन विताता है।

‘बृद्धिक’ समन की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

बृद्धिक समन : दशमभाव : बुध

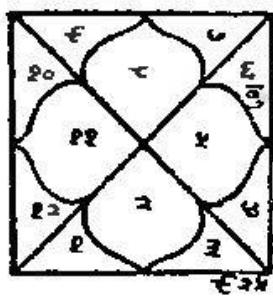


दसवें भाव में मित्र ‘सूर्य’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के लाभ पिता का सुख एवं लाभ तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सम्मान और सफलता की प्राप्ति होती है। पुरातत्व एवं अयु का लाभ भी होता है।

सातवीं मिवदृष्टि से चतुर्थ भाव की देवतने से कुछ कठिनाइयों के लाभ माता, भूमि एवं अवन आदि का सुख भी प्राप्त होता है।

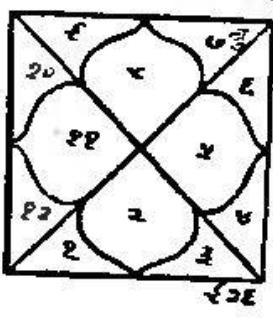
‘बृहिचक’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

बृहिचक लग्न : एकादशभाव : बुध



‘बृहिचक’ लग्न की कुण्डली के ‘ह्रादशभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

बृहिचक लग्न : द्वादशभाव : बुध



ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित उच्च के ‘बुध’ के प्रभाव से जातक की आमदनी बढ़ रहती है। अब्दु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साव विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति कुछ रूपे स्वभाव का भी होता है।

‘बृहिचक’ लग्न की कुण्डली के ‘ह्रादशभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

बृहिचक लग्न : द्वादशभाव : बुध

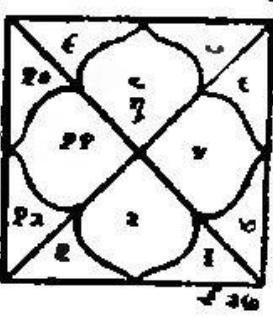
ग्यारहवें भाव में मित्र ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संवद से लाभ भी होता है। अब्दु तथा पुरातत्त्व की शक्ति भी बढ़ती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से धर्म-पक्ष में विवेक-बुद्धि एवं विनम्रता से काम निकालता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन धर्मणशील होता है तथा चित्त में कुछ अशान्ति भी बनी रहती है।

‘बृहिचक’ लग्न में ‘गुरु’

‘बृहिचक’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

बृहिचक लग्न : प्रथमभाव : गुरु



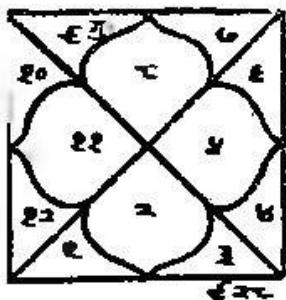
पहले भाव में मित्र ‘भगव’ की राशि पर स्थित ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में श्रेष्ठ सफलता मिलती है।

सातवीं शाहू-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ भत्तेव रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में पहले सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं। किन्तु आव में लाभ भी होता है। स्त्री से भी सुख मिलता है।

नवीं उच्चदृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म तथा आन्य की विजेष उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी तथा आयुर्गाली होता है।

‘श्वक’ लाल की कुछ लो के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘गुरु’ का कलादेश

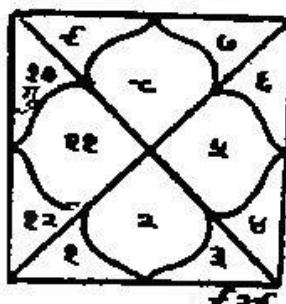
त्वंक लग्न : द्वितीयभाव : गुरु



भ तथा यज्ञ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यवसाय के द्वारा सुख, सम्मान

‘श्वक’ लाल की कुछ लो के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘गुरु’ का कलादेश

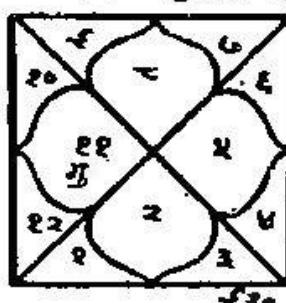
त्वंक लग्न : तृतीयभाव : गुरु



मि निवृद्धि से एकादशभाव को देखने से आमदनी में खूब बूढ़ि होती है। ऐसा कि सुखी तथा धनी होता है।

‘श्वक’ लाल की कुछ लो के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘गुरु’ का कलादेश

श्वक लग्न : चतुर्थभाव : गुरु



प्र, सहयोग तथा सम्मान मिलता है। नवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव की देखने से वे की अधिकता रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों से सामान्य जाग होता है।

दूसरे भाव में स्वराशि में स्थित ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का उत्तम सुख प्राप्त होता है। सन्तान-पक्ष में कुछ कमी रहती है। पांचवीं मिन्दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शक्ति-पक्ष में शुद्धिमानी से अफलता मिलती है।

सातवीं मिन्दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आगु तथा पुरातत्व की शक्ति में बूढ़ि होती है। नवीं मिन्दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के द्वारा सुख, सम्मान

तीसरे भाव में शक्ति ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक को आई-बहिन के सुख में आधा आती है तथा पराक्रम में भी कमी रहती है। विद्या, धन तथा कुटुम्ब का सुख भी कम रहता है। पांचवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ वैभवस्य रहता है तथा व्यवसाय में कठिनाई से सफलता मिलती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से नवमभाव को देखने से आग तथा धर्म की उन्नति होती है।

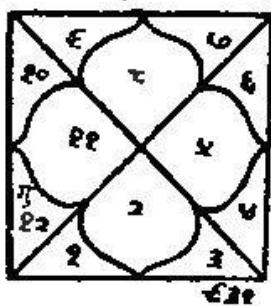
देखने से आमदनी में खूब बूढ़ि होती है। ऐसा कि सुखी तथा धनी होता है।

चौथे भाव में शक्ति ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक का माता के साथ कुछ वैभवस्य रहता है तथा भूमि एवं व्यवसाय का सुख प्राप्त होता है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष में भी कुछ कठिनाईयों के साथ अफलता मिलती है। पांचवीं मिन्दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से ओगु तथा पुरातत्व का लाभ होता है।

सातवीं मिन्दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ,

'बृहिंश्वक' लग्न की कृष्णली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

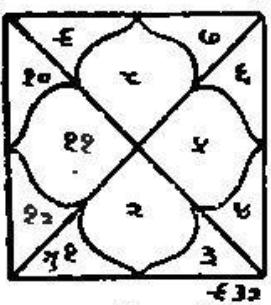
बृहिंश्वक लग्न : पंचमभाव : गुरु



सम्मान, प्रतिष्ठा तथा यश की बृद्धि होती है।

'बृहिंश्वक' लग्न की कृष्णली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

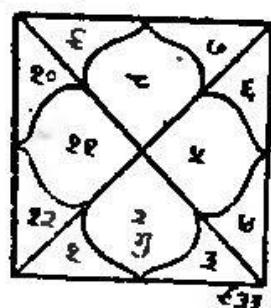
बृहिंश्वक लग्न : षष्ठभाव : गुरु



सातवीं द्वादशदृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बहुरी स्थानों से लाभ होता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की बृद्धि होती है। कुटुम्ब से कुछ वैमनस्य भी रहता है।

'बृहिंश्वक' लग्न की कृष्णली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

बृहिंश्वक लग्न : सप्तमभाव : गुरु



आई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी का अनुभव होता है।

पौचवें भाव में स्वराशि-स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक विद्या, बुद्धि एवं भन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है। यन तथा कुटुम्ब का सुख भी उसे मिलता है। पौचवीं नित्य तथा उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म सम्मान आग्ने की विजेष उन्नति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खब रहती है। नवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, शक्ति,

छठे भाव में मिद 'धंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक शनू-पक्ष में बुद्धिज्ञता से सफलता पाता है तथा धर्म एवं कुटुम्ब के कारण ज्ञानों में फलता है। विद्या तथा भन्तान पक्ष कमज़ोर रहता है। पौचवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा लाभ, सुख, सम्मान आदि की शान्ति होती है।

सातवीं द्वादशदृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बहुरी स्थानों से लाभ होता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की बृद्धि होती है। कुटुम्ब से कुछ वैमनस्य भी रहता है।

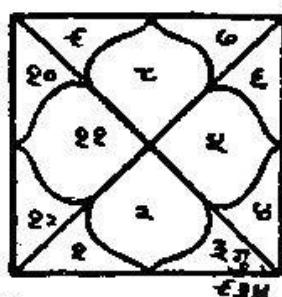
'बृहिंश्वक' लग्न की कृष्णली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सातवें भाव में शब्द 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की सम्मान भवभेदों के बावजूद स्त्री का व्येष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में सफलता मिलती है। पौचवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खब रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव की शान्ति होती है। नवीं नीचदृष्टि से सुतीयभाव की देखने से

‘बृशिक’ लग्न की कुष्ठली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

बृशिक लग्न : अष्टमभाव : गुरु



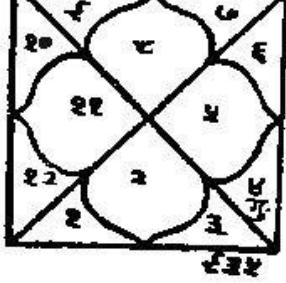
आठवें भाव में विद्या ‘बृद्ध’ की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है, परन्तु विद्या, बुद्धि, सन्तान, धन एवं कुटुम्ब के सुख में कमी रहती है। पौचर्ची शब्ददृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा वाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव

को देखने से धन तथा कौटुम्बिक सुख की बृद्धि होती है। नवीं शब्ददृष्टि से चतुर्थभाव

‘बृशिक’ लग्न की कुष्ठली के ‘बाष्पमधाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

बृशिक लग्न : नवमभाव : गुरु



नवें भाव में विद्या ‘चन्द्रमा’ की राशि पर स्थित उच्चव के ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक के धर्म तथा धार्य की बृद्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी भास्त होता है। पौचर्ची शब्ददृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव एवं मान सम्पाद की उपलब्धि होती है।

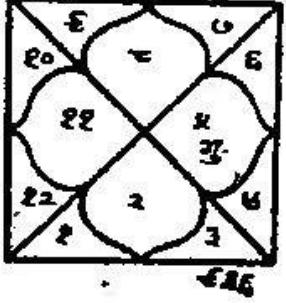
सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने

से आईबहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव की देखने

से सन्तान एवं विद्या-बुद्धि की विशेष उन्नति होती है तथा जातक यशस्वी बनता है।

‘बृशिक’ लग्न की कुष्ठली के ‘बाष्पमधाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

बृशिक लग्न : दशमभाव : गुरु



दसवें भाव में विद्या ‘सूर्य’ की राशि पर स्थित ‘गुरु’ के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा अवसाय के क्षेत्र में सुख, लाभ, सफलता तथा यश की आप्ति होती है। पौचर्ची दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव की देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की बृद्धि होती है।

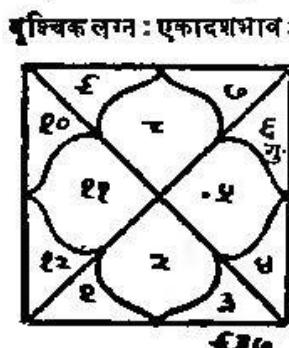
सातवीं शब्ददृष्टि से पंचमभाव की देखने

से माता, धूमि तथा भवन का सुख कुछ असन्तोष

के साथ भास्त होता है।

नवीं शब्ददृष्टि से षष्ठमधाव की देखने से शक्त-यश में बुद्धिमत्ती से सफलता एवं विजय भास्त होती है।

'कृशिक' सम्म की कुप्लसी में 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलवेश

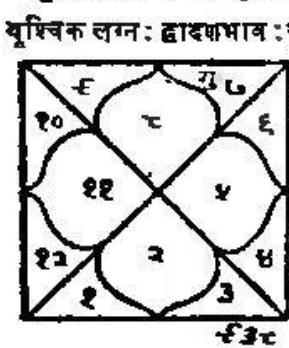


कृशिक लग्नः एकादशभावः गुरु ग्यारहवें आव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। पौचवीं शत्रु तथा नीच दृष्टि से तृतीयभाव में देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठमभाव की देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान-पक्ष की विशेष उन्नति होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से पत्नी के साथ कुछ दंभनस्य रहते हुए भी साध होता है।

तथा दैनिक व्यवसाय में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

'कृशिक' सम्म की कुप्लसी में 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलवेश



कृशिक लग्नः द्वादशभावः गुरु बारहवें आव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्ध भी कमजोर रहते हैं। धन, कुटुम्ब, विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में भी कमी रहती है। पौचवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से भाता, भूमि एवं अवन के सुख में कमी रहती है।

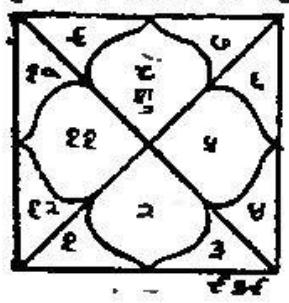
सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठमभाव की देखने से शत्रु-पक्ष में चतुराई से सफलता प्राप्त होती है। नवीं दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व की

अच्छी शक्ति प्राप्त होती है। ऐसी यह-स्थिति वाले जातक का विस्त प्रायः असान्त ही बना रहता है।

'कृशिक' सम्म में 'शुक्र'

'कृशिक' सम्म की कुप्लसी में 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलवेश

कृशिक सम्मः प्रथमभावः शुक्र

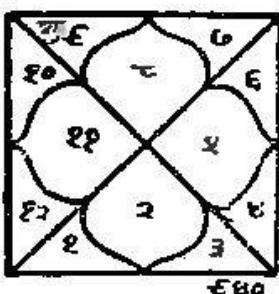


पहले आव में शत्रु 'यंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' से प्रभाव से जातक का शरीर कमजोर रहता है, परन्तु प्रधाव, चातुर्य एवं कार्य-कुशलता में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री का सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त होती रहती है, परन्तु शुक्र के अवयव हृदय के कारण इन लोकों में सामान्य कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है।

'बूँदिक' लान की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

बूँदिकलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

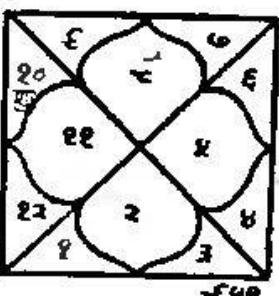


इसरे भाव में सामान्य शब्द 'गुह' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के सन सदा कौटुम्बिक सुख में कुछ परेशानी रहती है यद्यपि धन का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्रदूषित से अष्टमभाव को देखने से आयु में चृदि होती है, परन्तु पुरातत्व का लाभ कम रहता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा चतुर समझा जाता है।

'बूँदिक' लान की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

बूँदिकलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

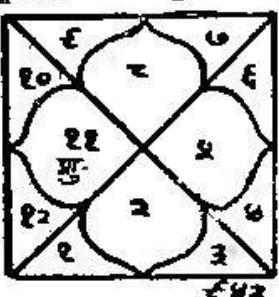


तीसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आई-बहिन के सुख तथा पुरुषार्थ में कमी प्राप्त होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ भी होता है। स्त्री-पक्ष में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं शक्तदूषित से नवमभाव की देखने से भाग्योन्नति में कुछ कमी रहती है सदा धर्म का पालन भी खोड़ा ही होता है।

'बूँदिक' लान की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

बूँदिकलग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

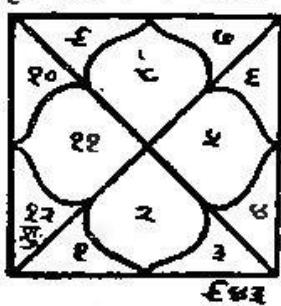


चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। स्त्री-पक्ष भी कमजोर रहता है। बाहरी सम्बन्धों से सुख प्राप्त होता है और खर्च आराम से चलता रहता है।

सातवीं शक्तदूषित से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद लाभ, सुख, मरण एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

‘बूँदिक’ सान की कुछसौ में ‘पंचमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

बूँदिक लग्नः पंचमभावः शुक्र

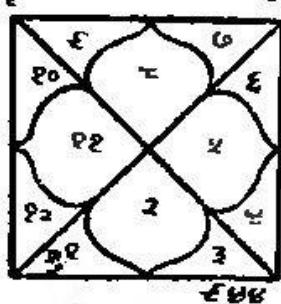


पाँचवें भाव में सामान्य जातु 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है, परन्तु यह किसी कला का विशेषज्ञ भी अवश्य होता है। ऐसा व्यक्ति स्त्री के प्रभाव में रहने वाला तथा वाक्-वृत्तुर होता है। उसे बाहरी सम्बन्धों से शक्ति एवं लाभ भी प्राप्त होता है।

सातवीं नीच-दूषि से एकादशभाव की देखने से आमदनी के मार्ग में भी कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

‘बूँदिक’ सान की कुछसौ में ‘षष्ठभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

बूँदिक लग्नः षष्ठभावः शुक्र

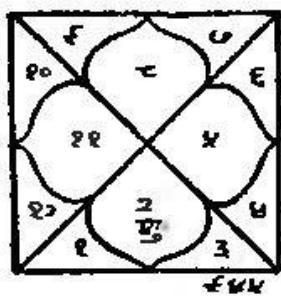


छठे भाव में जातु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा जातु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। गृहस्थी के संचालन में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं दूषि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अधिक परिव्राम द्वारा सामान्य लाभ प्राप्त होता है तथा खर्च को अधिकता बनी रहती है।

‘बूँदिक’ सान की कुछसौ में ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

बूँदिक लग्नः सप्तमभावः शुक्र



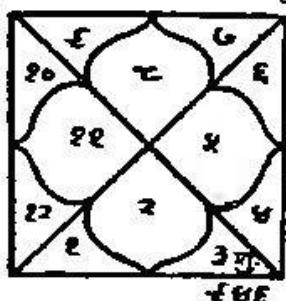
सातवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की स्त्री एवं वैतिक व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यपना खर्च चलाने में सहायता भी मिलती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा बुद्धिमान होता है।

सातवीं शनिदूषि से प्रथमभाव की देखने से शरीर में दुर्बलता रहती है, फिर भी जातक यशस्वी, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला तथा कार्य-कुशल होता है।

‘वृशिष्ठक’ लग्न की कुचल्ली के ‘अष्टमपात्र’ स्थित ‘शक्ति’ का एकाग्रेता

ब्रह्मिकलग्नः अष्टमभावः शक्

आठवें भाव में मित्र 'मुघ' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रधात्र से जातक को आयु सदा पुरातत्त्व के क्षेत्र में सकटों तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । यही स्थिति स्त्री तथा व्यवसायके पक्ष में भी रहती है, परन्तु गुप्त चातुर्थ एवं कठिन परिष्क्रम द्वारा सफलता प्राप्त होती है ।

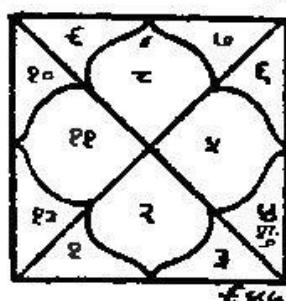


आती है। बड़ी चतुराई से काम लेकर जातक किसी तरह अपनी इज्जत बचाता है।

‘विद्युत’ लान की वृद्धिसी के ‘नवमभाव’ स्थित ‘शुक’ का फलावैरा

दशित्रिकल्पन : नवमभाव : शुक्र

वर्दे भाव में शक्ति 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आग्नेयोन्नति तथा धर्म-पालन के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं। स्त्री-पक्ष से भी परेशानी रहती है। वह बड़ी चतुराई से काम निकालता है तथा वाहरी सम्बन्धों से लाभ उठाता है।

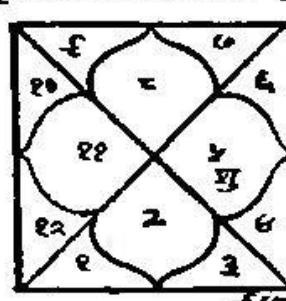


सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव की देखने से भाई-नहिन एवं पराक्रम के क्षेत्र में भी असन्तोष-जनक स्थिति बढ़ी रहती है।

‘चिक्क’ सान की जगहों के ‘दरामधाव’ स्थित ‘गुक’ का फसादेल

ब्रह्मकलित्त : दग्धसाव : सख

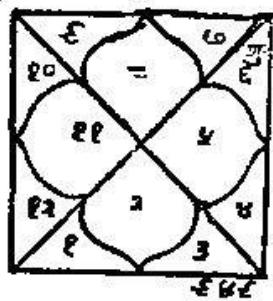
दसवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्रमें कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कमी धनी रहती है।



सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से याता, भूमि तथा भवन का सुख-सहयोग प्राप्त होता है ।

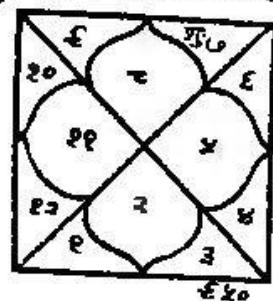
'दूरिचक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : एकादशभाव : शुक्र



'दूरिचक' लग्न की कुण्डली से 'ह्रादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : ह्रादशभाव : शुक्र



व्यारहर्वें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित नीच के 'शुक्र' के प्रभाव से ज्ञातक की आमदनी में कमी आती है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय का क्षेत्र भी असन्तोषजनक रहता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से चातुर्थ द्वारा कुछ लाभ भी मिलता है।

सातवीं उच्च तथा भाद्र दृष्टि से पश्चमभाव को देखने से विद्यानुद्दिति की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान-पत्न में कुछ कमजोरी बनी रहती है।

'दूरिचक' लग्न की कुण्डली से 'ह्रादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

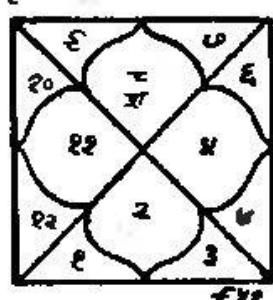
वृश्चिकलग्न : व्यादशभाव : शुक्र व्यारहर्वें भाव में स्वराहितस्थित 'शुक्र' के प्रभाव से ज्ञातक का खंड अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के पश्च में भी कुछ परेशानियां रहती हैं।

सातवीं शाद्म-दृष्टि से व्यादभाव की देखने से शान्त-पत्न में भी कुछ परेशानियों के बाद ही सफलता प्राप्त होती है।

'दूरिचक' लग्न में 'शनि'

'दूरिचक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : प्रथमभाव : शनि



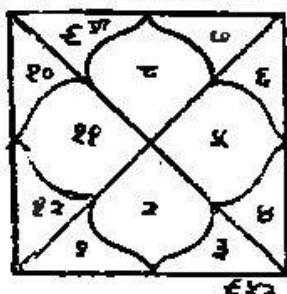
पहले भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से ज्ञातक का स्वभाव शान्त तथा उग्र दोनों प्रकार का होता है। माता, शूभि तथा अक्षयन का सामान्य सुख मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराहित में तृतीयभाव की देखने से पराक्रम में चूर्दि होती है तथा शाईन्वहिन का सुख प्राप्त होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्रमें सफलता मिलती है। दसवीं शाद्म-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य

एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिलती है।

'वृद्धिक' लग्न की कुण्डली के 'त्रितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

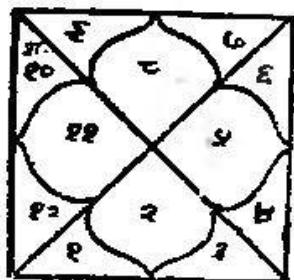
वृश्चिकलग्न : द्वितीयभाव : शनि



मित्र-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से वामदण्डी में अत्यधिक वृद्धि होती है। दसवीं जातक सुखी तथा धनी जीवन विताता है।

'वृद्धिक' लग्न की कुण्डली के 'त्रितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

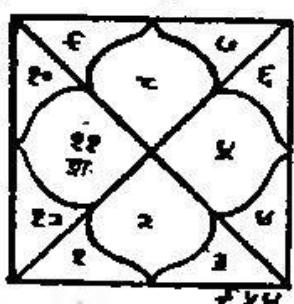
वृश्चिकलग्न : तृतीयभाव : शनि



होता है। दसवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अच्छी रहती है। तथा वाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

'वृद्धिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : चतुर्थभाव : शनि



सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है किन्तु जातक बहुत परिश्रमी होता है।

दूसरे भाव में शनि 'शुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को धन, कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है, परन्तु आई-बहिन के सुख में कमी आती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव की देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। दसवीं

से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। एसा जातक सुखी तथा धनी जीवन विताता है।

'वृद्धिक' लग्न की कुण्डली के 'त्रितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

तीसरे भाव में स्वक्षेत्री 'शनि' के प्रभाव से जातक को आई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख भी मिलता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव की देखने से सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

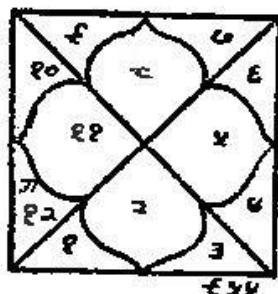
सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव की देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य की उन्नति होती है तथा मतभेदों के साथ धर्म का भी पालन चलता है।

सातवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अच्छी रहता है।

चौथे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का अच्छ सुख प्राप्त होता है। आई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। तीसरी नौच-दृष्टि से षष्ठमभाव को देखने से शत्रु-पक्ष द्वारा अशान्ति मिलती है।

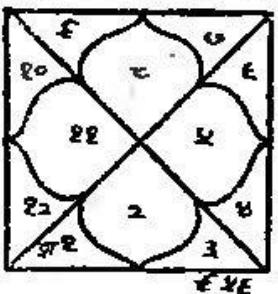
सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से पिता से मतभेद रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी अधिक सफलता नहीं मिलती। दसवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक

‘बृहिंश्वक’ सम्म की कुण्डली के ‘पञ्चमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश
बृहिंश्वकलग्न : पञ्चमभाव : शनि



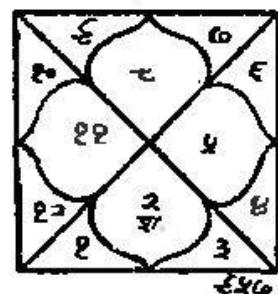
सातवीं मिन्न-दूषिण से एकादशभाव की देखने से आमदनी अच्छी रहती है। दसवीं शत्रु-दूषिण से द्वितीयभाव को देखने से कुटुम्ब से दैमनस्य रहता है तथा अधिक प्रयत्न करने पर भी धन का विशेष संचय नहीं हो पाता।

‘बृहिंश्वक’ लग्न की कुण्डली के ‘षष्ठमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश
बृहिंश्वकलग्न : षष्ठमभाव : शनि



ये लाभ होता है। दसवीं दूषिण से स्वराशि में तृतीयभाव की देखने से पराक्रम की बृद्धि होती है तथा विरोध रहते हुए भी भाई-बहिनों का सुख मिलता है।

‘बृहिंश्वक’ लग्न की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश
बृहिंश्वकलग्न : सप्तमभाव : शनि



अधिक करना पड़ता है। दसवीं दूषिण से स्वराशि में चतुर्थभाव की देखने से भाता, भूमि एवं भवन का यशेष सुख प्राप्त होता है। दैनिक जीवन प्रभावशाली तथा आमोदपूर्ण रहता है।

पीच्छे भाव में शत्रु ‘गुह’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक को सन्तान-सुख तो मिलता है परन्तु सन्तान से भत्तेव भी रहता है। विद्या-बुद्धि पर्याप्त रहती है। भाता से दैमनस्य रहता है तथा भूमि-भवन का सामान्य सुख प्राप्त होता है। तीसरी मिन्न-दूषिण से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

छठे भाव में शत्रु ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक शत्रु-ग्रह में युक्ति से काम निकालता है। भाता, भूमि तथा भवन का सुख भी अल्प भाव में प्राप्त होता है। तीसरी मिन्न दूषिण से अष्टमभाव की देखने से आमु तथा पुरातन का लाभ होता है।

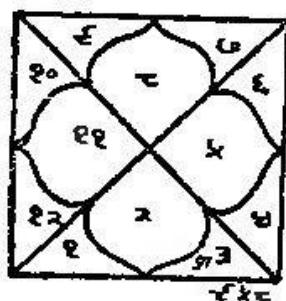
सातवीं उच्च दूषिण से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संवंध में लाभ होता है। दसवीं दूषिण से स्वराशि में तृतीयभाव की देखने से पराक्रम की बृद्धि होती है तथा विरोध रहते हुए भी भाई-बहिनों का सुख मिलता है।

सातवीं भाव में मिन्न ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। तीसरी शत्रु-दूषिण से नवमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ आम तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवीं शत्रु-दूषिण से प्रयमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है तथा अम

‘बूद्धिक’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

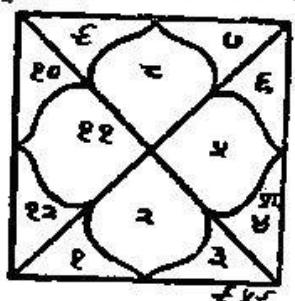
बूद्धिकलग्न : अष्टमभाव : शनि



रहता है। दसवीं शानु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का पक्ष अपूर्ण रहता है।

‘बूद्धिक’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

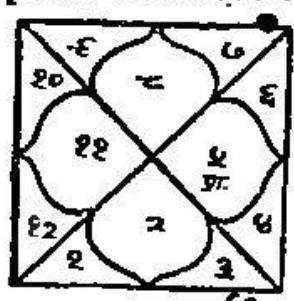
बूद्धिकलग्न : नवमभाव : शनि



के सुख तथा पराक्रम में बृद्धि होती है। दसवीं नीच तथा शानु-दृष्टि से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान की देखने से शानु पक्ष में परेशानी रहती है तथा ननसाल पक्ष कमज़ोर रहता है।

‘बूद्धिक’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

बूद्धिकलग्न : दशमभाव : शनि



सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव की देखने से माता से कुछ महसेद रहता है तथा भूमि, भवन का सुख प्राप्त होता है। दसवीं चित्त-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है तथा घरेलू जीवन मुख्य बना रहता है।

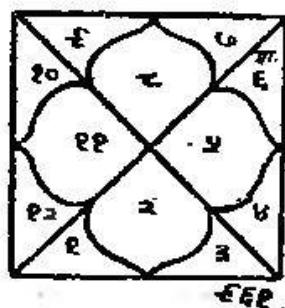
बाठवें भाव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है, परन्तु माला के सुख में बहुत कमी आती है। भूमि, भवन तथा भाई-बहिनों का सुख भी कम ही मिलता है। तीसरी शानु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से वैभवनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। सातवीं शानु-दृष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन-संचय में कमी तथा कुटुम्ब से वैमनस्य रहता है।

तदें भाव में शानु ‘चन्द्रमा’ की राशि पर स्थित शनि’ के प्रभाव से जातक की आयोन्नति कुछ रुकावटों के साथ होती है तथा धर्म का पालन भी कठिनाई सहित होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से आमदनी खूब रहती है तथा धन का अच्छा लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में दृतीयभाव की देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में बृद्धि होती है। दसवीं नीच तथा शानु-दृष्टि से घण्टभाव

दसवें भाव में शानु ‘सूर्य’ की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सहयोग तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। भाई-बहिनों का सुख भी कम ही मिलता है परन्तु पराक्रम में बृद्धि होती है। तीसरी मित्र तथा उच्च दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

‘बूशिंचक’ सान की कुछली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलावेश

बूशिंचकलग्न : एकादशभाव : शनि



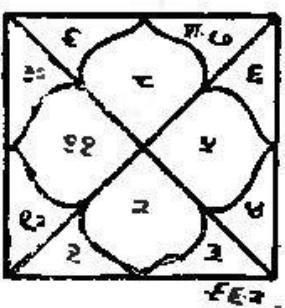
यारहवें भाव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक की आमदनी में अच्छी वृद्धि होती है। भाई-बहिन, माता, मूमि तथा धन का श्रेष्ठ सुख मिलता है तथा पराक्रम भी बढ़ता है। तीसरी शतु-दूषित से प्रथम भाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है।

सातवीं शतुदूषित से पंथमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या एवं सन्तान का लाभ होता है।

दसवीं मित्र-दूषित से अष्टमभाव को देखने से जातक दीवायि होता है।

‘बूशिंचक’ सान की कुछली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलावेश

बूशिंचकलग्न : द्वादशभाव : शनि



वारहवें भाव में मित्र ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित उच्च के ‘शनि’ के प्रभाव से जातक का स्वर्ण अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख एवं लाभ की प्राप्ति भी होती है। भाई-बहिन, माता तथा धन के सुख में भी कुछ कमी या आती है। तीसरी शतु-दूषित से द्वितीयभाव की देखने से धन-संबंध तथा कौटुम्बिक सुख में कमी रहती है।

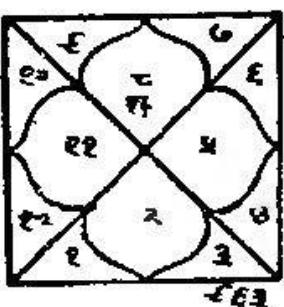
सातवीं नीच-दूषित से पंथमभाव की देखने से

शतुपक्ष से परेशानी रहती है। दसवीं मित्र-दूषित से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पूरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अधिक धनी न होते हुए भी अमीरी दृष्टि से जीवन बिताता है।

‘बूशिंचक’ सान में ‘राहु’

‘बूशिंचक’ सान की कुछली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलावेश

बूशिंचकलग्न : प्रथमभाव : राहु

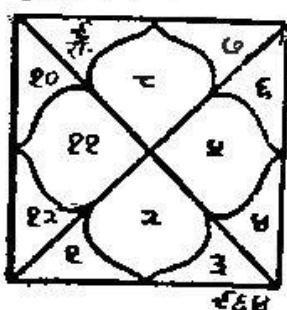


पहले भाव में शतु ‘भूगल’ की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शरीर में किसी गुप्त कष्ट अथवा चिन्ता का निवास रहता है। कमी-कमी उसे मृत्यु-कुल्य शारीरिक कष्ट भी होता है।

वह उन्नति के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों का बाध्य लेता है। ऐसा व्यक्ति तेज स्वभाव का, स्वार्थी तथा असुन्दर होता है।

‘विश्वक’ साम की कुख्ली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

संशिक्षक लग्नः द्वितीय भावः राहु

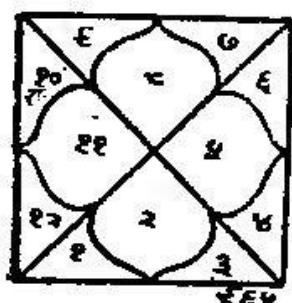


इससे भाव में शब्द 'शुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को धन-प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कुटुम्ब के विषय में चिन्ता और दुनी रहती हैं।

अनेक गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर भी वह अग्नि ही बना रहता है। आधिक चिन्ताओं से छुटकारा नहीं पाता।

'वृश्चिक' साम को करखली के 'मुत्तोयभाव' स्थित 'रात्रि' का फलादेश

वृश्चिक संग्रह : तृतीय भाग : राहु

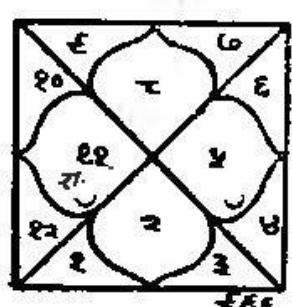


तीसरे आद में मिश्र 'शनि' को राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसे भाई-बहिनों का सुख भी छूट मिलता है परन्तु उनके बारे में चिन्ताएं भी बनी रहती हैं।

ऐसा व्यक्ति अतुर, हिम्मत वाला, धैर्यवान्, असाधारण साहसी तथा कठिन परिस्थिती होता है।

‘बुशिवक’ लान की छापखानों के ‘बतर्फ्फाब’ स्थित ‘राह’ का फूलदेश

चूषिष्वक लग्नः अतुर्धेभावः राहु

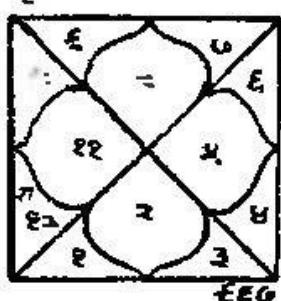


8 चौथे भाव में भिन्न 'शनि' को राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को भाला, भूमि तथा भवन के सभ से कष्ट कमी-बनी रहती है ।

कभी-कभी पारिवारिक संकटों का सामना भी करना पड़ता है, जिनके निराकरण के लिए उसे मुफ्त युक्तियों, हिम्मत तथा व्यवेय का सहारा लेना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति होशियार तथा परिख्यादी भी होता है।

‘वृश्चिक’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

वृश्चिक लग्नः पंचमभावः राहु

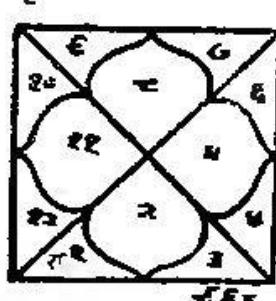


पाँचवें भाव में शत्रु ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन तथा सन्तान से पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं, बाद में कुछ सफलता भी मिलती है।

ऐसा व्यक्ति चतुर, गुप्त युक्तियों में प्रवीण तथा हर समय चिन्तित रहने वाला होता है, परन्तु वह अपनी प्रेजानियों को किसी परं प्रकार नहीं करता।

‘वृश्चिक’ लग्न की कुण्डली के ‘षष्ठमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

वृश्चिक लग्नः षष्ठमभावः राहु

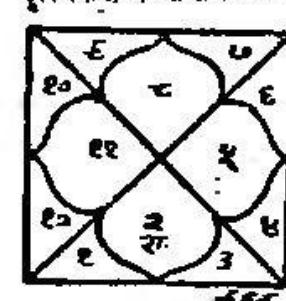


छठे भाव में शत्रु ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा उन पर विजयी होता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त चातुर्यं, धैर्यं, हिम्मत, कठिन परिश्रम तथा युक्तियों के बल पर हर प्रकार की कठिनाइयों पर विजय पाता रहता है तथा कभी भी हिम्मत नहीं हारता।

‘वृश्चिक’ लग्न की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

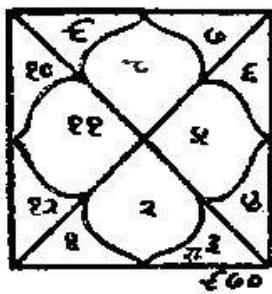
वृश्चिक लग्नः सप्तमभावः राहु



सातवें भाव में निक्ष ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक को स्वीकार व्यवसाय-पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। कभी-कभी स्वीकार व्यवसाय के कारण दोर संकटों में भी फँस जाना पड़ता है, परन्तु वह अपनी हिम्मत, युक्ति, चतुराई एवं धैर्य के बल पर उन सब कठिनाइयों को पार कर भासा है।

‘वृश्चिक’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

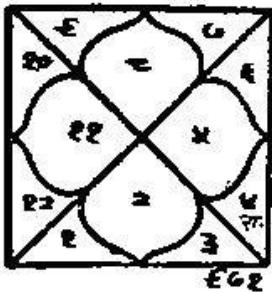
वृश्चिकलग्नः अष्टमभावः राहु



आठवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा आयु में वृद्धि होती है। उसका जीवन उमंग एवं उत्साह से भरा रहता है। वह बड़े ठाठ-बाट की जिंदगी विताता है, परन्तु कभी-कभी उसे हानि भी उठानी पड़ती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा यशस्वी भी होता है।

‘वृश्चिक’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

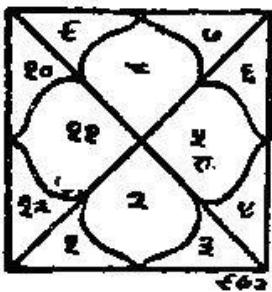
वृश्चिकलग्नः नवमभावः राहु



नवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति में बहुत बाधाएँ आती हैं तथा धर्म के प्रति भी अश्रद्धा रहती है। वह मानसिक चिन्ताओं से ब्रह्मस्त रहता है। कई बार निराश भी हो जाता है। अनेक प्रकार के कष्ट शोणने के बाद जल्दी में उसे थोड़ी-बहुत सफलता मिलती है।

‘वृश्चिक’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

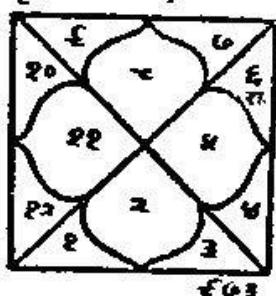
वृश्चिकलग्नः दशमभावः राहु



दसवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को अपने पिता द्वारा परेशानी रहती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कष्ट उठाने पड़ते हैं। कभी-कभी वह अस्थिरिक निराश भी हो जाता है। अन्त में धैर्य, साहस एवं चातुर्य के बल पर किसी प्रकार उन संकटों पर विजय पाकर थोड़ी-बहुत उन्नति कर सेता है।

‘बृशिंचक’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलावेश

बृशिंचक लग्न : एकादशभाव : राहु

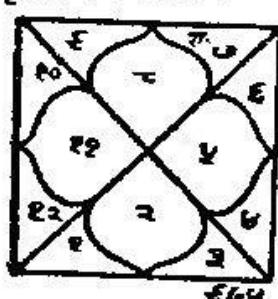


भारहवें भाव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक को आभद्रनी के क्षेत्र में खूब सफलतां मिलती है। वह अधिक मुनाफा कमाने के लिए उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता।

ऐसा व्यक्ति जीर स्थार्थी तथा अतुर होता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक घन-साध होता है, तो कभी अचानक ही भारी घाटा भी चला जाता है।

‘बृशिंचक’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलावेश

बृशिंचक लग्न : द्वादशभाव : राहु

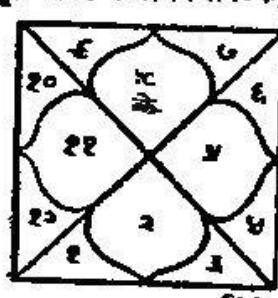


बारहवें भाव में मित्र ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे परेशानियाँ रहती हैं। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे कुछ कठिनाइयों के साथ साध भी होता है। कभी आकस्मिक घन-साध तो कभी आकस्मिक घन-हृत्काल के अवसर भी उपस्थित होते हैं। अन्य प्रकार के कष्ट भी उठाने पड़ते हैं।

‘बृशिंचक’ लग्न में ‘केतु’

‘बृशिंचक’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलावेश

बृशिंचक लग्न : प्रथमभाव : केतु

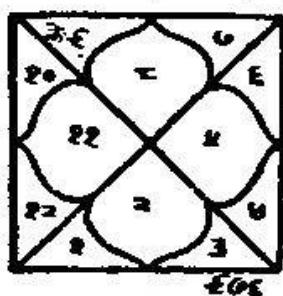


पहले भाव में शत्रु ‘मगल’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक के शरीर में कई बार छोट लगती है तथा शारीरिक सौन्दर्य में कभी बा जाती है।

ऐसा व्यक्ति स्वभाव का चर्च, दिमाग का कमजोर तथा कठिन शारीरिक क्षम करने वाला होता है। उसके शरीर पर छोट जावि का करें रुक्ष स्थार्थी चिन्ह भी बनता है।

‘बूरिष्वक’ लग्न की कुम्हली के ‘हितोयनात्म’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

दूरिष्वक लग्न : द्वितीयभाव : केतु

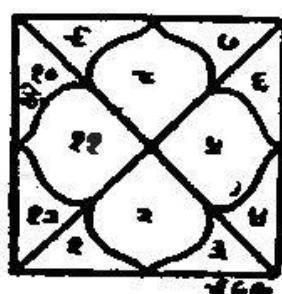


दूसरे भाव में शत्रु ‘भुर’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक घन-ग्राहित के लिए प्रयत्न करता है। कभी-कभी आकस्मिक रूप से भी घन-ताभ हो जाता है। कौटुम्बिक सुख में कुछ कभी बनी रहती है।

ऐसा व्यक्ति अपनी अतिष्ठा बनाये रखने के लिए सदैव सतकं बना रहता है।

‘बूरिष्वक’ लग्न की कुम्हली के ‘हितोयनात्म’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

दूरिष्वक लग्न : द्वितीयभाव : केतु



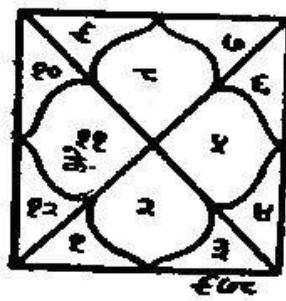
तीसरे भाव में निश्च ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। आई-बहिनों के संबंध के कष्ट का अनुभव होता है।

जगड़े-बांसदों में उसे सफलता प्राप्त होती है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, परिषमी, जीवंवान् तथा हिम्मती होता है।

‘बूरिष्वक’ लग्न की कुम्हली के ‘हितोयनात्म’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

दूरिष्वक लग्न : चतुर्थभाव : केतु

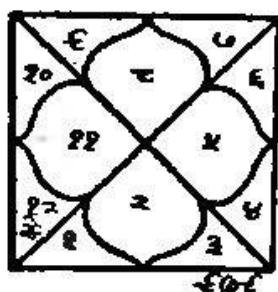


चौथे भाव में निश्च ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की अपनी मात्रा के कारण परेशानी उठानी पड़ती है। भूमि तथा भवन के सुख में भी कभी रहती है। चित्त सदैव वासान्त रहता है।

कठिन परियम के बाद उसे कुछ बैन मिलता है। स्थान बदल देने व्यक्ति परदेश में रहने से कुछ सुख मिलता है। घर में उसे सदैव असान्ति ही ही रहती है।

‘बूरिचक’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

बूरिचक लग्न : पंचमभाव : केतु

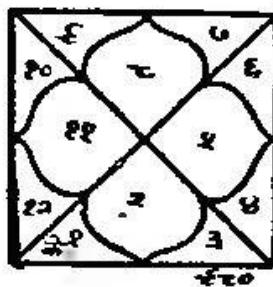


पौत्रवें भाव में शत्रु ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से ज्ञातक तो विश्वाव्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा सन्तान-पक्ष से भी कष्ट मिलता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, दूढ़-निश्चयी, शुप्त शुक्तियों से काप लेने वाला, धैर्यवान् तथा निर्दर होता है। वह अपनी शुप्त चिन्ताओं की किसी पर प्रकट नहीं होने देता।

‘बूरिचक’ लग्न की कुण्डली के ‘षष्ठमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

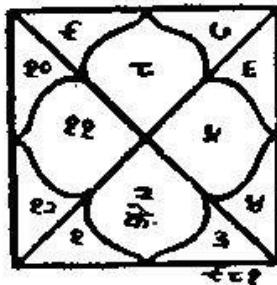
बूरिचक लग्न : षष्ठमभाव : केतु



छठे भाव में शत्रु ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से ज्ञातक शत्रु-पक्ष पर अपना विजेत विजेत प्रभाव रखता है। वह अग्नों, कठिनाइयों आदि पर अपने साहस, शुप्त शुक्ति, धैर्य, परिश्रम एवं बहादुरी के बल पर विजयपाता है। उसका नवसाल-पक्ष कमज़ोर रहता है।

‘बूरिचक’ लग्न की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

बूरिचक लग्न : सप्तमभाव : केतु

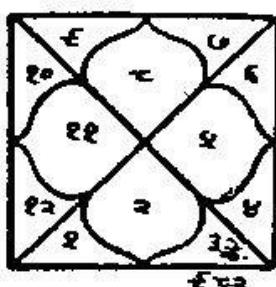


सातवें भाव में मिल ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से ज्ञातक की स्त्री-पक्ष से घोर कष्ट मिलता है। गृहस्थ जीवन में अनेक संकट उठ सके होते हैं, दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं।

ऐसा व्यक्ति अपनी शुप्त शुक्तियों, धैर्य साहस आदि के बल पर संकटों का कुछ निवारण कर पाने में समर्थ नहीं जाता है।

'बृशिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

वृशिक लग्न : अष्टमभाव : केतु

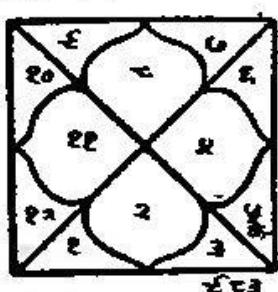


आठवें भाव में मिल 'कुण्ड' की राशि पर स्थित नीच के 'केतु' के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में अनेक बार मृत्यु-त्रुत्य संकटों का सामना करना होता है। पुरातत्व की भी हानि होती है।

ऐसा व्यक्ति जीवन-निर्वाह के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है परन्तु संकटों से बुक्षित नहीं मिल पाती।

'बृशिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्मास' स्थित 'केतु' का फलावेश

वृशिक लग्न : चतुर्मास : केतु

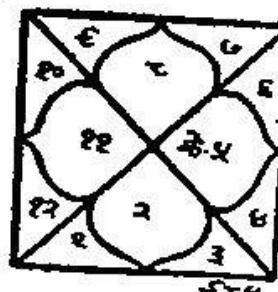


नवे भाव में शत्रु 'चतुर्मास' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को आयोग्निति में बड़े संकट लाते हैं तथा धर्म की हानि होती है।

ऐसा व्यक्ति हर समय चिन्ताओं से विराह रहता है। कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करता है। गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के बल पर भाग्य को बनाने की चेष्टा करते रहने पर भी सफलता नहीं मिल पाती।

'बृशिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

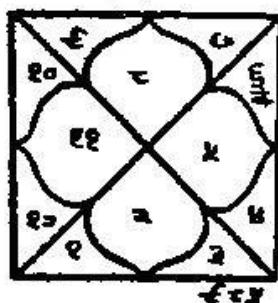
वृशिक लग्न : दशमभाव : केतु



दसवें भाव में शत्रु 'मूर्य' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को अपने पिता द्वारा कष्ट प्राप्त होता है। राज्य के लेव में मान-भंग होता है तथा व्यवसाय-क्षेत्र में घोर संकट लाते रहते हैं। यद्यपि वह धैर्य, हिम्मत एवं गुप्त युक्तियों के आश्रय से अन्ततः धीर्घी-महूत राहत भी प्राप्त कर सकता है, परन्तु उसका जीवन सुख से नहीं दीतता।

‘बृहिचक’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलावेश

वृश्चिक लग्न, एकादशभाव : केतु

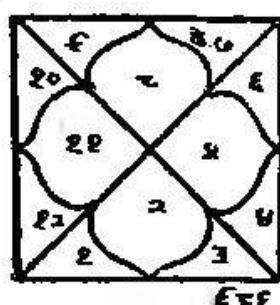


स्थारहृदे भाव में मिल ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। कभी-कभी आकस्मिक धन का साभ होता है तो कभी-कभी संकट भी आते हैं।

ऐसा अ्यक्ति चालाक, स्वार्थी, धूतं तथा मतलबी होता है। उसे अपनी आमदनी से कभी सन्तोष नहीं होता।

‘बृहिचक’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलावेश

वृश्चिक लग्न : द्वादशभाव : केतु



बारहृदे भाव में मिल ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी मिलता है।

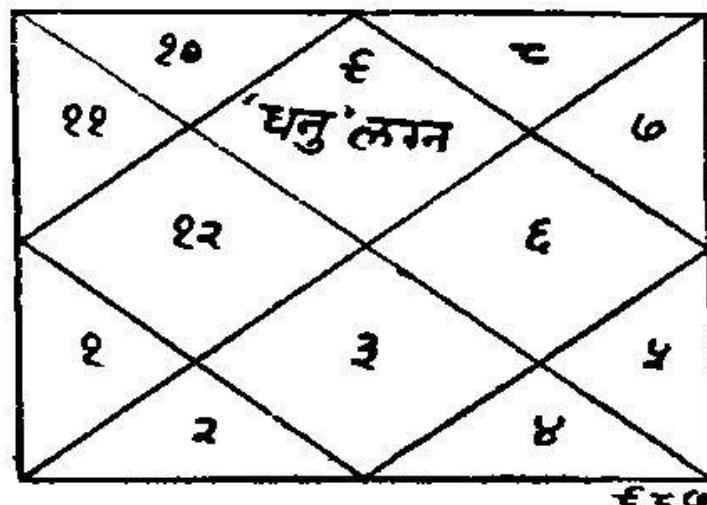
वह गुप्त भुक्ति, चानुयं तथा परिव्रम के बल पर अपने खर्च को बलाता है, परन्तु कभी-कभी उसे और संकटों का सामना भी करना पड़ता है। फिर भी वह अपने धैर्य की कभी नहीं छोड़ता।

बोझी पूँछी से बनसपन्थ इण्डस्ट्रीज लाइंसर लाइंसों में छोलिए।

लेटेस्ट स्पाल स्केल इण्डस्ट्रीज (बी० के० अप्रवाल)

नामबाब की पूँछी से बाठम्बदस बुना लाभ करने वाले लगभग 250 से अधिक लघु-उद्योग अथवा चरेन्ट उद्योगों के हर पहसु यानी लागत, भक्षीनरी, कच्चा बाल (रो बैटीरियल), स्थान, कारीगर, मैन्युफैक्चरिंग, विक्री, विदेशों की नियात, सरकार से उपलब्ध सहायता तथा भक्षीनरी मिलने के परे आदि पर विस्तार पूर्वक प्रकाश बासने वाली पुस्तक बंगालए और कोई-सा छन्दा शुक्र करके लक्षणिति बन जाइए। मू० ३६।- (छत्तीस रुपये)

‘धनु’ लग्न



[‘धनु’ लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भागों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पूरक-पूरक वर्णन]

‘धनु’ लग्न का फलादेश

‘धनु’ लग्न में लग्न लेने वाला जातक पिंगलवर्ण, बड़े दीतों वाला शोड़े-जैसी जीवों वाला तथा सुन्दर स्वरूप वाला होता है। वह अत्यन्त कार्य-कुशल, प्रतिभासाली, बुद्धिमान, सतोगुणी, श्वेष स्वभाव वाला, सत्य-प्रतिश्व, पराक्रमी, तथा ऐश्वर्यवान् होता है।

ऐसा व्यक्ति याता-प्रेमी, व्यवसायी, ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, प्रेम के बह में रहने वाला, मिलों के काम आने वाला, अनेक कलाओं का जानकार अथवा कवि तथा लेखक होता है। उसे शोड़े पालने का शौक भी होता है।

‘धनु’ लग्न में जन्म लेने वाला जातक बात्यावस्था में अधिक सुख भोगता है, अध्यमावस्था में साधान्य जीवन अतीत करता है तथा अन्तिमावस्था में ब्रह्म-शान्त्य पूर्ण होता है। २२ अथवा २३ वर्ष की आयु में उसे धन का दिवेष साम होता है।

‘धनु’ लग्न वालों के अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८८ से १०६५ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।



‘धनु’ लग्न में ‘सूर्य’ का फलादेश

१. ‘धनु’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘सूर्य’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८८ से ६६६ के बीच देखना चाहिए।

२. ‘धनु’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘सूर्य’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस ग्रहीने में ‘सूर्य’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर ही तो संख्या ६८८
- (ख) ‘वृष’ राशि पर ही तो संख्या ६८६
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर ही तो संख्या ६६०
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर ही तो संख्या ६६१
- (च) ‘सिंह’ राशि पर ही तो संख्या ६६२
- (झ) ‘कन्या’ राशि पर ही तो संख्या ६६३
- (ঠ) ‘তুলা’ राशि पर ही तो संख्यা ৬৬৪
- (ঞ) ‘বৃষ্ণি’ রাশি পর হো তো সংখ্যা ৬৬৫
- (ঝ) ‘ধনু’ রাশি পর হী তো সংখ্যা ৬৬৬
- (ঞ) ‘মকর’ রাশি পর হী তো সংখ্যা ৬৬৭
- (ঠ) ‘কুম্ভ’ রাশি পর হো তো সংখ্যা ৬৬৮
- (ঞ) ‘মীন’ রাশি পর হী তো সংখ্যা ৬৬৯

‘धनु’ लग्न में ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

१. ‘धनु’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘चन्द्रमा’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १००० से १०११ के बीच देखना चाहिए।

२. ‘धनु’ लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

‘चन्द्रमा’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन ‘चन्द्रमा’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या १०००
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या १००१
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या १००२
- (द) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या १००३
- (इ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या १००४
- (ख) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या १००५
- (ग) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या १००६
- (द) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या १००७
- (इ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या १००८
- (ख) ‘अकर’ राशि पर हो तो संख्या १००९
- (ग) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या १०१०
- (द) ‘धीन’ राशि पर हो तो संख्या १०११

‘धनु’ लग्न में ‘मंगल’ का फलादेश

१. ‘धनु’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘मंगल’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१२ से १०२३ के बीच देखना चाहिए।

२. ‘धनु’ लग्नवालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘मंगल’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में ‘मंगल’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या १०१२
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या १०१३
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या १०१४
- (द) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या १०१५
- (इ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या १०१६
- (ख) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या १०१७
- (ग) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या १०१८
- (द) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या १०१९
- (इ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या १०२०
- (ख) ‘अकर’ राशि पर हो तो संख्या १०२१
- (ग) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या १०२२
- (द) ‘धीन’ राशि पर हो तो संख्या १०२३

‘धनु’ सम्बन्ध में ‘कुष’ का फलादेश

१. ‘धनु’ सम्बन्धी वालों को अपनी वन्मकुष्ठली के विभिन्न भावों में स्थित ‘कुष’ का स्वायी फलादेश उदाहरण-कुष्ठली संख्या १०२४ से १०३५ के बीच देखना चाहिए।

२. ‘धनु’ सम्बन्धी वालों को गोचर-कुष्ठली के विभिन्न भावों में स्थित ‘कुष’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुष्ठलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्षीने में ‘कुष’—

- (क) ‘विष’ राशि पर हो तो संख्या १०२४
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या १०२५
- (ग) ‘मिष्युन’ राशि पर हो तो संख्या १०२६
- (घ) ‘कक्ष’ राशि पर हो तो संख्या १०२७
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या १०२८
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या १०२९
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या १०३०
- (ज) ‘चूस्तिक’ राशि पर हो तो संख्या १०३१
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या १०३२
- (झ) ‘अक्तर’ राशि पर हो तो संख्या १०३३
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या १०३४
- (ठ) ‘धोन’ राशि पर हो तो संख्या १०३५

‘धनु’ सम्बन्ध में ‘गुरु’ का फलादेश

१. ‘धनु’ सम्बन्धी वालों को अपनी वन्मकुष्ठली के विभिन्न भावों में स्थित ‘गुरु’ का स्वायी फलादेश उदाहरण-कुष्ठली संख्या १०३६ से १०४७ के बीच देखना चाहिए।

२. ‘धनु’ सम्बन्धी वालों को गोचर-कुष्ठली के विभिन्न भावों में स्थित ‘गुरु’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुष्ठलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में ‘गुरु’—

- (क) ‘विष’ राशि पर हो तो संख्या १०३६
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या १०३७
- (ग) ‘मिष्युन’ राशि पर हो तो संख्या १०३८
- (घ) ‘कक्ष’ राशि पर हो तो संख्या १०३९
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या १०४०

- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०४१
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०४२
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०४३
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०४४
- (झ) 'अक्षर' राशि पर हो तो संख्या १०४५
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०४६
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०४७

'धनु' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१. 'धनु' लग्न वालों को अपनी अन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०४८ से १०५८ के बीच देखना चाहिए।

'धनु' लग्नवालों को गोपर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०४८
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १०४९
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०५०
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०५१
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०५२
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०५३
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०५४
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०५५
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०५६
- (झ) 'अक्षर' राशि पर हो तो संख्या १०५७
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०५८
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०५९

'धनु' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'धनु' लग्नवालों को अपनी अन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२४ से ६३५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्न वालों को गोपर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'धनि'—

- (क) 'भेष' राशि पर हो तो संख्या १०६०
- (ख) 'धूष' राशि पर हो तो संख्या १०६१
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०६२
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०६३
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०६४
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०६५
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०६६
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०६७
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०६८
- (झ) 'भक्त' राशि पर हो तो संख्या १०६९
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०७०
- (ठ) 'धीन' राशि पर हो तो संख्या १०७१

'धनु' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१. 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०७२ से १०८३ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

- (क) 'भेष' राशि पर हो तो संख्या १०७२
- (ख) 'धूष' राशि पर हो तो संख्या १०७३
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०७४
- (घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०७५
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०७६
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०७७
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०७८
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०७९
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०८०
- (झ) 'भक्त' राशि पर हो तो संख्या १०८१
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०८२
- (ठ) 'धीन' राशि पर हो तो संख्या १०८३

‘धनु’ लगन में ‘केतु’ का फलादेश

१. ‘धनु’ लगन वालों को अपनी वर्षभूषणी के विभिन्न भावों में स्थित ‘केतु’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०८४ से १०८५ के बीच देखना चाहिए।

२. ‘धनु’ लगन वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित, ‘केतु’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

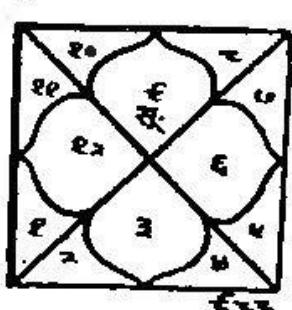
जिस वर्ष में ‘केतु’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या १०८४
- (ख) ‘वृष’ राशि पर हो तो संख्या १०८५
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या १०८६
- (द) ‘कक्ष’ राशि पर हो तो संख्या १०८७
- (ঃ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या १०८৮
- (চ) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या १०८৯
- (ঃ) ‘তুলা’ राशि पर हो तो संख्यা ১০৯০
- (জ) ‘বৃশিচক’ राशि पर हो तो संख्यা ১০৯১
- (ঃ) ‘ধনু’ राशि पर हो तो संख्या ১০৯২
- (ঃ) ‘মকর’ राशि पर हो तो संख्या ১০৯৩
- (ঃ) ‘কুণ্ড’ राशि पर हो तो संख्या ১০৯৪
- (ঃ) ‘মীন’ राशि पर हो तो संख्या ১০৯৫

‘धनु’ लगन में सूर्य

‘धनु’ लगन को कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

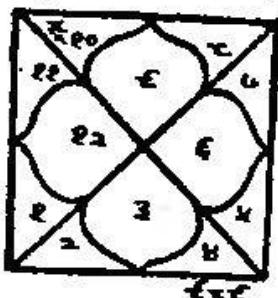
धनु लगन : प्रथमभाव : सूर्य



केन्द्र तथा शरीर-स्थान में अपने मिल ‘गुरु’ को राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक को उत्तम शक्तिशाली शरीर को प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति आर्यशाली, धार्मिक रुचि वाला तथा आस्तिक होता है। सातवीं दृष्टि से बुध की राशि में सप्तमभाव को देखने से जातक को सुन्दर स्त्री का सहयोग वैर गृहस्थ-सुख प्राप्त होता है। साथ ही ईनिक व्यवसाय में लाभ भी होता है।

'धनु' लग्न को कुण्डली में 'हृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : हृतीयभाव : सूर्य

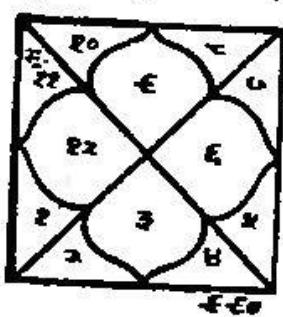


दूसरे भाव में शनु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ धन-संप्रदाय में ध्वेष्ट सफलता मिलती है तथा कुछ मत्तेदों के साथ कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थ-सिद्धि के लिए धर्म का पालन करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से जातक को आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्व का लाभ भी होता है। ऐसे व्यक्ति की आग्योन्नति भी अच्छी होती है।

'धनु' लग्न को कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

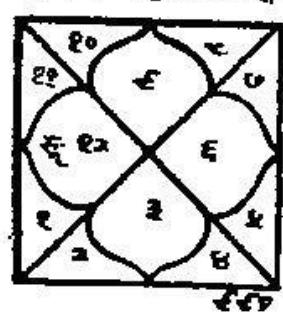


तीसरे भाव में शनु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की भाई-बहनों का सुख कुछ वसंतोष के साथ मिलता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से पुरुषार्थ द्वारा भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है, साथ हो धर्म का भी पालन होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती तथा यशस्वी होता है।

'धनु' लग्न को कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

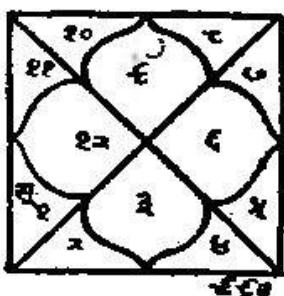


चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को भाता का सुख अधिक मिलता है तथा भूमि, भवन का सुख भी प्राप्त होता है। धर्म तथा भाग्य की उन्नति भी होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दहमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सम्मान, लाभ तथा सफलता के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : पंचमभाव : सूर्य

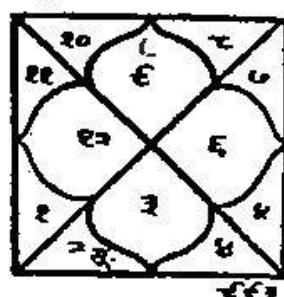


पाँचवें भाव में मित्र 'मंगल' को राशि पर स्थित उच्च के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा विद्वान्, धर्मात्मा, आनन्द तथा बुद्धिमान् होता है।

सातवीं नौच-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से अमननी के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं; वाणी एवं सुप्रखरता तथा शिष्टाचार एवं सज्जनता में कमी होने के कारण आर्थिक उन्नति अधिक नहीं होती।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

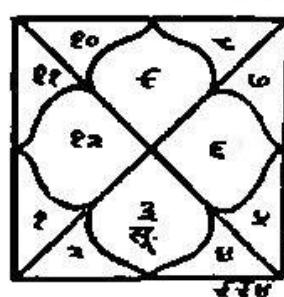


छठे भाव में शत्रु 'कुकु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा अग्ने के मामलों से लाभ उठाता है। धर्म-पालन में विशेष हरिं नहीं होती।

बारहवें भाव में मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है, जिसके कारण खर्च चलता है तथा भाव्य को बृद्धि भी होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : सप्तमभाव : सूर्य



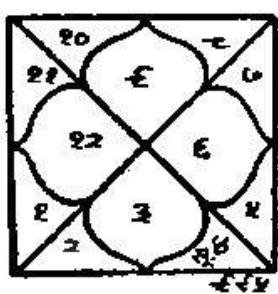
सातवें भाव में मित्र 'कुष' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से सुख मिलता है तथा ईनिक व्यवसाय में सफलताएँ मिलती रहती हैं। वह धार्यसाली तथा ईश्वरभक्त भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रयमभाव को देखने से अेष्ट शारीरिक सुख एवं प्रमावशाली व्यक्तित्व की शक्ति होती है।

ऐसे व्यक्ति की पत्नी कुछ सेव स्वभाव की होती है।

‘धन’ स्वरूप की काष्ठली के ‘वाष्टव्याव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

ਬਨੂ ਲੁਨ : ਅ਷ਟਮ ਭਾਵ : ਸੂਰੀ

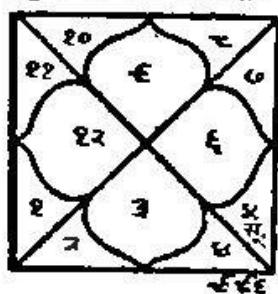


आठवें भाव में मित्र 'चंद्रभा' की राजि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आयु में बृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है, परन्तु भाग्योन्नति में अनेक लकावटें आती हैं।

सातवीं शताब्दी से द्वितीयभाव की देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख के क्षेत्र में भी कुछ कमी रहती है।

‘धनु’ लम्बन की कष्टकली के ‘अवमभाव’ स्थित ‘सुर्य’ का फलादेश

द्यन् लग्नः नवमभावः सुर्य



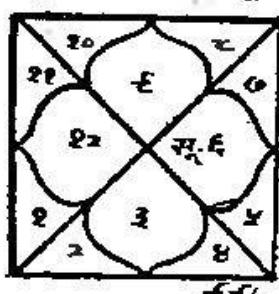
नवे भाव में स्वराशिन्स्थित 'भूर्ये' के प्रभाव से जातक के आय तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। वह बड़ा यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है।

सातवी शताब्दी से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में कुछ कमी आती है तथा आई-वहिनों के साथ कुछ अतिथेत देना चाहता है।

ऐसा व्यक्ति आम्य पर आश्रित रहने वाला होता है।

‘धन’ स्वरूप की कम्प्लेटी के ‘विवरणात्’ स्थित ‘सर्वे’ एवं विवरणेण

धन लर्न : दशम भाव : सर्वं

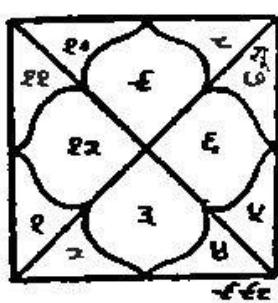


दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की पिता द्वारा अस्थायिक सहयोग मिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ प्राप्त होती हैं। ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यवान् तथा आर्थिक विचारों का होता है।

सातवीं भित्ति-दृष्टि से चतुर्थमाव की देखने से जातक की माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख मिलता है और यश तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त हीती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : एकादशभाव : सूर्य



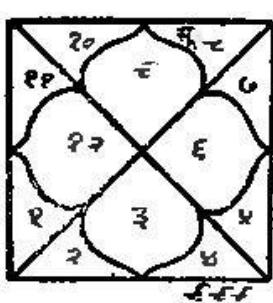
बारहवें भाव में शनु 'गुरु' की राशि पर स्थित नीचे के सूर्य के प्रभाव से जातक की आमदनी में कुछ कठिनाइयों के साथ अच्छी वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र तथा उच्च दृष्टि से पंचमभाव की देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति गुणी, विद्वान्, सज्जन, मधुरभाषी तथा सुखी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : द्वादशभाव : सूर्य



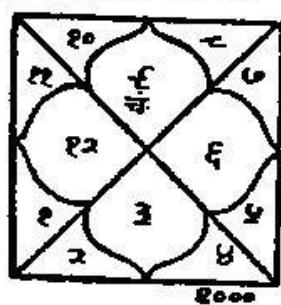
बारहवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक का खर्च विधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ विलम्ब के साथ सफलता मिलती है और लाभ होता है। धर्म-वालन में रुचि विधिक नहीं होती, परन्तु धर्म तथा परोपकार में ही विधिक खर्च होता है।

सातवीं शनु-दृष्टि से बल्लभाव को देखने से शनुओं पर प्रभाव देना रहता है तथा शनु-पक्ष, अग्नि, मुकदमे आदि से लाभ एवं विजय की प्राप्ति भी होती है।

'धनु' लग्न में 'चन्द्रमा'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

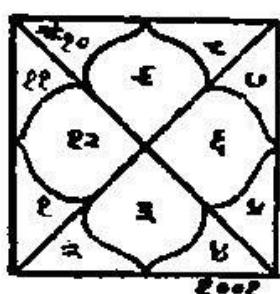


पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातन्त्र का लाभ होता है। शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से कुछ कठिनाइयों के बाद स्त्री का सुख मिलता है तथा दैनिक आमदनी में भी जातक की कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

‘धनु’ सम को कुषली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

धनुलग्नः द्वितीयभावः चंद्र

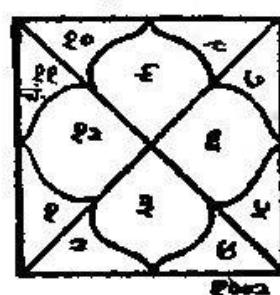


दूसरे भाव में शत्रु ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक घन का संचय नहीं कर पाता। तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी बनी रहती है, परन्तु रहन-सहन कमीरी दंग का होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अप्तभाव को देखने से आयु तथा पुरातस्व की वृद्धि होती है। घन में कुछ बेचनी भी रहती है।

‘धनु’ सम को कुषली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

धनुलग्नः तृतीयभावः चंद्र

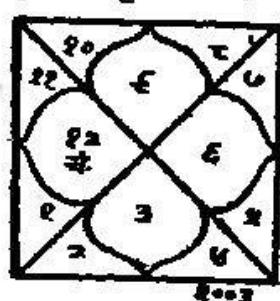


तीसरे भाव में शत्रु ‘शनि’ को राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को आई-वहिन के सुख में कमी प्राप्त होती है तथा पराक्रम की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। आयु तथा पुरातस्व का लाभ होता है।

सातवीं भिन्न-दृष्टि से नवमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ आय एवं ज्यंत्र की वृद्धि होती है। सामान्यतः जातक भाग्यशाली तथा संधर्म-पूर्ण जीवन जीने वाला होता है।

‘धनु’ सम को कुषली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

धनुलग्नः चतुर्थभावः चंद्र

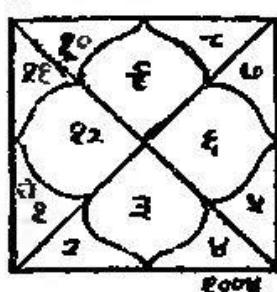


चौथे भाव में मिल ‘शुरु’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को घाता के सुख में कुछ कमी रहती है। उसे मातृशूदि से दूर आकर भी रहना पड़ता है। आयु तथा पुरातस्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है।

सातवीं भिन्न-दृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय से ज्येत्र में कुछ कठिनाइयों के साम सफलता मिलती है।

‘धनु’ लाल की कुण्डली के ‘पञ्चमभाव’ स्थित ‘चंद्रमा’ का फलादेश

धनु लग्न : पञ्चमभाव : चंद्र

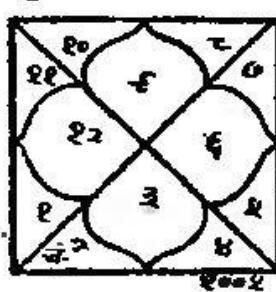


पौचर्चे भाव में ‘मंगल’ की राशि पर स्थित अष्टमेश ‘चंद्रमा’ के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमियों का सामना करना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्व का लाल होता है, किन्तु अस्तित्व में चिन्ताएं भी रहती हैं।

सातवीं शत्रु-दूषि से एकादश भाव को देखने से अमरदनी के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयों के बाद सामान्य सफलता मिलती है।

‘धनु’ लाल की कुण्डली के ‘षष्ठिभाव’ स्थित ‘चंद्रमा’ का फलादेश

धनु लग्न : षष्ठिभाव : चंद्र



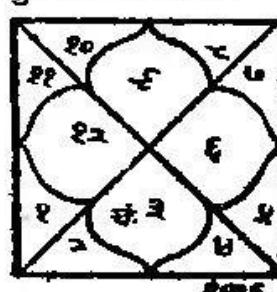
छठे भाव में शत्रु ‘कुक्ष’ की राशि पर स्थित उच्च के ‘चंद्रमा’ के प्रभाव से जातक का शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। आयु तथा पुरातत्व का लाल भी होता है।

सातवीं नीच-दूषि से द्वादश भाव को देखने से उनकी परेशानी रहती है, तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध भी अच्छे सिद्ध नहीं होते।

ऐसे अंकित की शत्रु-पक्ष के कारण कुछ शान्तिक परेशानियां भी रहती हैं।

‘धनु’ सम्बन्ध की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘चंद्रमा’ का फलादेश

धनु लग्न : सप्तमभाव : चंद्र

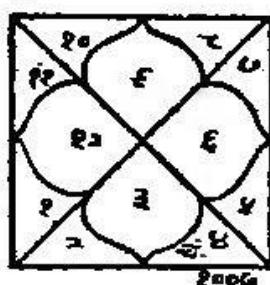


सातवीं भाव में मित्र ‘बृंध’ की राशि पर स्थित अष्टमेश ‘चंद्रमा’ के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कठिनाइयां आती हैं। आयु तथा पुरातत्व का लाल होता है तथा दैनिक जीवन भी कुछ आनन्दमय बना रहता है।

सातवीं मित्र-दूषि से प्रधम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में बुद्धि होती है, परन्तु स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। योड़े परिश्रम से ही उक जाया करता है।

‘धनु’ लग्न की कृष्णली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘चंद्रमा’ का फलादेश

धनु लग्न : अष्टमभाव : चंद्र

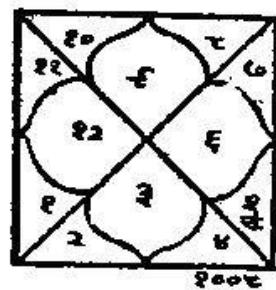


आठवें भाव में स्वराशि में स्थित ‘चंद्रमा’ के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का योग्य लाभ होता है। दैनिक जीवन में ठाठ-बाट का रहता है।

सातवीं शत्रु-दूषि से तृतीय भाव की देखने से जन के बारे में जिन्हाएं बनी रहती हैं तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी रहती है।

‘धनु’ लग्न की कृष्णली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘चंद्रमा’ का फलादेश

धनु लग्न : नवमभाव : चंद्र

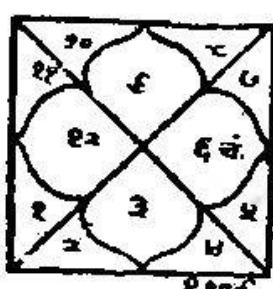


वेद भाव में मित्र ‘सूर्य’ की राशि पर स्थित ‘चंद्रमा’ के प्रभाव से जातक की आयोनिति में कुछ परेशानियां आती हैं तथा यश भी कम मित्र पाता है। जर्म का यदायिति पालन नहीं होता। आयु तथा पुरातत्त्व में वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रु-दूषि से तृतीय भाव को देखने से आई-बहिनों से सत्तेव रहता है तथा पराक्रम में भी यशोदित वृद्धि नहीं हो पाती। जीवन सामान्य ढंग से अस्तीत होता है।

‘धनु’ लग्न की कृष्णली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘चंद्रमा’ का फलादेश

धनु लग्न : दशमभाव : चंद्र

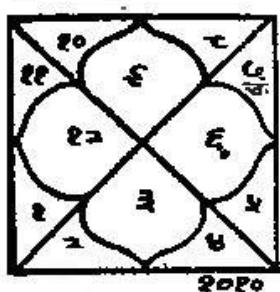


हसवें भाव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘चंद्रमा’ के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा अवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां आती हैं, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है जिसके कारण जीवन ठाठ से बीतता है।

सातवीं मित्र-दूषि से चतुर्थ भाव की देखने से भाता, शूर्पि एवं अवन का सुख कुछ कमी एवं परेशानी के साथ मिलता है।

‘घनु’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

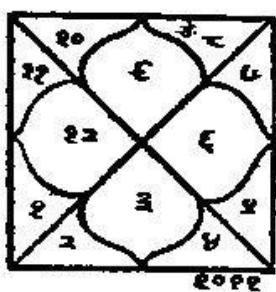
घनु लग्न : एकादशभाव : चंद्र



तथा भृत्यक में चिन्ताएँ धिरो रहती हैं।

‘घनु’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

घनु लग्न : द्वादशभाव : चंद्र



भारतवें भाव में घनु ‘चुक’ की राशि पर स्थित ‘चंद्रमा’ के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ लाभ होता है। आयु तथा पुरातत्त्व की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा दैनिक जीवन आनन्दपूर्ण बना रहता है।

सातवीं मित्र-दूषित से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं संतान के खेत्र में कुछ कमी रहती है।

‘घनु’ लग्न की कुण्डली के ‘ध्रुवभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

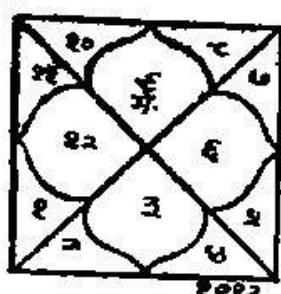
भारतवें भाव में मित्र ‘भंगल’ की राशि पर स्थित नीन के ‘चंद्रमा’ के प्रभाव के जातक को खंडे के बारे में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कष्ट मिलता है। आयु तथा पुरातत्त्व की श्री हानि होती है। दैनिक जीवन अशान्तिपूर्ण रहता है।

सातवीं उच्चदूषित से षष्ठ भाव को देखने से घनु-पक्ष पर प्रभाव स्वापित होता है तथा जगड़-मुकदमों में सदैव विजय प्राप्त होती है।

‘घनु’ लग्न में ‘भंगल’

‘घनु’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘भंगल’ का फलादेश

घनु लग्न : प्रथमभाव : भंगल



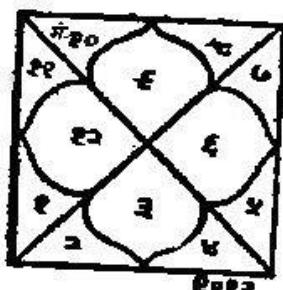
पहले भाव में मित्र ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘भंगल’ के प्रभाव से जातक को शारीरिक शक्ति अच्छी रहती है तथा परिश्रमो श्री होता है। विद्या, सन्तान तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

चौथी मित्र-दूषित से चतुर्थभाव की देखने से माता, सूमि, भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। सातवीं मित्र-दूषित से सप्तमभाव की देखने से कुछ कमी के साथ स्त्री तथा व्यवसाय के खेत्र में लाभ होता है। आठवीं नीचदूषित से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का खेत्र कमज़ोर रहता है।

भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का खेत्र कमज़ोर रहता है।

‘धनु’ लग्न की कृष्णसी के ‘हितोयनाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

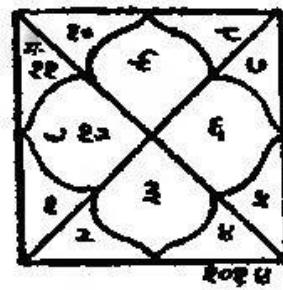
धनु लग्नः हितोयनावः मंगल



आठवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व के अंत में कमी रहती है। औड़ी-वहूत सफलता मिलती है तथा धर्म का पालन भी कम ही हो पाता है।

‘धनु’ लग्न की कृष्णसी के ‘हुतोयनाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

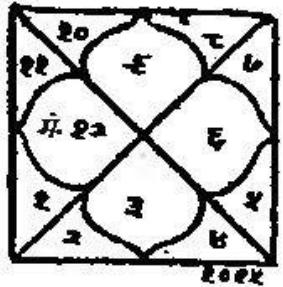
धनु लग्नः हुतोयनावः मंगल



दृष्टि से दशम भाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के अंत में न्यूनादिक सफलता मिलती रहती है। जीवन में उतार-घड़ाव आते रहते हैं।

‘धनु’ लग्न की कृष्णसी के ‘बहुर्घंगाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

धनु लग्नः चतुर्घंगावः मंगल



साथ सफलता मिलती है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से बुद्धिमेष के आमदनी बढ़ती है तथा बाहरी सम्बन्धों से साथ होता है।

दूसरे भाव में शत्रु ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक धन का सामान्य संचय करता है तथा उसे कौटुम्बिक सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव की देखने से विद्या तथा सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व के अंत में कमी रहती है।

सीसरे भाव में शत्रु ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक के पराक्रम में बृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष भी कमज़ोर रहता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से बल भाव की देखने से शत्रु पक्ष पर विजय मिलती है।

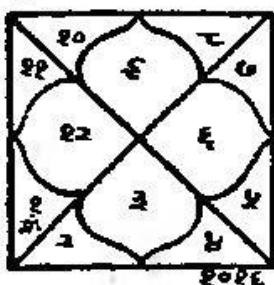
सातवीं मित्र-दृष्टि के नवम भाव की देखने से आयु तथा धर्म की उन्नति होती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के अंत में न्यूनादिक सफलता मिलती रहती है।

चौथे भाव में मित्र ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से भाता, शूभि तथा भवन के सुख की हानि होती है। सन्तान तथा विद्या का पक्ष भी कमज़ोर रहता है। चौथी मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के अंत में कुछ कठिनाइयों से काम चलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के अंत में कुछ कमी के अमदनी बढ़ती है तथा बाहरी सम्बन्धों से साथ होता है।

‘छत्र’ संघर्ष की योग्यताएँ के ‘पंचमनाव’ स्थित ‘झंगल’ का फालांडोगा

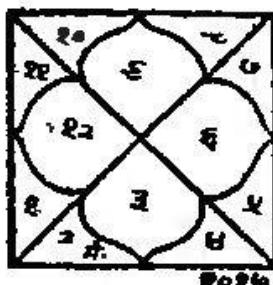
प्रति लग्नः पञ्चमभावः मंगल



द्वादश भाव को देखने से खन्ने अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से विशेष लाभ भी होता है।

‘बून’ लगन की काष्ठती के ‘बछमाव’ स्थित ‘यंगस’ का फलातेर

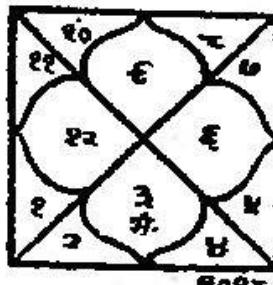
सन्तत्यः पञ्चभावः मंगल



में कठिनाइयाँ आती हैं। आठवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाग को देखने से शारीरिक सीन्ट्रल तथा स्वास्थ्य में कमी तथा मस्तिष्क में परेशानी रहती है।

‘धनु’ लगन की कण्ठस्त्री के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘धेगल’ का फसावेश

ब्रह्मलङ्घनः सप्तममात्रः मंगल



पौरी वेदों भाव में स्वराशि-स्थित व्यथेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के भाव विद्या एवं संतान के क्षेत्र में कुछ सफलता मिलती है। चौथी नीच-दृष्टि से मित्र राशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व में कमी रहती है तथा उदर-विकार बना रहता है।

सातवीं शताब्दी से एकादश शताब्दी तक देखने से बुद्धियोग द्वारा आमदनी के अंतर में कुछ सफलता मिलती है। सातवीं दशिं से स्वराशि में

छठे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। परन्तु सत्तान तथा विद्या के अन्त में कभी रहती है। चौथो मित्र-दूषित से नवम भाव की वेदने से कुछ परेशानियों के लाय भाव एवं षष्ठी की विद्य होती है।

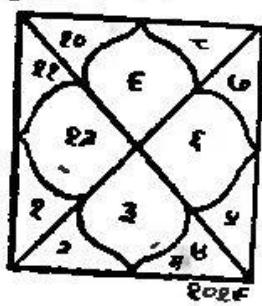
सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव की देखने से खुँज अधिक रहता है तथा बाहरी संबन्धों में भिन्न-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से ज्ञातीरिक था अस्तित्व में परेशानी रहती है।

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'यंगल' के प्रभाव से जातक की स्त्री-प्रस्त्र से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय में हानि होती है। बाहरी स्थानों से कुछ अच्छा संवंध रहता है, जिसके बल पर खँचै चलता रहता है। वौधी मिथ्य-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव की देखते से शरीर में कुछ कमजूरी रहती है। आठवीं उच्च-से सब तथा कठोर का अच्छा सब प्राप्त होता है।

'धनु' लग्न की कृष्णलौ के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

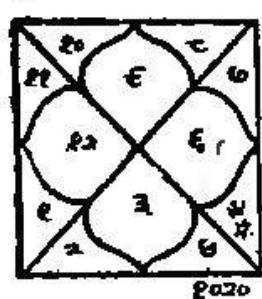
धनु लग्नः अष्टमभावः मंगल



दूष्ट से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम से भवन-कृत्तम का सामान्य सुख मिलता है। आठवीं शनि-दूष्ट से विरोध रहता है।

'धनु' लग्न की कृष्णलौ के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

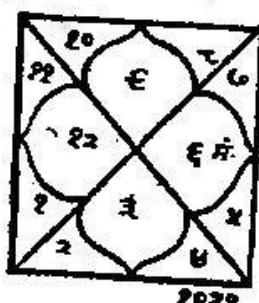
धनु लग्नः नवमभावः मंगल



कमी आती है। आठवीं मिन-दूष्ट से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि तथा अवन का सुख कृत कमी के भाव मिलता है।

'धनु' लग्न की कृष्णलौ के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्नः दशमभावः मंगल



की देखने से विद्या, बृद्धि का श्रेष्ठ साम्राज्य होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष फिर भी कमज़ोर रहता है।

आठवीं भाव में मिन 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीच के 'मंगल' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्व शक्ति में कमी आती है। ऐट में विकार तथा भस्तिक्ष में जिन्ताएँ रहती हैं। संतान एक से कष्ट होता है तथा विद्या-पक्ष में कमज़ोरी रहती है। चौथी शनि-दूष्ट से एकादश भाव को देखने से कठिन परिश्रम द्वारा आमदनी में बृद्धि होती है। सातवीं द्वन्द्व-दूष्ट से द्वितीय भाव को देखने से धन-कृत्तम का सामान्य सुख मिलता है। आठवीं शनि-दूष्ट से पराक्रम की बृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से विरोध रहता है।

नवे भाव में मिन 'शूर्य' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में भी कृत कमी के साथ सफलता मिलती है। चौथी दूष्ट से स्वराशि में द्वादशभाव की देखने से खर्च विकिरण होता है तथा वाहरी संबन्धों से खर्च चलता है।

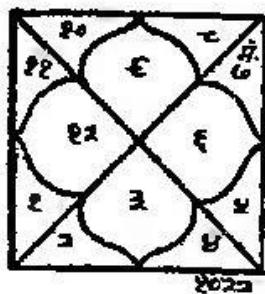
सातवीं शनि-दूष्ट से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से विरोध रहता है तथा पराक्रम में

'दसवीं मिन-दूष्ट' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की राज्य के क्षेत्र में बृद्धियोग से सफलता मिलती है तथा पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हनि रहती है। चौथी मिन-दूष्ट से प्रथम भाव को देखने के जारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य भ्रंग कमी रहती है।

सातवीं मिन-दूष्ट से चतुर्थभाव की देखने से माता, भूमि एवं अवन का सुख कृत कमी के साथ मिलता है। आठवीं दूष्ट से स्वराशि में पंचम भाव

‘बन’ लग्न की कुष्ठसी के ‘एकाइश भाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

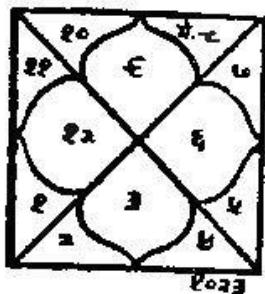
अनुलग्नः एकादश भावः मंगल



आठवीं शताब्दी से पहले भाव की देखने से शताब्दी पर प्रभाव रहता है तथा अगलों में विजय एवं लाभ की श्रापित होती है।

‘धन’ सरम की कलासी के ‘द्वादशास्त्र’ स्थित ‘धीरज’ का फलादेश

धनुलर्णः द्वौदशभावः मंगल

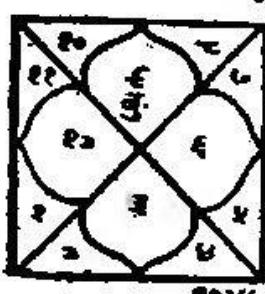


हाराहृषी यात्रा नमूद तरसन यात्रा रहे
से स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा अवसाय में कठिनाई आती रहती है।

‘धन’ लालन में ‘दाता’

‘अन’ लग की जगही के ‘अपलाइ’ हिल ‘अन’ का लगावेद

धनु लस्नः प्रथमधावः चतु

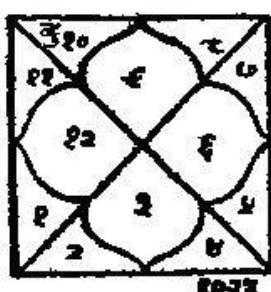


पहले भाव में मित्र 'शुरू' की राशि पर स्थित 'शुद्ध' के प्रभाव से जातक को ऐस्ट्रोलोजिकल तथा विवेकासनित प्राप्त होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

सातवीं शिख-दृष्टि से स्वरात्मि में स्वप्नम भाव की देखने से सुन्दर पल्ली शिखती है तथा संसुराज के योग्य घन भी शाम्भव होता है। दैनिक व्रामकनी भी बहुत अच्छी रहती है।

‘घनु’ सम्बन्धी के ‘दृष्टीयभाव’ स्थित ‘बुद्ध’ का फलादेश

घनु सम्बन्धी : द्वितीयभाव : बुध

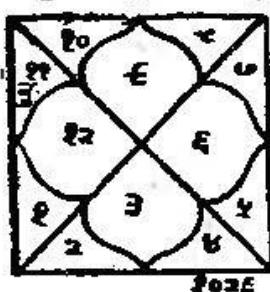


दूसरे भाव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुद्ध' के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब का विशेष सुख मिलता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय से भी लाभ होता है परन्तु स्त्री-सुख में कमी रहती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से अष्टम भाव की देखने से आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण एवं शानदार बना रहता है।

‘घनु’ सम्बन्धी के ‘दृष्टीयभाव’ स्थित ‘बुद्ध’ का फलादेश

घनु सम्बन्धी : तृतीयभाव : बुध

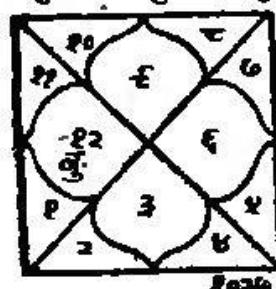


तीसरे भाव में मिल 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुद्ध' के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा शाइंचहिनों का योग्य सुख मिलता है। अपनी विवेक-बुद्धि से उसे प्रत्येक क्रेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं मिल-दृष्टि से नवम भाव को देखने से आगय तथा धर्म की वृद्धि होती रहती है।

‘घनु’ सम्बन्धी के ‘क्षुद्रभाव’ स्थित ‘बुद्ध’ का फलादेश

घनु सम्बन्धी : चतुर्थभाव : सुख

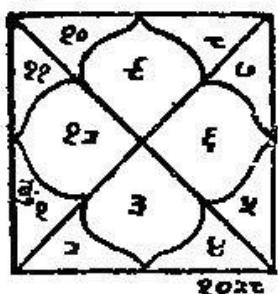


चौथे भाव में मिल 'गुरु' की राशि पर स्थित नीचे के 'बुद्ध' के प्रभाव से जातक की आत्मा, शूष्मि एवं अवन के सुख में कमी प्राप्त होती है। स्त्री तथा गृहस्थी के सुख में भी कठिनाइयां आती हैं।

सातवीं उच्च दृष्टि से स्वरक्षित में दशम भाव की देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्रेत्र में शक्ति एवं सफलता प्राप्त होती है।

‘धनु’ राशि की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

धनु राशि : पंचमभाव : बुध

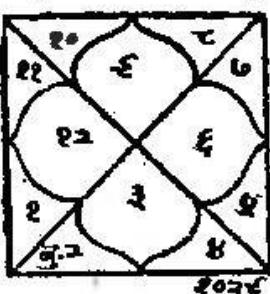


पांचवें भाव में मित्र ‘बंगल’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का अेष्ट लाभ होता है। स्त्री, शुहरी, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी उल्लिखित होती है।

सातवीं मित्र-दूषि द्वादशभाव की देखने से आमदनी खूब होती है। ऐसा अविकृत वार्तालाप करने में बड़ा चतुर, बुद्धिमान तथा यशस्वी भी होता है।

‘धनु’ राशि की कुण्डली के ‘षष्ठमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

धनु राशि : षष्ठमभाव : बुध

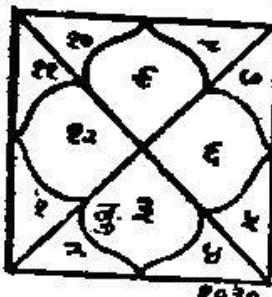


छठे भाव में तित्र ‘मुकु’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक की शनु-पक्ष में सफलता मिलती है, परन्तु पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। नाना के पक्ष से लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दूषि द्वादशभाव की देखने से खर्च अधिक रहता है तथा उसे बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

‘धनु’ राशि की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

धनु राशि : सप्तमभाव : बुध

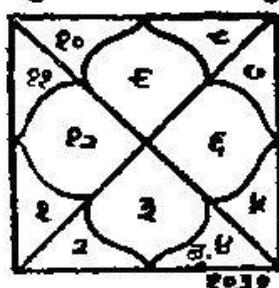


सातवें भाव में स्वराशि ‘स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक की सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री-पक्ष से लाभ भी होता है। दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। राज्य एवं विद्या से भी सहयोग तथा सम्भान मिलता है।

सातवीं मित्र-दूषि द्वादशभाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में बृद्धि होती है।

‘घनु’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘सूख’ का फलादेश

घनुलग्न : अष्टमभाव : बुध

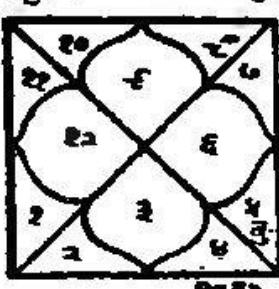


आठवें लाभ में ज्ञातु ‘चन्द्रमा’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व की अवित्त प्राप्त होती है। परंतु पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कमी-कमी बड़े चाटे तथा कठिनाइयों का सामना करना होता है। सामान्य रहन-सहन शानदार रहता है।

सातवीं मित्र-दूषि॑ से द्वितीय भाव को देखने के घन तथा कुटुम्ब की बृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

‘घनु’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘सूख’ का फलादेश

घनुलग्न : नवमभाव : सूख

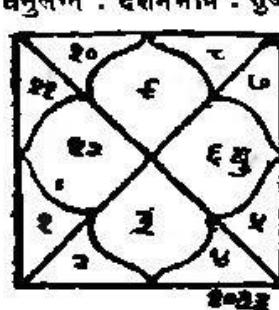


नवे भाव में गिन्न ‘सूर्य’ की राशि पर स्थित ‘सूख’ के प्रभाव से जातक अत्यधिक भाग्यवान् तथा व्यर्थता होता है। पिता, राज्य, व्यवसाय तथा स्वीयज्ञ में भी उसे अस्त्यन्त सफलता मिलती है। अपनी विवेक-बुद्धि से वह यत्नेष्ट घन तथा सम्मान अर्जित करता है।

सातवीं मित्र-दूषि॑ से द्वितीय भाव की देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की भी अत्यधिक बृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बहुत सुखी जीवन विताता है।

‘घनु’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘सूख’ का फलादेश

घनुलग्न : दशमभाव : सूख

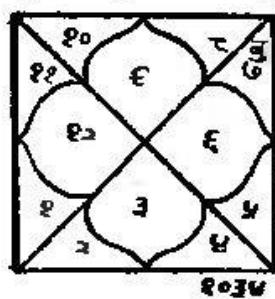


दसवें भाव में स्वराशि-स्थित उच्च के सुख के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलताएँ मिलती हैं। उसे पर्याप्त यश, घन तथा सम्मान प्राप्त होता है।

सातवीं नीच-दूषि॑ से अतुर्ये भाव की देखने के याता के सुख में कमी रहती है तथा सूनि, भवन के सुख में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

धनुलग्न : एकादशभाव : बुध

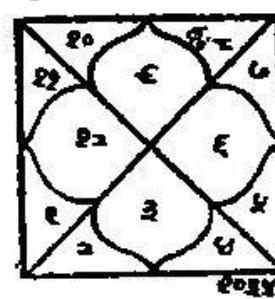


ग्यारहवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की अमरदनी खूब होती है। पिता, राज्य, व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में भी पर्याप्त सुख, धन, धन, लाभ तथा सम्मान प्राप्त होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सत्त्वान का सुख भी योग्य मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, विद्वान् तथा यशस्वी होता है।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

धनुलग्न : द्वादशभाव : बुध



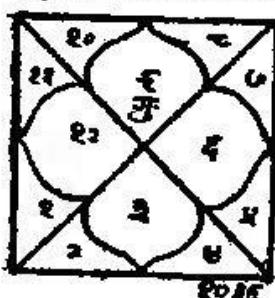
ग्यारहवें भाव में मिल 'वंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च व्यधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होता है। पिता, राज्य तथा स्त्री के सुख की हानि होती है। अन्म-स्थान में रहकर व्यवसाय करने से घाटा होता है।

सातवीं मिल-दृष्टि से षष्ठ भाव की देखने से शत्रु-पक्ष एवं अग्ने-मुक्तद्युमि के मामलों में सफलता होती है।

‘धनु’ लग्न में ‘गुरु’

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

धनुलग्न : प्रथमभाव : बुध

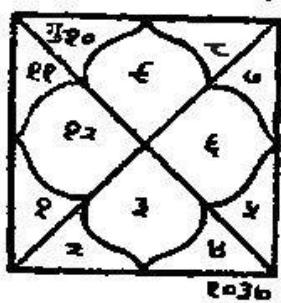


पहले भाव में स्वराशि में स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की कार्यारिक सीम्बर्य एवं सुख की प्राप्ति होती है। दूसी तथा भवत का सुख भी मिलता है। पौधों मिल-दृष्टि से पंचम भाव की देखने से विद्या, बुद्धि एवं सत्त्वान के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। सातवीं मिल-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय का सुख भी मिलता है। नवीं मिल-दृष्टि से नवम भाव को देखने से अग्न्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

ऐसा व्यक्ति विद्वान्, धुणी, सुन्दर, धनी, व्यर्थिता, अमृतभाषी, सज्जन तथा आनन्दी होता है।

‘घनु’ लग्न की कुण्डली के ‘हृतीयभाव’ स्थित ‘शुष्ठु’ का फलादेश

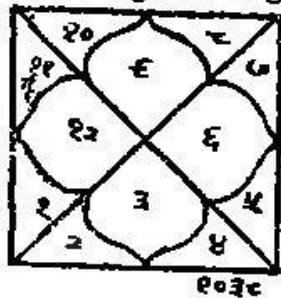
घनु लग्न : हृतीयभाव : शुरु



नवीं मिन्न-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान, यश तथा सफलता को प्राप्ति होती है।

‘घनु’ लग्न की कुण्डली के ‘हृतीयभाव’ स्थित ‘शुष्ठु’ का फलादेश

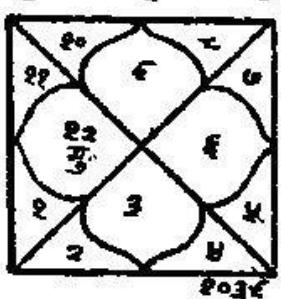
घनु लग्न : तृतीयभाव : शुरु



आग्न्य तथा धूमे की वृद्धि होती है। नवीं शान्ति-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कुण्ड कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती रहती है।

‘घनु’ लग्न की कुण्डली के ‘अतुर्यभाव’ स्थित ‘शुरु’ का फलादेश

घनु लग्न : अतुर्यभाव : शुरु



अचं वच्छी तरह चलता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

दूसरे भाव में शान्ति ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘शुरु’ के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब-सुख की हानि होती है। शारीरिक मुख तथा सौन्दर्य में भी कमी आती है। भाता, भूमि तथा भवन का पक्ष श्री कमज़ोर रहता है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से घट भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा शगड़े के मामलों में बुद्धिमानी से सफलता मिलती है। सातवीं उच्च-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आग्ने एवं पुरातत्व का लाभ होता है।

तीसरे भाव में शान्ति ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘शुरु’ के प्रभाव से जातक को कुण्ड मतभेद के लाभ आई-बहिन का मुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में भी कमी आती है। भूमि, भवन तथा भाता का सामान्य सुख मिलता है। पाँचवीं मिन्न-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री सुन्दर मिलती है तथा स्त्री से सुख और व्यवसाय में सफलता मिलती है।

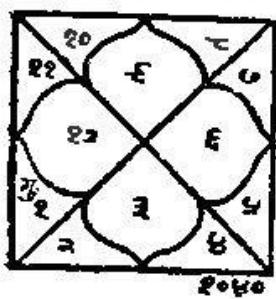
सातवीं मिन्न-दृष्टि से नवम भाव को देखने से सातवीं शान्ति-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कुण्ड कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती रहती है।

चौथे भाव में स्वराशि में स्थित ‘शुरु’ के प्रभाव से जातक को भाता, भूमि तथा भवन का घ्रेष्ठ सुख मिलता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति भी होती है। पाँचवीं उच्च तथा मिन्न-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आग्ने तथा पुरातत्व की वृद्धि होती है।

सातवीं मिन्न-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ होता है। नवीं मिन्न-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : पंचमभाव : शुक्र

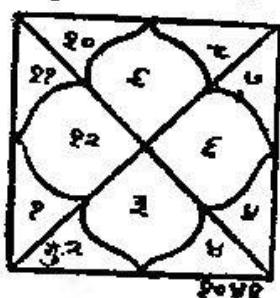


पाँचवें भाव में मित्र 'भगव' को राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान-पक्ष में सफलता मिलती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से शायद तथा धर्म की बुद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से बाषपदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा तथा प्रभाव को प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : षष्ठमभाव : शुक्र

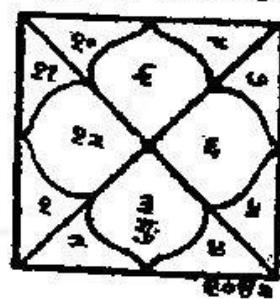


छठे भाव में शत्रु 'शुक्र' को राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष तथा रोगादि से परेशानी होती है। सथा बुद्धि-क्ल से उनका निराकरण होता है। शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में भी कमी आती है। जाता का अल्प सुख होता है तथा भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त नहीं होता। पाँचवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में साम, सुख तथा सम्मान को प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से सुख मिलता है। नवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब को ओर से परेशानी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : सप्तमभाव : शुक्र

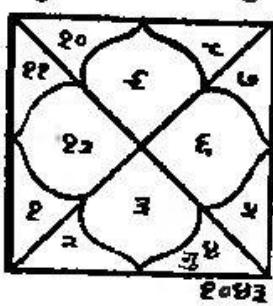


सातवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से सुख एवं सौन्दर्य तथा व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। जाता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। अष्ट पाँचवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से बाषपदनी के क्षेत्र में कुछ असरों रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं स्वाभिमान को प्राप्ति होती है। नवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से शाही-बहिनों से असन्तोष रहता है तथा पराक्रम में भी कुछ कमी आती है।

'धनु' साल की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

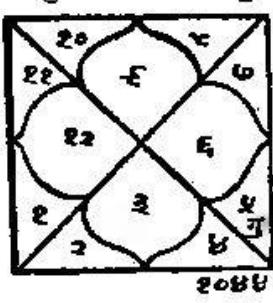
धनुलग्नः अष्टमभावः गुरु



भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

'धनु' साल की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

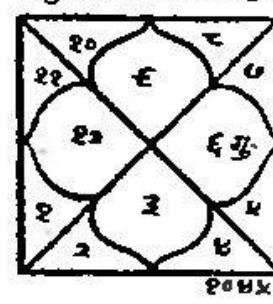
धनुलग्नः नवमभावः गुरु



सुख मिलता है तथा विद्या एवं बृद्धि की वृद्धि होती है।

'धनु' साल की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलग्नः दशमभावः गुरु



आठवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि में स्थित 'गुरु' के प्रभाव से आतक को आमु तथा पुरातस्य को शेष शक्ति का लाभ होता है। परन्तु शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। पौच्छरी मित्रदृष्टि से द्वाक्षरा भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थान के संबंधों से लाभ मिलता है।

सातवीं नीच तथा शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता,

भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

नवें भाव में मित्र 'सूर्य' को राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से आतक के भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है तथा धर्म का यथार्थिता पालन होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। पौच्छरी दृष्टि से स्वराशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं यश को प्राप्ति होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से आई-वहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है।

नवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बृद्धि की वृद्धि होती है।

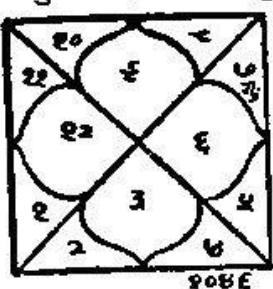
सुख मिलता है तथा विद्या एवं बृद्धि की वृद्धि होती है।

दसवें भाव में मित्र 'बुध' को राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से आतक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, लाभ, सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वाभिमान को प्राप्ति भी होती है। पौच्छरी नीच तथा शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब पक्ष से वसन्तोप रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। नवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में बड़ी होशियारी से प्रभाव स्वापित होता है।

'धनु' लग्न की कूण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनु लग्न: एकादशभाव: गुरु

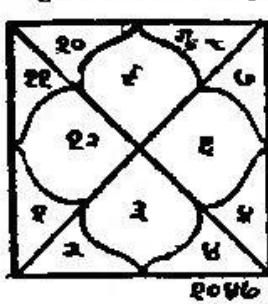


ग्यारहवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक शारीरिक श्वम द्वारा अपनी आय को बढ़ाता है। उसे माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहनों से असन्तोष रहता है तथा पराक्रम की वृद्धि भी नहीं हो पाती।

सातवीं मित्रदृष्टि से एच्युभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का लाभ होता है। नवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ को प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कूण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनु लग्न: द्वादशभाव: गुरु



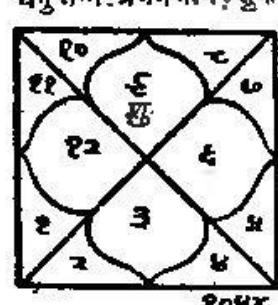
बारहवें भाव में मिथि 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा वाहरी संबंधों से लाभ होता है। शरीर में कुछ कमज़ोरी भी रहती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में बुद्धिमानी से प्रभाव स्थापित होता है। नवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु को वृद्धि होती है तथा पुरातत्व का लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का दैनिक जीवन भाव से बीतता है।

'धनु' लग्न में 'शुक्र'

'धनु' लग्न की कूण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनु लग्न: नवमभाव: शुक्र

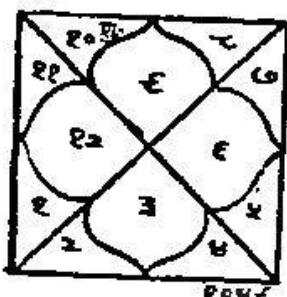


पहले भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का स्वास्थ्य कुछ कमज़ोर रहता है, परन्तु परिश्रमी तथा चतुर होता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। यशस्वी भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री से कुछ मतभेद-युक्त सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में चतुराई द्वारा सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

‘घनु’ साम की कुण्डली के ‘हृतीयभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

घनुलग्न : हृतीयभाव : शुक्र



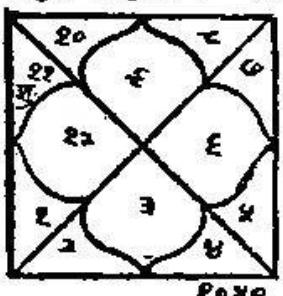
दूसरे भाव में मित्र ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक को धन को अच्छी शक्ति मिलती है, परन्तु कुटुम्बियों से भ्रतभेद रहता है। शत्रु-पक्ष से लाभ होता है तथा उस पर प्रभाव भी स्थापित होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अच्छम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्व को शक्ति में बृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति प्रभावशाली तथा प्रतिष्ठित होता है।

‘घनु’ साम की कुण्डली के ‘शत्रुयभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

घनुलग्न : शत्रुयभाव : शुक्र

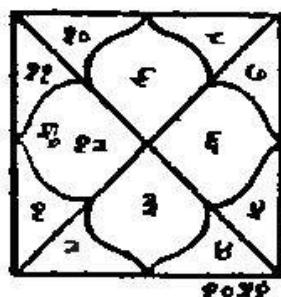


तीसरे भाव में मित्र ‘शनि’ को राशि पर स्थित ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक के पराक्रम में बृद्धि होती है तथा कुछ कमी के लाभ भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। धन का लाभ होता है तथा शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म में भी विशेष रुचि नहीं रहती। सामान्यतः जीवन सुखी बना रहता है।

‘घनु’ साम की कुण्डली के ‘शत्रुयभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

घनु साम : चतुर्थभाव : शुक्र

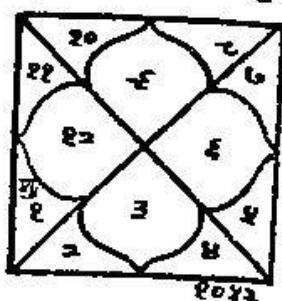


चौथे भाव में शत्रु ‘गुह’ की राशि पर स्थित उच्च ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। आमदनी अच्छी रहती है तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से दशम भाव की देखने से पिता से हानि तथा राज्य के क्षेत्र में असफलता मिलती है। व्यवसाय की उन्नति के मार्ग में भी बनेक कठिनाइयाँ आती हैं।

‘धनु’ सम की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘मुक्त’ का फलादेश

धनुलग्न : पंचमभाव : मुक्त

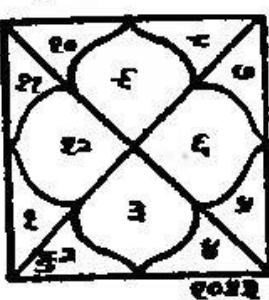


पाँचवें भाव में ज्ञात ‘मंगल’ को राति पर स्थित ‘मुक्त’ के प्रभाव के जातक को विद्या, बुद्धि का अध्येता लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुण्ड कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। काणी की शक्ति, चातुर्यं एवं कला का लाभ भी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराजि में एकादश भाव को देखने से विद्या-बुद्धि द्वारा आमदनी की दृष्टि होती है तथा शनु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

‘धनु’ सम की कुण्डली के ‘षष्ठमभाव’ स्थित ‘मुक्त’ का फलादेश

धनुलग्न : षष्ठमभाव : मुक्त

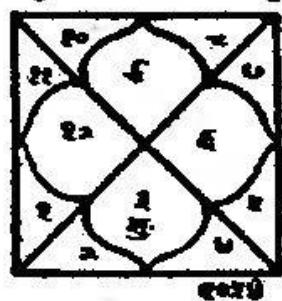


षष्ठ भाव में स्वराजि-स्थित ‘मुक्त’ के प्रभाव के जातक शनु-पक्ष पर भारी प्रभाव रखता है तथा ज्ञानों से लाभ उठाता है। परिश्रम द्वारा धन एवं आमदनी के क्षेत्र में भी अच्छी सफलता मिलती है। ननसाल-पक्ष से भी लाभ होता है।

सातवीं शनु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुण्ड कठिनाइयों के साथ अच्छा लाभ होता रहता है।

‘धनु’ सम की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘मुक्त’ का फलादेश

धनुलग्न : सप्तमभाव : मुक्त

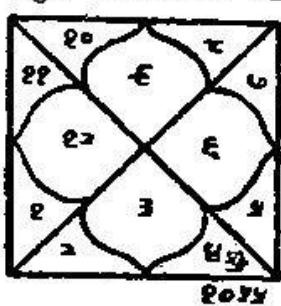


सातवें भाव में मित्र ‘मूष्य’ की राति पर स्थित ‘मुक्त’ के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ अवभेद-मुक्त लाभ मिलता है। व्यवसाय क्षेत्र में भी कठिनाइयों के साथ लाभ प्राप्त होता है। शनु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा भूसैन्द्रियमें विकार की संभावना भी रहती है।

सातवीं शनु-दृष्टि के प्रथम भाव की देखने से सारीरिक एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है।

‘षष्ठि’ सम की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

अनुलग्न : अष्टमभाव : शुक्र



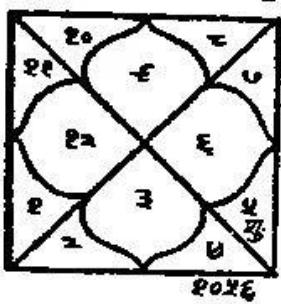
आठवें भाव में शत्रु ‘चन्द्रमा’ को राशि पर स्थित

‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्व का लाभ भी होता है। आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। वाहरी स्थानों के सम्बन्ध से परिश्रम द्वारा साम मिलता है। शत्रुपक्ष से भी परेशानी होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव की देखने से कुटुम्ब का सहयोग प्राप्त होता है तथा घन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

‘षष्ठि’ सम की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

अनुलग्न : नवमभाव : शुक्र



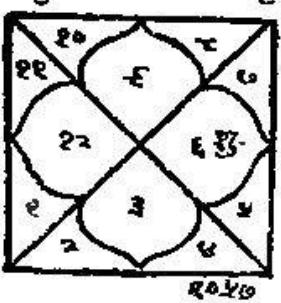
नवें भाव में शत्रु ‘सूर्य’ को राशि पर स्थित ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है। तथा घर में भी कम अद्वा रहती है। अपनी चतुराई द्वारा शत्रुपक्ष से साम भी उठाता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति भाग्यवान् समझा जाता है।

‘षष्ठि’ सम की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

अनुलग्न : दशमभाव : शुक्र

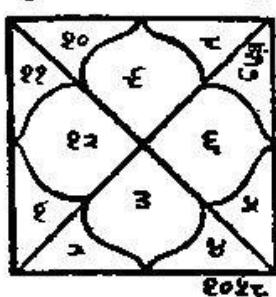


दशवें भाव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित नींव के ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का अनुभव होता है। भाग्योन्नति में शत्रुपक्ष के कारण रुकावटें आती हैं।

सातवीं उच्च दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है तथा घर के भीतर प्रभाव भी बना रहता है।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

धनु लग्नः एकादशभावः शुक्र

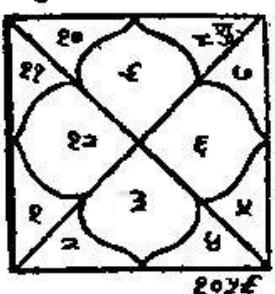


ग्यारहवें भाव में स्वराशि में स्थित ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है तथा शत्रु पक्ष से विशेष साभ मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम आय को देखने से विद्या, वृद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है, परन्तु वाद में बड़ा शुभी, चतुर तथा विद्वान् भी बनता है। सन्तान-पक्ष से दृष्टिपूर्ण साथ प्राप्त होता है।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

धनु लग्नः द्वादशभावः शुक्र



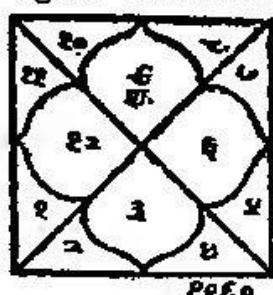
द्वारहवें भाव में शत्रु ‘भंगल’ की राशि पर स्थित ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ भी होता है। शगड़े तथा शत्रुओं के कारण कुछ परेशानी होती है, परन्तु अपनी चतुराई से लाभ भी उठाता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में वष्टभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर पूर्ण प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा व्यक्ति संघर्षपूर्ण जीवन विताता है।

‘धनु’ लग्न में ‘शनि’

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

धनु लग्नः प्रथमभावः शनि



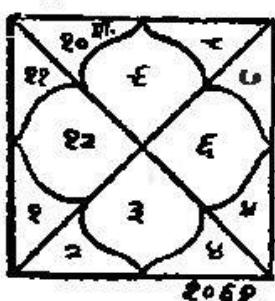
पहले भाव में शत्रु ‘गुरु’ को राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है। परिश्रम से धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। दसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से शिला, राष्ट्र

‘धन’ सम की कृष्णतो के ‘द्वितीयमाव’ स्थित ‘शति’ का कलारेश

घनु लग्नः द्वितीयभावः शनि

दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के ब्रह्माव



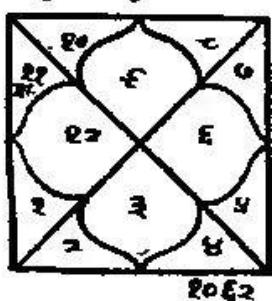
कूटनायक भूमिका विवरण विवरण से भावना के ब्रह्माण्ड से ज्ञातक को धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है, परन्तु आई-व्हिन के सुख में कुछ कमी रहती है। तीसरी श्रहृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का अल्प सुख मिलता है।

सातवीं शास्त्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से वायु सथा पुरातत्त्व की कृदि होती है। दसवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब रहती है तथा कमी-कभी वाक्स्मिक घन-लाभ भी होता है।

‘धन’ साम की कृष्णसो के ‘सूतोयसाद’ स्थित ‘शनि’ का कसावेश

धनु लग्नः तृतीयभावः शनि

तीसरे भाव में स्वराधि-स्थित 'अनि' के प्रभाव



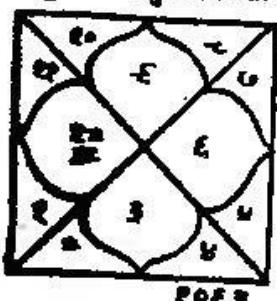
तासर भाव म स्वरागाश-स्थित ज्ञान के प्रभाव से ज्ञातक के ८ क्रम में विशेष वृद्धि होती है सथा आई-बहिन का सुर कुछ कमी के लाभ मिलता है । तीसरी नीचदृष्टि ३ पंचम भाव को देखने से सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है । या विद्या-वृद्धि में कमी रहती है ।

सातवीं शताब्दी से नवमभाव को देखने से शायद तथा यश को उन्नति होती है परन्तु उभयं में शदा कभी रहती है। दसवीं शताब्दी से द्वादश लाभ को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी लाभायक सिद्ध नहीं होता।

‘धनु’ सम्म की कथाली के ‘जातर्पभाव’ स्थित ‘इनि’ का फूलावेश

घनु लम्हः चतुर्थभाषः प्राणि

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को मात्रा के सुख में कमी रहती है तथा भूमि, भवन का सामान्य सुख प्राप्त होता है। भाई-हित तथा कुटुम्ब का सुख भी वसन्तोदयनक रहता है। तीसरी मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा शगड़ों से लाप भी होता है।

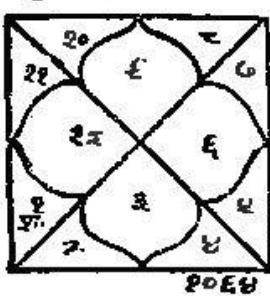


सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव की देखने से पिता, नग्न एवं व्यक्तिगत के श्वेत की उल्लति होती है।

इसी अवधिकार से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौभाग्य एवं स्वास्थ्य में कमी जाती है।

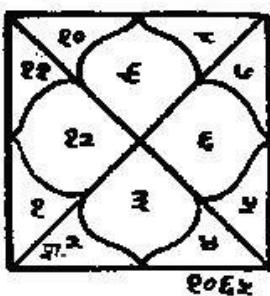
'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : पंचमभाव : शनि



'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

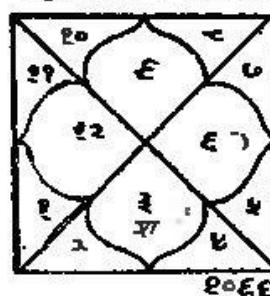
धनु लग्न : षष्ठभाव : शनि



दसवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति हिम्मती तथा पुरुषार्थी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : सप्तमभाव : शनि



देखने से याता, भूमि तथा भवत के सुख हें कभी या आती है और उसे अपना स्थान छोड़कर परदेश में भी रहना पड़ता है।

पौरवे भाव में शनु 'भंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'शनि' के प्रभाव से जातक को भन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विदा, वृद्धि के क्षेत्र में कभी रहती है। तीसरी मिश्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्रों तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बफलता मिलती है। सातवीं उच्चदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब रहती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि ये द्वितीय भाव को देखने से कौटुम्बिक सुख तथा घन-संचय के लिए गुप्त शक्तियों का अक्षय लेना पड़ता है तभी सामान्य सफलता मिलती है।

छठे भाव में मिश्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक शनु-पक्ष पर भारी प्रभाव रखता है तथा अगड़ों से लाभ उठाता है। कुटुम्बियों से कुछ विरोध भी रहता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु में वृद्धि होती है, परन्तु पुरातत्व का लाभ कम होता है।

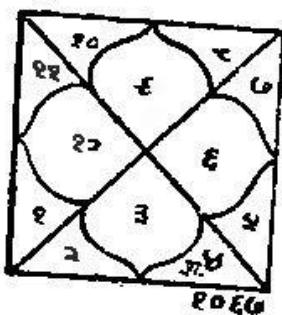
सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खच अधिक रहता है। बाहरी संबंधों से भी हानि होती है।

सातवें भाव में मिश्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को स्त्री का लाभ तो होता है, परन्तु उससे सुख कम ही मिलता है, सधारि दैनिक व्यवसाय में पर्याप्त लाभ होता है। भाई-बहन तथा कुटुम्बियों से वज्ज्ञे संबंध रहते हैं। तीसरी शत्रुदृष्टि से नवमभाव की देखने से वर्षे तथा भाग्य के क्षेत्र में रुकावटें आती हैं।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से भारीर में कुछ कष्ट रहता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से याता, भूमि तथा भवत के सुख हें कभी या आती है और उसे अपना स्थान

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

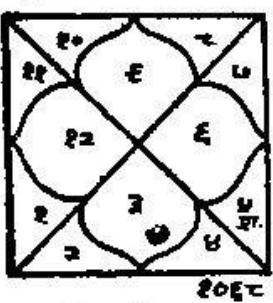
धनु लग्नः अष्टमभावः शनि



सन्तान के पल में कभी शनी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

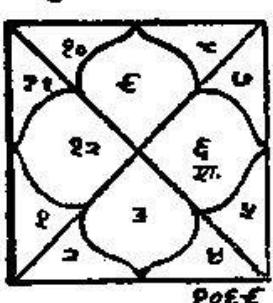
धनु लग्नः नवमभावः शनि



शनुओं पर विजय प्राप्त होती है तथा अग्ने-झक्कों से लाभ होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्नः दशमभावः शनि



मित्र-दूषित से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से सुख तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता की प्राप्ति होती है।

अठवे भाव में शनु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्व का भी लाभ होता है। दैनिक सुख, धन-संचय तथा आई-बहिन के सुख में कभी रहती है। तीसरी मित्र-दूषित से दशम भाव को देखने से पिता राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दूषित से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है। दसवीं नीच-दूषित से पंचम भाव को देखने से विद्या, वृद्धि एवं

सन्तान के पल में कभी शनी रहती है।

नवे भाव में शनु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को आयोनित एवं मर्म-पालन में वादाएँ आती हैं। धन-कुटुम्ब का सामान्य-सुख मिलता है। तीसरी मित्र तथा उच्च-दूषित से एकादशभाव की देखने से आमदनी स्वूच रहती है तथा कभी-कभी आकर्षित धन-लाभ भी होता है।

सातवीं दूषित से स्वराशि में तृतीयभाव को देखने से आई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। दसवीं मित्र-दूषित से षष्ठ भाव को देखने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है तथा अग्ने-झक्कों से लाभ होता है।

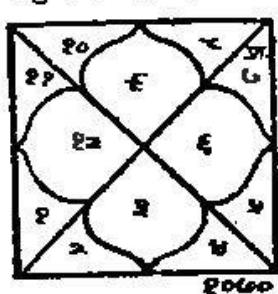
सातवीं दूषित से स्वराशि में तृतीयभाव को देखने से आई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। दसवीं मित्र-दूषित से षष्ठ भाव को देखने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है तथा अग्ने-झक्कों से लाभ होता है।

दसवें भाव में मित्र 'बुद्ध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ मिलता है। आई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। तीसरी शनु-दूषित से द्वादशभाव को देखने से खन्ने अधिक रहता है तथा वाहरी सम्बन्ध भी असन्तोषजनक रहते हैं।

सातवीं शनु-दूषित से चतुर्थ भाव को देखने से पाता, शूष्मि एवं भवन के सुख में कभी रहती है। दसवीं मित्र-दूषित से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से सुख तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता की प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : एकादशभाव : शनि



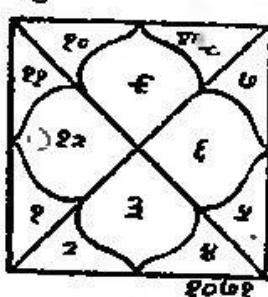
ग्यारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है। कुटुम्ब तथा आई-बहिनों के सुख एवं पराक्रम में भी वृद्धि होती है। तीसरी शनु-दृष्टि से प्रथम भाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है।

सातवीं नीच तथा शनु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान से कष्ट मिलता है तथा विद्या-वृद्धि के क्षेत्र में कभी रहती है। दसवीं शनु-दृष्टि से अष्टम भाव

की देखने से आयु एवं पुरातात्त्व का लाभ होता है परन्तु दैनिक जीवन में परेशानियों का अनुभव होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : द्वादशभाव : शनि



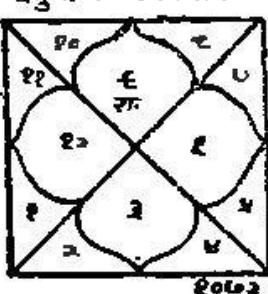
बारहवें भाव में शत्रु 'मगल' की राशि पर स्थित 'शुरु' के प्रभाव से जातक का सचें अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों का संबंध भी असन्तोषजनक रहता है। धन-कुटुम्ब तथा आई-बहिन के सुख में भी कमी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में तीसरे भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठम भाव को देखने से शनु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा गुप्त युक्तियों के सहारे लाभ भी मिलता है। दसवीं शनु-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा घर्म का पालन भी पूर्ण रूप से नहीं हो पाता।

'धनु' लग्न में 'राहु'

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

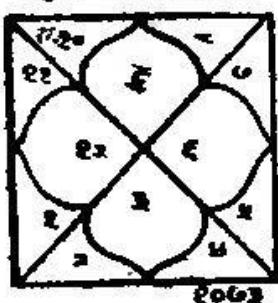
धनु लग्न : प्रथमभाव : राहु



पहले भाव में शत्रु 'शुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी आती है। कभी-कभी कठिन शारीरिक कष्ट भी उठाना पड़ता है। ऐसा अवक्षित देखने में सज्जन परन्तु अतिर से चालाक होता है।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली में ‘हितोयभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

धनु लग्नः हितोयभावः राहु

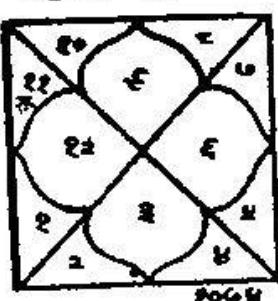


दूसरे भाव में मिल ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी रहसी है। कभी-कभी कौटुम्बिक कारणों से घोर संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है।

उसे श्राप छूट लेकर अपना काम चलाना पड़ता है। अपनी कठिनाइयों पर वह गुप्त युक्तियों द्वारा विवश पाने का प्रयत्न करता है।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली में ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

धनु लग्नः तृतीयभावः राहु

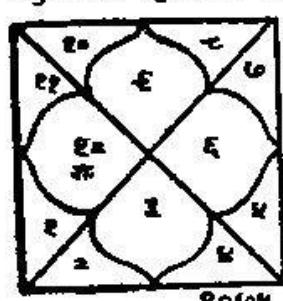


तीसरे भाव में मिल शनि की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है। भाई-बहिनों के साथ उसके सम्बन्ध सुखकर नहीं रहते।

उसे कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु धैर्यवान् तथा साहसी होने के कारण उन्हें चुपचाप सहन कर सकता है।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली में ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

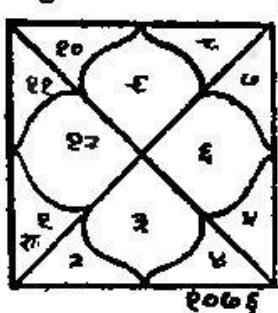
धनु लग्नः चतुर्थभावः राहु



चौथे भाव में शत्रु ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक को माता के सुख में बड़ी कमी रहसी है। शूमि तथा भवन का सुख भी नहीं मिलता। कभी-कभी घोर युसीबतें भी उठानी पड़ती हैं। धैर्य तथा गुप्त युक्तियों के बल पर वह संकटों का सामना करता रहता है।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

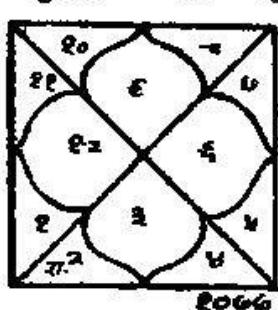
घनुलग्न : पंचमभाव : राहु



पाँचवें भाव में शत्रु ‘राहु’ को राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा विश्वाधियन में भी बड़ी कठिनाइयाँ तथा कमी रहती हैं। उसकी बोली में रुखाएन रहता है। वह धैर्य तथा गुप्त गुक्तियों के बल पर काम लो चलाता है, परन्तु चिन्ताओं से घिरा रहता है।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘षष्ठमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

घनुलग्न : षष्ठमभाव : राहु

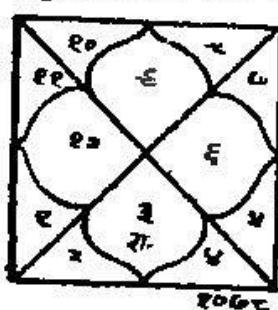


छठे भाव में मिल ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अस्त्यन्त प्रभाव रखता है तथा चातुर्वें एवं गुप्त गुक्तियों के बल पर उन्हें पंरास्त करता रहता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा साहमी, बहादुर तथा धैर्यवान् होता है। वह मातृ-पक्ष को भी कुछ हानि पहुँचाता है।

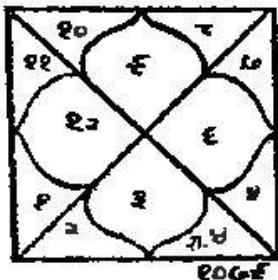
‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘शप्तमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

घनुलग्न : सप्तमभाव : राहु



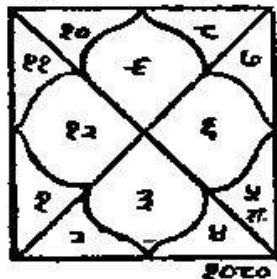
सातवें भाव में मिल ‘बुध’ की राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष की विशेष क्षक्ति मिलती है। उसके एक से वधिक विवाह भी हो सकते हैं। दैनिक आमदनी की वृद्धि के लिए वह अनेक उपायों का आधय सेता है। वह घनी तथा सुखी जीवन विताता है।

‘धनु’ संग्रह की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश
धनुलग्न : अष्टमभाव : राहु



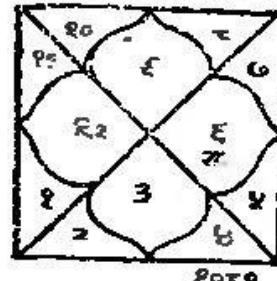
आठवें भाव में शत्रु ‘चन्द्रमा’ की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के जीवन पर कई बार संकट आते हैं तथा मूल्य-सूत्र्य स्थितिर्य बन जाती हैं। पेट में विकार रहता है। पुरातत्त्व की हानि होती है। ऐसा व्यक्ति परेशानियों से घिरा रहता है।

‘धनु’ संग्रह की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश
धनुलग्न : दशमभाव : राहु



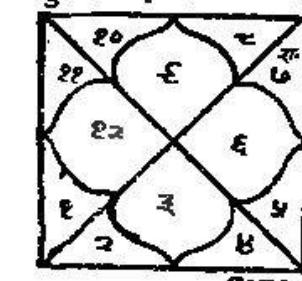
नवें भाव में शत्रु ‘सूर्य’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक की आययोनति में और संकट आते हैं। सर्वे में उनकी आस्था नहीं होती। ऐसा व्यक्ति प्रायः अनीश्वरकादी होते हुए भी आययोनति के लिए अधिकाधिक परिश्रम करता तथा गुप्त मुक्तियों का वास्त्र लेता है।

‘धनु’ संग्रह की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश
धनुलग्न : दणमभाव : राहु



दसवें भाव में मिल ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक की पिता द्वारा परेशानी, राजद्वारा संकट तथा व्यवसाय में हानि का जिकार बनना पड़ता है। वह अपनी हिम्मत तथा गुप्त मुक्तियों के बल पर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता रहता है, परन्तु व्यक्ति की कलता नहीं मिल पाती।

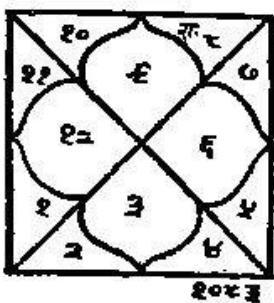
‘धनु’ संग्रह की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश
धनुलग्न : एकादशभाव : राहु



ध्यारहवें भाव में मिल ‘मुकु’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। कभी-कभी कठिनाइयाँ भी आती हैं, परन्तु वह अपना धैर्य नहीं छोड़ता और हिम्मत से काम लेकर कठिनाइयाँ पर विजय ग्राप्त कर लेता है।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘ह्रादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

धनुलग्न : द्वादशभाव : राहु

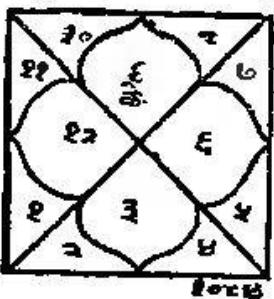


बारहवें भाव में शत्रु ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक का खन्ने व्यक्तिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी कष्ट का अनुभव होता है। ऐसा व्यक्ति हिम्मती होने के कारण धनरुता नहीं है तथा संकटों पर विजय पते का प्रयत्न करता रहता है।

‘धनु’ लग्न में ‘केतु’

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘रुद्र’ का फलादेश

धनुलग्न, प्रथमभाव : केतु

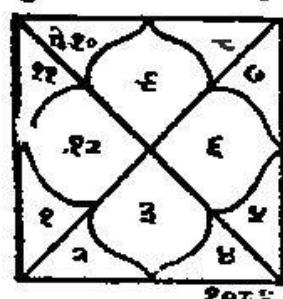


पहले भाव में शत्रु ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति एवं आकार में तो घृणा होती है, परन्तु शारीरिक सौन्दर्य में कभी भी अवश्य आती है। वह जिद्दी तथा हड्डी स्वभाव का होता है।

ऐसा व्यक्ति सब कठिनाइयों का साहस के साथ मुकाबला करने वाला, परिश्रमी तथा धैर्यवान् होता है।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

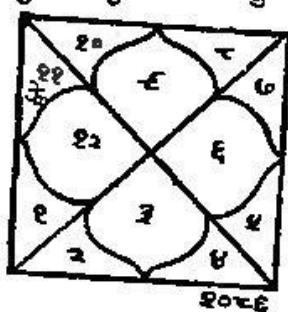
धनुलग्न : द्वितीयभाव : केतु



दूसरे भाव में मित्र ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक के कौटुम्बिक सुख में कभी रहती है तथा धन-संचय के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है। कभी-कभी उसे दौर आर्थिक संकटों में भी फँसना पड़ता है और प्रायः ऋण लेकर काम चलाना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती तथा धैर्यवान् होता है।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलावेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : केतु

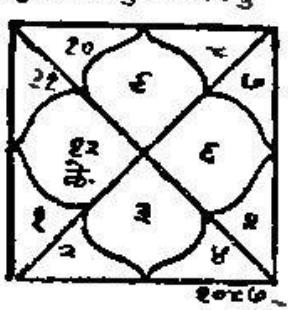


तीसरे भाव में मिल ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी तथा कष्ट का अनुभव होता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला, साहसी तथा कठिन परिश्रमी होता है।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलावेश

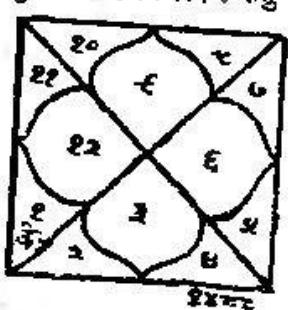
धनु लग्न : चतुर्थभाव : केतु



चौथे भाव में शत्रु ‘गुरु’ की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को मातृ के सुख में दड़ी हानि उठानी पड़ती है तथा मातृभूमि का विद्योग भी सहना पड़ता है। शूमि तथा भवन का सुख भी ग्राप्त नहीं होता। परन्तु ऐसा व्यक्ति दड़ा परिश्रमी, साहसी, दैर्यवान् तथा सन्तोषी होता है।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलावेश

धनु लग्न : पंचमभाव : केतु

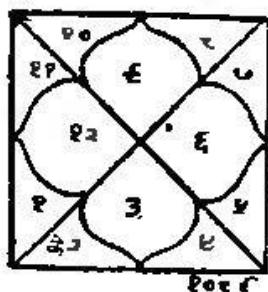


पाँचवें भाव में शत्रु ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष में दड़ी हानि को सामना करना पड़ता है तथा विद्याध्ययन में भी दड़ी कठिनाइयों के बाद अरुप सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति घोर परिश्रमी, जिह्वा तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला होता है। वह सदैव चिन्तित भी बना रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'वर्षमाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

धनु लग्न : वर्षमाव : केतु

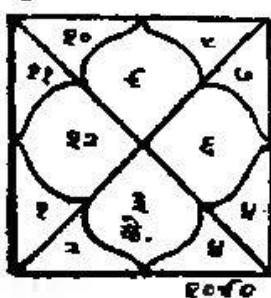


छठे शाव में मिल 'धुक' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़े-मुकदमे आदि से भी वह साम उठाता है।

महान संकट उपस्थित होने पर भी वह कभी हिम्मत नहीं हारता तथा बहादुरी के साथ मुकाबला करता हुआ उस पर विजय प्राप्त करता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तममाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

धनु लग्न : सप्तममाव : केतु

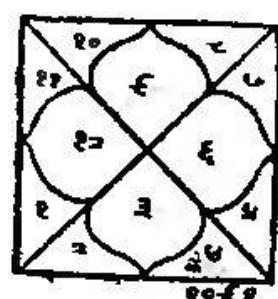


सातवें शाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित नींव के 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष में और हानि उठानी पड़ती है तथा दैनिक जामशनी के अंत में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

यह धैर्य तथा साहस के साथ गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने का प्रयत्न करता रहता है, परन्तु सफलता योड़ी ही मिलती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टममाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

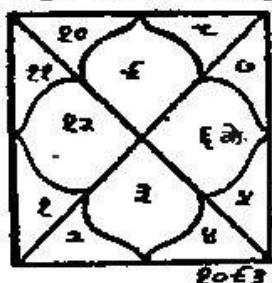
धनु लग्न : अष्टममाव : केतु



आठवें शाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के जीवन पर बड़े-बड़े संकट आते हैं तथा उसे मृत्यु-सुल्प कष्टों का सामना करना पड़ता है। ऐट में विकार भी होता है।

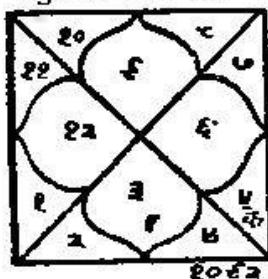
दैनिक जीवन में प्रेरणानियाँ घनी रहती हैं। पुरातत्व की की हानि होती है। और परिश्रम करने पर भी सुख नहीं मिल पाता।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश
धनु लग्न : नवमभाव : केतु



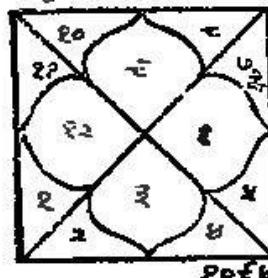
नवें भाव में शत्रु ‘शूर्य’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में अत्यधिक वाधा होती है। उन्हें दूर करने के लिए वह अनेक गुप्त युक्तियों तथा परिश्रम का सहारा लेता है, परन्तु अंशिक सफलता ही मिल पाती है। धर्म तथा ईश्वर में उम्मी आस्था कम होती है। सदैव चिन्ताओं तथा असफलताओं का शिकार बना रहता है।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश
धनु लग्न : दशमभाव : केतु



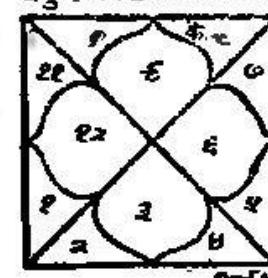
दसवें भाव में मिल ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक को कुछ कमियों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में तामान्य लाभ, सफलता, सुख, यश, सहयोग तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। अत्यधिक परिश्रम तथा युक्ति-क्ल का व्यावहार लेने पर भी विशेष उन्नति नहीं हो पाता।

‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश
धनु लग्न : एकादशभाव : केतु



व्यारहवें भाव में मिल ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। कमी-कभी संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है, परन्तु उन पर वह अपनी गुप्त युक्तियों तथा कठोर परिश्रम के बल पर विजय प्राप्त कर लेता है। फिर भी पूर्ण मन्तोष नहीं मिल पाता।

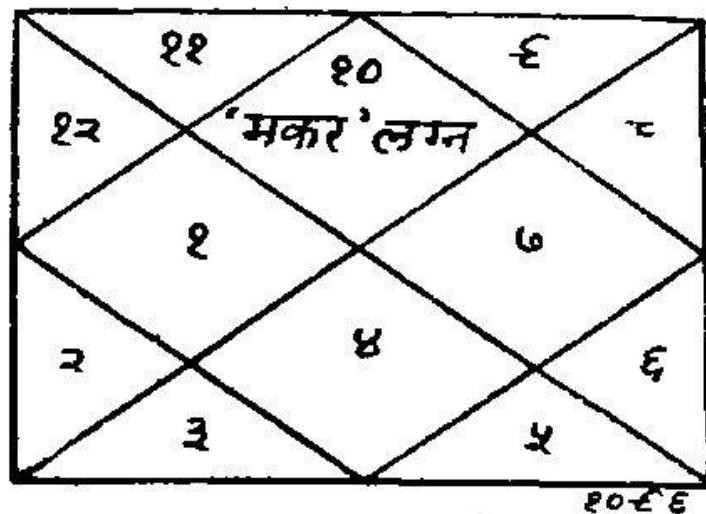
‘धनु’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश
धनु लग्न : द्वादशभाव : केतु



व्यारहवें भाव में शत्रु ‘भगव’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक का खच अधिक रहता है जिससे उसे बड़ी परेशानी तथा संकट उठाने पड़ते हैं।

बाहरी स्थानों के सम्बन्ध के भी परेशानियां मिलती हैं। वह गुप्त युक्तियों, परिश्रम, धैर्य तथा हिम्मत के बल पर कठिनाइयों की दूर करने का प्रयत्न करता है, परन्तु अधिक सफल नहीं हो पाता।

‘मकर’ लग्न



[‘मकर’ लग्न को कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

‘मकर’ लग्न का फलादेश

‘मकर’ लग्न में जन्म लेने वाले जातक का शरीर लम्बा होता है। वह बड़ी-बड़ी अँखों वाला, उग्र स्वभाव का, निरन्तर पुरुषार्थी करने वाला, लोभी, चतुर, चंचक, ठग, पाखण्डी, भानसी, मनमौजी, तमोगुणी तथा कफ-वायु से पीड़ित रहने वाला होता है।

ऐसा व्यक्ति भीह, सन्तोषी, खर्चीला, लज्जा-रहित, धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाला, अधिक मन्त्रिवान्, कवियों तथा स्त्रियों में आसक्त भी होता है।

‘मकर’ लग्न वाला जातक अपनी प्रारम्भिक अवस्था में सुख भोगता है, मध्यमावस्था में दुःख पाना है तथा इर वर्ष की आयु के बाद अन्तिम समय तक सुखी बना रहता है।

ऐसे व्यक्ति की आयु पूर्ण होती है तथा उसका भाग्योदय प्रायः ३२-३३ वर्ष की अवधि में होता है।

‘मकर’ लग्न वालों की अपनी जन्मकृष्णली के विभिन्न भावों में स्थित-विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे ही गई उदाहरण-कुण्डलियों में संख्या ३३४ से ४४१ के बीच देखना चाहिए।

गोचर कृष्णली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे अपने लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।



‘मकर’ लग्न में ‘सूर्य’ का फलादेश

१—‘मकर’ लग्न वालों को अपनी जन्मकृष्णली के विभिन्न भावों में स्थित ‘वृद्ध’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०६७ से ११०८ के बीच देखना चाहिए।

२—‘मकर’ लग्न वालों की गोचर-कृष्णली के विभिन्न भावों में स्थित ‘सूर्य’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस अहीने में ‘सूर्य’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर स्थित हो तो संख्या १०६७
- (ख) ‘वृद्ध’ राशि पर स्थित हो तो संख्या १०६८
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर स्थित हो तो संख्या १०६९
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११००
- (क) ‘सिंह’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०१
- (ख) ‘कन्या’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०२
- (ग) ‘तुला’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०३
- (घ) ‘वृश्चिक’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०४
- (क) ‘घनु’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०५
- (ख) ‘मकर’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०६
- (ग) ‘कुम्भ’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०७
- (घ) ‘मीन’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०८

‘मकर’ लग्न में ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

१—‘मकर’ लग्न वालों की अपनी जन्मकृष्णली के विभिन्न भावों में स्थित ‘चन्द्रमा’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०६ से ११२० के बीच देखना चाहिए।

२—‘मकर’ लग्न वालों को गोचर-कृष्णली के विभिन्न भावों में स्थित ‘वृह’

का वस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'मन्मूला'—

- (क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०६
- (ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११०
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११११
- (च) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११२
- (झ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११३
- (ঁ) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११४
- (ঁ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११५
- (ঁ) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११६
- (ঁ) 'घनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११७
- (ঁ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११८
- (ঁ) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११९
- (ঁ) 'भीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२०

'मकर' संग्रह में 'मंगल' का फलादेश

१—'मंगल' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२१ से ११३२ के बीच देखना चाहिए।

२—'मंगल' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'मंगल' का वस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस भीने में 'मंगल'—

- (ক) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२१
- (খ) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२२
- (গ) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो यो संख्या ११२३
- (চ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२४
- (ঁ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२५
- (ঁ) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२६
- (ঁ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२७
- (ঁ) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२८
- (ঁ) 'घनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२९
- (ঁ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११३०
- (ঁ) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११३१
- (ঁ) 'ভীন' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११३२

मृक्कु² विज्ञान लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३३ से ११४४ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में बुध—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ११३३
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ११३४
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ११३५
- (ध) 'कक्ष' राशि पर हो तो संख्या ११३६
- (इ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ११३७
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ११३८
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ११३९
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ११४०
- (झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ११४१
- (झा) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ११४२
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ११४३
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ११४४

'मकर' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४५ से ११५६ के बीच देखना चाहिए।

२—'कक्ष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

- (क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ११४५
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ११४६
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ११४७
- (ज) 'कक्ष' राशि पर हो तो संख्या ११४८
- (झ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ११४९
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ११५०

- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ११५१
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ११५२
- (झ) 'घनु' राशि पर हो तो संख्या ११५३
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ११५४
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ११५५
- (ठ) 'शीन' राशि पर हो तो संख्या ११५६

'मकर' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न घावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११५७ से ११६८ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न घावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

- (क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११५७
- (ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११५८
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११५९
- (घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६०
- (ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६१
- (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६२
- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६३
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६४
- (झ) 'घनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६५
- (ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६६
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६७
- (ठ) 'शीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६८

'मकर' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न घावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६९ से ११८० के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली विभिन्न घावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

- (क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६९

- (ब) 'बूष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७०
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७१
- (घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७२
- (ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७३
- (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७४
- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७५
- (झ) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७६
- (झ) 'घनु' राशि पर स्थित हो को संख्या ११७७
- (झ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७८
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७९
- (ठ) 'शीत' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८०

‘मकर’ लग्न में ‘राहु’ का फलादेश

१—‘मकर’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न वालों में स्थित ‘राहु’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११८१ से ११८२ के बीच देखना चाहिए।

२—‘मकर’ लग्न वालों को योवर-कुण्डली के विभिन्न भालों में स्थित ‘राहु’ का अस्थायी फलादेश निम्नविवित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में ‘राहु’—

- (क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८१
- (ब) 'बूष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८२
- (ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८३
- (घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८४
- (ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८५
- (च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८६
- (छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८७
- (झ) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८८
- (झ) 'घनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८९
- (झ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९०
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९१
- (ठ) 'शीत' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९२

‘मकर’ लग्न में ‘केतु’ का फलादेश

१—‘मकर’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘केतु’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६३ से १२०४ के बीच देखना चाहिए।

२—‘मकर’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘केतु’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में ‘केतु’—

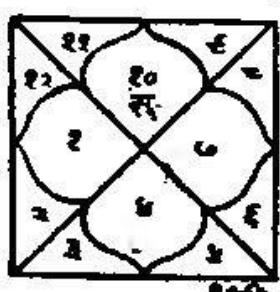
- (क) ‘मेष’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६३
- (ख) ‘बुध’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६४
- (ज) ‘मिथुन’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६५
- (ध) ‘कर्ण’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६६
- (ः) ‘सिंह’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६७
- (च) ‘कन्या’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६८
- (छ) ‘तुला’ राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६९
- (ज) ‘वृषभ’ राशि पर स्थित हो तो संख्या १२००
- (झ) ‘धनु’ राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०१
- (अ) ‘मकर’ राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०२
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०३
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०४



‘मकर’ लग्न में ‘सूर्य’

‘मकर’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

मकरलग्नः प्रथमभावः सूर्य

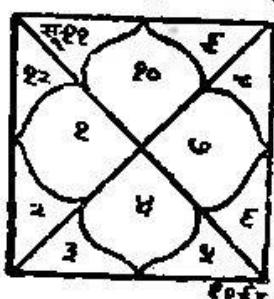


पहले भाव में जन्म ‘केतु’ को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के मारीटिक सौन्दर्य एवं स्वात्म में कमी आती है। तथा कमी-कमी विशेष मारीटिक कष्टों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु आपु एवं पुरातत्त्व को बृद्धि होती है।

सातवीं मिदद्रुष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के पक्ष में सामान्य कठिनाई रहती है तथा दैनिक अवसान में भी कुछ परेकानियां आती रहती हैं।

‘अक्षर’ सम्बन्ध की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का चक्रावेश

मकर सम्बन्ध : द्वितीयभाव : सूर्य

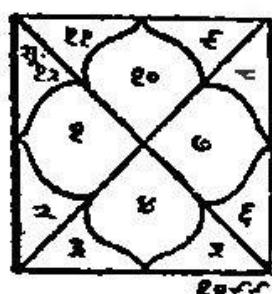


दूसरे भाव में शत्रु ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से ज्ञातक घन का संचय नहीं कर पाता। तथा कुण्डल के सुख में भी संकट आते रहते हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आशु को वृद्धि होती है तथा पुरातत्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन विताता तथा जान-शौकत में खर्च करता रहता है।

‘अक्षर’ सम्बन्ध की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का चक्रावेश

मकर सम्बन्ध : तृतीयभाव : सूर्य

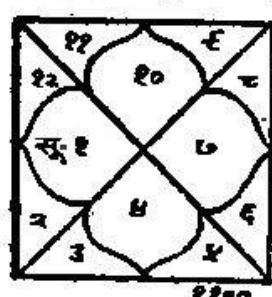


तीसरे भाव में मित्र ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से ज्ञातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। आशु सधा पुरातत्व की शक्ति का लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से आग्नेयोजना में कुछ रुकावटें आती हैं तथा क्षमं के पक्ष में भी कमी आती रहती है।

‘अक्षर’ सम्बन्ध की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का चक्रावेश

मकर सम्बन्ध : चतुर्थभाव : सूर्य

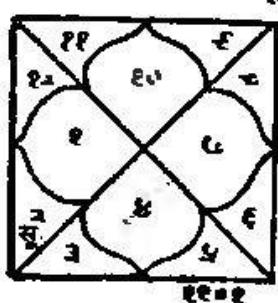


चौथे भाव में मित्र ‘यंगल’ की राशि पर स्थित उत्तम के ‘सूर्य’ के प्रभाव से ज्ञातक को माता, भूमि तथा अवन का योग्य सुख प्राप्त होता है। आशु तथा पुरातत्व का भी लाभ होता है। दैनिक जीवन अमीरी ढंग का रहता है।

सातवीं वीच-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से सुख में कमी आती है तथा राज्य एवं व्यवसाय की उन्नति में रुकावटें आती हैं।

‘मकर’ सम्बन्धी की कूष्मांसी के ‘वर्षमध्याव’ स्थित ‘सूर्य’ का चक्रांति

मकरलग्नः पंचमभावः सूर्य

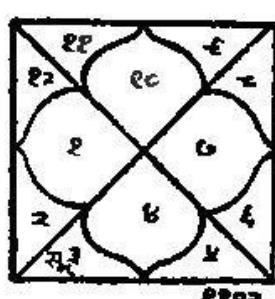


पौचवें भाव में शत्रु ‘कुकु’ की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष सेकष्ट भिनता है तथा विश्वाध्ययन में कठिनाई रहती है। बुद्धि भी कमजोर रहती है। ऐसा अक्षित विनाशुर संघा स्वभाव का कोशी होता है। उसे आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है।

सातवीं मिन्द-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ-प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तभी सफलतां मिल पाती है।

‘मकर’ सम्बन्धी की कूष्मांसी के ‘वर्षमध्याव’ स्थित ‘सूर्य’ का चक्रांति

मकरलग्नः चतुर्थभावः सूर्य

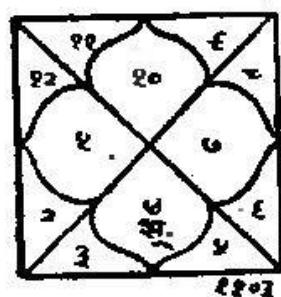


छठे भाव में मिल ‘बुद्ध’ को राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर हमेशा विजय प्राप्त करता है। आयु तथा पुरातत्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मिन्द-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से चौथे अक्षिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में असन्तोष भी रहता है।

‘मकर’ सम्बन्धी की कूष्मांसी के ‘सप्तममध्याव’ स्थित ‘सूर्य’ का चक्रांति

मकरलग्नः सप्तमभावः सूर्य

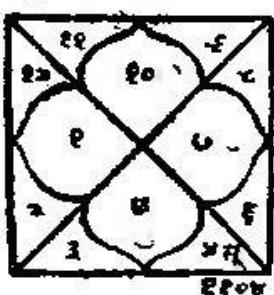


सातवें भाव में मिल चन्द्रमा को राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाहसीं का सामना करना पड़ता है तथा कभी-कभी बहुत हानि भी उठानी पड़ती है। आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है।

सातवीं मिन्द-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से मारीटिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है तथा कभी-कभी जिकार भी बनना पड़ता है।

‘महर’ लाल की कुण्डली के ‘व्यष्टमधाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

मकरलग्नः व्यष्टमधावः सूर्य

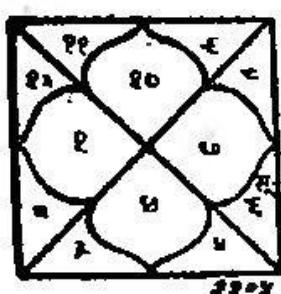


आठवें भाव में स्वराशि में स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक लो आयु तथा पुरातत्व की विकाष शक्ति प्राप्त होता है। वह बड़ा स्वाभिमानी, लेखस्वी, निष्ठर तथा बहादुर होता है। उसका दैनिक जीवन भी बड़ा प्रभाव-पूर्ण रहता है।

सातवीं शत्रुघ्नि-दूष्टि से द्वितीयमधाव को देखने से अन संबंध में परेशानी रहती है तथा कौटुम्बिक सुख में बाधाएं आती हैं।

‘महर’ लाल की कुण्डली के ‘व्यष्टमधाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

मकरलग्नः व्यष्टमधावः सूर्य

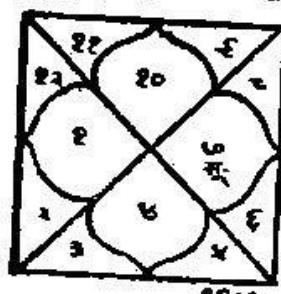


नवे भाव में मिल ‘बुध’ को राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक को आग्नीन्ति कुछ रुकावटों के साथ होती है। धर्म-पालन में भी शोषी बुटि रहती है तथा धर्म में भी कमी आती है। आयु तथा पुरातत्व की बृद्धि होती है। जिससे जातक रहस्यी ढंग का जीवन अवशीत करता है।

सातवीं मिल-दूष्टि से द्वितीय भाव को देखने से शत्रुघ्नियों के सुख तथा पराक्रम की समुचित बृद्धि नहीं हो पाती।

‘महर’ लाल की कुण्डली के ‘व्यष्टमधाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

मकरलग्नः व्यष्टमधावः सूर्य



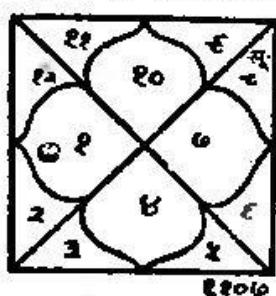
इसमें भाव में शत्रु ‘बुक’ को तुला राशि पर स्थित वीच के ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक को पिता पक्ष से बोर कर्ष उठाना पड़ता है। राज्य पक्ष से अतिष्ठा में कमी तथा व्यवसाय-पक्ष में दाधारों का का सामना करना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्व से शक्ति को भी कुछ हानि होती है।

सातवीं जिस तथा उच्च-दूष्टि से अनुर्वभाव

को देखने से आदा, शूमि तथा अद्यन का आमान्य सुख प्राप्त होता है।

'बकर' लग्न की शुभवर्षी के 'दक्षात्तरमात्र' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

अकरलग्न : एकादशभाव : सूर्य

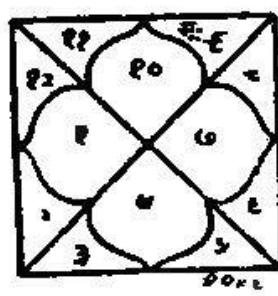


व्यारहूं भाव में मिल 'अंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है, परन्तु कभी-कभी कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। आयु तथा पुरातत्त्व की क्षमित का विशेष लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दूषि॰ से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से कष्ट रहता है तथा विश्वाष्यन के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा अक्षित उग्र स्वभाव का होता है।

'बकर' लग्न की शुभवर्षी के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलावेश

अकरलग्न : द्वादशभाव : सूर्य



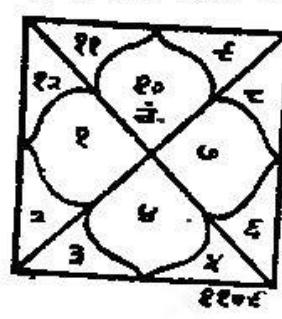
व्यारहूं भाव में मिल 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों में कठिनाई उपस्थित होती है। पेट में विकार भी रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व की भी कुछ हानि होती है।

सातवीं शत्रु-दूषि॰ से चतुर्थभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा आगड़े-टटे स्वयं ही दूर होते रहते हैं।

'बकर' लग्न में 'चन्द्रमा'

'बकर' लग्न की कुछवर्षी के 'अथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलावेश

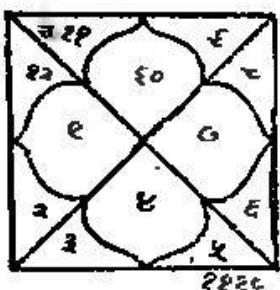
अकरलग्न : प्रथमभाव : चन्द्र



पहले भाव में शत्रु 'चन्द्रि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के ज्ञारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है। वह विनोदी, मानी, यशस्वी तथा कार्य-कुशल भी होता है।

सातवीं दूषि॰ से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री सुन्दर, सुयोग्य तथा स्वाभिमानिभी मिलती हैं तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी पूर्ण सफलता मिलती है।

‘मकर’ शब्द की कृत्यत्वों के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश
मकर लगतः द्वितीयभावः चन्द्रः

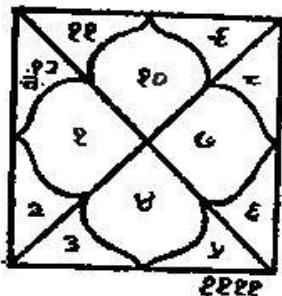


दूसरे भाव में शब्द 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव के जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु स्त्री के कारण कुछ परेशानी का अनुभव भी होता है।

सातवीं मित्रवृष्टि से अष्टमवार्ष को देखने से आगे तथा पुरातत्व की शक्ति में बढ़ि होती है। ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन अमीरी ढंग का होता है।

‘अहर’ सम्म की कृष्णली के ‘सतीयमाव’ स्थित ‘सन्तुमा’ का फसानेदा

अकर सम्मः सुतीषभावः चद्र

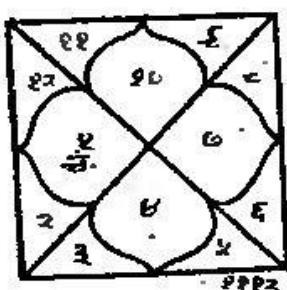


तीसरे भाव में मिल 'युक्त' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की भाई-बहनों का श्वेष सुख भिलता है तबा पराक्रम की वृद्धि होती है। स्त्री, व्यवसाय तथा कर्तव्य का सुख भी अच्छा रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नक्षमसाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्वी, सूखो तथा सम्पन्न होता है।

‘महार’ लाल की कूच्छली के ‘चतुर्व्याव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलात्मक

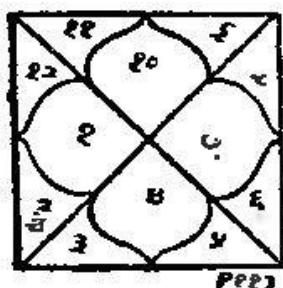
यकरसम्बन्धः चतुर्थमायः चांद्र



चौथे भाव में मिह़ 'मंगल' की राखि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से यातक को यात्रा, भूमि तथा भवन का क्षेष्ठ सुख प्राप्त होता है। घरेलू यातामरण लोनन्दमय रहता है। स्त्री सुन्दर मिलती है, अद्वसाय में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मिलिट्री से दसमधाव को देखने से पिसा, राज्य तथा स्थायी अधिकार के लिए भें या, प्रतिष्ठा, सहयोग, बन तथा अन्य साम्राज्य होते रहते हैं।

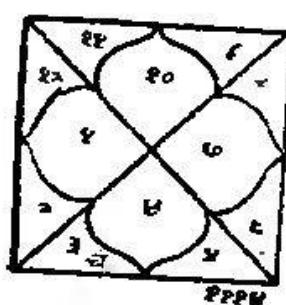
‘अकर’ लग्न की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश
अकर लग्न: पंचमभाव: चंद्र



पौत्रवें भाव में सामान्य मित्र ‘गुरु’ की राशि पर स्थित उल्लंघन के ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को निया, बुद्ध एवं सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष से भी सुख मिलता है।

सातवीं नीचदृष्टि से एकादशभाव की देखते से आमदनी के भाग में कुछ रुकावटें आती हैं। ऐसा अविक्षित हैसमुख सथा हाजिरजवाब भी होता है।

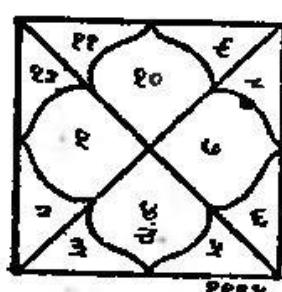
‘अकर’ लग्न की कुण्डली के ‘षष्ठभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश
अकर लग्न: षष्ठभाव: चंद्र



छठे भाव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक शब्द-पक्ष में विनाशता से काम निकालता है। स्त्री से विरोध सथा व्यवसाय में कठिनाई का सामना भी करना पड़ता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखते से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से साम भी मिलता रहता है।

‘अकर’ लग्न की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलादेश
अकर लग्न: सप्तमभाव: चंद्र

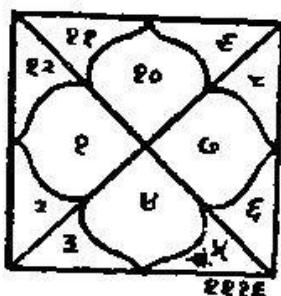


सातवें भाव में स्वराशि में स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री तथा उसके द्वारा यथेष्ट सुख की प्राप्ति होती है। व्यवसाय में भी पूर्ण सफलता मिलती है। चरेलू जीवन व्यानन्दमय बना रहता है।

सातवीं श्वशुदृष्टि से प्रथमभाव की देखते से लारीरिक प्रभाव में कुछ असंतोषपूर्ण बृद्धि होती है। यथा तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी असंतोष बना रहता है।

‘यकर’ लाल की कुप्रली के ‘अवमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलारेश

यकर सरन : अष्टमभाव : चंद्र

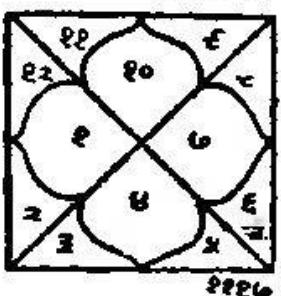


आठवें भाव में मित्र ‘कुर्य’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को आगु तथा पुरातत्व का योग्य लाभ होता है, परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। गृहस्थी का सुख भी कम रहता है। मन में अकालि रहती है।

सातवीं शत्रुदूषित से द्वितीयभाव की देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ प्राप्त होता है। वैसे दैनिक जीवन छाठ-बाट का रहता है।

‘यकर’ लाल की कुप्रली के ‘अवमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलारेश

यकर सरन : नवमभाव : चंद्र

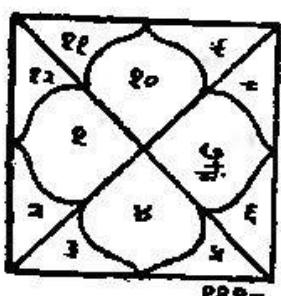


नवें भाव में मित्र ‘कुर्य’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक के भारव की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म में भी अत्यधिक रुचि बनी रहती है। ऐसा अविकृत धनी, यशस्वी, व्याधी तथा घर्मात्मा होता है।

सातवीं मित्रदूषित से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहितों से सुख तथा पराक्रम में बूढ़ि होती है।

‘यकर’ लाल की कुप्रली के ‘अवमभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का फलारेश

यकर सरन : दशमभाव : चंद्र

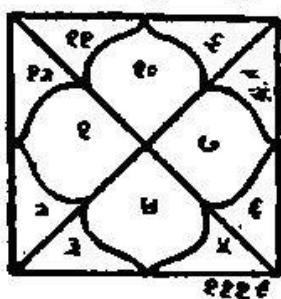


दसवें भाव में सामान्य मित्र ‘कुर्य’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सहयोग, राज्य से प्रतिष्ठा तथा व्यवसाय से लाभ की आप्ति होती है। अनोखा बड़ा रहता है। स्त्री सुन्दर तथा स्वाभिमानिनी मिलती है। घरेलू जीवन चल्लासपूर्ण रहता है।

सातवीं मित्रदूषित से चतुर्थभाव की देखने से याता, भूमि तथा अवन का सुख भी योग्य मिलता है। ऐसा अविकृत सुखी, धनी तथा भाग्यजाती होता है।

‘मकर’ राशि की कुण्डली के ‘एकावशभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का कलात्मक

मकर संग्रह : एकादशभाव : चंद्र

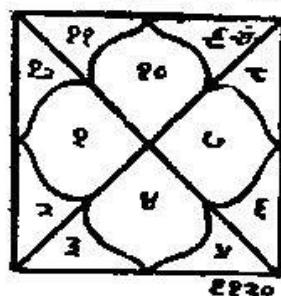


बारहवें भाव में मिल ‘मंगल’ की राशि पर स्थित नीच के ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक की आम-दर्दी में कुछ कमी रहती है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अल्प सुख मिलता है। गृहस्थी के कारण चिंताओं का शिकार बनना पड़ता है।

सातवीं उच्च-दूषित से चंचमभाव की देखने से विद्या, बुद्धि तथा तथा सम्मान का योग्य सुख प्राप्त होता है।

‘मकर’ राशि की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘चन्द्रमा’ का कलात्मक

मकर संग्रह : द्वादशभाव : चंद्र



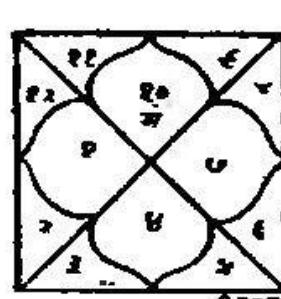
बारहवें भाव में मिल ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘चन्द्रमा’ के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से साम होता रहता है। स्त्री-सुख में कमी रहती है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। इसी से मन चिंतित तथा बमान्त बना रहता है।

सातवीं मिलदूषित से अष्टमभाव को देखने से शत्रु-पक्ष एवं जगहे के मामलों में जातक विनाशक से काम निकालकर अपना प्रभाव भी स्थापित करता है।

‘मकर’ राशि में ‘मंगल’

‘मकर’ राशि की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘मंगल’ का कलात्मक

मकर संग्रह : अष्टमभाव : मंगल



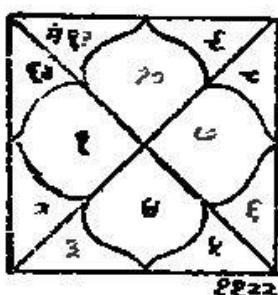
पहले भाव में शत्रु ‘शनि’ की राशि पर स्थित उच्च के ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक के जारीरिक सौन्दर्य एवं शक्ति में बुद्धि होती है। चौथी दूषित से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं अवन का अच्छा सुख प्राप्त होता है। रहन-सहन ठाठ-बाट का होता है।

सातवीं नीच-दूषित से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं मिल-दूषित से अष्टमभाव को देखने से आगे तथा

पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, दर्दी तथा चतुर होता है।

‘मकर’ सम्न की कुण्डली के ‘हृतीयभाव’ स्थित ‘भंगल’ का फलादेश

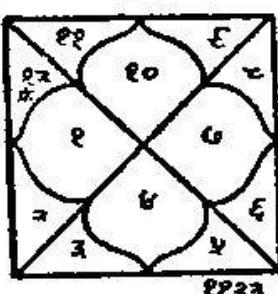
मकरलग्नः हृतीयभावः भंगल



सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। ऐना व्यक्ति अपने आधिक लाभ का अधिक व्याप्ति रखता है।

‘मकर’ सम्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘भंगल’ का फलादेश

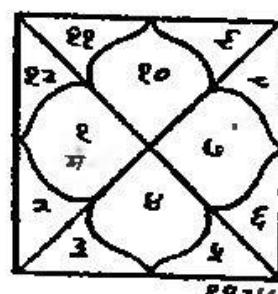
मकरलग्नः सृतीयभावः भंगल



शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ कमियों के साथ फिरा, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

‘मकर’ सम्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘भंगल’ का फलादेश

मकरलग्नः चतुर्थभावः भंगल



बूद्ध रहती है तथा लाभ के साथ संरक्षण से भिन्नता रहते हैं।

दूसरे भाव में शत्रु ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘भंगल’ के प्रभाव से जातक को मन-कुटुम्ब का पर्याप्त सुख सामान्य असंतोष के साथ प्राप्त होता है, परन्तु माता के सुख से कमी रहती है। भूमि एवं भवन का लाभ होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से विद्या, भूमि एवं सन्तान-पक्ष की उन्नति होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्व की शक्ति बढ़ती है।

सीसरे भाव में मित्र ‘युह’ की राशि पर स्थित ‘भंगल’ के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। माता, भूमि, भवन का सुख प्राप्त होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। ऐसा व्यक्ति बहुतुर तथा हिम्मती भो होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। आठवीं सामान्य

शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ कमियों के साथ फिरा, राज्य एवं व्यवसाय

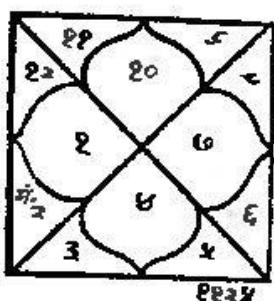
के क्षेत्र में सफलता मिलती है। चौथे भाव में स्वराशि-स्थित ‘भंगल’ के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का विशेष सुख प्राप्त होता है। चौथी नीच-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कमी रहती है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से दशमभाव की देखने से फिरा, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में संहयोग, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी

बूद्ध रहती है तथा लाभ के साथ संरक्षण से भिन्नता रहते हैं।

'मकर' सम्बन्धी के 'पंचमभाव' स्थित '**भंगल**' का फलादेश

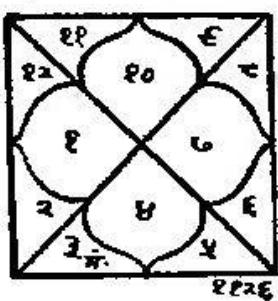
मकरलग्न : पंचमभाव : भंगल



वाहरी सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होता है।

'मकर' सम्बन्धी के 'षष्ठमभाव' स्थित '**भंगल**' का फलादेश

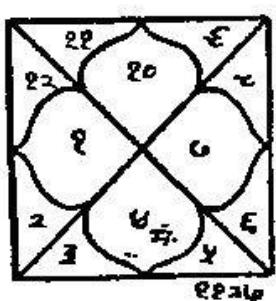
मकरलग्न : षष्ठमभाव : भंगल



होता है। आठवीं उच्च दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य स्वास्थ्य, एवं प्रभाव में वृद्धि होती है।

'मकर' सम्बन्धी के 'सप्तमभाव' स्थित '**भंगल**' का फलादेश

मकरलग्न : सप्तमभाव : भंगल



में कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

पौचवें भाव में सामान्य मिल 'शुक्र' की राशि

पर स्थित '**भंगल**' के प्रभाव से जातक को विद्या-दृष्टि तथा सन्तान-सुख का लाभ होना है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। चौथी मिल-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आमु एवं पुरातत्त्व की अक्षित में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से त्वरणी में एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं मिल-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा

वाहरी सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होता है।

छठे भाव में मिल 'गुरु' की राशि पर स्थित

'भंगल' के प्रभाव से जातक सद्गुण पर विशेष प्रभाव रखता है तथा जगड़ों से लाभ उठाता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है तथा आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती रहती हैं। चौथी मिल-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाव्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवीं मिल-दृष्टि के द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा वाहरी सम्बन्धों से लाभ

होता है। आठवीं उच्च दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य स्वास्थ्य,

एवं प्रभाव में वृद्धि होती है।

'मकर' सम्बन्धी के 'चतुर्थभाव' स्थित '**भंगल**' का फलादेश

भंगल

सातवें भाव में मिल 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीचे के '**भंगल**' के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष-तथा गृहस्थी के सुख में कमी रहती है। व्यवसाय माता, भूमि तथा भवन का सुख भी कमज़ोर रहता है। चौथी सद्गुण-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है।

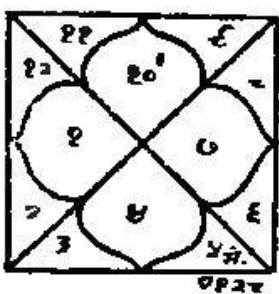
सातवीं उच्च-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं गौरव की वृद्धि होती है।

आठवीं सद्गुण-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से क्षन-संचय

में कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

‘यकर’ वायर की कम्पनी के ‘इन्टरनेट’ स्प्रिंट ‘संयुक्त’ का फैसलेवार

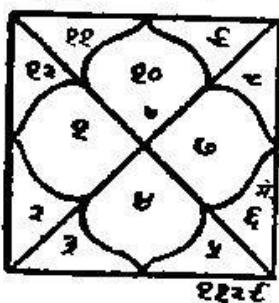
अकरलनः व्यष्टमभावः अंगल



देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में बढ़ि होती है।

‘महर’ सम की कृष्णली के ‘महाभाष’ स्थित ‘संसाल’ का फलावेश

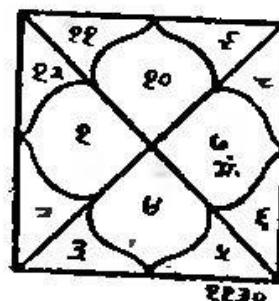
परकर्त्तव्यः महमधावः शंगल



माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। ऐसा अवित्त धनी, यशस्वी, सुखी, पराक्रमी तथा विनोदी होता है।

‘महर’ नाम की कृष्णती के ‘दशमवाव’ स्थित ‘अंगल’ का फलस्तेन

मकरलर्णव : दशमभाव : भंगल



आठवें भाव में मित्र 'झूर्म' की राति पर स्थित 'अंगल' के धनाद्वारा जातक की व्यायु तथा पुरातत्स्व की व्ययेष्ट अक्षित ग्राप्त होती है, परन्तु याता, झूर्म एवं अवन का सुख कुछ कुर्बन रहता है। चौथी दृष्टि से स्वरात्मि में एकादशभाव की देखने से आमदनी बहुत बच्ची रहती है। सातवीं भाव-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से कुछ कमियों के साथ धन-संचय में सफलता मिलती है तथा कुटुम्ब का सुख सामान्य रहता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को

व. वर्षों भाव में यित्र 'बुद्धि' की राशि पर स्थित 'भंगल' के प्रभाव से जातक के साथ तथा धर्म की उन्नति होती है। वह धर्मी, धर्मस्त्री, धर्मात्मा तथा न्यायप्रिय होता है। चौथी मिल-दृष्टि से हादरशाश्वत को देखने के कारण वर्ष धर्मिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

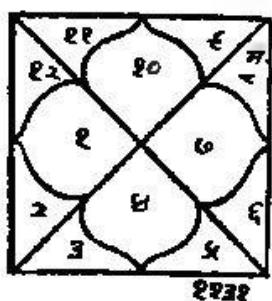
सातवीं भित्ति-दृष्टि से सूरीतभाव की देखने से आई-बहिरों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराजि में चतुर्थभाव की देखने से देखने का अनुभव होता है। देखने का अनुभव यादी यादादी

ल दसवें शाव में सामान्य शब्द 'मुक' की राजि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य संघ व्यवसाय के केंद्र में सफलता मिलती है। चौथी शब्द-नृष्टि से प्रश्नमाव की देखने के शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव में बढ़ि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराजि में चतुर्थमाव की देखने के याता, भूमि तथा अवन का सुख प्राप्त होता है । याठवीं सामान्य भिन्न-दृष्टि से चंचमभाव को देखने से अस्तान-पक्ष से सुख भिलता है तथा विद्या एवं शुद्धि की वृद्धि होती है ।

‘मकर’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

मकरलग्न : एकादशभाव : मंगल



ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित ‘मंगल’ के

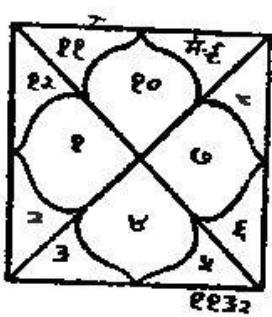
प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक बुद्धि होती है। माता, भूमि तथा अवन का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। चौथी शम्भु-दृष्टि से द्वितीय भाव की देखने से धन और कुटुम्ब का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

सातवीं भावात्य मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि तथा सत्तान का श्वेष सुख मिलता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से पाठ्य भाव को देखने से शक्ति-

पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रहता है तथा कागड़ों से साख होता है।

‘मकर’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : मंगल



बारहवें भाव में मित्र ‘शुरु’ की राशि पर

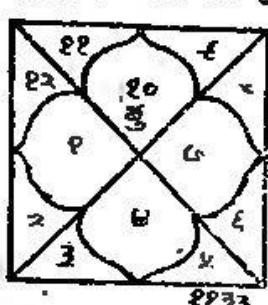
स्थित ‘मंगल’ के प्रभाव से जातक का खच अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। माता, भूमि तथा अवन के सुख में कमी रहती है। चौथी मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव की देखने से आई-हिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम भें बुद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ्यभाव को देखने से शक्ति-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। आठवीं नीच-दृष्टि से सप्तम भाव की देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी आती है तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है।

‘मकर’ लग्न में ‘बुध’

‘मकर’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : बुध

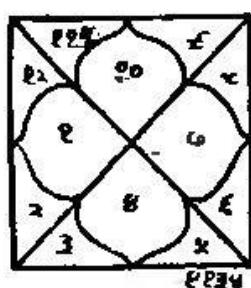


पहले भाव में मित्र ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में बुद्धि होती है। वह शक्ति-पक्ष पर स्वविवेक से प्रभाव स्थापित करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्रीं तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है, परन्तु व्यवसाय में कमी-कमी कठिनाइयाँ भी आती हैं।

'मकर' लग्न की मुख्यत्वी के 'त्रितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्नः त्रितीयभावः बुध

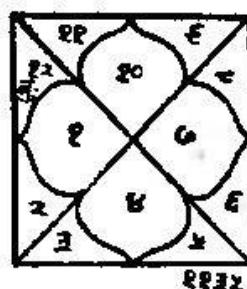


दूसरे भाव में मित्र 'भग्नि' को राशि पर स्थित 'बुध' से प्रभाव से जातक के धन तथा कौदूषिक सुख की वृद्धि होती है। यानि, प्रतिष्ठा तथा धर्म में रुचि भी रहती है।

सातवीं विज्ञ-दूषित से अष्टमभाव को देखने से बायु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। परन्तु कभी-कभी आग्योन्ति में कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

'मकर' लग्न की मुख्यत्वी के 'त्रितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्नः त्रितीयभावः बुध

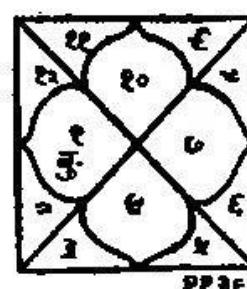


तीसरे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के बुध तथा पराक्रम में कुछ कमी का अनुभव होता है। आग्योन्ति तथा धर्म-प्राप्ति में भी कठिनाइयाँ आती हैं। यहाँ पर से भी कुछ परेशानी होती है।

सातवीं उच्च-दूषित से स्वराशि में अवमभाव की देखने से स्वविवेक-नुद्दि द्वारा आग्य तथा धर्म की उन्नति होती रहती है।

'मकर' लग्न की मुख्यत्वी से 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्नः चतुर्थभावः बुध

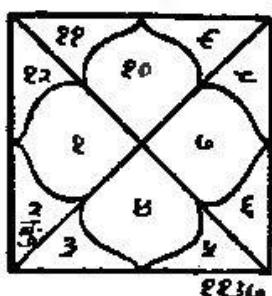


चौथे भाव में मित्र 'वंशल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा धन तथा धर्म का बुध प्राप्त होता है तथा भाग्य की भी उन्नति होती है। अरेनु बुध-शान्ति में कुछ विघ्न आते हैं।

सातवीं मित्र-दूषित से दक्षभ भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के लोक में सफलता मिलती है तथा सलु-ग्राक में विजय प्राप्त होती है।

‘मकर’ ताज्जन की कृष्णली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलावेश

मकरलग्नः पंचमभावः बुध

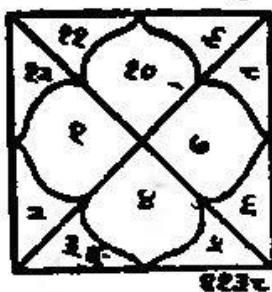


पाँचवें भाव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान, विद्या तथा बृद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। वह स्वपरिश्रम से आमदनी तथा धर्म की उन्नति भी करता है। शत्रु-पक्ष में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आग्ने की प्रक्रिया में यथेष्ट बृद्धि होती है।

‘मकर’ ताज्जन की कृष्णली के ‘षष्ठमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलावेश

मकरलग्नः षष्ठमभावः बुध

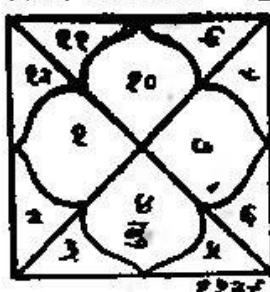


छठे भाव में स्वराशि में स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। आग्ने तथा धर्म की उन्नति में कुछ कठिनाइयाँ तो आती हैं, परन्तु बाद में वे हूर भी हो आती हैं।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव की देखने से वर्ष वृत्तिक रहता है तथा बाहुरो स्थानों के सम्बन्ध से लाभ तथा सुख भी मिलता रहता है।

‘मकर’ ताज्जन की कृष्णली के ‘हत्तमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलावेश

मकरलग्नः हत्तमभावः बुध

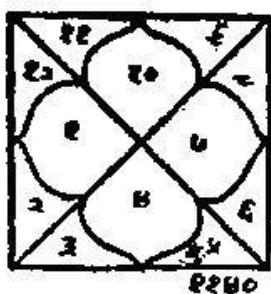


सातवें भाव में शत्रु ‘चन्द्रमा’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक स्वविवेक द्वारा आग्ने की वृत्तिक उन्नति करता है तथा व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है। स्त्री-पक्ष से अकान्ति मिलती है। व्यवसाय-पक्ष में कुछ कठिनाइयोंसाथ विशेष लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव की देखने से शारीरिक प्रभाव तथा यज्ञ की बृद्धि होती है। कभी-कभी बोधारियाँ तो आ चरेती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलावेश

मकरलग्नः अष्टमभावः बुधः

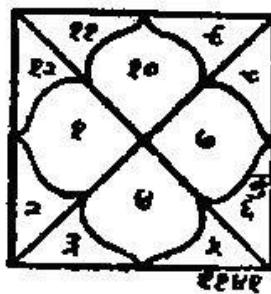


मकरें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आपु में बृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का साथ होता है। भाग्योन्नति में बहुत बाधाएँ आती हैं तथा यश में भी कमी रहती है। शनु-पक्ष से भी अशान्ति मिलती है।

सातवीं मित्र-दूषित से तृतीय भाव का देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ इन तथा बुद्धव का सुख प्राप्त होता है तथा पि दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलावेश

मकरलग्नः नवमभावः बुधः

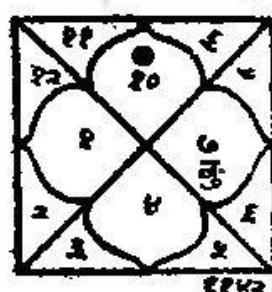


नवे भाव में स्वराशि स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक के आप्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। शनु-पक्ष पर सफलता प्राप्त होती है तथा क्षणिकों से लाभ होता है।

सातवीं नीचदूषित से तृतीय भाव की देखने के कारण आद्यों से विरोध कहता है तथा भाई-बहिन के बुध में कमी आती है। पराक्रम भी शिथिल बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलावेश

मकरलग्नः दशमभावः बुधः

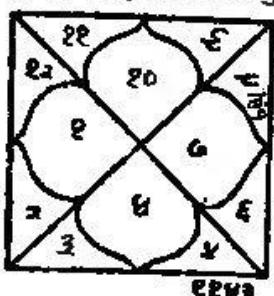


दसवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, प्रतिष्ठा, सहयोग तथा यश की प्राप्ति होती है। शनु-पक्ष पर विजय तथा धनोपार्जन में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दूषित से चतुर्थ भाव को देखने से आता, भूमि एवं भवन का बुध प्राप्त होता है, परन्तु उन्नति के मार्ग में रुकावटें भी आती रहती हैं।

‘मकर’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : बुध

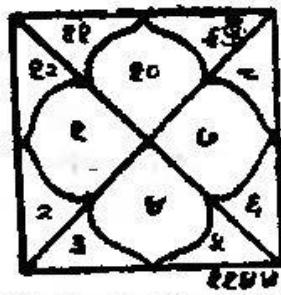


बारहवें भाव में मित्र ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक बुद्धि होती है। तथा शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। विवेक तथा परिश्रम द्वारा भाग्य की विशेष उन्नति होती है। स्वार्थयुक्त धर्म का पालन भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव की देखने से सन्तान-पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलती है, परन्तु विद्या-बुद्धि की विशेष उन्नति होती है।

‘मकर’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : बुध



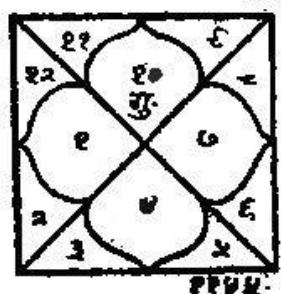
बारहवें भाव में मित्र ‘शुरु’ की राशि पर स्थित ‘बुध’ के प्रभाव से जातक का सर्व अधिक रहता है, परन्तु उसकी सूर्ति दिना किसी कठिनाई के होती रहती है। वाहरी स्थानों का सम्बन्ध सेलाभ होता है। भाग्य-न्यूनति में कठिनाईयों आती है तथा यश की कमी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में घट्ठ भाव की देखने से शत्रु-पक्ष से कुछ कठिनाई होती है, परन्तु भाग्य-बल से वह उन पर विजय भी पा सेता है।

‘मकर’ लग्न में ‘शुरु’

‘मकर’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘शुरु’ का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : शुरु

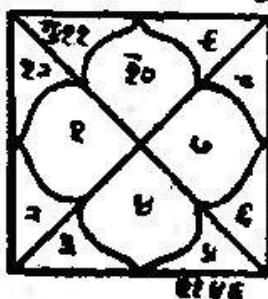


एहते भाव में शत्रु ‘शनि’ की राशि पर स्थित नीच के ‘बुध’ के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल रहता है। आई-बहिन के सुख में कमी आती है एवं पराक्रम भी अल्प रहता है। खच्चे चलाने में कठिनाई होती है तथा वाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी असंतोष-जनक रहता है। पाँचवीं शनि-दृष्टि से पंचम भाव की देखने से विद्या-बुद्धि के लंबे में बुटिपूर्ण सफलता मिलती है तथा सन्तान-पक्ष से सुख-दुःख दोनों ही मिलते हैं।

सातवीं उच्च-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से स्वीं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। नवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव की देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में न्यूनाधिकता होती रहती है।

‘अकर’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘शुरु’ का फलावेश

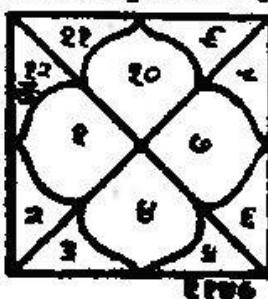
मकरलग्न : द्वितीयभाव : शुरु



नवीं शनु-दूष्टि से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलताएँ मिलती हैं।

‘अकर’ लग्न की कुण्डली के ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘शुरु’ का फलावेश

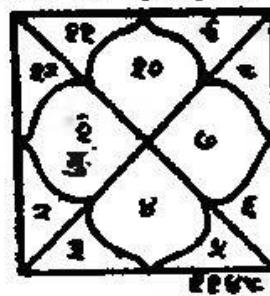
मकरलग्न : तृतीयभाव : शुरु



नवीं मिन्न-दूष्टि से एकादशभाव की देखने से व्यामिकी क्षेष्ट रहती है। ऐसा अक्षित सुखी जीवन विताता है।

‘अकर’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘शुरु’ का फलावेश

मकरलग्न : चतुर्थभाव : शुरु



नवीं दूष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव की देखने से खंच अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से धरन्यैठे ही साथ प्राप्त होता है।

दूसरे भाव में शनु ‘शनि’ की राशि पर स्थित व्ययेश शुरु के प्रभाव से जातक के धन-संग्रह में कमी आती है तथा कुटूम्ब से भी परेशानी रहती है। खंच अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से साथ होता है। पांचवीं मिन्न-दूष्टि से वर्षभाव को देखने से शनु-पक्ष में बुद्धिमानी से काम निकलता है।

सातवीं मिन्न-दूष्टि से अष्टम भाव की देखने से आगु तथा पुरातत्त्व का कुछ लाभ मिलता है।

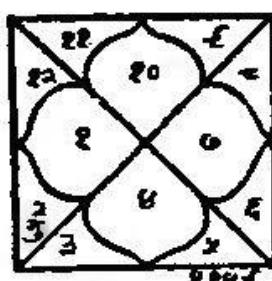
तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित ‘शुरु’ के प्रभाव से जातक की आई-बहिनों का बुध मिलता है, परन्तु पुरुषार्थ में कमी आती है। खंच लीक से चलता है। बाहरी स्थानों से लाभ होता है। पांचवीं उच्च तथा मिन्न-दूष्टि से सप्तम भाव को देखने से सुन्दर इक्कीं मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। सातवीं मिन्न-दूष्टि से सप्तम भाव की देखने से आग्य तथा धर्म के क्षेत्र में उत्तार-व्याध आते हैं।

चौथे भाव में मिन्न ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘शुरु’ के प्रभाव से जातक को जाता, भूमि एवं भवन में बुध में तथा आई-बहिन के बुध में भी कुछ कमी रहती है। पांचवीं मिन्न-दूष्टि से अष्टम भाव की देखने से आगु एवं पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

सातवीं शनु-दूष्टि से दशम भाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

अकरलग्न : पंचमभाव : बुध



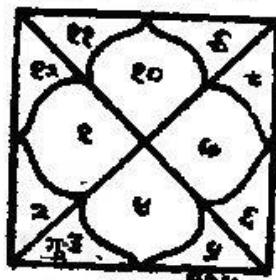
पाँचवें भाव में जलू 'गुरु' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से न्यूनाधिक लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में भी कुछ कमी रहती है। बुद्धि-वक्त से खर्च बढ़ता है तथा बाहरी सम्बन्धों से साध होता है। भाई-बहिनों से सामान्य बुध मिलता है तथा पराक्रम की बृद्धि होती है।

पाँचवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव की देखने से शार्य एवं घर्म की सामान्य बृद्धि होती है। सातवीं

मित्र-दृष्टि से एकादशभाव की देखने से वामदण्डी अच्छी रहती है। नवीं नीच-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठ्यभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

अकरलग्न : षष्ठ्यभाव : बुध



छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु'

के प्रभाव से खर्च की व्यक्ति से जलू-पक्ष पर प्रभाव स्वापित होता है। भाई-बहिनों से सामान्य विरोध रहता है तथा पराक्रम में कमी आती है।

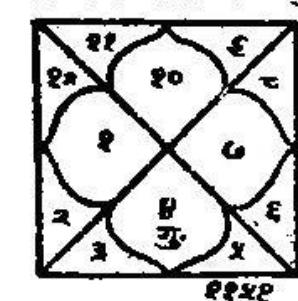
पाँचवीं जलू-दृष्टि से दक्षमभाव को देखने से चितां, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से साध होता है।

नवीं जलू-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से उन तथा कुटुम्ब के सूख की बृद्धि के लिए अत्यधिक परिषद करने पर भी कष्ट ही बिलता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'कल्पमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

अकरलग्न : कल्पमभाव : बुध

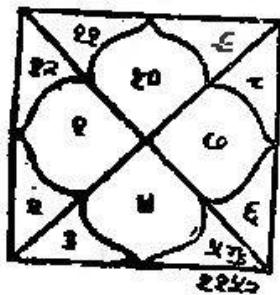


सातवें भाव में मित्र 'बन्द्रमा' की राशि पर स्थित उच्च के 'गुरु' के प्रभाव से जातक की सुन्दर पत्नी मिलती है तथा रक्षी और व्यवसाय से बुध प्राप्त होता है। बाहरी सम्बन्धों से साध बिलता है तथा खर्च अधिक रहता है।

पाँचवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव की देखने से बामदण्डी अच्छी रहती है। सातवीं नीच तथा जलू-दृष्टि से प्रथम भाव की देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में तृतीय भाव की देखने से भाई-बहिनों के सूख तथा पराक्रम में बृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

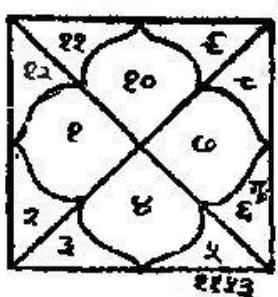
मकरलग्न : अष्टमभाव : गुरु



भवन के सूख में कुछ लुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

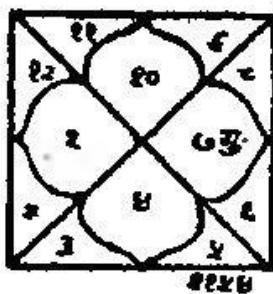
मकरलग्न : नवमभाव : बुध



होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से घष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में स्व-विवेक-बुद्धि से सफलता मिलती है।

'मकर' लग्न को कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : दशमभाव : गुरु



माता के सूख में कमी रहती है, परन्तु भूमि तथा भवन का सूख खर्च के बल पर मिलता है। नवीं मित्र-दृष्टि से घष्ठ भाव की देखने से शत्रु-पक्ष पर बुद्धिमानी से ग्राहक स्वापित होता है।

आठवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुह' से प्रभाव से जातक की आगु तथा पुरातत्व की कुछ हानि होती है। पौचवी दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक होता है तथा वाहरी सम्बन्धों से लाभ रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सूख में कुछ कमी रहती है। नवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से माता, भूमि एवं

नवे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'बुध' में प्रभाव से जातक के भाग्य संया धर्म के पक्ष में कमज़ोरी रहती है। वाहरी सम्बन्धों से कुछ लाभ होता है जिससे खर्च चलता रहता है। पौचवी नौव-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है। धन भी व्याप्त रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव की देखने से, आई-बहिनों के सूख तथा पराक्रम में सामान्य बृद्धि

होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से घष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में स्व-विवेक-बुद्धि से सफलता मिलती है।

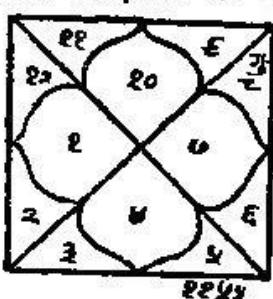
शत्रु-दृष्टि भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के सेवा में कमी रहती है। आई-बहिनों के सूख तथा पराक्रम में बृद्धि होती है, जिसके कारण खर्च अच्छी तरह चलता है। वाहरी स्थानों से लाभ होता रहता है। पौचवी शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सूख में कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से

‘एकर’ सामग्री की कृषिस्त्री के ‘एकावशमाव’ स्थित ‘शुरु’ का फलादेश

मुकुरलग्न : एकादशशत्रुव : बध

ग्यारहवें भाव में मित्र 'भगव' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आमदानी अच्छी रहती है। बाहरी सम्बन्धों से भी लाभ होता है, अतः खर्च आराम से चलता है। पाँचवें दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में बुद्धि होती है।

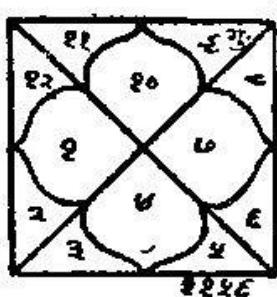


को देखने से स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अफलता मिलती है।

‘मकर’ लग्न को कुण्डली के ‘द्वादशामास’ स्थित ‘शुद्ध’ का फलादेश

मुक्तरलभनः द्वादशभाष्वः ब्रूध

बाहरहैं भाव में स्वराजिनि-स्थित 'शुरु' के प्रभाव से जातक का खंबे अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से सामने मिस़का रहता है। शाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। पौच्छी मिल-दृष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से माता, भूमि एवं भवन का सामान्य सुख मिलता है।



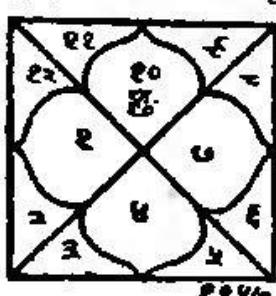
नवीं मित्र-दृष्टि से व्यष्टम् भाव की देखने से आगे तथा पुरातत्त्व का लाभ कुछ कभी के साथ होता है। परन्तु ऐसा व्यक्ति शानदार खर्च करता तथा समाज में प्रभाव-धारी बना रहता है।

‘मकर’ लखन में ‘शुक्र’

‘भाकर’ लम्ज की कुख्यती के ‘प्रबन्धभाव’ स्थित ‘हाल’ का फलावेश

मुक्तिरत्न : मृष्टमध्यात्म : शक्ति

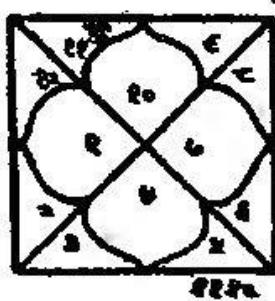
यहसे भाव में मित्र फनि की राशि-पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं सम्मान की आप्ति होती है। पिता, राज्य एवं अवसाय के क्षेत्रों में भी सफलता मिलती है। समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। सन्तान से सूख मिलता है तथा विद्या-चूडि का क्षेष्ठ लाभ होता है।



साहकी मिशन-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से पत्ती सुन्दर तथा योग्य मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी साख होता रहता है।

'मकर' लग्न की कृष्णसी के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : द्वितीयभाव : शुक्र



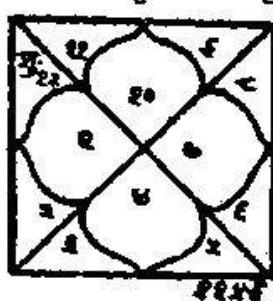
दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की घन तथा कृदृग्ध का पर्याप्त सुख मिलता है। पिता, व्यवसाय तथा राज्य के क्षेत्रों से भी लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कठिनाई रहती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से वर्षम भाव की देखने से आगे तथा पुरातत्त्व में कुछ कमी आती है।

ऐसा अक्षित घनी और यशस्वी होता है परन्तु विनियत रहता है।

'मकर' लग्न की कृष्णसी के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

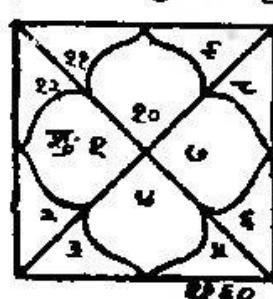


तीसरे भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा आई-वहिन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। विद्या एवं संतान का लाभ होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएं मिलती हैं।

सातवीं नीच-दृष्टि से नवम भाव की देखने से आग्नेयन्ति तथा द्वार्ष-पालन में कुछ कमी रहती है तथा यश भी कम मित्र पाता है।

'मकर' लग्न की कृष्णसी से 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : चतुर्थभाव : शुक्र



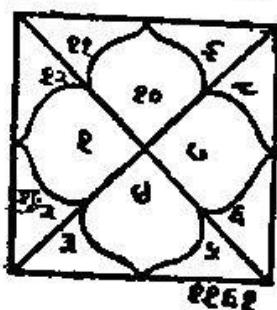
चौथे भाव में सामान्य मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को माता, श्रुमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। बुद्धि नीच से आगदनी भी वर्क्षी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में दक्षम भाव की देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सफलता, यश, लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

ऐसा अक्षित नीतिज्ञ, शीलवान, विचारकील तथा सुख-कान्तिपूर्वक जीवन अतीत करने वाला होता है।

'यकर' सम्म की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मकररसग्नः पंचमभावः शुक्र

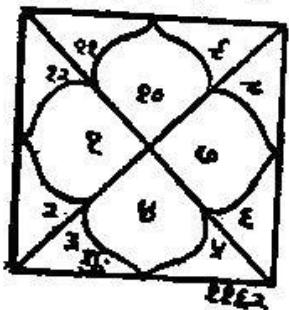


पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विद्या-नुदि का यथेष्ट साध होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्रों में भी सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति प्रातः हुक्मसं-पसन्द तथा कायदे-कानून माता होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव की वेदने से जातक की आमदानी यथेष्ट रहती है और वह निरन्तर उन्नति करता चला जाता।

'यकर' सम्म की कुण्डली के 'बलभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मकररसग्नः बलभावः शुक्र

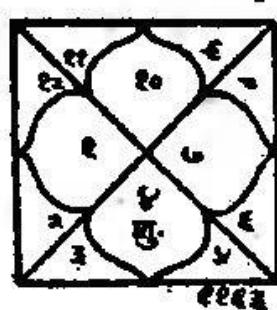


छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रखता है। पिता से कुछ भवशेष के साथ ज्ञाति प्राप्त होती है तथा राज्य से सम्मान मिलता है किंतु सन्तान तथा विद्या-पक्ष दुर्बल रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव की वेदने से उच्च विधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता रहता है। ऐसा व्यक्ति दिमागी रूप से भी विस्तित बना रहता है।

'यकर' सम्म की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मकररसग्नः सप्तमभावः शुक्र

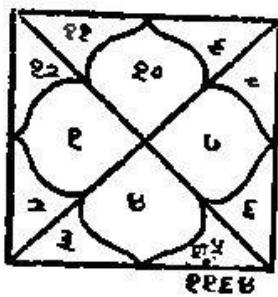


सातवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को सुन्दर तथा सुयोग्य स्त्री मिलती है। पिता, राज्य, व्यवसाय, सन्तान तथा विद्या पक्ष से भी सुख मिलता है। घरेलू ओवन आनन्दपूर्ण रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव की वेदने से शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। राजकीय तथा सामाजिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा भी मिलती है।

'मकर' लक्ष्म की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मकरलग्नः अष्टमभावः शुक्र

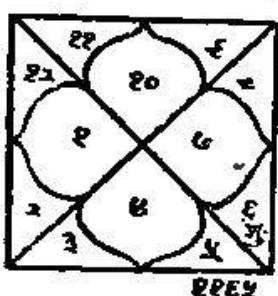


आठवें भाव में शनु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को पुरातत्व एवं आयु की शक्ति का लाभ होता है। पिता तथा सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है एवं राज्य तथा विद्या के क्षेत्र लुटिपूर्ण रहता है।

सातवीं मिन्दूष्टि से द्वितीयभाव की देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने परिश्रम तथा मुप्त युक्तियों के यश पर ज़िन्दगी करता है।

'मकर' लक्ष्म की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मकरलग्नः नवमभावः शुक्र

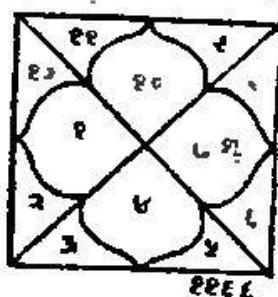


नवें भाव में मिन्दूष्टि 'जुध' की राशि पर स्थित नीच के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में बाधाएँ आती हैं। पिता, राज्य, व्यवसाय, सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में लुटिपूर्ण सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं उच्च तथा शनुदूष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुस्तवार्य से तरक्की करता है।

'मकर' लक्ष्म की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलावेश

मकरलग्नः दशमभावः शुक्र

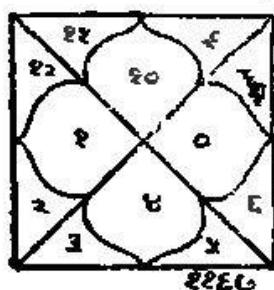


दसवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में व्यत्यधिक सहयोग, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। सन्तान तथा विद्या-पक्ष भी प्रबल रहता है।

सातवीं शनुदूष्टि से चतुर्थ भाव की देखने से माता, शूभ्र तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है तथा घरेलू जीवन उल्लासमय बना रहता है।

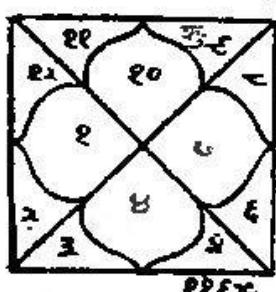
‘मकर’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

मकर लग्न : एकादशभाव : शुक्र



‘मकर’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

मकर लग्न : द्वादशभाव : शुक्र



ग्राहकर्षें भाव में शत्रु ‘शंगल’ की राशि पर स्थित ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में स्थित पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का भी वृद्ध लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी योग्यता के क्षेत्र पर तरक्की करता है।

‘मकर’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

मकर लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

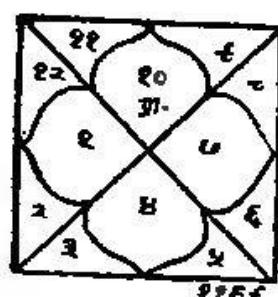
बारहवें भाव में शत्रु ‘शुहू’ की राशि पर स्थित ‘शुक्र’ के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है। तथा बाहरी स्थानों के सर्वांग से लाभ प्राप्त होता रहता है। पिता पक्ष से हानि, सन्तान-पक्ष से कष्ट तथा विद्या-पक्ष में कमी रहती है। मानसिक विन्ताएँ बनी रहती हैं।

सातवीं मिन्दूष्टि से घण्ट भाव की देखने से शत्रु-पक्ष में चतुराई से काम निकलता है। ऐसे व्यक्ति को उन्नति करने में कुछ विस्तृत लगता है।

‘मकर’ लग्न में ‘शनि’

‘मकर’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

मकर लग्न : प्रथमभाव : शनि

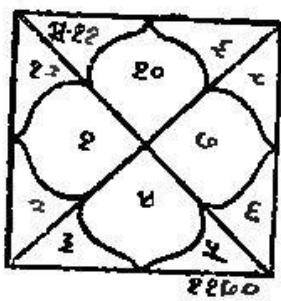


पहले भाव में स्वराशि-स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। वह स्वाभिमानी तथा यशस्वी भी होता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव की देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु माई-बहिनों से असन्तोष रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव की देखने से स्त्री से असन्तोष रहता है तथा व्यवसाय की वृद्धि के लिए प्रयत्न करता है। दसवीं उच्चदृष्टि से दसमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सहयोग, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

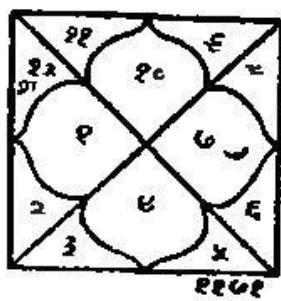
'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : द्वितीयभाव : शनि



'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

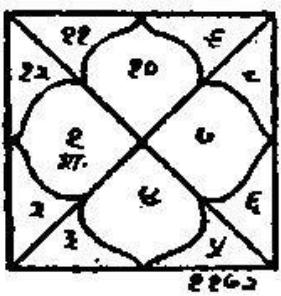
मकर लग्न : तृतीयभाव : शनि



द्वादश भाव को देखने से खंड अधिक रहता है तथा वाहरी स्थानों से कुछ कठिनाई के साथ लाभ मिलता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : चतुर्थभाव : शनि



करीर सुन्दर होता है तथा आत्मदल की अधिकता पाई जाती है।

हूसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की धन-संचय एवं कौटुम्बिक सुख का व्यवेष्ट लाभ होता है। तीसरी नीच-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं अवन के सुख में कमी रहती है।

सातवीं शतुदृष्टि से अष्टम भाव की देखने से आयु तथा पुरातत्व की कुछ हानि होती है। दसवीं शतुदृष्टि से एकादश भाव की देखने से कुछ कठिनाईयों के साथ आमदनी में वृद्धि होती है।

तीसरे भाव में शतुर 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाई के साथ भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। पुष्पार्थ के बल पर घन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। तीसरी मिन्नदृष्टि से पंचम भाव की देखने से अन्तान तथा विद्या के लोक में विशेष सफलता मिलती है।

सातवीं मिन्नदृष्टि से नवम भाव को देखने से आग्न तथा घर्म की वृद्धि होती है। दसवीं शतुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से आग्न तथा घर्म की वृद्धि होती है।

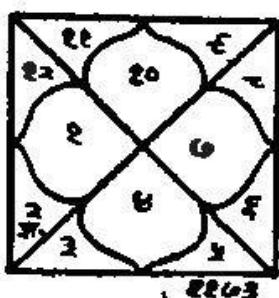
द्वादश भाव की देखने से खंड अधिक रहता है तथा वाहरी स्थानों से कुछ कठिनाई के साथ लाभ मिलता है।

चौथे भाव में शतुर 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'शनि' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा अवन के सुख में कमी रहती है। शारीरिक सौन्दर्य एवं धन-कुटुम्ब का सुख भी कम ही मिलता है। तीसरी मिन्नदृष्टि के षष्ठ भाव की देखने से शतुर-पक्ष पर विजय मिलती है तथा कागड़ों से लाभ होता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं धर्मसाय के लोक में सफलताएँ मिलती हैं। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से

‘मकर’ राशि की कुण्डली के ‘पंचमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

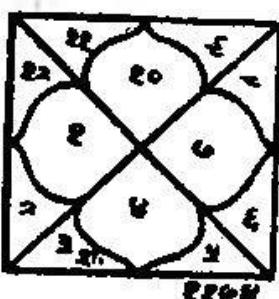
मकरस्त्रः पंचमभावः शनि



आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। दसवीं शृंगि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख में वृद्धि होती है।

‘मकर’ राशि की कुण्डली के ‘षष्ठिभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

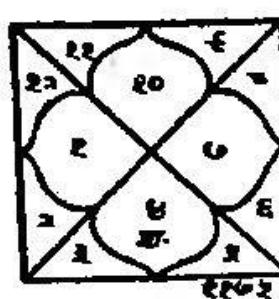
मकर लग्नः षष्ठिभावः शनि



रहता है तथा बाहरी हथानों से सम्बन्ध बनता है। दसवीं शृंगि से तृतीयभाव को देखने से शार्दूल-बहिनों से कुछ विमनत्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

‘मकर’ राशि की कुण्डली के ‘सप्तमभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलादेश

मकर स्त्रः सप्तमभावः शनि



देखने से शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है तथा स्वाभिमान एवं प्रभाव का लाभ होता है। दसवीं नींध तथा शृंगि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमितथा भवन के सुख में कमी रहती है।

पांचवें भाव में मित्र ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक की सन्तान, विद्या तथा कुद्दि का विशेष साध होता है। शारीरिक सौन्दर्य, दाणी तथा योग्यता की भी प्राप्ति होती है। तीसरी शृंगि से सप्तमभाव की देखने से स्त्री से कुछ वसंतोद्धरण होते हुए भी उसमें अधिक अनुरक्ति होती है तथा व्यवसाय-पक्ष में भी कुछ लुटिर्ण सफलता मिलती है।

सातवीं शृंगि से एकादशभाव को देखने से

आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। दसवीं शृंगि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुछ कमी रहती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बढ़ता है। कुटुम्ब से सामान्य विरोध रहता है तथा धन-संश्रह में कमी आती है।

तीसरी शृंगि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व का अधिक साध नहीं होता। सातवीं शृंगि से ह्रादयभाव को देखने से खर्च अधिक सम्बन्ध बनता है। दसवीं शृंगि से तृतीयभाव को देखने से विमनत्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

सातवें भाव में शत्रु ‘चतुर्थभाव’ की राशि पर

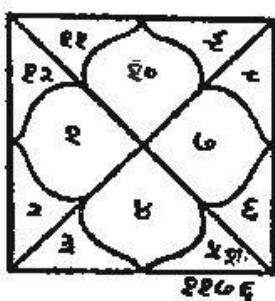
स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से जक्षित एवं आत्मीयता मिलती है तथा परिश्रम के ह्वारा व्यवसाय में उन्नति होती है। धन तथा सन्तान का सुख भी मिलता है। तीसरी मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवीं शृंगि से स्वराशि में प्रथम भाव को

देखने से शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है तथा स्वाभिमान एवं प्रभाव का लाभ होता है। दसवीं नींध तथा शृंगि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमितथा भवन

'मकर' स्थान की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : अष्टमभाव : शनि

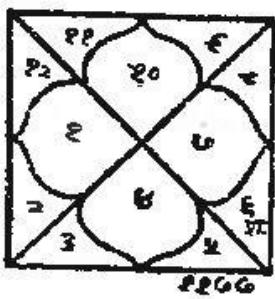


आठवें भाव में शनु 'शुर्य' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा धन-कुटुम्ब की हानि पहुँचती है। तीसरी उच्चदृष्टि से दशमभाव की देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दृष्टि से इवराशि में द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का अल्प सुख मिलता है। दसवीं मिन्नदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्नात-पक्ष की वृद्धि होती है।

'मकर' स्थान की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : नवमभाव : शनि



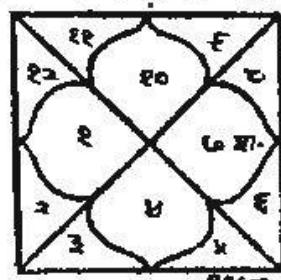
नवें भाव में मिल 'ब्रुथ' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के भाय तथा धर्म की पर्याप्त उन्नति होती है। शारीरिक प्रभाव, सम्मान तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। तीसरी शनुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं शनुदृष्टि से दूसरी भाव की देखने से भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

दसवीं मिन्नदृष्टि से अष्ट भाव को देखने से धन एवं शारीरिक शक्ति के क्षेत्र से शनु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा जगड़े के मामलों से लाभ होता है।

'मकर' स्थान की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : दशमभाव : शनि

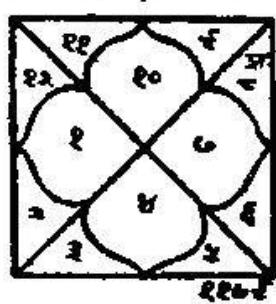


दसवें भाव में मिल 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'शनि' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सुख, सहयोग, सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी यथेष्ट मिलता है। तीसरी शनु-दृष्टि से द्वादश भाव की देखने से खर्च विधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से असन्तोष रहता है।

सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा मदन के सुख में कमी आती है। दसवीं शनुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-सुख में कुछ कमी तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ परेशानियाँ आती हैं।

‘मकर’ संग्रह की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलावेश

मकरलग्न : एकादशभाव : शनि

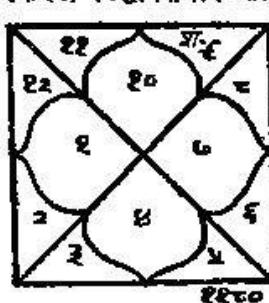


बारहवें भाव में शनु ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में प्रभाव भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, यथा, प्रतिष्ठा, आत्मवल तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है।

सातवीं मिन्दूष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-वृद्धि के क्षेत्र में भी योग्य सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदूष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु के विजय में विना रहती है तथा पुरातत्व शाक्त का लाभ होता है।

‘मकर’ संग्रह की कुण्डली के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘शनि’ का फलावेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : शनि



बारहवें भाव में शनु ‘शुरु’ की राशि पर स्थित ‘शनि’ के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा वाहरी स्थानों से लाभ होता है। धन, कुटुम्ब तथा शारीरिक स्वास्थ्य के सुख में कमी जाती है।

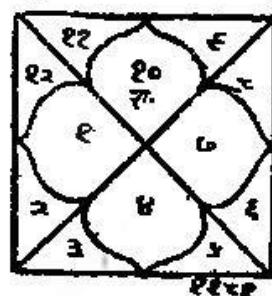
तीसरी दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव की देखने से धन-प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्न करना पड़ता है। सातवीं मिन्दूष्टि से षष्ठ भाव की देखने से शनु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा जगड़े के मामलों में विजय मिलती है।

दसवीं मिन्दूष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा आमदान् होता है।

‘मकर’ लग्न में ‘राहु’

‘मकर’ लग्न की कुण्डली के ‘प्रथमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलावेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : राहु

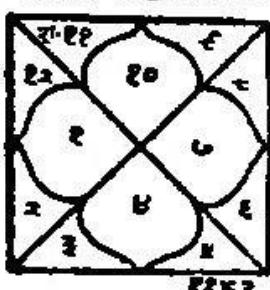


पहले भाव में मिन्दूष्टि ‘शनि’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी जाती है। कमी शरीर में चोट भी लगती है। कमी कोई विक्रेय रोग भी होता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, चतुर, सतर्क तथा युक्ति-बल से अपने प्रभाव की वृद्धि करने वाला होता है।

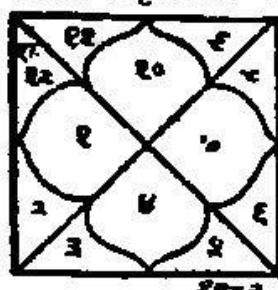
'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न: द्वितीयभाव: राहु



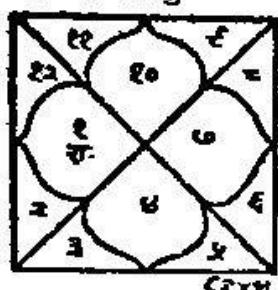
'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न: तृतीयभाव: राहु



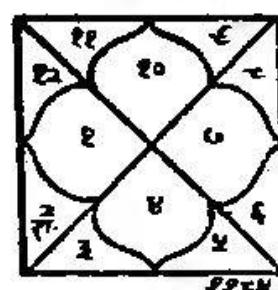
'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न: चतुर्थभाव: राहु



'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न: पंचमभाव: राहु



दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक धन तथा कुटुम्ब के कारण चिन्तित रहता है तथा कष्ट भोगता है। कभी-कभी अृण भी लेना पड़ता है। प्रकट रूप से वह अनी समझा जाता है, परन्तु यथार्थ में धन की कमी रहती है। बाद में गृह्ण युक्तियों के बल पर वह अपनी व्यायिक स्थिति को सुदृढ़ भी बना लेता है।

तीसरे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को शाई-बहिनों की ओर से कष्ट मिलता है, परन्तु प्रराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। और से दुर्बलता अनुभव करने पर भी वह प्रकट रूप में बड़ा हिम्मती होता है तथा कठिनाइयों पर विजय पाता रहता है।

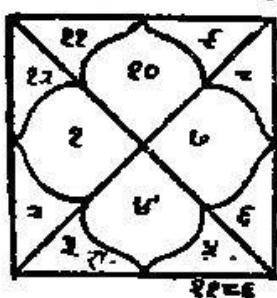
चौथे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को भाता, शूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। कमी भावृशुमि का ल्याग भी करना पड़ता है। अन्त में वह गृह्ण युक्तियों के बल पर सुख तथा प्रभाव की वृद्धि करता है। ऐसा व्यक्ति हिम्मती तथा बैरंगान् होता है।

पांचवें भाव में मित्र 'कुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है तथा विद्या ग्रहण करने में भी कठिनाई आती है। परन्तु उसको वृद्धि बड़ी तीव्र होती है।

वह होशियार तथा गृह्ण युक्तियों में प्रबोध होता है। अन्त में, सन्तान तथा विद्या दोनों ही जेवों में सफलता भी या लेता है।

'महर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्भाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्नः चतुर्भावः राहु

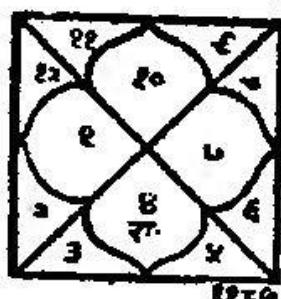


छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा अगड़ों के मामलों में सफलता प्राप्त करता है।

वह कूटनीतिज्ञ, विवेकी, सीध्र-शुद्धि तथा गुप्त युक्तियों का जानकार होता है। ऐसा अस्ति ग्रायः कभी वीमार नहीं होता।

'महर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्भाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

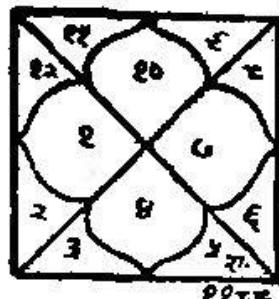
मकरलग्नः सप्तमभावः राहु



सातवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से भ्रान्त कष्ट होता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों जाती रहती है। उसकी भूलेन्द्रिय में रोग भी होता है। वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल से कठिनाइयों पर कुछ विजय भी पा सकता है।

'महर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्भाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

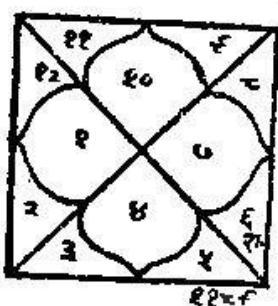
मकरलग्नः अष्टमभावः राहु



आठवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के जीवन पर बड़े संकट आते हैं तथा कभी-कभी मूल्य-तुल्य कष्ट भी भोगना पड़ता है। पुरातत्त्व की हानि भी होती है। उदर व्यवसा गुदा-सम्बन्धी रोगों का शिकार बनना पड़ता है। वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर जैसे-तैसे जीवन-शापन करता है।

‘मकर’ सन्न की कुण्डली के ‘मवमधाव’ स्थित ‘राहु’ का फलावेश

मकरलग्न : नवमभाव : राहु

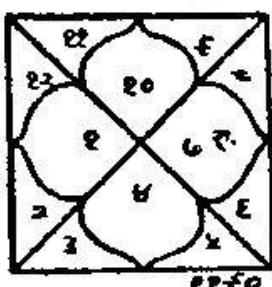


नवें भाव में मित्र ‘बुध’ को राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में निरस्तर बाधाएँ आती रहती हैं। कभी-कभी विशेष कठिनाइयों का शिकार भी बनता है। धर्म-पालन में भी कमी रहती है।

कठिन संघर्ष, परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर वह बोड़ी-बहुत उन्नति भी कर सकता है।

‘मकर’ सन्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलावेश

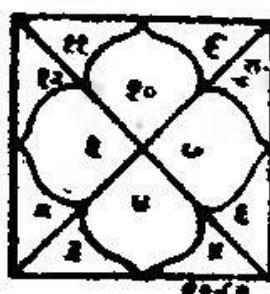
मकरलग्न : दशमभाव : राहु



दसवें भाव में मित्र ‘शुक्र’ को राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विघ्नों वाधाओं का सामना करता पड़ता है। परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर उन्हें दूर करता हुआ आगय की उन्नत बनाता है। यद्यपि उसे अनेक बार संकटों में घिर जाना पड़ता है।

‘मकर’ सन्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलावेश

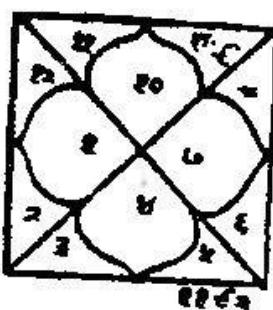
मकरलग्न : एकादशभाव : राहु



एकादशवें भाव में शत्रु ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘राहु’ के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम तथा गुप्त युक्ति-बल द्वारा विशेष साम्राज्य प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे बड़ी हानि भी उठानी पड़ती है लेकिन विशेष साम्राज्य भी होता है। उसके जीवन में सुख-दुःख बातें-बातें बने रहते हैं।

'मकर' लग्न की कृष्णली में 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : राहु



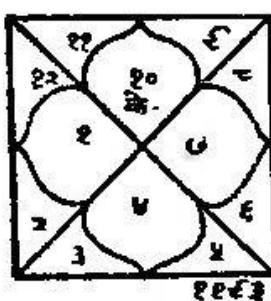
बारहवें भाव में जातु 'रुह' की राशि पर स्थित नींध के 'राहु' के प्रभाव से जातक की अपना खर्च बढ़ाने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा वाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कष्ट उठाने पड़ते हैं।

हिमस्ती होने के कारण वह अपनी कठिनाइयों की प्रकट नहीं होने देता। तथा उन्हें दूर करने की विशेष परिक्रम करता रहता है।

'मकर' लग्न में 'केतु'

'मकर' लग्न की कृष्णली में 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : केतु

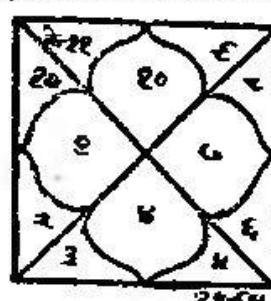


पहले भाव में विद्या 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सीन्हदर्दी तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा कभी कोई बड़ी खोट लगने की संभावना भी रहती है।

ऐसा अस्ति उपर तथा जिही स्वभाव का होता है तथा अपने प्रभाव की बढ़ाने के लिए युप्त युक्तियों का आश्रय भी सेता है।

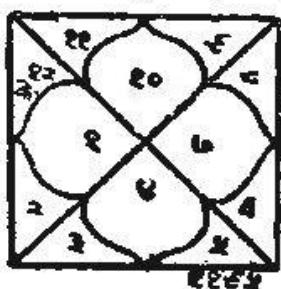
'मकर' लग्न की कृष्णली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : द्वितीयभाव : केतु

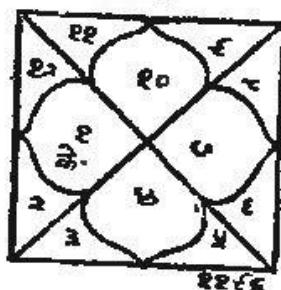


दूसरे भाव में मिव 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुंबके विषय में बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह हिमस्त तथा युप्त युक्तियों का आश्रय लेकर धन-सम्बन्धी कशी को पूरा करने के लिए प्रदत्तशील बना रहता है।

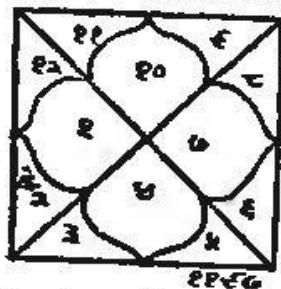
‘मकर’ स्थान की कुण्डली के ‘सृतीयमात्र’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश
मकरलग्नः सृतीयमात्रः केतु



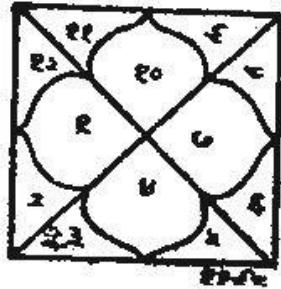
‘मकर’ स्थान की कुण्डली के ‘चतुर्थमात्र’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश
मकरलग्नः चतुर्थमात्रः केतु



‘मकर’ स्थान की कुण्डली के ‘पञ्चममात्र’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश
मकरलग्नः पञ्चममात्रः केतु



‘मकर’ स्थान की कुण्डली के ‘षष्ठमात्र’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश
मकरलग्नः षष्ठमात्रः केतु



तीसरे भाव में शत्रु ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों के पक्ष में परेशानी तथा संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक बृद्धि होती है।

वह साहस, धैर्य, मुख्यार्थ तथा गुप्त युक्तियों के बल पर जीवन को प्रभावशाली बनाये रखने का प्रयत्न करता रहता है।

चौथे भाव में शत्रु ‘मंगल’ की राशि पर स्थित

‘केतु’ के प्रभाव से जातक की माता के सुख में कमी तथा माता के कारण ही कष्ट भी प्राप्त होता है। घरेलू जीवन कलहपूर्ण रहता है। मातृ-भूमि का स्थाग भी करना पड़ता है। अन्त में, कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर उसे सुख के साधन प्राप्त करने में थोड़ी-बहुत सफलता मिल जाती है।

‘मकर’ स्थान की कुण्डली के ‘षष्ठमात्र’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश
मकरलग्नः षष्ठमात्रः केतु

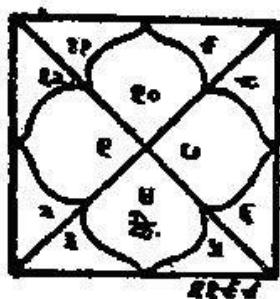
पांचवें भाव में मिलता ‘शुक्र’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में बड़ी का शिकार होना पड़ता है। भस्तिष्ठ में गुप्त विनाशों का निवास रहता है। परन्तु उसकी बुद्धि तीव्र होती है, अतः वह चतुराइ से काम लेकर अपनी कठिनाइयों के निवारण का प्रयत्न करता है।

छठे भाव में विद्या ‘बुध’ की राशि पर स्थित

‘केतु’ के प्रभाव से जातक की शासुओं के कारण कठिनाइयों में फँसना पड़ता है, परन्तु अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर वह उन पर विजय भी पा सेता है। शगड़-हंसट के मामलों में उसे सफलता मिलती है। ननसाल-पक्ष की हानि पहुँचती है। और संकट आने पर भी वह अपना धैर्य नहीं छोड़ता है।

'महर' सम की कुम्हली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

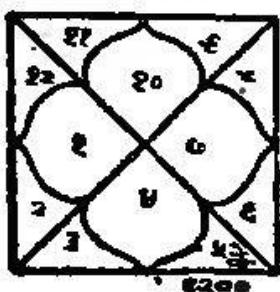
मकरलग्न : सप्तमभाव : केतु



सातवें भाव में शामु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-यज्ञ से अनेक प्रकार के कष्ट प्राप्त होते हैं। गृहस्थ-जीवन में परेशानियाँ आती हैं। अनेक प्रकार के व्यवसाय करने पर भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। अन्त, में वह अपनी गुप्त युक्तियों तथा कठोर परिश्रम के द्वारा उन पर यथोचित सफलता भी पा लेता है।

'महर' सम की कुम्हली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : अष्टमभाव : केतु

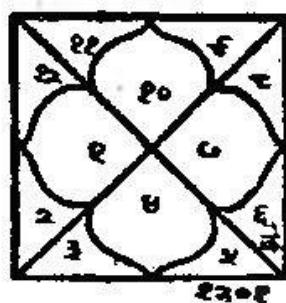


आठवें भाव में शामु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के जीवन पर अनेक बार संकट आते हैं और वह शृंखला-तुल्य कष्ट पाता है। वेष्ट में विकार रहता है।

अजीविका-उपार्जन के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। और से विनिति रहते हुए भी प्रकट में वह प्रभाव प्रदर्शित करता है। प्रायः उसका जीवन संघर्षपूर्ण रहता है।

'महर' सम की कुम्हली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

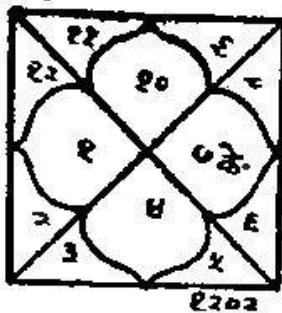
मकरलग्न : नवमभाव : केतु



नवें भाव में मिल 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आग्नेयता में कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु वह अपनी हिम्मत, परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के द्वारा उन पर विजय पाकर आग्नेय की उल्लति तथा सर्वे का पालन करता है। कसी-कभी उसे आग्नेयता में घोर संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु अन्त में उनका निराकरण करने में सफल हो जाता है।

‘मकर’ सम्बन्धी के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

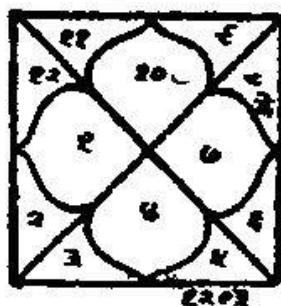
मकरलग्न : द्वादशभाव : केतु



दसवें भाव में मिल 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को पिता से कष्ट, राज्य से कठिनाइयाँ तथा व्यवसाय-क्षेत्र में संकटों का शिकार बनना पड़ता है, परन्तु व्यपनी गृह्य मुक्तियों के बल पर वह उन पर विजय पा लेता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन संबर्धपूर्ण तथा परिवर्तनशील होता है।

‘मकर’ सम्बन्धी के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

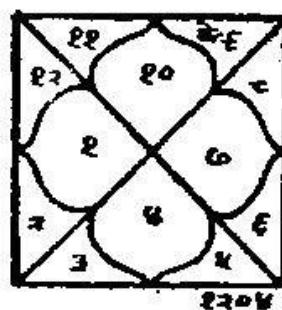
मकरलग्न : एकादशभाव : केतु



ग्यारहवें भाव में शत्रु ‘मंगल’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक की बायदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। वह व्यपनी गृह्य मुक्तियों, साहस एवं कठिन परिश्रम के बल पर बायदनी की निरन्तर बढ़ाता रहता है। अपने बाली कठिनाइयों पर उसे विजय मिलती है। ऐसा व्यक्ति गृह्य रूप में चिन्तित भी बना रहता है।

‘मकर’ सम्बन्धी के ‘द्वादशभाव’ स्थित ‘केतु’ का फलादेश

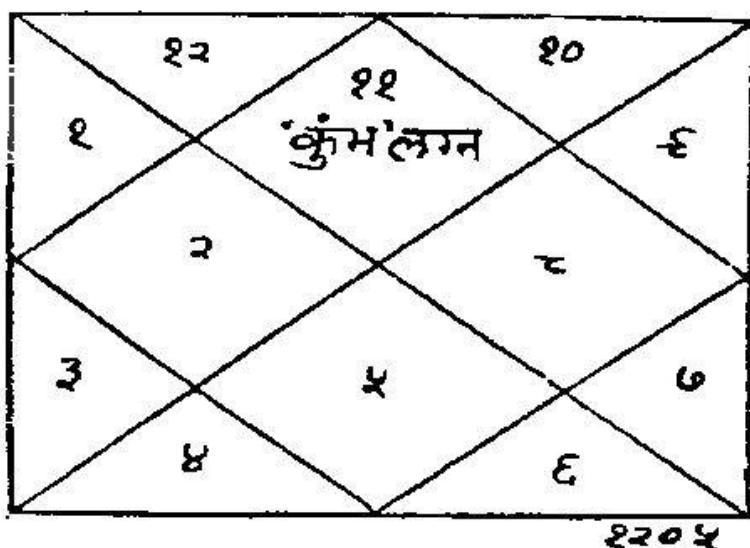
मकरलग्न : द्वादशभाव : केतु



बारहवें भाव में शत्रु ‘गुरु’ की राशि पर स्थित ‘केतु’ के प्रभाव से जातक का सर्वे अत्यधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से उसे लाभ मिलता है।

ऐसा व्यक्ति कठिनाइयों का साहस के साथ सामना करता है तथा बल में उन पर विजय भी पा लेता है। वह बड़ा परिव्रामी, धैर्यवान्, गृह्य मुक्तियों से काम लेने वाला तथा साहसी होता है।

‘कुम्भ’ लग्न



[‘कुम्भ’ लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न ग्रहों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

‘कुम्भ’ लग्न का फलादेश

‘कुम्भ’ लग्न में जन्म लेने वाला व्यक्ति लम्बे शरीर वाला, शोटी गरदन वाला, गंजे सिर वाला, तेजस्वी, वात-प्रकृति वाला तथा चंचल स्वभाव का होता है।

ऐसा व्यक्ति पानी अधिक पीता है। वह आत्मनी, दम्भी, अहंकारी, इष्पात्री, द्वेषी, सुस्थिर तथा आत्मद्वेषी होने के साथ ही श्वेष मनुष्यों से संपुर्ण, सर्वप्रिय, सुन्दर पानी वाला तथा पर-स्त्रियों में वासक्त भी होता है।

‘कुम्भ’ लग्न का जातक अपनी प्रारम्भिक अवस्था में दुःखी रहता है भव्यमावस्था में सुखी रहता है तथा अन्तिम अवस्था में धन, भूमि, धन, पुत्रादि के सुख का उपभोग करता है।

‘कुम्भ’ लग्न के जातक का आम्योदय २४-२५ वर्ष की आयु में होता है।



‘कुम्भ’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या १२०६ से १२१३ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे वारे लिखे अनुसार भग्न लेना चाहिए।



‘कुम्भ’ लग्न में ‘सूर्य’ का फलादेश

१—‘कुम्भ’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘सूर्य’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२०६ से १२१७ के बीच देखना चाहिए।

२—‘कुम्भ’ लग्न वालों को अपनी गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘सूर्य’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस भवीते में ‘सूर्य’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर ही तो संख्या १२०६
- (ख) ‘वृष’ राशि पर ही तो संख्या १२०७
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर ही तो संख्या १२०८
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर ही तो संख्या १२०९
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या १२१०
- (च) ‘कर्णा’ राशि पर हो तो संख्या १२११
- (छ) ‘तुला’ राशि पर हो तो संख्या १२१२
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर ही तो संख्या १२१३
- (झ) ‘धनु’ राशि पर ही तो संख्या १२१४
- (झा) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या १२१५
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर ही तो संख्या १२१६
- (ठ) ‘झोन’ राशि पर हो तो संख्या १२१७

‘कुम्भ’ लग्न में ‘चन्द्रमा’ का फलादेश

१—‘कुम्भ’ लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘चन्द्रमा’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२१८ से १२२५ के बीच देखना चाहिए।

२—‘कर्णा’ लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

- (क) 'मेष' राशि पर ही तो संख्या १२१८
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १२१९
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १२२०
- (घ) 'कक' राशि पर हो तो संख्या १२२१
- (ङ) 'सिंह' राशि पर ही तो संख्या १२२२
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२२३
- (छ) 'तुला' राशि पर ही तो संख्या १२२४
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर ही तो संख्या १२२५
- (झ) 'घनु' राशि पर ही तो संख्या १२२६
- (ञ) 'मकर' राशि पर ही तो संख्या १२२७
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १२२८
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १२२९

'कुम्भ' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'कुम्भ' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२३० से १२४१ के बीच देखना चाहिए।

२—'कुम्भ' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस भौति में 'मंगल'—

- (क) 'मेष' राशि पर ही तो संख्या १२३०
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १२३१
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १२३२
- (घ) 'कक' राशि पर हो तो संख्या १२३३
- (ङ) 'सिंह' राशि पर ही तो संख्या १२३४
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२३५
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२३६
- (ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२३७
- (झ) 'घनु' राशि पर हो तो संख्या १२३८
- (ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२३९
- (ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १२४०
- (ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १२४१

‘कुम्भ’ लग्न में ‘बुध’ का फलादेश

१—‘कुम्भ’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘बुध’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२४२ से १२५३ के बीच देखना चाहिए।

२—‘कुम्भ’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘बुध’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस भवीने में ‘बुध’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या १२४२
- (ख) ‘चुन’ राशि पर हो तो संख्या १२४३
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या १२४४
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या १२४५
- (ङ) ‘सिंह’ राशि पर हो तो संख्या १२४६
- (च) ‘कन्या’ राशि पर हो तो संख्या १२४७
- (छ) ‘सुला’ राशि पर हो तो संख्या १२४८
- (ज) ‘वृश्चिक’ राशि पर हो तो संख्या १२४९
- (झ) ‘धनु’ राशि पर हो तो संख्या १२५०
- (ञ) ‘मकर’ राशि पर हो तो संख्या १२५१
- (ट) ‘कुम्भ’ राशि पर हो तो संख्या १२५२
- (ठ) ‘मीन’ राशि पर हो तो संख्या १२५३

‘कुम्भ’ लग्न में ‘गुरु’ का फलादेश

१—‘कुम्भ’ लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘गुरु’ का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२५४ से १२६५ के बीच देखना चाहिए।

२—‘कुम्भ’ लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित ‘गुरु’ का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में ‘गुरु’—

- (क) ‘मेष’ राशि पर हो तो संख्या १२५४
- (ख) ‘बृष्ट’ राशि पर हो तो संख्या १२५५
- (ग) ‘मिथुन’ राशि पर हो तो संख्या १२५६
- (घ) ‘कर्क’ राशि पर हो तो संख्या १२५७

'सिंह' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४८ से ६५६ के बीच देखना चाहिए।

२. 'सिंह' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

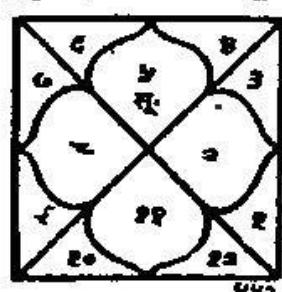
जिस वर्ष में 'केतु'—

- (क) 'ओष्ठ' राशि पर हो तो संख्या ६४८
- (ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६४९
- (ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६५०
- (घ) 'कर्त्ता' राशि पर हो तो संख्या ६५१
- (ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६५२
- (च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६५३
- (छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६५४
- (ज) 'दूषिण' राशि पर हो तो संख्या ६५५
- (झ) 'घनु' राशि पर हो तो संख्या ६५६
- (झ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६५७
- (झ) 'कुण्ड' राशि पर हो तो संख्या ६५८
- (झ) 'सीत' राशि पर हो तो संख्या ६५९

'सिंह' लग्न में 'सूर्य'

'सिंह' लग्न को कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित सूर्य का फलादेश

सिंह लग्नः प्रथमभावः सूर्य



यहसे आव में स्वराशि-स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शारीरिक अक्षित, आत्मबल तथा सौन्दर्य का लाभ प्राप्त करता है। वह बड़ा हिम्मती तथा सम्बन्ध कद का होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव की देखने से जातक को स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा असन्तोष बना रहता है।